ईश्वरीय सृष्टि का अद्भुत चमत्कार

एक पुरातन ऋषि का दिव्य जन्म

१४ सितम्बर सन् १९४२, में उत्तर-प्रदेश के गाजियाबाद जिले के, ग्राम खुर्रमपुर-सलेमाबाद में एक विशेष बालक का जन्म हुआ। बालक जन्म से ही एक विलक्षणता से युक्त था। और विलक्षणता यह कि जब भी यह बालक सीधा, श्वासन की मुद्रा में, कुछ अन्तराल लेट जाता या लिटा दिया जाता, तो उसकी गर्दन दायें-बायें हिलने लगती, कुछ मन्त्रोच्चारण होता और उसके उपरान्त विभिन्न ऋषि-मुनियों के चिन्तन और घटनाओं पर आधारित ४५ मिनट तक, एक दिव्य प्रवचन का प्रसारण होता। पर एक अपठित ग्रामीण बालक के मुख से ऐसे दिव्य प्रवचन सुनकर जन-मानस आश्चर्य करने लगा, बालक की ऐसी दिव्य अवस्था और प्रवचनों की गूढ़ता के विषय में कोई भी कुछ कहने की स्थिति में नहीं था। इस स्थिति का स्पष्टीकरण भी दिव्यात्मा के प्रवचनों से ही हुआ। कि यह आत्मा सृष्टि के आदिकाल से ही विभिन्न कालों में, शृङ्गी ऋषि की उपाधि से विभूषित और सतयुग के काल में आदि ब्रह्मा के शाप के कारण इस युग में जन्म लेने का कारण बनी। इस जन्म में अपठित रहने की स्थिति में जैसे ही यह शरीर श्वासन की मुद्रा में आता तो कुछ अन्तराल बाद इस दिव्यात्मा का पूर्व जन्मों का ज्ञान उद्बुद्ध हो जाता और अन्तरिक्ष में उपस्थित सूक्ष्म शरीरधारी दिव्यात्माओं के समक्ष एक सत्संग सदृश्य स्थिति बन जाती जिसमें इस महान आत्मा का सूक्ष्म शरीरधारी आत्माओं के लिए प्रवचन होता। जिसमें इस आत्मा के पूर्व जन्मों के शिष्य महर्षि लोमश मुनि पूज्य महानन्द के प्रवचन भी होते। क्योंकि इस दिव्यात्मा का स्थूल शरीर यहां मृत्यु लोक में स्थित होने के कारण वहां सत्संग में दिये जाने वाला दिव्य प्रवचन इस शरीर के माध्यम से यहाँ उपस्थित जन-मानस को भी सुनाई देते हैं। इन प्रवचनों में ईश्वरीय सृष्टि का अद्भुत रहस्य समाया हुआ है, जो किसी भी मनुष्य को, समाज और राष्ट्र को उच्च कोटि का जीवन जीने का कारण पैदा करने का सामर्थ्य रखते हैं। -शृङ्गी ऋषि वेद विज्ञान प्रतिष्ठान

१ चरित्र की प्राण प्रतिष्ठा ०१ ०३ १९८७

जीत रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं, वह सर्वज्ञ हैं, मानो जो अनन्तता का हम वर्णन करना प्रारम्भ करते हैं तो मानो एक-एक आभा में उसकी अनन्तता का हमें प्रायः दर्शन होता रहता है आज का हमारा वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा की महिमा का वर्णन कर रहा है, क्योंकि वह महिमावादी हैं, और जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा हैं उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में, प्रायः वे मेरा देव दृष्टिपात आता रहता है। आज का हमारा वेदमन्त्र, उस परमपिता परमात्मा के सम्बन्ध में, नाना प्रकार की विवेचना दे रहा हैं, और नाना प्रकार की आभा में, मानव को परिणत कर रहा हैं और यह कहा रहा है कि वे परमपिता परमात्मा मानो एक-एक वेदमन्त्र की प्रतिभा में, सदैव वह निहित रहता हैं।

तो आओ, मेरे पुत्रों! आज का हमारा वेदमन्त्र, हमें किसी मार्ग के लिए प्रेरित कर रहा हैं, क्योंकि यहाँ संसार का जितना भी पदार्थ है, अथवा जितना भी ज्ञान और विज्ञान हैं, वह मानव को प्रेरित करता रहता हैं और प्रेरणा देता हुआ, वह मानो प्रेरणा का एक स्रोत बन करके, उस आभा में परिणत हो जाता हैं जिसको हम सदैव अपने में ही दर्शन करते रहते हैं क्योंकि प्रत्येक मानव उसका दर्शन करता रहता है इसीलिए मानव दार्शनिक और महान बनने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। हमारे यहाँ नित्यप्रति और कुछ वेदमन्त्रों में, यागों के प्रति बड़ा विशेष वर्णन आता रहा हैं, हमारे यहाँ साहित्य में और साहित्यिक जितने भी क्रियाकलाप हैं, उन क्रियाकलापों में भी, मानो यागों का बड़ा विशेष वर्णन आया हैं। आज मैं साहित्यिक विवेचना में न जाता हुआ, आज मैं बेटा! तुम्हें उस आभा में ले जाना चाहता हूँ, जहाँ ऋषि-मुनि, अपने में अनुसन्धान करते रहे हैं और अन्वेषण करते रहते हैं और विचारते रहते हैं कि मानव के कल्याण के लिए कौन-सा मार्ग होना चाहिए, क्योंकि प्रत्येक मानव मानो एक पथिक बना हुआ रहता हैं और वह पथ को चाहता है कि मुझे आनन्द का पथ मुझे प्राप्त हो जाएं और मैं अन्धकार को त्याग करके मानो एक प्रकाश के मार्ग में और अन्धकार को मैं त्यागना चाहता हूँ।

मानव का ऊर्ध्वा पथ

तो मुनिवरों! देखो, ऋषि-मुनि अपनी-अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके, तो भिन्न-भिन्न प्रकार का, मानो दर्शन की विवेचना में सदैव संलग्न रहते थे। तो बेटा! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, जिस काल में ऋषि-मुनि विद्यमान हो करके, और मुनिवरों! देखो, अपने में यह विचारते रहते थे, कि मानव का ऊर्ध्वा में पथ कैसे बन सकता हैं? उन्होंने बेटा! वेद के वांगमय में पंहुचे, और वेदमन्त्रों में से वेद पोथियों में से, वेदमन्त्रों को निकासने लगे, और वेदमन्त्रों में मानो देखो, वह जो देव भाषा हैं, अथवा देव प्रवृत्तियां हैं, उन मानो देखो, मन्त्रों में उन शब्दों में जो उनमें ज्ञान और विज्ञान उनमें निहित रहता है उसके ऊपर वह विचारने लगे, मानो देखो, अपनी-अपनी विचारधाराएं प्रगट करने लगें, मेरे प्यारे! देखो, यह सभा महात्मा भुंजु मुनि महाराज के आश्रम में हुई। तो महात्मा भुंजु से यह प्रश्न किया गया, क्या भगवन! मानव का एक मानवीय मार्ग क्या हैं? जिस मार्ग को अपना करके अन्धकार में आए प्रकाश आ जाएं तो मेरे प्यारे! देखो, यहाँ महात्मा भुंजु ने यह कहा, क्या मानव का जो ऊर्ध्वा में मार्ग है, वह याग हैं मानो देखो, वेदमन्त्रों को उद्गीत रूप में गाते हुए उन्होंने याग को बेटा! देखो, वास्तविक पथ माना हैं और उनका एक उपदेश रहा उन्होंने कहा कि जब मानो देखो, यह जो यज्ञोमयी स्वरूप यह जो ब्रह्माण्ड हमें दृष्टिपात आ रहा है मानो देखो, इसमें हवि प्रदान न की जाएं तो यह याग याग नही रहेगा तो इसीलिए प्रत्येक

मानव को याग में परिणत रहना चाहिए और वह एक मानव का मार्ग है वह पथिक हैं मानव उसी पथ पर वह महान बन जाता हैं।

मेरे प्यारे! देखो, महात्मा भुंजु से यह कहा अक्केत्वर ऋषि महाराज ने, क्या महाराज यह याग क्या हैं जिसके ऊपर आप हमें यह बल दे रहे हैं कि वह मार्ग हैं। उन्होंने कहा महात्मा भुंजु ने अक्केत्वर ऋषि से कहा, क्या महाराज मार्ग कौन-सा और कौन से मार्ग को तुम जानना चाहते हो? अक्केत्वर ऋषि ने कहा कि महाराज! आपने कहा कि याग एक मार्ग है। मानो देखो, याग कैसे मार्ग है उसको जानना चाहते हैं? महात्मा भुंजु ने कहा कि याग यह जो संसार का जितना भी मानो क्रियाकलाप दृष्टिपात आ रहा हैं ये सर्वत्र एक याग माना गया हैं और इस याग में एक महानता विद्यमान रहती हैं जो एक गम्भीर एक मानो देखो, दर्शन है, जिस दर्शन को करने के पश्चात, मानव के जीवन में एक महानता का दर्शन होता हैं मेरे प्यारे! देखो, अक्केत्वर ऋषि ने ये वाक् स्वीकार कर लिया, परन्तु यह प्रश्न किया कि महाराज! यह जो याग है यह है क्या? अब महात्मा भुंजु ने कहा क्या भगवन! याग क्या नही हैं? मुनिवरों! अक्केत्वर ऋषि महाराज मौन हो गएं और उन्होंने कहा कि यागां ब्रह्मणे वाचप्रह्वा अब बेटा! देखो, ऋषि ने उसकी विवेचना करना प्रारम्भ किया, महात्मा भुंजु ने कहा क्या यह मानो जितना भी मानव का क्रियाकलाप है, चाहे वह परोक्ष रूप में हैं चाहे प्रत्यक्ष में हैं, मानो वह सर्वत्र याग की हमें प्रेरणा दे रहा हैं अथवा याग में हमें परिणत कर रहा हैं मेरे पुत्रों! उन्होंने कहा यागां ब्रह्म लोकां क्या यह याग ही तो हमें ब्रह्म लोक में ले जाने वाला हैं मानो इससे मानव की प्रवृत्तियों में एक शुद्धिकरण होता हैं और उस शुद्धिकरण के गर्भ में एक महानता की प्रतिभा का दर्शन होता है जिस प्रतिभा का दर्शन करने के पश्चात मानव के जीवन में एक महान एक ऐसा क्रियाकलाप होने लगता है जिस क्रियाकलाप में उसका आन्तरिक और बाह्य जगत दोनों मानो देखो, देव पुरी को प्राप्त हो जाते हैं। मेरे प्यारे! यह बड़ा विचित्र एक वाक् हैं, जिसके ऊपर हमारे ऋषि-मुनि परम्परागतों से बेटा! एक मानो नृत्त करते रहे हैं, और यह जो विचारों का नृत्त है एक महान कहलाता हैं जिसके ऊपर बेटा! हमारे ऋषि-मुनि, प्रायः अपने में विचार-विनिमय करते रहे हैं और वह विचार क्या है, कि जिस विचार को ले करके, हमारे जीवन का एक अभ्योदय हो जाता हैं यागां ब्रह्मा वेत्तो प्रह्वा वर्णनं ब्रह्मा कृतं लोकाः, मेरे प्यारे! देखो, वह वरणीय है, वरण करने योग्य हैं, वह जो परमपिता परमात्मा जो यज्ञोमयी स्वरूप हैं, इसी प्रकार हम उस परमपिता परमात्मा को अपने में मानो देखो, उसको दर्शन के रूप में दर्शाते हैं, और उसकी आभा का हम प्रायः दर्शन करते रहे मेरे प्यारे! देखो, यहाँ वेद की पोथी को ले करके मन्त्रों की प्रतिभा को ले करके बेटा! उसका दर्शन करने लगे। परन्तु महात्मा भुंजु का एक ही मन्तव्य रहा है, क्या संसार में जितना शब्द हैं जिनती सात्विकता हैं उस सर्वत्र में मानो देखो, एक याग रूप उसमें ओत-प्रोत रहता है तो मेरे पुत्रों! विचार-विनिमय क्या है, वेद का ऋषि ये कहता है क्या मानो देखो, चाहे वह व्यापक रूप अपने को बनाना, हो चाहे वह राष्ट्रवेत्ता हो, मानो चाहे वह जनता में, जनार्दन में, दर्शन करने वाला हो मेरे प्यारे! देखो, वह सर्वत्र एक याग माना गया हैं। मैंने बहुत पुरातन काल में, तुम्हें बहुत-सी वार्त्ताएं मानो निर्णय कराई हैं और उन वाताओं में मानो देखो, अश्वमेध यागों का वर्णन, अजामेध यागों का वर्णन आता रहा है परन्तु मैं जिन यागों की हम चर्चा कर रहे हैं, उन यागों में एक व्यापकवाद निहित रहता हैं राजा जब अश्वमेध याग में याज्ञिक बनता हैं तो मानो वह अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाता हैं, मेरे प्यारे! देखो, अपनी राष्ट्रीयता को, महानता की वेदी पर ले जाता है और ऋषि-मुनियों से यह प्रश्न करते रहते हैं क्या भगवन! मानव समाज, मानव जन जीवन कैसे अन्धकार से प्रकाश में जाएं, मेरे प्यारे! देखो, जब तक हम वेद के मर्म अथवा वेद के विचारों को ले करके और सर्वांग अपने को नही बना लेते तब तक मानव देखो, मृत्युंजय नही बनता वह पथिक नही बन सकता मानव को ऊर्ध्वा पथिक बनना है और उस पथ को अपनाना है, जिस पथ को ले

करके, हमारे ऋषि-मुनि महानता का प्रायः दर्शन करते रहे हैं आओ, मेरे प्यारे! देखो, मैंने बहुत पुरातन काल में, तुम्हें यह निर्णय देते हुए कहा था, क्या संसार में मानव को प्राणों को जानना चाहिए प्रत्येक मानव प्रकाश में, जाने के लिए अन्धकार को त्यागना चाहता हैं और प्रकाश में जाना चाहता है, मेरे पुत्रों! देखो, प्रत्येक आभा में सबसे ऊर्ध्वा में यह कि मानव को अपने प्राणतव को जानना चाहिए, मेरे पुत्रों! देखो, प्रत्येक मानव प्राण में जाना चाहता हैं मैंने प्राण बहुत पूर्व में, यह चर्चाएं की हैं, क्या मानव को प्राणों में परिणत रहना चाहिए और प्राण प्रतिष्ठा अपने में करनी चाहिए जिससे वह मानो देखो, ऊर्ध्वा का पथिक बन सके, वह पथ को पथ में ही दृष्टिपात करना चाहता हैं।

प्राण की प्रतिष्ठा का स्वरूप

तो आओ, मेरे पुत्रों! मैं विशेष विवेचना नही, केवल तुम्हें कुछ प्राणों की चर्चा करने के लिए आया हूँ मानो देखो, मानव को अपने में प्राण प्रतिष्ठा करनी चाहिए, हमारे यहाँ पुरातन काल में, ऋषि-मुनियों के ऊर्ध्वा काल में मानो चिकित्सा भी प्राण के द्वारा होती रही हैं और मेरे पुत्रों! प्राणों को जान करके, मानव अपने में ब्रह्मवर्चोसि बन जाता हैं और ब्रह्मवर्चोसि बन करके प्रकाश के मार्ग पर चला जाता है तो मुनिवरों! देखो, मैं प्राण की चर्चा करने के लिए आया हूँ क्या यह प्राण क्या है प्रत्येक मानव बेटा! देखो, अपने में, प्राण प्रतिष्ठा को चाहता है मेरी प्यारी माता भी यही चाहती है कि हमारी प्राण प्रतिष्ठा हो जानी चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, प्राण प्रतिष्ठा क्या है इसके ऊपर हमारा, बड़ा आध्यात्मिकवेत्ताओं ने नाना प्रकार का विचार-विनिमय होता रहा हैं। महाराजा रघु के यहाँ भी एक समय मानो प्राण प्रतिष्ठा का प्रसंग आया, जब महाराज रघु ने याग किया था तो वहाँ भी नाना ऋषि-मुनियों का एक समाज विराजमान हुआ और उस समाज में मानो देखो, प्राण प्रतिष्ठा का प्रसंग आया मेरे प्यारे! देखो, माता भी चाहती है, राजा भी चाहता है, आचार्य भी प्राण प्रतिष्ठा को चाहता हैं मेरे पुत्रों! देखो, राजा के यहाँ, जब प्राण का प्रसंग आता है कि राष्ट्र में प्राण क्या हैं तो मेरे प्यारे! देखो, राजा के राष्ट्र में जो प्राण हैं वह एकोकी मानवीयता है मानो देखो, राजा के राष्ट्र में मानवीयता ही एक प्राण कहलाता है राजा के यहाँ चरित्र ही एक प्राण कहलाता हैं मानो देखो, समाज में जब देखो, चरित्र और मानवीयता ऊँची बन जाती हैं तो मुनिवरों! देखो, वह राजा का राष्ट्र एक मानो देखो, प्राण प्रतिष्ठा वाला बन जाता है प्राण क्या है मेरे पुत्रों! देखो, वेद का ऋषि कहता है चरित्र ही प्राण है वेद का आचार्य कहता है मानो देखो, सत्ता ही प्राण है।

विद्यालयों में प्राण प्रतिष्ठा

प्राण का अभिप्रायः क्या है जो गति करनेवाला है प्राण का अभिप्रायः ये जैसे चरित्र है, ये गति करता है मेरे प्यारे! देखो, हम यदि ऊर्ध्वा में महान रहेंगें, तो हमारे चरित्र की गति द्वितीय प्राणी पर जाती हैं तो मुनिवरों! देखो, वह इस मानो देखो, प्राण प्रतिष्ठा कहलाती हैं तो विचार क्या मुनिवरों! देखो, वह एक दूसरे में ओत-प्रोत रहने वाली यह प्राण प्रतिष्ठा कहलाती है। मेरे प्यारे! देखो, प्राण प्रतिष्ठा का अभिप्रायः क्या हैं? क्या मानव को बेटा! देखो, माता-पिता यह चाहते हैं कि हमारे गृह में प्राण प्रतिष्ठा होनी चाहिए, मेरे प्यारे! देखो, यह प्रसंग देखो, राजा अश्वपति ने, महात्मा भुंजु से भी किया था और महात्मा श्रोतकेतु मुनि से भी यह प्रश्न किया था, कि महाराज! यह प्राण प्रतिष्ठा क्या हैं तो मुनिवरों! देखो, उस समय महा ब्रह्मे महात्मा भुंजु ने तो यह उत्तर दिया कि हे राजन! तुम प्राण प्रतिष्ठा को जानना चाहते हो, तो मानो देखो, राजा प्राण है और प्रजा मन है, जब प्राण का सन्निधान मात्र होता है मन प्रकृति का तन्तु वह अपनी क्रिया में रत्त हो जाता है, मानो वह क्रियाशील बन जाता हैं वह क्रियाओं में रत्त हो जाता हैं, वह मनस्तव कहलाता है मानो देखो, वह जो प्राण है, वह उसमें प्रतिष्ठित हो रहा है, वह प्राण प्रतिष्ठा हैं। मेरे प्यारे! देखो, जब राजा अपने में चरित्र और विद्यालयों को ऊँचा बनाता है, विद्यालयों को ऊँचा

बनाने का अभिप्रायः यह है कि राजा का कर्तव्य है कि वह अपने राष्ट्र में प्राण प्रतिष्ठा चाहता है तो विद्यालय उसके यहाँ पवित्र होने चाहिएं विद्यालयों में देखो, एक महान प्रतिष्ठा होनी चाहिए जैसा मैंने कई काल में तुम्हें वर्णन कराया है क्या महाराजा अश्वपति के राष्ट्र में जब मुनिवरों! देखो, विद्यालयों में ब्रह्मचारी आचार्य दोनों परस्पर मानो देखो, शिक्षा का व्यवधान प्रारम्भ होता क्योंकि शिक्षा ही तो प्राण प्रतिष्ठा कहलाती है राजा का राष्ट्र जितना भी हैं वह मानो देखो, प्राणों वह उसके देखो, मात्र बल के ऊपर निर्धारित रहता हैं मुनिवरों! देखो, छात्र छात्रिकाएं जब पवित्रतव में परिणत हो जाते हैं।

तो मानो देखो, विद्यालायों में ही तो प्राण प्रतिष्ठा होती हैं आचार्य जब ब्रह्मचारियों को एक पंक्ति में विद्यमान करते हैं वह प्रातःकालीन मानो देखो, याग करते हैं, प्रातःकलीन मानो देखो, जब वह देव पूजा करते हैं, ब्रह्मयाग करते हैं तो मानो देखो, ब्रह्मचारी प्रसन्न होते हैं तो वह विद्यालय में चरित्रता का संचार होता हैं मानो एक महानता का दर्शन होता है तो मुनिवरों! देखो, वह राजा के राष्ट्र में जो विद्यालय है वह कितना महान है मानो देखो, राजा के राष्ट्र में विद्यालय में प्राण प्रतिष्ठा हो रही है और वह जो प्राण प्रतिष्ठा हैं, प्राण का अभिप्रायः यह है गति प्राण ही गति, को कहा जाता हैं मेरे प्यारे! देखो, जो गति हो रही हैं इसीलिए विद्यालयों मंर जो ज्ञान की गतियां हो रही हैं, अथवा ज्ञान और विज्ञान अपनी गतियों में गतिवान हो रहा है मेरे पुत्रों! वही तो एक महानता का दर्शन हो रहा हैं आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ केवल तुम्हें यह कि हमारे यहाँ प्रतिष्ठा होनी चाहिए देखो, धर्म और मानवता मानो देखो, दोनों एक ही सूत्र के मनके कहलाते हैं मैंने बहुत पुरातन काल में मेरे प्यारे महानन्द जी ने मुझे वर्णन कराया और मैंने कई कालों में हमने बेटा! महाराजा अश्वपति के याग में अश्वपति के याग में जाने के लिए हम सदैव तत्पर रहें। अश्वपति के यहाँ मानो प्राण प्रतिष्ठा होती, राजा प्रातःकालीन मानो देखो, विद्यालय में जाता है और विद्यालय में यह दृष्टिपात करता हैं कि यहाँ मानो यह जो प्राण प्रतिष्ठा हो रही हैं प्राणं ब्रह्मा लोकां हिरण्यं रथं ब्रह्मा वाचाः मेरे प्यारे! देखो, वह जो प्राण प्रतिष्ठा मेरे राष्ट्र में जो शिक्षा प्रणाली हैं वह ऊर्ध्वा में अथवा नही तो मानो देखो, वह आचार्य देखो, उस ब्रह्मचारियों की समवर्ताम ब्रह्मा वह नाना प्रकार के यागों की प्रायः चर्चाएं करते रहते तो बेटा! वेद का ऋषि कहता हैं, आचार्य कहता है क्या राजा के राष्ट्र में जब प्राण प्रतिष्ठा हो जाती है और वह शिक्षा प्रणाली पवित्र बन जाती है शिक्षा प्रणाली में जब मानो देखो, महानता का दर्शन होने लगता हैं, मानवीय दर्शन होने लगता है, तो मेरे प्यारे! देखो, एक दूसरा जैसे माला हैं, माला में नाना प्रकार के मनके है। और मनके एक दूसरे से कटिबद्ध रहते हैं, एक दूसरे से समन्वय रहते हैं वह सूत्र में पिरोएं हुए है, परन्तु इसी प्रकार जब मुनिवरों! देखो, एक ब्रह्मचारी एक दूसरे में पिरोया हुआ, एक दूसरे में मानो महानता का और महानता का दर्शन कराता रहता हैं, और आचार्य जैसे माला में एक सुमेरू होता है इसी प्रकार मुनिवरों! देखो, सुमेरू की भांति जब आचार्य रहता है तो मेरे प्यारे! देखो, विद्यालय में शिक्षा प्रणाली एक प्राण प्रतिष्ठा के तुल्य कहलाती हैं। जैसे मुनिवरों! देखो, हम विचारते रहते हैं जैसे मुनिवरों! देखो, पृथ्वी है पृथ्वी में आपोमयी जल हैं जल में आपोमयी मानो देखो, विद्युत है, मानो देखो, इसमें अग्नि कहते हैं अग्नि के रूप में मानो देखो, अग्नि की धाराओं में, अग्नि पिरोयी हुई मानो वायु में हैं, और वायु पिरोयी हुई अन्तरिक्ष में रहती है मानो देखो, एक मनके है और वह एक सूत्र में पिरोएं हुए हैं और वह जो सूत्र है वह मानो सूत्रों में जो देखो, ब्रह्मे वाचो देखो, सुमेरू बन करके, वह ब्रह्म रहता है मानो ब्रह्म सुमेरू बन करके बेटा! देखो, माला को एक महानता में रमण करा देता है वही बेटा! देखो, प्राण प्रतिष्ठा कहलाती हैं।

आओ, मेरे प्यारे! यदि इसमें से मानो देखो, परमपिता परमात्मा की चेतनता को निकास लिया जाएं तो मेरे प्यारे! देखो, वायु, वायु नही रहती, अग्नि, अग्नि नही रहती, आपोमयी, जल, जल नही रहता मानो देखो, अपने

रूप से अस्तित्व उसका समाप्त हो जाता हैं तो विचार क्या मुनिवरों! देखो, वे परमपिता परमात्मा सुमेरू है, इसी प्रकार राजा के राष्ट्र में विद्यालयों में आचार्य सुमेरू कहलाता है मेरे पुत्रों! राजा के राष्ट्र जब प्रजा और राजा मिल करके अश्वमेध याग करते हैं तो वहाँ राजा सुमेरू कहलाता हैं मेरे प्यारे! देखो, सुमेरू बन करके वही तो मुनिवरों! देखो, जैसे परमपिता परमात्मा के सम्बन्ध में कहा जाता है क्या सृष्टि के प्रारम्भ में दैत्य और देवताओं का जब संग्राम हुआ तो मानो देखो, वही तो सुमेरू बेटा! देखो, जैसे मथनी बेटा! देखो, दुग्ध को मथनी करने वाली मथनी होती हैं, उसी प्रकार वही तो सुमेरू बेटा! देखो, मथनी बन करके मानो देखो, चरित्र के गर्भ में मानवता की मानवीयता में और परमपिता परमात्मा के ऊर्ध्वा दर्शन करने में, मेरे पुत्रों! देखो, वही तो सुमेरू कहलाता हैं।

चरित्र का स्वरूप

आओ, मेरे पुत्रों! देखो, मैं विशेष विवेचना तो तुम्हें देने नही आया हूँ मैं अपने विचारों की भूमिका बनाता रहता हूँ, अपने विचारों की एक मानो देखो, भूमिका का दर्शन करता रहता हूँ तो विचार क्या, मेरे पुत्रों! देखो, विचार यह है आचार्यों ने अपना यह मन्तव्य दिया हैं क्या जो मानव, मैं अन्धकार से प्रकाश में चला जाऊं, मानो वह प्रकाश में जब जा सकता हैं जबकि उसका जीवन चरित्र एक महानता की वेदी पर होगा, प्रसंग यह आता है, महाराजा अश्वपति के राष्ट्र में यह प्रसंग आते रहते थे क्या ये चरित्र क्या हैं जिस चरित्र की पुकार मानो हमारे मानवीयता में दर्शाती रहती है यह क्या है? मेरे पुत्रों! देखो, सभी, जितना भी मानव का वाणी से ले करके, नेत्रों से ले करके, घ्राण से ले करके, जितना भी मानव क्रियाकलाप हो रहा है वह विशुद्ध रूप से हो जाएं, तो उसी मा नाम चरित्र कहलाता है जैसे एक मानव वाणी उद्गीत रूप में गाता रहता है, वेद गान गाने वाला, वेद गान गा रहा है परन्तु वेद गान गा करके जब उसके ऊपर अपने जीवन को न्यौछावर करता है, तो मानो उसी का नाम चरित्र कहलाता हैं।

जीवन की पवित्रता

मेरे प्यारे! देखो, एक यज्ञमान याज्ञिक बना हुआ है और वह याग के स्वरूप को जान करके मानो देखो, देवपूजा करता है और जो देवता उसके मानवीय शरीर में और मानो बाह्य जगत में जो भी क्रियाकलाप कर रहे हैं उनके आधार पर अपनी जीवन को बनाता है तो उसका वह चरित्र कहलाता हैं मेरे प्यारे! देखो, सुगन्धि आ रही है मानो देखो, वह तरंगों के रूप में विद्यमान है, उस सुगन्धि का वह पृथ्वी से ले करके मेरे प्यारे! अपने मानवीय जीवन तक उस सुगन्धि का वह अनुभव करता रहता हैं और अनुभव करता-करता ऊर्ध्वा में गति हो जाती हैं तो मेरे पुत्रों! देखो, वह उस सुगन्धि के अन्तिम छोर पर जाता हुआ, अपने में सुगन्धि को ग्रहण करे और दुर्गन्ध को त्याग दे बेटा! उसका चरित्र कहलाता हैं। जैसे सुगन्ध का अभिप्रायः बेटा! देखो, वेदज्ञ ध्वनि के माध्यम से जो स्वाहाः मानो देखो, साकल्य को ले करके द्यौ लोक में जाता है और द्यौ लोक से उस मानो सुगन्ध का समन्वय हो जाता है घ्राण इन्द्रियों का समन्वय हो जाता हैं मेरे प्यारे! देखो, वह जो अपने स्वरूप में मानो देखो, सुगन्ध देता है उस सुगन्ध को अपनाना है वही सुगन्ध बाह्य जगत में हैं बेटा! मानो देखो, बाह्य जगत मे जो दुर्गन्ध आ रही हैं चाहे वह विचारों से आ रही है चाहे वह मानो देखो, दुर्गन्ध पदार्थ से आ रही है चाहे वह राष्ट्रीयवाद से आ रही है, मेरे प्यारे! देखो, दुर्गन्ध को त्यागना है और सुगन्ध को लाना है जिससे हमारा मानवीय जीवन पवित्र हो जाएं, तो मेरे प्यारे! देखो, विचार क्या, विचार यह मुनिवरों! देखो, जैसे शब्द है शब्द की ध्वनियां आ रही है वह ध्वनि पर ध्वनित हो रहा है प्राणी, मानो देखो, वह ध्वनि कहाँ से आ रही हैं मानो वह ध्वनि मानो अन्तरिक्ष से आ रही हैं अन्तरिक्ष ध्वनियों का केन्द्र है शब्द आ रहा हैं दिशाओं से उसका समन्वय रहता है उसी शब्द मेरे प्यारे! देखो, अन्तरिक्ष में लय हो जाता हैं वही शब्द मुनिवरों! देखो, श्रोत्रों में प्रवेश हो करके वही शब्द मानो देखो, वाणी के

द्वारा उद्गीत गाता रहता है और जब वाणी के द्वारा वह उद्गीत गाता रहता है वह वाणी ही तो मुनिवरों! देखो, इस रूप में जब हम स्वीकार करते हैं कि हमारा शब्द और देखो, कृतं ब्रह्मा वाणं ब्रह्मे वाणी का, दोनों का जब समन्वय जब होता हैं तो उसका शुद्ध रूप होना चाहिए, दुर्गन्ध रूप नही होना चाहिए मानो देखो, वह आभा अन्तरिक्ष में आनी प्रारम्भ हो जाती है, हमारे शब्द द्यौ लो में प्रवेश हो जाते हैं, वही शब्द अशुद्ध हो करके वायुमण्डल में छा जाते हैं, उससे वायु मण्डल अपवित्र हो जाता हैं तो परिणाम उसका यह होता है क्या वही शब्द मुनिवरों! द्यौ लोक में हैं जो चरित्र के साथ है आभा और ज्ञान के साथ हैं वही द्यौ लोक में है और वही शब्द जब अचरित्रता पर है वही शब्द अन्तरिक्ष में वायुमण्डल को अशुद्ध बना रहा हैं।

महानता की ज्योति

तो परिणाम क्या है तो मुनिवरों! उसमें चरित्र कहाँ निहित रहता हैं उसके गर्भ में चरित्र ही चरित्र विद्यमान रहता हैं तो उसका नाम चरित्र कहलाता है जो सुगन्धि युक्त हैं मेरे प्यारे! देखो, जो दर्शनों से गुथा हुआ शब्द है गुथे हुए विचार हैं, गुथी हुई तरंगें है, वही तो मुनिवरों! देखो, मानव को ऊर्ध्वा में ले जाती हैं, वही तो मुनिवरों! देखो, चरित्र की आभा को ले जाती हैं। विचार-विनिमय क्या हैं मेरे पुत्रों! आज मैं विशेष चर्चा देने नही आया हूँ विचार केवल यह है कि मानव की वाणी हैं रसों का स्वादन हो रहा है यदि वही रस जो लाभप्रद होता है और मानव को दर्शन और बुद्धि को स्थिर करने वाला मानो आहार है वही रस मुनिवरों! देखो, महान पवित्र कहलाता हैं वही रस मुनिवरों! देखो, उन रसों का पान करना, वह मुनिवरों! देखो, रसना का चरित्र है, रसना की महानता है यदि देखो, विजातीय पदार्थों को ग्रहण करता है, विजातीय जो पदार्थ हैं, विजातीय पदार्थों को जो मानो देखो, दुर्गन्ध से युक्त होते हैं उन पदार्थों को जो पान करता है वही मेरे प्यारे! मानव के जीवन में, आन्तरिक जगत में अशुद्ध संस्कारों को जन्म देते हैं और अशुद्ध संस्कारों को जन्म दे करके जन्म-जन्मान्तरों में बेटा! अपनी आभा निकृष्टता को भोगता रहता हैं यदि वही शुद्ध पदार्थों का रसों का पान करता हैं सुचरित्रता उकसे साथ होती है वही शब्द मुनिवरों! रसावादन पान करता हुआ, वही द्यौ लोक में प्रवेश हो करके, वह महानता की ज्योति में प्रदान कराता रहता हैं।

तो आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ केवल यह क्या मानव के प्रत्येक रूप में बेटा! देखो, चरित्र होना चाहिए, चरित्र की मीमांसा केवल इतनी करना चाहता हूँ क्या मानव के जीवन में प्रत्येक इन्द्रियों का जो मूल रहस्य है जो मूलतव उस मूलतव के गर्भ में प्रवेश हो करके मेरे पुत्रों! अपनी आभा में निहित रहना चाहिए, आओ, मेरे प्यारे! आज का विचार क्या मैं बेटा! दृष्टिपात करने में लगा हुआ रहता हूँ, हमारे यहाँ एक-एक वाक् को ले करके बहुत-सी विवेचना की जाती हैं आज का विचार मैं केवल इतना उद्गीत रूप में गाना चाहता हूँ, उच्चारण करना चाहते हैं क्या हम बेटा! देखो, अपने में महानता का दर्शन करना चाहते हैं, तो ऋषि-मुनियों ने मेरे प्यारे! देखो, वेद के वांगमय में प्रवेश हो करके वेद की पोथियों को ले करके उसमें से सूत्रों को ले करके उन्होंने एक माला में पिरोएं हैं राजा को कहा है तेरा यह कर्तव्य हैं प्रजा को कहा तेरा यह कर्तव्य हैं महापुरूषों को कहा तुम प्रेरक हो मानो देखो, वह उन्होंने कहा है, क्या ऋषि-मुनियों का एक ही मन्तव्य रहा हैं क्या जब तक, इन्द्रियों के मानो देखो, विजातीय पदार्थों को, विजातीयता को दूरी नही करोगे और सजातीयता को लाने का प्रयास नही करोगे, तो जब तक तुम्हें मानो देखो, प्रकाश प्राप्त नही होगा और अन्धकार ही अन्धकार में जब तक रहोगे, जब तक विजातीयता को नही त्यागोंगे, मानो देखो, विजातीय और सजातीय दो ही प्रकार की तो धारा हैं जिसकी चर्चाएं बेटा! हम कल करेंगें, आज मुझे इतना आज्ञा नही दे रहा हैं आज मैं बेटा! मैं अपने विचारों की भूमिका बना रहा हूँ विचार क्या है बेटा! देखो, विजातीय और सजातीय पदार्थों की विवेचना तो कल प्रगट करेंगें, आज का

चित्त की वृत्तियों का निरोध

वाक् हमारा क्या कह रहा हैं क्या मुनिवरों! देखो, यह प्राण प्रतिष्ठा और मुनिवरों! देखो, प्राणो की प्रतिष्ठा की चर्चाएं, हम कई कालों में वर्णन भी की है और आज भी कर रहे हैं और इसकी विवेचना हम पुनः भी करेंगें, आज का विचार केवल यह कि हमारे जीवन में प्राणों की प्रतिष्ठा होनी चाहिए, चरित्रता में महानता होनी चाहिए जिससे बेटा! देखो, मानव समाज राष्ट्रवाद समाजवाद देखो, उल्टे मार्ग पर न चला जाएं और एक मानो देखो, हम धर्म और मानवीय दर्शन को अपनाते हुए, इस संसार सागर से पार हो जाएं यह है बेटा! आज का वाक्, अब मुझे समय मिलेगा तब तुम्हें मैं शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा आज का विचार यह क्या हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, हम संसार सागर से पार हो जायें यह है बेटा! आज का वाक् अब समय मिलेगा तो मैं शेष चर्चांएं बल प्रगट करूंगा।

२ परमात्मा का अनुष्ठान ०२ ०३ १९८७

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता हैं, जो परमपिता परमात्मा राष्ट्रमयी कहलाता हैं मानो राष्ट्र उसका आयतन माना गया हैं, जिस प्रकार वो परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप है इसी प्रकार वे परमपिता परमात्मा राष्ट्रमयी कहलाता है क्योंकि जितना भी ये जगत हमें दृष्टिपात आ रहा हैं, चाहे वह चेतना में रत्त रहने वाला हो, चाहे वह जड़वत में हो, परन्तु उस सर्वत्रता में मानो उस परमपिता परमात्मा का प्रायः अनुशासन हमें दृष्टिपात आ रहा है क्योंकि परमपिता परमात्मा का जो नियम हैं, अथवा वह सृष्टि के प्रारम्भ में, मेरे प्यारे प्रभु ने यह नियमावली का निर्माण किया मानो वह प्रायः इसी प्रकार अनुशासित कहलाता है मानो जितना भौतिक जगत हैं अथवा भौतिक राष्ट्र हैं, उस भौतिक राष्ट्र में न्यूनता होती रहती हैं और उसमें भिन्न-भिन्न प्रकार की आभाओं का वर्णन होता रहता है और उसमें परिवर्तन भी कहा गया हैं परिवर्तित भी होता रहता है परन्तु परमपिता परमात्मा का जो इतना ऊर्ध्वा में राष्ट्र हैं क्या मानव समाज, भौतिक जगत में उसकी कल्पना करता रहता हैं परन्तु वह कल्पना, कल्पना ही बन करके रहती है परन्तु परमपिता परमात्मा का जो राष्ट्र है, अथवा उसका जो अनुशासित ये संसार है उसका जितना भी नियम हैं अथवा उसका जितना भी साधन है चाहे पालन करने का हो, चाहे वह मानो रजोगुण में शासन का हो, चाहे वह उत्पति काल हो। मेरे प्यारे! वह नियमावली जैसे सृष्टि के प्रारम्भ में, प्रभु ने निर्धारित की, उसी प्रकार वह क्रियाकलाप प्रायः हमें दृष्टिपात आता रहता हैं परन्तु उसी की कल्पना करने वाला, जो भौतिक राष्ट्र हैं वह कल्पना कर रहा है परन्तु उसमें मानो देखो, किसी भी रूप में उसमें परिवर्तन आ सकता हैं परन्तु परमात्मा का जो राष्ट्र हैं, परमात्मा का जो नियम बनाया हुआ हैं, उमसें किसी प्रकार की न्यूनता नही आती। मानो उसमें उसी प्रकार जैसे सूर्य प्रातःकाल में उदय होता है उसका जो नियम है मानो उसी प्रकार कटिबद्ध हैं, चन्द्रमा अपने समय पर मानो देखो, प्रतिपदा द्विपदा और देखो, वह अपनी सम्पन्न कलाओं से पूर्णिमा के दिवस मुनिवरों! देखो, पूर्ण हो जाता है, उसके पश्चात देखो, उसकी कलाएं उसी प्रकार परिवर्तित होती रहती हैं परन्तु वह ऐसा एक अनूठा, अनुपम एक आभा में कहलाता हैं जिसके ऊपर बेटा! मानव कल्पना भी नही कर पाता, मेरे पुत्रों! देखो, वह अमावस्य का दिवस आता है तो अपनी कलाओं से रहित हो जाता है, पूर्णिमा का दिवस आता है, कलाओं से सम्पन्न हो जाता हैं। तो मेरे प्यारे! उस प्रभु का कैसा अनूठा यह ब्रह्माण्ड कहलाता हैं, मानो तारा मण्डलों की जो माला हैं वह माला मानो देखो, सृष्टि के प्रारम्भ में, मेरे पिता ने याज्ञिक यज्ञोमयी स्वरूप बन करके इस संसार का जब निर्माण किया और यज्ञशाला के रूप में मानो यह जो यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो करके अपनी स्वाहा की माला बना देता है, तो प्रत्येक आहुति के साथ में अपनी भावना, अपनी सुचरित्रता की एक माला बना देता है और वह माला बन करके उसी को प्राप्त होती हैं इसी प्रकार, मेरे प्यारे प्रभु ने इस संसार रूपी अनूठी माला का निर्माण किया। परन्तु वह निर्माण किया हैं और वह अनुशासित हो करके मानो गतिशील हो रही है, निर्माण करने वाला और गतिशील होना और नियमबद्ध होना बेटा! देखो, यह उस प्रभु की अनुभूति कहलाती हैं। आज जिस भी काल में ब्रह्मवेत्ता, अपने में यह निश्चय करता है कि ब्रह्म है, तो बेटा! देखो, जब जिज्ञासु अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके जो साधक है और वह साधक की कल्पना करता है कि मैं अपने आत्म कल्याण को चाहता हूँ जैसे यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो करके यज्ञ के पूर्व अपना यज्ञ का एक संकल्प बनाता हैं तो संकल्प जब बनाता है उसका जो आधार होता हैं मानो उसको निश्चय करता है कि वह वस्तु हैं, इसी प्रकार

ब्रह्मवेत्ता मानो देखो, जिज्ञासु जब ब्रह्म की आभा में रत्त होने लगते हैं तो निर्णय करते हैं कि ब्रह्म है, तो जब ब्रह्म है तो बेटा! देखो, उसकी माला उसके विज्ञान के ऊपर अथवा उसकी रचना के ऊपर वह विचार-विनिमय करता रहता है और वह विचार-विनिमय यह करता है कि ब्रह्म है तो वह मानो किस रूप में विद्यमान हैं मेरे प्यारे! देखो, जब मैं जिज्ञासुओं की चर्चाएं अथवा ऋषि-मुनियों के उस जीवन पर जाता हूँ जहाँ ऋषि-मुनि मानो अपने कल्याण के लिए नाना प्रकार के अनुष्ठान करते रहे हैं अथवा नाना प्रकार की, वह अपने में कल्पना करते रहे हैं, तो उसी प्रकार जब हम ये विचारने लगते हैं तो ऋषि-मुनियों का वह अनूठा विज्ञान, अथवा उनकी अनूठा चर्चाएं प्रायः बेटा! हमें स्मरण आने लगती हैं, और हम यह कहा करते हैं, हमारा तो सदैव एक मन्तव्य रहा हैं एक विचार रहा है कि क्या हम अपने में मानो देखो, अपनेपन को और अपनी आभा में, उस ब्रह्म को अपने में दृष्टिपात करें।

आज संसार में जो भी मानव मेरे प्यारे! मुझे वह काल स्मरण आता रहता हैं जिस काल में बेटा! देखो, ब्रह्मवेत्ता अपने में एकत्रित हो करके, यह निर्णय करते रहते थे कि ब्रह्म है तो मानो देखो, ऐसा जो मानव जानता है कि ब्रह्म है तो उसके लक्षण क्या हैं? तो मेरे प्यारे! देखो, उसके लक्षणों का वर्णन करने वाला मानो देखो, जिज्ञासु क्या, ब्रह्मवेत्ता उसका लक्षण करता हैं जो ब्रह्म को जानता है वो लक्षण का वर्णन करता है वह कहता है कि वह ब्रह्म का, यह जो ब्रह्म को यह स्वीकार करता है कि ब्रह्म है तो मानो देखो, है का अभिप्रायः क्या ब्रह्म है, ऐसा कह करके मुनिवरों! देखो, उसका निर्णय करना है प्रारम्भ करता है और वह कहता है कि ब्रह्म, उसका जो जानने वाला, उसका लक्षण यह है क्या ब्रह्म वृतं मानो देखो, जो अपना मानवीय शरीर हैं उसके ऊपर उसकी आस्था नही रहती, मानो देखो, उसमें जो क्रियाकलाप हो रहा हैं, उसमें जो मानो तरंगों का उद्घोष हो रहा है उद्बुद्ध हो रही हैं मानो उन तरंगों के ऊपर वह विचार करता रहता है और अपने से बाह्य जगत में मानो देखो, वह किसी का दर्शन नही करता अपने मानवीय जगत में ही वह ब्रह्म का प्रायः दर्शन करता है और जब वह ब्रह्म का, इस प्रकार दर्शन करता है तो मुनिवरों! देखो, दर्शन की आभा में रत्त हो करके मानो यह विचारता है, कि-प्रभु तो मेरा इतना महान हैं क्या मेरे शरीरों में, जो तरंगें मानो तरंगित हो रही है मानो देखो, जो ब्रह्म जो चैतन्य देव हैं, वही मेरे में वास कर रहा है और मानो मैं क्या हूँ मेरा पन, हमारा पन होना चाहिए, मैं का प्रतिपादन करना यह प्रकृति का आवेश आ जाता है परन्तु जब वह यह कहता है कि हम जब यह मानो देखो, सर्वत्र जगत समाहित हो जाता है हममें मानो देखो, हमारा कुटुम्ब, हमारा समाज, हमारा राष्ट्र, हमारा संसार मानो देखो, हममे सब उस परमपिता परमात्मा के अंग-संग मानो मैं का लोप प्रारम्भ हो जाता है तो मेरे प्यारे! देखो, यह लक्षण ब्रह्मवेत्ता, जो ब्रह्म को ही स्वीकार करत है आज जो देखो, नाना प्रकार के धर्मों की चर्चाएं मानो देखो, धर्म आता हैं, तो धर्म की मानो देखो, एक ही चरण कहलाता है, वह कहता है हमारा यह धर्म हैं हमारा यह धर्म, मानो देखो, हमारा धर्म एकोकी वचन कहलाता हैं, एक ही वचन मानो देखो, धर्म है, नाना रूपों में मानो देखो, धर्म उसके लिए गुणों का वर्णन कहलाता हैं नाना रूपों में तो गुणों का वर्णन है, और धर्म केवल देखो, एकोकी वचन माना गया हैं जैसे मानो देखो, इससे पूर्व काल में, हम तुम्हें काला के सुमेरू की चर्चा कर रहे थे मानो देखो, यह सुमेरू एक धर्म कहलाता हैं उसके नाना लक्षण है और नाना उसकी जो धाराएं है वह एक ही मानो देखो, एकोकी करण हो करके, एकोकी रूप में मानो देखो, परिवर्तित होती रही हैं एक ही रूप में वह परिवर्तित हो करके और समाहित हो जाती है, तो मेरे पुत्रों! देखो, आज मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, तुम्हें यह वर्णन करने के लिए आया हूँ क्या परमपिता परमात्मा है ऐसा जो मानव निश्चय कर लेता हैं वह मानव संसार में किसी भी प्रकार की रूढ़ियों में परिणत नही होता, जो यह स्वीकार करते है कि ब्रह्म है तो मानो देखो, वह उस गुरुडम्बावाद में भी अपना विश्वास नही करता है कि वह अपने को महापुरूष या ब्रह्म अपने को घोषित कर देता है क्योंकि ब्रह्म वह मानव अपने को घोषित करता है जो मानो

देखो, ब्रह्म को नही जानता और जो यह कहता है कि ब्रह्म है, जब उसे यह निश्चय हो जाता है कि ब्रह्म है वही इस शरीर में रमण करता हुआ, वह आत्मा यह नही कहता कि मैं ब्रह्म हूँ अथवा मैं मानो देखो, ब्रह्म से भी तो दूरी तो उच्चारण कर सकता है, कि ब्रह्म से मैं दूरी नही हूँ मैं ब्रह्म के अंग संग विद्यमान हूँ और जो यह कहता है कि करूप हूँ जो यह कहता है कि मैं ही ब्रह्म हूँ तो मानो देखो, मैं ब्रह्म कहने वाला परमपिता परमात्मा के राष्ट्र में मानो देखो, वह अपने में अभिमानी कहलाता है।

माता का ममतव

तो मेरे प्यारे! देखो, मैंने कई काल में यह वर्णन करते हुए यही मानो देखो, हमारे यहाँ, परम्परागतों से जो इस प्रकार के सिद्धान्तों की प्रायः चर्चा होती रही हैं, दोनों प्रकार की आभाओं में मानव रमण करता रहा हैं, जब मानव बेटा! ब्रह्म को प्राप्त हो जाता है और यह निश्चय कर लेता है, कि ब्रह्म है, परन्तु ब्रह्म है का जब एक उद्घोष करता हैं तो मानो देखो, वह जब उसके अंग-संग परिवर्तित अंग-संग जाता हैं, तो मेरे प्यारे! देखो, बाह्य जगत, उसका नष्ट हो जाता हैं और बाह्य जगत जब नष्ट हो जाता है तो आन्तरिक जगत में बेटा! ब्रह्म है मानो देखो, ऐसा स्वीकार करता हुआ, वह ब्रह्म के आँगन में, जैसे माता का पुत्र, जब यह स्वीकार मानो देखो, जब क्षुधा से पीड़ित होता हैं, तो क्षुधा से पीड़ित होता है तो रूदन करता है, तो माता का अन्तर्हृदय है वह बालक जब तक माता का हृदय बना रहता हैं, तो माता अपनी लोरियों का पान करा देती हैं और जब लोरियों का पान करा देती हैं तो मानो देखो, उस बालक की क्षुधा और माता की लोरियां दोनों का एकोकीकरण हो जाता हैं वह अपनी क्षुधा को समाप्त कर देता है और माता अपनी ममता को पूर्ण कर देती है ममता और बालक की क्षुधा का दोनों का एकोकीकरण हो जाता हैं और जब दोनों का एकोकी करण हो जाता हैं तो मानो देखो, वह माता का हृदय है, माता के हृदय से, उस हृदय का समन्वय रहता हैं और जब यह माता यह स्वीकार करती है कि यह मेरा पुत्र प्रबल हो गया हैं वह क्षुधा मानो बाह्य जगत और देखो, पृथ्वी के अंग से मानो आलिंगन करता हुआ, अपनी क्षुधा को समाप्त कर देता हैं।

तो मेरे प्यारे! देखो, जितना वह जिसके निकट होता हैं उतना ही उसका एकोकीकरण हो जाता हैं इसी प्रकार ब्रह्म की आभा में जो रत्त रहने वाला हैं मानो वह निश्चय करता है, कि मैं ब्रह्मे जब मुनिवरों! देखो, वह मानव ब्रह्म में रमण करने लगता हैं, तो बाह्य जगत बेटा! उसका शान्त हो जाता हैं जैसे माता का पुत्र मानो बाह्य जगत से उसका कोई समन्वय नही रहता, वह माता के अंग संग अपनी क्षुधा को पूर्ण करता है इसी प्रकार जो आत्मवेत्ता मानो देखो, ब्रह्म को जानता है, वह मुनिवरों! देखो, उस परमपिता परमात्मा के आनन्द में अपनी क्षुधा को शान्त कर लेता हैं और जब वह क्षुधा शान्त हो जाती हैं। मेरे प्यारे! देखो, बाह्य जगत से उसका कोई समन्वय नही रहता वह अपने को ब्रह्म नही उच्चारण कर सकता। क्योंकि वह तो ब्रह्म में मानो समाधिष्ट हो गया हैं और ब्रह्म में जब वह समाधिष्ट हो जाता है तो बाह्य जगत से मुनिवरों! देखो, उसका विच्छेद हो जाता हैं वह अपने को ब्रह्म नही उच्चारण कर सकता।

तो मेरे प्यारे! देखो, एक ब्रह्म की आभा में जो मानव सदैव रत्त रहता है वही मेरे पुत्रों! देखो, ब्रह्म को आभा में रत्त करता हुआ, इस सागर से पार हो जाता है।

ब्रह्म का राष्ट्र

तो आओ, मेरे पुत्रों! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ विचार यह चल रहा हैं क्या ब्रह्म का जो राष्ट्र वह कितना मानो देखो, अनूठा हैं मानो यह भी ब्रह्म के राष्ट्र में ही मानव बेटा! अपनी कल्पना करता रहता हैं जैसे बाह्य राष्ट्र हैं बाह्य राष्ट्र में अनुशासन की आवश्यकता है क्योंकि बाह्य राष्ट्र का निर्माण जिस भी काल में हुआ है वह

उस काल में हुआ है जब उसके अनुशासन से मानव वंचित हो जाता है और अनुशासन से जब विहीन हो जाता है तो उस काल में बेटा! देखो, बुद्धिमान जो वेद के मर्म को, अनुशासन के मर्म को जानने वाले हैं अथवा जो ब्रह्म की कृति को जानते हैं वह एकाग्र विद्यमान हो करके जब बेटा! देखो, अनुशासन की चर्चा करते हैं जब वह अनुशासन की चर्चा करते हैं क्या अनुशासन कैसे हमारा बनेगा तो अनुशासन की चर्चाएं करने लगते हैं तो अनुशासन में कहते हैं ब्रह्मचारी को कहते हैं हे ब्रह्मचारी! तू आ गुरु के संरक्षण में विद्यमान हो प्रजा और राजा दोनों सुगठित हो करके मानो देखो, ऊँची-ऊँची कल्पना करते हैं तो मानो देखो, मानव का जितना भी अनुशासन हैं वह इस बाह्य जगत में मानो देखो, अपभ्रंश हो जाता हैं उसकी अवृत्तियाँ बन जाती हैं परन्तु देखो, मानव के शरीर में, भी जो परमपिता परमात्मा ने मानो देखो, निर्माणवेत्ता ने, जो भी निर्माण कर दिया है अथवा जो भी अनुशासन क्रिया कलाप इन्द्रियों का है वह मानो देखो, परमपिता परमात्मा का अनुशासन बद्ध किया हुआ हैं उसको कोई भी मानव विच्छेद नही कर सकता और जब भी मानव बाह्य जगत में मानो देखो, इन्द्रियों पर अनुशासन परमपिता परमात्मा अनुशासन से विहिन हो करके कोई भी कल्पना करता हैं उसी काल में मुनिवरों! देखो, वह इन्द्रियाँ उसकी पुकारने लगती हैं वह इन्द्रियाँ परमपिता परमात्मा के ज्ञान से, विवेक से जब वंचित हो जाती है तो मानव का हृदय मानो देखो, एक व्याकुल हो जाता है और कहता है कि मैंने संसार में, कुछ नही किया मैं तो मानो ऐसे ही संसार में आया हूँ ऐसा ही न आया हूँ ऐसी कल्पना करने लगता हैं।

तो मेरे प्यारे! देखो, यह कौन ऐसा हो रहा हैं क्योंकि बाह्य जगत जब स्वार्थपरता में आ जाता हैं इन्द्रियाँ स्वार्थपरता में आ जाती हैं, प्रकृतिवाद में आ जाती हैं, जड़वत में, तो चेतना का जितना समन्वय होना था, उतना न हो पाया, परन्तु चेतना से जितना विच्छेद होता गया, उतना ही मानव के हृदय में नाना प्रकार की अशुद्ध विडम्बना का जन्म होता रहा। उस जन्म का अभिप्रायः यह हुआ, क्या मानो देखो, अपने-अपने कर्तव्य से दूरी चला गया। तो मेरे प्यारे! देखो, विचार क्या हो रहा है, मैं तुम्हें यह उच्चारण कर रहा हूँ कि मानव को अनुशासित रहना चाहिए, मानव को अनुशासन में रहना चाहिए, अनुशासन किसे कहते हैं, अनुशासन कहते हैं परमपिता परमात्मा को स्वीकार करना, जो परमपिता परमात्मा को अनुशासन रूपों में स्वीकार करता हैं, तो यह जो मानव की मानव पर जो शासन करने की प्रवृत्ति हैं यह प्रवृत्ति मुनिवरों! देखो, समाप्त हो जाता है। यह प्रवृत्ति उस काल तक रहती है, जब तक हम देखो, अपने को परमपिता परमात्मा से विमुख कर लेते हैं और धर्म से अपने को दूरी कर लेते है, प्राण प्रतिष्ठा की चर्चाएं इससे पूर्व काल में हम कर रहे थे, कि मानव जब वंचित हो जाता है तो मानव भिन्न-भिन्न प्रकार की ऐसी कल्पना करने लगता है, ऐसे मानो स्वार्थपरता में आ करके, अपनी आभा से दूरी होता चला जाता है।

तो विचार-विनिमय क्या आज मैं बेटा! गम्भीर रूपों में ले जाना नही चाहता हूँ, विचार यह चल रहा है, कि मानव समाज यह जान लेता है क्या परमपिता परमात्मा है जैसे मुनिवरों! देखो, महर्षि पिप्लाद मुनि के यहाँ मानो देखो, कुछ ब्रह्मचारी जन पंहुचे, जिनमें मुनिवरों! देखो, ब्रह्मचारी कवन्धि भी थे, और ब्रह्मचारी मानो गार्गेय थे और मानो देखो, छह जिज्ञासु जब महर्षि पिप्लाद मुनि महाराज के भंयकर वनो में तप करते थे उनके द्वार पर पंहुचे तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने अप्रतं ब्रह्म की जिज्ञासा के लिए, सर्वत्र मानो ऋषि-मुनियों में गमन करते हुए महर्षि पिप्लाद मुनि के द्वार पर आये, तो पिप्लाद जी से कहा सम्भव ब्रहे क्या हे भगवन! हम आपकी शरण में आए हैं। उन्होंने कहा बहुत प्रियतम विराजो। वह विराजमान हो गये, मेरे प्यारे! वह शान्त मुद्रा में विद्यमान रहें। मेरे प्यारे! देखो, प्रातःकाल से सांयकाल हो गया, सांयकाल के समय पिप्लाद मुनि ने कहा, कहो ब्रह्मचारियों तुम्हारा आगमन कैसे हुआ है, तुम जिज्ञासु हो या ब्रह्मचारी हो या तुम देखो, श्रोत्रीय ऋषि हो? मेरे प्यारे! उन्होंने अपने में एक स्वर में

हो करके कहा क्या प्रभु! हम तो मानो जिज्ञासु हैं और जिज्ञासु बन करके आपके समीप आए हैं, उन्होंने कहा कि यह तो सर्वत्र ब्रह्माण्ड में,हमने भ्रमण किया है और परमात्मा के सम्बन्ध में, अपने सम्बन्ध में हमने चिन्तन और मनन किया है हमने यह तो स्वीकार कर लिया हैं, क्या ब्रह्म है, परन्तु देखो, ब्रह्म का तो निश्चय हो गया है, कि ब्रह्म है, जब मानो देखो, जब उन्होंने कहा कि हे भगवन! हम एक समय छ जिज्ञासु मानो देखो, समुद्र के तट पर जहाँ मुनिवरों! कहां जहां देखो, गंगा, यमुना, सरस्वती का समन्वय होता है और वह समुद्रो में जहाँ अपनी आभा में रत्त हो जाते है और अपने को जिज्ञासु अपने को स्वीकार करके यह निश्चय कर लिया क्या, ब्रह्म है, वह ब्रह्म कैसे निश्चय हुआ? हमें समुद्रों के मानो देखो, गर्भ में जाने से, जब हम समाधि में, जब हम मन को और प्राण के सन्निधान से मानो रमण करते हुए, पंच महाभूतों में गति करते हुए, जब मानो देखो, हम समुद्र की सतह में जब देखो, रमण करने लगे, तो समुद्र अपनी आभा में निहित रहता है। परन्तु देखो, उन्होंने वह जो तरंगों का वाद है वह एक दूसरे से मानो देखो, उनका समन्वय रहता है इसी प्रकार एक शब्द हैं, दूसरे शब्द से उसका समन्वय रहता हैं। मानो देखो, हम ये रचना को दृष्टिपात कर लिया, एक समय मानो देखो, हम अपने में, यह अनुभूति करने लगे, कि माता के गर्भस्थल में हमारा निर्माण कैसे हुआ है, और वह निर्माण कौन कर रहा हैं तो मानो देखो, माता के समीप पंहुचे, तो माता से कहा हमने क्या हमारा निर्माण किसने किया है? तो उन्होंने कहा कि हम नही जानते कौन निर्माण किया, किसने, पिता से कहा हे पितर! आप मानो देखो, माता-पिता के दोनों का सन्निधान मात्र से हमारी रचना हुई है उस रचना के मूल में आप हैं? तो पिता ने कहा कि नही, हम उसके मूल में नही हैं। हम तो केवल मानो देखो, कर्तव्य के रूप में तो विद्यमान है, परन्तु देखो, निर्माण के, गर्भ में हमारा कोई समन्वय नही बन रहा है। तो मानो इससे हमें यह निर्णय हुआ, क्या ब्रह्म कोई है मानो देखो, जिसके गर्भ में निर्माण होता हैं, उस माता को ज्ञान नही, जिस पिता के सन्निधान मात्र से निर्माण हुआ है, उस पितर को कोई ज्ञान नही मानो, देखो, इससे यह प्रतीत हुआ, क्या ब्रह्म कोई वस्तु हैं, जब हम मानो देखो, भ्रमण करते हुए, आचार्य के कुल में पंहुचे जिन्होने, हमारी बाल्यकाल में दीक्षा दी, हम दीक्षित के द्वार पर पहुंचे, आचार्य के चरणों को स्पर्श करके कहा, कि भगवन! कि आप हमें शिक्षा प्रदान करने वाले हैं, उन्होंने कहा कि मैं देखो, दार्शनिक रूपो में तो मैं परमपिता परमात्मा की दृष्टि में या राष्ट्र में उसके राष्ट्र में, दृष्टि से मैं कोई शिक्षक नही हूँ, उन्होंने कहा क्यों? क्योंकि यह तो केवल निमित कहलाता है। मानो तुम सम्पर्क में आए तुम्हारी अन्तःकरण का जो ज्ञान है उसको हमने बाह्य जगत के ज्ञान से उसका समन्वय कर दिया हैं। परन्तु जो तुम्हारा आन्तरिक ज्ञान हैं जो तुम्हारा आध्यात्मिक ज्ञान है, परन्तु उसको देखो, यदि तुम उसको योगाभ्यास के द्वारा देखो, ब्रह्मवेत्ता के समीप पंहुचोगे, तो तुम्हें वह ब्रह्म का ज्ञान करा देगा, क्योंकि ब्रह्म तुम्हारे अन्तःकरण में विद्यमान हैं जब तुम मानो देखो, विज्ञान के, विज्ञानवेत्ताओं के समीप पंहुचोगे तो मानो देखो, विज्ञानवेत्ता तुम्हें विज्ञान की तरंगों में ले जाता हैं और वह वैज्ञानिक बना देता है क्योंकि विज्ञान, उससे पूर्व सूक्ष्म रूप से तुम्हारे अन्तःकरण में विद्यमान हैं तो मानो देखो, उस अन्तःकरण के, उस विज्ञान को वैज्ञानिक देखो, बाह्य जगत में ला देता हैं, वह जो विज्ञान यदि अन्तःकरण में नही होगा, चित्त के मण्डल में नही होगा, मनस्तव नही होगा तो मानो तुम बाह्य जगत में उस विज्ञान को नही ला सकोगे।

तो मेरे प्यारे! ऋषियों ने यह वर्णन किया क्या विज्ञानवेत्ता क्या देखो, शिक्षालयों में आचार्य उनके अन्तःकरण के अंकुरों को जागरूक कर देते है उसका बाह्य जगत में मानो वृत बन जाता है जब उस सर्वत्र को हम समेट करके, एक मानो सीमित हो जाते है अपने में कटिबद्ध हो जाते हैं तो देखो, मन, बुद्धि, चित्त अहंकार इनमें सबका ज्ञान का कोष मानो विद्यमान रहता हैं और जब हम सिमट करके मानो देखो, एकोकीकरण ब्रह्म में

समाधिष्ट हो जाते है तो प्रकृति का जितना ज्ञान है वह हमसे ओझल हो जाता है ब्रह्म के गर्भ में हम प्रवेश करते हैं तो मानो देखो, ब्रह्म ही ब्रह्म हमें दृष्टिपात आता हैं तो मेरे प्यारे! वह इस प्रकार की उन्होंने अपना वर्णन किया तो पिप्लाद मुनि से कहा कि भगवन! हमें यह निश्चय हो गया है कि ब्रह्म है, क्योंकि देखो, हमने यह विचारा था एक समय, क्या माता ही ब्रह्म है जब माता से प्रश्न किया तो माता भी ब्रह्म नही प्रतीत हुई, उन्होंनें हमने विचारा क्या पिता ही ब्रह्म है क्योंकि पिता के देखो, वीरतव से हमारे वीरतव का निर्माण होता हैं, तो मानो देखो, वह भी हमें मानो देखो, वह ब्रह्म दृष्टिपात नही, आए अहा आचार्य के कुल में पंहुचे क्योंकि वह जीवन देते हैं माता-पिता तो जन्म ही देते हैं शरीर को, परन्तु देखो, वह जीवन देते हैं उन्होंने कहा मैं जीवन देता हूँ। परन्तु जैसे देखो, पृथ्वी के गर्भ में एक अंकुर मानो पृथ्वी के गर्भ में विद्यमान करते हैं मानो देखो, सर्वत्र जल अग्नि वायु से जा करके देखो, उसमें एक अंकुर उत्पन्न हो जाता है वह अंकुर वह मानो देखो, एक पृथ्वी में जैसे पृथ्वी में उस अंकुर को जीवन दिया है और जीवन को मानो धारण करने वाला मानो देखो, बाह्य जगत है शिक्षा प्रद बन गया है इसी प्रकार मानो देखो, यह वृक्षां ब्रह्मा वाचाः ऐसे ही देखो, यह वृक्ष बन जाता है मानो देखो, वृक्षं ब्रह्मा जीवन देने वाला आचार्य ने कहा क्या मैं इस प्रकार का जीवन दे देता हूँ मानो जैसे एक मानव वाटिका में एक सेवक रहता है वह जल और उसको ताप दे करके वृक्ष को उन्नत करता है इसी प्रकार वह फलदायक बन जाता है मानो देखो, ऐसे मैं भी जैसे पृथ्वी अंकुरों में जीवन या देखो, वाटिका में एक सेवक रहता हैं परन्तु वह स्वयं अपने में अप्रतियां प्रदान करता रहता हैं, ऐसे ही मैं मानो देखो, तुम्हें जीवन देता हूँ परन्तु मैं ब्रह्म नही हूँ, ऐसे ही हमने जब यह विचारा कि यह जो विज्ञानवेत्ता है यही ब्रह्म हो सकते हैं जब ब्रह्मवेत्ताओं के समीप पंहुचे तो उन्होंने मानो देखो, ब्रह्मवेत्ता का विज्ञानवेत्ताओं के समीप पंहुचे, तो विज्ञानवेत्ताओं से कहा, कि तुम ब्रह्म हो उन्होनें कहा कि हम ब्रह्म क्यों होते हम तो केवल उसकी जो प्रतिभा है जो जड़वत मानो देखो, ज्ञान से शून्य जितना भी यह जगत हैं उसमें जो परमाणु एक दूसरे में आदान-प्रदान हो रहे है उन परमाणुओं को एकत्रित करते हैं उन ऊर्ज्वाओं को ले करके, यन्त्रों का निर्माण करते हुए नाना प्रकार के वाहन वरुणास्त्र अग्नेयस्त्रों का निर्माण करके हम ऊर्ध्वा को प्राप्त करा देते हैं परन्तु वह भी उन्होंने ब्रह्म की आभा कहलाती है।

ऋत सत की विद्यमानता

मेरे प्यारे! देखो, वह जिज्ञासुओं ने कहा कि-प्रभु! जब हमें यह निश्चय हो गया, हम छह जिज्ञासु इस प्रकार बहुत समय हो गया है भ्रमण करते हुए, हमें यह निश्चय हो गया है कि ब्रह्म है तो प्रभु! हम आपकी शरण में इसीलिए आए हैं। तो उन्होंने कहा पिप्लाद जी बोले कि तो तुम क्या चाहते हो? जब तुम्हें ब्रह्म का मानो देखो, यह निश्चय हो गया कि ब्रह्म है क्या तुम निर्णय दो कि तुम चाहते क्या हो? उन्होंने कहा कि-प्रभु! हम यह जानना चाहते हैं क्या मानो देखो, ब्रह्म में ऋत और सत कैसे ओत-प्रोत रहते हैं? तो मेरे प्यारे! देखो, ऋत और सत के ऊपर उन्होंने प्रश्न किया, जब यह प्रश्न किया कि महर्षि पिप्लाद मुनि ने कहा कि मेरे आश्रम का यह नियम माना गया है क्या, मानो देखो, ब्रह्मे वाचप्रह्वा इस आश्रम का यह नियम है क्या मेरे एक वर्ष होता है, एक वर्ष में तुम देखो, दिवस और रात्रि मानो एक वर्ष तुम गऊओं की सेवा करो, और गऊओं की सेवा करते हुए, जब मानो एक वर्ष हो जाएगा, जब मुनिवरों! देखो, मेरे समीप आना जो ऋत और सत जो ब्रह्म में है इसका मैं तुम्हें निर्णय दे सकूंगा।

मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने यह स्वीकार कर लिया तो उन ब्रह्मवेत्ताओं ने जिज्ञासुओं ने स्वीकार कर लिया और स्वीकार करके बेटा! उन्होंने जब जैसे ही फिर स्वीकार किया तो पिप्लाद मुनि कहते हैं पिप्लाद मुनि ने कहा क्या हे जिज्ञासुओं तुम्हें यह प्रतीत है क्या मैंने यह स्वीकार तो कर लिया है क्या मैं तुम्हें एक वर्ष में देखो, ऋत और सत का ज्ञान दूंगा परन्तु मेरा एक और इसमें प्रतिबन्धन रहता हैं उन्होनें कहा क्या यदि मैं जानता हूँगा तो तुम्हारे प्रश्नों

का उत्तर दूंगा। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा वह स्वतः ब्रह्मे मेरे प्यारे! उसमें से कवन्धि ने कहा, क्या कि-प्रभु! आप जानते हैं यदि आप जानते नही, तो एक वर्ष तक गऊओं की सेवा का मानो हमें भार नही देते, इससे हमें प्रतीत होता हैं, क्या तुम जानते हो क्या ये तो तुम्हारी जो ब्रह्म को जानने वाला हैं जो ब्रह्म के ज्ञान विज्ञान में मानो सदैव रमण करता रहता है यह तो उसकी उदारता हैं यह तो उसकी उदारता का प्रतीक हैं क्या मैं जानता हुआ भी नही जानता हूँ, यह तो भगवन! आपका ऋषितव कहलाता हैं तो मेरे प्यारे! देखो, विचार क्या जो ब्रह्म को जानने वाला हैं।

जो ब्रह्म में रमण करता है और बाह्य जगत के ऋत और सत को भी जानता हैं उसे बेटा! अभिमान नही होता, वह ब्रह्म में रमण करता हुआ, अपने को जिज्ञासु कहता है, वह ब्रह्म में अपने को स्वीकार करता हुआ अपनी अन्तरात्मा से बाह्य जगत में कहता है कि मैं तो साधक हूँ वह कहता है कि मैं तो विद्यार्थी हूँ, तो संसार में प्रत्येक मानव बेटा! विद्यार्थी बना रहता है। तो विचार क्या मेरे प्यारे! देखो, परमपिता परमात्मा के अनुशासन की मैं चर्चा कर रहा था विचार यह दे रहा था कि जितना भी यह जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है, मानो देखो, यह ब्रह्म का, एक रूप है देखो, उसी का अनुशासन है, एक परमाणु परमाणु में रत्त रहने वाला है, आज का विचार हमारा क्या कह रहा है, हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, अपने को यह स्वीकार कर लें, कि हम परमपिता परमात्मा के राष्ट्र में विद्यमान हैं, वही हमारा धिराज हैं मानो देखो, उसी के अनुशासन में मानो उस बाह्य जगत में वह पाप से रहित हो जाता है, वह पापाचार में परिणत नही होता, वह ब्रह्म को सर्वत्र स्वीकार करता है। तो मेरे प्यारे! देखो, आज का यह विचार समाप्त होने जा रहा है कल मुझे समय मिलेगा तो कल बेटा! मैं तुम्हें ब्रह्म के राष्ट्र की चर्चा करूंगा और पिप्लाद और यह जिज्ञासु क्या-क्या विचार एक वर्ष तक करते रहे यह चर्चाएं कल प्रगट करूंगा आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन पाठन।

३ ब्रह्मचर्य व्रत ०३ ०३ १९८७

जीते रहो, देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहारी वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे गुणगान मानवीय हृदय से गाता रहता है, तो मानव का हृदय अगम्य बन जाता है, और वह अपने में यह अनुभव करने लगता है कि मैं प्रभु के आनन्दमयी जगत में विद्यमान हूँ। क्योंकि जब वह अपने मनस्तव, सान्तवना, आभा को ले करके और उन तरंगों में वह रमण करने लगता है तो उनमें तरंगित हो करके वह अपने को द्यौ-लोक में पहुंचा देता है।

राष्ट्रपिता परमात्मा

तो मुनिवरों! आज हम वेदों की उस आभा में, अपने को ले जाते चले जा रहे थे, जहाँ परमपिता परमात्मा की महिमा का, प्रायः गुणगान गाया जाता है, और परमपिता परमात्मा की जो आनन्दमयी, मानो जो प्रतिभा कहलाती है, वह प्रायः उस महानता का दिग्दर्शन है, जिन दर्शनों में जाने के पश्चात, परमपिता परमात्मा की महिमा अथवा उसकी रचना के ऊपर हमारा विचार विनिमय होता रहता है। वे परमपिता परमात्मा कितना रचयिता है और वह कितना मानो राष्ट्रपिता है प्रायः मानो देखो, राष्ट्रपिता वह कहलाता है जो संसार रूपी मानो राष्ट्र को अपने में धारण कर रहा है, और इस ब्रह्माण्ड को जो संचालन करने वाला है। तो मेरे पुत्रों! आज हम परमपिता परमात्मा को यह स्वीकार करते हैं, कि राष्ट्रपिता तो वे परमपिता परमात्मा है वह मानो देखो, विष्णु बन करके, इस संसार रूपी राष्ट्र का संचालन कर रहा है। मानो जब वे प्रत्येक वस्तु मे उस का भान करने लगते है तो वही तो अनुशासन में रहने वाला है। तो मुनिवरों! देखो, वे परमपिता परमात्मा राष्ट्रपिता है।

मानव आकार का शब्द आकार

जो नाना प्रकार के मानो इस ब्रह्माण्ड में ये क्रियाकलाप हो रहे हैं, चाहे वह शब्दों के द्वारा हो रहे हैं, चाहे वह मौन हो करके हो रहे हैं, चाहे वह शब्दों के आकार के रूप में परमाणु, एक दूसरे में रत्त हो रहा है, मानो देखो, उनको अनुशासन में बनाने वाला, वह राष्ट्रपिता कहलाता है। एक मानव के मुखारबिन्दु से एक शब्द का उच्चारण होता है, परन्तु वह शब्द का आकार इतने आकार वाला है, जितना मानव का यह शरीर कहलाता है और उतने आकारों में वह परमाणुवाद भ्रमण करता हुआ, मानो उसी आकार के रूप का मुनिवरों! देखो, वह अन्तरिक्ष में रमण करता है वह शब्द अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो जाता है और विद्यमान हो करके उसी आकार का वह शब्द है और उसी आकार के शब्द में मानो देखो, चित्र विद्यमान हैं और उसी आकार का वह चित्र कहलाता है। तो मुनिवरों! देखो, कोई न कोई तो इसका विज्ञानवेत्ता है, मानो जो यह विज्ञान, जो प्रत्यक्षवाद में नहीं था, मानो था परन्तु देखो, उसका निर्माणवेत्ता तो वह मेरा देव ही कहलाता है।

मेरे प्यारे! यह कैसा अनुशासन में जितना उसका क्रियाकलाप होता है और उतनी ही मानो देखो, वह गतियों में रत्त होता रहता है, तो वह कौन है ऐसा? वह कौन कर रहा है? मानो वही तो वह मेरा देव परमपिता परमात्मा कहलाता है मेरे प्यारे! नाना प्रकार की वनस्पतियों का रस है जो नाना प्रकार के मानो देखो, अन्नाद में विद्यमान है। वह चाहे मानव हो, चाहे कोई भी प्राणी मात्र हो, परन्तु देखो, इनमें सबमें एक ही रूप का वनस्पतियों के रस का निर्माण होता रहता है, और उन्हीं रसों के द्वारा मानो देखो, इस संसार की रचना होती रहती है। वह मेरा प्यारा प्रभु कितना विज्ञानवेत्ता है अथवा वह नियन्त्रण में है और उसी गति से वह गतिवान है, मानो देखो, उसी

प्रकार से उसका क्रियाकलाप हो रहा है, तो वह निर्माणवेत्ता निर्माण कर रहा है परन्तु देखो, उस परमपिता परमात्मा को कोई उद्गीत गाने लगे, तो बेटा! गाया नहीं जाता। वह इतना अनूठा है, इतना विचित्र है कि उसके गान गाने में मानव की वाणी मौन हो जाती है, नेत्र दृष्टिपात करना शान्त कर देते हैं, श्रोत्र बेटा! शब्दों से वंचित हो जाता हैं। तो विचार क्या, मानो देखो, ऐसा अनुपम, ऐसा भव्य यह जगत है जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से बेटा! अन्वेषण, अनुसन्धान करता रहता है।

गौ नाम का स्वरूप

मेरे प्यारे! आओ, मैं तुम्हें इसी क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ जहाँ बेटा! महर्षि पिप्पलाद मुनि के द्वारा जिज्ञासु जाते हैं। मेरे प्यारे! देखो, जब वे जिज्ञासु जब मानो देखो, उन्होंने एक निर्णय कर लिया, एक अनुसन्धान करते हुए, और परमपिता परमात्मा को राष्ट्रवेत्ता स्वीकार करते हुए, यह स्वीकार कर लिया कि ब्रह्म है, तो बेटा! देखो, उन्होंने कहा कि हमें एक वर्ष तक मानो देखो, गऊओं का हमें पालन करना है। बेटा! यहाँ गऊओं के दो अर्थ माने जाते हैं। एक गौ नाम का पशु होता है, मेरे प्यारे! देखो, एक गौ नाम का पशु है, और एक गौ नाम इन्द्रियों का है मानो देखो, गौ नाम पृथ्वी को भी कहा जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने यह विचारा, कि हमे गौ की रक्षा, गौ सेवा करनी है, जब मेरे प्यारे! जिज्ञासुओं को निर्देश प्राप्त हो गया कि तुम्हें गऊओं का पालन करना है, तो वह गऊओं का पालन करने लगे। तो मानो देखो, इन्द्रियों को संयम करते हुए, और आश्रम में जो गौ नाम का पशु है, उस पशु के द्वारा मानो देखो, का दुग्ध आहार करते हुए, उनकी भी वह सेवा करते थे। इन्द्रियों के ऊपर संयम का नाम उसकी सेवा है। और पशु की सेवा करने का नाम मानो देखो, गौ सेवा कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, पृथ्वी के विज्ञान को जानने का नाम मानो देखो, वह गौ सेवा कहलाती है मेरे पुत्रों देखो, ब्रह्मा वाचन्नमं ब्रह्मा व्रतम् तो मुनिवरों! देखो, गौ नाम पशु को कहा जाता है, तो मानो देखो, यहाँ प्रकरण यह कहता है, क्या गौ नाम पशु का तो होता ही है, परन्तु गौ नाम यहाँ इन्द्रियों को माना गया है। मेरे प्यारे! ऋषि ने यह कहा था कि ब्रह्मचर्य से हमे रहना है, जब ब्रह्म जिज्ञासु है तो क्या वे ब्रह्मचारी नहीं थे? परन्तु वे ब्रह्मचारी भी थे, उसके पश्चात भी मानो देखो, ब्रह्मचारी और उसे पूर्ण आदेश प्राप्त होता है कि तुम्हें गऊओं की सेवा करनी है, क्या गौ नाम जब इन्द्रियों का है, ब्रह्मचर्य से रहना है।

ब्रह्मचर्य का अभिप्रायः

तो मेरे पुत्रो! देखो, ब्रह्मचर्य का अभिप्राय यह है मैंने तुम्हे कि जो कई काल में वर्णन किया है, और यह कहा है कि गौ नाम मानो इन्द्रियों का माना है, ब्रह्मचर्य व्रत वह कहलाता है जो मानो देखो, अपने में ब्रह्म और चरि दोनों को, प्रत्येक श्वांस एक सूत्र में पिरोना है, एक सूत्र में सूत्रित करता है और माला बना करके, ब्रह्मरूपी मानो जो सुमेरू है, अथवा उसी को तो हमें एक प्रतिष्ठा में पहुंचाना है, उसी की हमें प्रतिष्ठा करनी है। तो मेरे पुत्रो! मुझे कुछ ऐसा स्मरण आता है, इनके जीवन कालों से अथवा उनके आश्रमों से यह दृष्टिपात हुआ, कि ब्रह्म की जिज्ञासा कितनी विशाल होती है और ब्रह्म की जिज्ञासा कितनी महान मानवीयता की उग्रता में परिणीत होती रही है। तो मेरे प्यारे! देखो, बेटा! एक समय वह सभी जिज्ञासु रात्रि के मध्यकाल में अपनी स्थली पर विद्यमान हो कर विचारने लगे कि हमें जो आचार्य ने यह उपदेश दिया है, कि तुम ब्रह्मचारी रहो परन्तु हमने ये कहा कि ब्रह्म की तो निष्ठा हो गई है, तो क्या हम ब्रह्मचारी नहीं हैं? तो मुनिवरों! देखो, वे ये विचारने लगे कि ब्रह्मचरिष्यम् ब्रह्मा, मेरे प्यारे! देखो वह अपने में निर्णय करने लगे, कि आचार्य ने हमें ब्रह्मचर्यव्रत के लिए क्यों कहा है। जब इतना समय हमें मानो देखो, गृह का वास किए हुए हो गए हैं, ब्रह्म की जिज्ञासा के लिए, हमने बारह-बारह वर्ष के तीन अनुष्ठान किए हैं और उसके पश्चात भी आचार्य कहता है कि तुम ब्रह्मचर्य का पालन करो, तो यह ब्रह्मचर्य क्या

है, इसके ऊपर भी तो विचारना है।

तो वह विचारने लगे, मेरे प्यारे! देखो, इतने में गार्गे ने कहा कि मेरे विचारों में तो ब्रह्मचर्य तो मानव के मन की प्रवृत्ति है। वह प्रवृत्ति प्राण में तल्लीन हो जाए या प्राण में मन तल्लीन हो जाए तो ऐसा मानो कि वह ब्रह्मचारी है। इसके पश्चात उन्होंने कहा कि हम यह भी स्वीकार कर सकते हैं परन्तु इसीलिए नहीं किया जाता कि ये प्राण भी और मन भी, यह तो एक ही सूत्र के दोनों मनके हैं। उसके पश्चात भी मन और प्राण को एकाग्र करते हुए ब्रह्म की जिज्ञासा में हमने ब्रह्म को जाना है, परन्तु ब्रह्म पिपासा में तल्लीन रहे है तो आज इस वाक् को हम कैसे स्वीकार करें? इसमें ब्रह्मचारी कबन्धि ने कहा कि आचार्य ने इसलिए कहा है कि तुम्हारा जो यह मानो यह शरीर है, यह मानो देखो, ब्रह्मचर्य से जकड़ी एक आकृति कहलाता है। ब्रह्मचर्य से और प्रकृति के सन्निधान का नाम ही मानो ब्रह्मवर्चोसि कहलाता है, इसीलिए दोनों को जानना है, दोनो को जानने का नाम उन्होंने ब्रह्मचर्यव्रत कहा है। मेरे प्यारे! देखो, इतने में सुनीति बोले कि नहीं, भगवन! यह भी विचार हमारे आंगन में नहीं आया है, क्योंकि ये तो दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। उन्होंने अपना निर्णय दिया कि मेरे विचार में तो यह है कि हम इस ब्रह्माण्ड को जान लें, और जान करके ब्रह्माण्ड और पिण्ड दोनों को जान करके दोनों का हम समन्वय कर दे तो उसका नाम ब्रह्मचरिष्यामि कहलाता है।

मेरे प्यारे! ये भी वाक् उनके आंगन में नहीं आया। विचारा कि जैसे राष्ट्र और प्रजा दोनों मानो देखो, सम्मिलित हो करके, राष्ट्र का संचालन करते हैं। प्रजा के बिना राष्ट्र शून्य है और राजा के बिना प्रजा शून्य कहलाती है। इसी प्रकार दोनों का मानो देखो, समावेश और संचालन हो रहा है। ऐसे ही मानो देखो, ब्रह्म इसमें पिरोया हुआ है, उस ब्रह्म को स्वीकार करना ही हमारा ब्रह्मचर्यत्व कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, यह वाक् पान करते हुए मुनिवरों! देखो, महर्षि अरवेतु ऋषि ने कहा कि ये भी विचार हमारे में नहीं आ रहा है, क्योंकि यह तो स्वतः हो रहा है। आचार्य ने ये सब तो हम जानते हैं, परन्तु उसके पश्चात भी आचार्य ने ब्रह्मवर्चोसि कहा है।

तो मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि मेरे विचार में तो यह आता है कि जैसे ऊर्ध्वा और ध्रुवा में प्रकृति में ये गतियां हो रही हैं, इन गतियों को ऊर्ध्वा और ध्रुवा दोनों में जानने का नाम मानो देखो, ब्रह्मचर्य व्रत कहलाता है। ऊर्ध्वा और ध्रुवा में जितनी भी गतियां हो रही हैं, जितना भी वर्णन हो रहा है मानो देखो, यह ब्रह्मचर्य व्रत कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, अन्तिम जिज्ञासु ने कहा कि नहीं ऐसा नहीं है। मेरे विचार में यह आता है कि जो श्वास पर श्वास अपनी ध्वनियां कर रहा है, मानो देखो, जैसे प्रातःकाल में सूर्य की ऊर्ज्वा आती हैं, सूर्य की किरणें आती हैं और वह सूर्य की किरणें पृथ्वी को तपायमान करती हैं और पृथ्वी नाना प्रकार के व्यंजनों वाली बन जाती है, नाना प्रकार की वनस्पतियों में नवीन ऊर्ज्वा वाला प्राण आ जाता है तो इससे मुझे यह प्रतीत होता है कि इसी प्रकार जैसे ऊर्ज्वा किरण आयी और गति कर गयी, किरण आयी फिर गति कर गई फिर आयी, पुनः गति कर गयी, ऐसे ही मानव का स्वाभाविक श्वास गति कर रहा है। मानो इस श्वास में ब्रह्म को मध्यस्थ बना करके प्राण और मन के साथ में दोनों का चिन्तन करना, मनका बनाना और मनका बना करके मानो देखो, ब्रह्मसूत्र में पिरोने का नाम ब्रह्मचर्य कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, अन्तिम निर्णय दिया, कि संसार में ब्रह्मचारी कौन कहलाता है? उसमें जो अपने श्वास की गति को जान करके, ब्रह्म को मध्यस्थ बना करके जो श्वासों के मनके बनाता है, और मनके बना करके, उसकी माला बनाता है ब्रह्म को सुमेरू बना करके माला बना देता है, मुनिवरों! देखो, वह ब्रह्मचारी कहलाता है। मेरे प्यारे! वह नाना वह बाह्य जगत में भी मनकों का निर्माण करता है।

मुनिवरों! बाह्य जगत में कैसे निर्माण हो रहा है? मेरे प्यारे! देखो, बाह्य जगत में यह जो ब्रह्माण्ड है, यह जो ब्रह्माण्ड दृष्टिपात आ रहा है इसके मानो तथ्यों को जान करके, विज्ञान के वांग्मय में प्रवेश करते हुए मुनिवरों!

देखो, अपने में जो पिरोना जानता है, प्रत्येक तरंग को मुनिवरों! वैज्ञानिक जिस प्रकार तरंगों को जान करके, मानो उसके अणु और परमाणु को जान करके, यन्त्रों को निर्माण कर देता है तो वह कहता है कि ब्रह्म के रचनामयी तथ्यों को एकत्रित करके मैंने यन्त्रों का निर्माण किया है। मानो देखो, वह जो यन्त्रों का जो निर्माण किया है, यन्त्रशाला में जो यन्त्रों का निर्माण किया है तो मैंने ब्रह्मसूत्र में एक मनका बनाया है। वह मनका तो कहलाता है जब वैज्ञानिक यह स्वीकार करता है कि यह मनका परमात्मा की एक धरोहर है और वायुमण्डल में एक एक तरंग धरोहर विद्यमान है, उस धरोहर को हमने कुछ जाना है, बाह्य जगत में उनका प्रदर्शन कर दिया है, मानो उसका जो रचयिता है वह ब्रह्म कहलाता है, वही आभा में निहित हो रहा है।

मेरे पुत्रो! जब इस प्रकार का विचार वैदिक आचार्य ने दिया, उस समय ऋषियों का अन्तरात्मा गद्-गद् हो गया। अब्रहे कृतं लोकाम् मेरे प्यारे! देखो, यह विचार होता रहा और अन्त में यह निर्णय, हो गया कि प्रत्येक श्वास का मनका बना करके मुनिवरों! देखो, ब्रह्मसूत्र में पिरोने का नाम ब्रह्मचारी कहलाता है और वह ब्रह्मचारी अपने में ब्रह्मवर्चोसि बन जाता है।

तो मेरे पुत्रों! देखो, मैं बहूत दूर चला गया हूँ, अपनी बहुत गम्भीर मुद्रा में चला गया हूँ। बहुत गम्भीर मुद्रा है। वैदिक साहित्य में इस प्रकार के जैसे यज्ञमान मानो देखो, अपना मनका बनाता है, एक समय बेटा! देखो, एक रात्रि तो समाप्त हो गई द्वितीय रात्रि आई, अध्वर्यु, उदगाता, यज्ञमान और ब्रह्मा इत्यादि यज्ञशाला के समीप विद्यमान हो गये, और विद्यमान हो करके और मेरे पुत्रों! देखो, वह जिज्ञासु बन करके यज्ञमान के समीप पंहुचें यज्ञमान ने उसका स्वागत किया। उन्होंने कहा कि भगवन!। हम इसलिए आए हैं यज्ञमान! क्या तुम जो मानो अन्न के रूप में विद्यमान हो, हम यज्ञमान के आशय को जानना चाहते हैं कि तुम यज्ञमान क्यों बने हो? ब्रह्मचारी सुनीति मुनि जो यज्ञमान बने हुए थे, उन्होंने कहा कि मैं यज्ञमान, यज्ञमान तो प्रभु! हैं जो इस संसार रूपी यज्ञशाला का निधित्व करने वाला है। मैं भी मानो देखो, अपना भौतिक याग रचा रहा हूँ। मैं आध्यात्मिक याग में प्रवेश होने के लिए, और संसार के ऋणों से उऋण होने के लिए मैं मानो देखो, यज्ञशाला में विद्यमान हूँ। उन्होंने कहा कि-प्रभु! आप यज्ञ क्यों कर रहे हैं? जो यज्ञमान कहता है कि मैं याग इसलिए कर रहा हूँ कि यह जो संसार है मानो वह परमात्मा से प्रतिष्ठित हो रहा है परमात्मा की इस संसार रूपी प्राण-प्रतिष्ठा का प्रतिनिधित्व करने वाला है। जैसे राजा राष्ट्र की आभा में अपने चरित्र की प्रतिष्ठा करता है और चरित्र की प्रतिष्ठा करता हुआ, प्रजा अपने चरित्र की प्रतिष्ठा करता हुआ राजा के चरित्र से मानो बन करके, एक राष्ट्रीय माला बना देते हैं, राष्ट्र उसी माला को ले करके मुनिवरों! देखो, प्रतिष्ठित हो जाता है।

मेरे प्यारे! देखो, विचार क्या विचार ये कि यज्ञमान कहता है, याग ब्रहे मैं यज्ञशाला में विद्यमान हूँ। जो भी तरंगे इस यज्ञ में, से साकल्य के द्वारा जो भी तरंगें मेरी भावना के साथ, साकल्य में प्रविष्ट हो करके, वायुमण्डल में जा रही है, मैं भी मानो, परोक्ष रूप में, उन देवताओं के समीप जाना चाहता हूँ, जो देवत्तमयी, श्वास लेते हैं, जो देवत्तमयी विचारते हैं, देवता तुल्य वह अपने को बना करके देवताओं की सभा में सुशोभनीय हो जाते हैं। मेरे प्यारे! देखो, जब यज्ञमान ने यह कहा तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने कहा धन्य है भगवन! यज्ञमान कहता है भगवन! मानो सबका प्रतिनिधित्व तो परमपिता परमात्मा कहलाता है, मैं ऐसे रथ को निर्धारित करना चाहता हूँ जिस रथ में विद्यमान हो करके, मैं द्यौ लोक में जा सकूं। उस रथ के जो अरे हैं वह मेरा आचरण है। मानो रथ का जो वाहन ऊर्ध्वा में गति करेगा तो वह मेरा स्वाहाः है, क्योंकि स्वाहा को इसीलिए याग का प्राण माना गया है। बेटा! देखो, यज्ञशाला में जब स्वाहा उच्चारण करता है मानो देखो, वह याग का प्राण माना गया है जिसे प्राणों की प्रतिष्ठा में, मैं प्राणो की प्रतिष्ठा उसमें मानों देखो, उसमें प्रतिष्ठित करना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, वेद का ऋषि, इस प्रकार

अपने उद्गार देता हुआ कहता है कि मेरा तो यही मन्तव्य रहा है, कि मेरे संसार के समन्वय में कोई स्वार्थपरता नहीं है। मैं तो यह चाहता हूँ कि वह जो प्रकृति का भाग है, ये चेतना मेरी भावना रूपी वृत्तियों में परिणीत हो करके, वह द्यौ लोक में छा जाए, जिससे वायुमण्डल पवित्र हो जाए।

मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने एक वाक्य और बड़ा महत्वपूर्ण कहा कि जब मानव यज्ञ में स्वाहाः उच्चारण करता है और वह तरंगें, भावना के साथ और साकल्य श्रद्धामयी घृत के साथ जब वायुमण्डल में प्रवेश होती हैं तो जितना दूषित वायुमण्डल है, जितना दूषित परमाणुवाद है, मानो देखो, उस परमाणु को वह निगलता रहता है उस परमाणु को वह निगलता रहता है और अपनी प्रतिभा को चौमुखी बना करके मानो देखो, वायुमण्डल में वह छा जाता है। तो मेरे प्यारे! विचार क्या इसीलिए हमारे आचार्यों ने कहा है कि राजा को अश्वमेध याग करना चाहिए। गौमेध, नाना प्रकार के यागों में परिणत रहना चाहिए। मेरे पुत्रो! देखो, यज्ञमान की पत्नी कहती है कि मेरा वायुमण्डल, मेरा अन्तर्हृदय, अर्न्तमुखी, जो आकाश है वह इतना महान बन जाए, कि जिससे मैं इस संसार में अपने कर्तव्यवाद में परिणत हो सकूं, और कर्तव्यवाद अपनी आभा में रत्त रहने वाला है।

तो मेरे प्यारे! विचार क्या, मैं कोई व्याख्याता नहीं हूं। मैं कोई विशेष चर्चा तुम्हे देने नहीं आया हूं, केवल विचार क्या कि छह जिज्ञासु, पिप्पलाद मुनि आश्रम में, मध्यरात्रि के पश्चात निद्रा से तल्लीन, मानो देखो, निद्रा से परे अकृतियों में रत्त होते हुए, वह अपने में इस प्रकार का विचार विनिमय करते रहते थे। विचार क्या था मुनिवरों! देखो, प्रातःकालीन याग करना, याग करने के पश्चात मानो पुनः छह जिज्ञासु अपनी स्थलियों पर विद्यमान होकर के, अपने-अपने विचार व्यक्त करने लगे। उन्होंने कहा महाराज! यह जो याग हमने किया है, इस याग को हमारे आध्यात्मिकवाद से क्या समन्वय है? तो उसमें बेटा! कवन्धि ने कहा कि ये मानो देखो, आध्यात्मिकवादी प्राणी जब आध्यात्मिकवाद में प्रवेश करता है तो वह अपने वातावरण को, अपने वायुमण्डल को अनुकूल बनाता है, जिससे मैं इन तरंगों में विद्यमान हो करके, अपनी तरंगों को तरंगित करके मानो मैं उस लक्ष्य पर पहुंच सके, जो लक्ष्य उसने बनाया है। मानो, देखो, मैं ब्रह्म को जानना चाहता हूँ या विज्ञान में प्रवेश करना चाहता हूं या मैं राष्ट्रीयवाद में प्रवेश करना चाहता हूँ मेरी विचारधारा उसके अनुकूल और चरित्र की प्रतिभा में रत्त हो जाए। तो मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचारी कबन्धि ने यह अपना वक्तव्य दिया, कि क्या मानो देखो, आध्यात्मिकवाद जब हमारा बाह्य जगत पवित्र बन जाता है, तो वही आध्यात्मिकवाद में सहायक बन करके यही, विज्ञान में प्रवेश हो करके परमात्मा के राष्ट्र को अच्छी प्रकार, समष्टि रूप में जान सकेगें। जब उन्होंने यह वाक् कहा तो ऋषि बड़े प्रसन्न हुए।

मेरे प्यारे! देखो, सुनीति ने कहा कि मैं यज्ञमान बना हूँ, मानो, प्रभु इस संसार रूपी यज्ञशाला का निर्माणवेत्ता है, मानो वह निर्माण कर रहा है, वह यज्ञ का रचयिता है, वह यज्ञमान है परन्तु हम तो केवल निमित्त कहलाते हैं। परन्तु आध्यात्मिकवाद तो हमारा जीवन है। जब परमपिता परमात्मा का और हमारे क्रियाकलापों का, दोनों का समन्वय हो जाता है तो मानो देखो, हम परमपिता परमात्मा के चैतन्यमयी, प्रकाशमयी राष्ट्र में अथवा उसके राज्य में जब अपने को स्वीकार करते हैं, तो वही हमारा आध्यात्मिकवाद है क्योंकि बाह्य जगत से उपरामता को चले गए हैं, देखो, हमारा आध्यात्मिकवाद एक लक्ष्य से मानो हम उस मार्ग के पथिक बनने जा रहे हैं, जिस मार्ग में जा करके हम सान्त्वना को प्राप्त हो सकें।

मेरे प्यारे! तृतीय जिज्ञासु ब्रह्मचारी ने कहा कि हमारे इस याग का आध्यात्मिकवाद से क्या समन्वय रहता है कि हम अनुष्ठान करते हैं, हमारा हृदय पवित्र हो जाता है और हमारे बाह्य जगत में जो देवता है, पंचीकरण जो हो रहा है वही पंचीकरण हमारे हृदय में विद्यमान है, वही हमारे शरीरों में विद्यमान हैं जब मानो बाह्य जगत और आन्तरिक जगत दोनों का समन्वय हो जाता है, दोनों से विजातीय पदार्थ नष्ट हो जाते हैं जैसे मानो देखो, प्राण

चिकित्सा वाला, जब प्राण चिकित्सा करता है, तो विजातीय प्राण अथवा जो विजातीय वायु श्वास के साथ में प्रवेश कर गया है प्राणायाम करने से मानो उसका शुद्धिकरण हो जाता हैं और वह रुग्णो को, वह विजातीय को नष्ट कर देता है, स्वच्छता को प्रदान कर देता है। इसी प्रकार मेरे प्यारे! हम जो याग कर रहे हैं, इसका आध्यात्मिकवाद यह है कि हम अपने में शुद्धिकरण करते हुए और उसी शुद्धिकरण में मानो देखो अपने में शुद्धिकरण होता हुआ, हमारे आन्तरिक जगत में जो देवता क्रियाकलाप कर रहे हैं, उनका शुद्धिकरण और प्रसन्नता वास हो जाता है, विजातीयता नष्ट हो जाती है। तो बाह्य देवता और आन्तरिक देवता दोनों के मध्य में से, विजातीय नष्ट हो गया है और सजातीय हो करके हम मानो मानो बाह्य और आन्तरिक जगत दोनों जगत का समन्वय कर लेते हैं।

मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार, जब ऋषियों ने अपना-अपना निर्णय देना प्रारम्भ किया, तो चतुर्थ जिज्ञासु ने कहा कि हम जो अपने में विद्यमान हैं, वह आध्यात्मिकवाद के लिए नहीं, हम इसलिए उसमें विद्यमान हैं कि हम सर्वत्र जगत को जान करके, ब्रह्म का दर्शन करना चाहते हैं। मानो देखो, जैसे हम निःस्वार्थ हो करके, अग्नाध्यान करके अग्नि में जब हम स्वाहाः कहते हैं, स्वाहाः यज्ञ का आत्मा बन करके और हमारी अन्तरात्मा का उद्गार उत्पन्न हो करके बाह्य जगत की प्रसन्नता और आन्तरिक जगत की प्रसन्नता दोनों मिलान करके, मानो एक ब्रह्म की आभा का जन्म हो करके हम द्यौ-लोक को प्राप्त हो जाते हैं।

तो मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषियों ने इस प्रकार अपना गम्भीर वाक् प्रारम्भ किया, तो इसमें उनका अवरोध होने लगा, मानो अपने में परिणीत हो गये, मानो देखो, उस याग का आध्यात्मिक और भौतिकवाद दोनों का समन्वय हो करके, हम ब्रह्मसूत्र में अपने को पिरो करके और ब्रह्म को सुमेरू बना करके बेटा! हम उस परमपिता परमात्मा को प्राप्त कर सकें। ऐसा सदैव हमारा मन्तव्य रहता है जिसमें देखो, भौतिक विज्ञान, आध्यात्मिक विज्ञान और दर्शन विद्यमान रहता है।

मेरे प्यारे! देखो, राजा, इसलिए राष्ट्र का निर्माण करता है कि मैं अपनी प्रजा का शुद्धिकरण कर सकूं, परन्तु देखो, राजा जब अपना शुद्धिकरण कर लेता है आहार में, व्यवहार में तो प्रजा भी आहार और व्यवहार में अपना शुद्धिकरण करके राष्ट्रीयता को सजातीय बना करके आध्यात्मिकवादी और बुद्धिजीवी बन करके, मानो देखो, उस परमपिता परमात्मा की प्रतिभा को जान करके इस सागर से पार हो जाए, यह हमारा सदैव मन्तव्य रहता है। मेरे प्यारे! देखो, मैंने कई काल में वर्णन करते हुए कहा था कि हम जब ऋषि-मुनियों के क्षेत्रों में अथवा उनकी वार्त्ताओं में परिणत होते हैं तो हमारा जीवन प्रबल होने लगता हैं। हम अपने में यह स्वीकार करते हैं कि यह उनकी कितनी महान देन है, उनके महान उद्गीतों में, हमें मानो देखो, कितना उपदेश प्राप्त होता है जिससे हम, परमपिता परमात्मा, जो महान देव है, उस राजा के राष्ट्र में हम प्रवेश हो जाएं, विष्णु बन करके हम अपना कल्याण कर सकें और जो पालन करने वाला देव है, जो हमारे अंग-संग रहता है, उसे हम जान सकें। यह हमारा मन्तव्य रहा है। विचार विनिमय क्या, हो रहा है आज का विचार क्या कह रहा है बेटा! छह के, छह जिज्ञासु अपना-अपना मन्तव्य दे रहे हैं, अपने-अपने विचार और इन्द्रियों का पालन कर रहे हैं।

बेटा! आज का विचार यह, कि हम उस परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, उस महान, जो जनजीवन को उद्गीत दे रहा है, मानो प्रबल बना रहा है, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते हुए, अपने में निश्चय कर लें बेटा! जो साधक जन होते हैं साधक वही होता है जो बेटा देखो, परमपिता परमात्मा के अनुशासन से अपने विचारों को गूंथ देता है, अपने विचारों की माला बना देता है। जैसे यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में मानो देखो, स्वाहाः की माला बना देता है, प्रत्येक वेदमन्त्र के साथ में जो ज्ञान और विज्ञान है, उन तरंगों के साथ में स्वाहाः कह करके परमपिता परमात्मा के राष्ट्र में प्रवेश करना चाहता है।

तो आओ मेरे प्यारे! आज का विचार क्या? आज के विचार उच्चारण करने का अभिप्राय ये, कि जब तक मानव यह स्वीकार नहीं करेगा, कि मैं परमात्मा के राष्ट्र में हूँ, परमात्मा राष्ट्रपिता है, मानो सर्वत्र प्राणी उसकी प्रजा हैं, जब तक यह स्वीकार नहीं करेगा, तब तक कोई भी साधक संसार में अपनी साधना को पूर्ण नहीं कर सकता। जब तक प्राण और मन का मनका बन करके, ब्रह्मसूत्र में श्वास के साथ में मनका नहीं पिरोया जाता, तब तक मानव की वाणी का, विचारो का शुद्धिकरण नहीं होगा और जब तक शुद्धिकरण नहीं होगा तो बेटा! ब्रह्म को कैसे प्राप्त करेंगे।

आज का विचार हमारा यह कह रहा है कि हम स्वीकार करें कि परमपिता परमात्मा राष्ट्रपिता है और वह मानो देखो, जन-जन में विद्यमान रहता है, वह कण-कण में विद्यमान है, वह जल-आपों की तरंगों में, वायु तरंगों में, एक-एक शब्द के रूप में अनुशासन कर रहा है और वह अनुशासनवेत्ता है। उसका अनुशासन बड़ा विशाल है, बड़ा अनुपम है, बड़ा गम्भीर कहलाता है। इसके ऊपर हम प्रायः विचार विनिमय करते रहते हैं। आज का विचार यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते हुए इस संसार सागर से पार हो जाएं। इन जिज्ञासुओं को विचार करते-करते एक वर्ष बीत जाएगा तो यह विचार कल प्रकट करेंगे। परन्तु देखो, पिप्लाद मुनि से जो चर्चा हुई तो वह कल प्रगट करेंगें। आज का वाक् समाप्त, अब समाप्त होने जा रहा है शेष चर्चा कल प्रगट करेंगें आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन। लाक्षागृह, बरनावा ०३-०३-१९८७

४ ऋत और सत् ०४-०३-१९८७

देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना, मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महान है। मानो उसकी महानता इस संसार रूपी राष्ट्रवाद की प्रतिभा में निहित रहती है। क्योंकि हमारे, यहाँ एक-एक वेदमन्त्र में राष्ट्रवाद की चर्चाएं होती रहती है और भिन्न-भिन्न प्रकार के राष्ट्रों में अथवा राष्ट्रों की जो भिन्न-भिन्न प्रणाली हैं अथवा मानव के मस्तिष्कों की जो उपज है, वह वेद के वांग्मय में निहित रहती है। तो इसीलिए वे परमपिता परमात्मा राष्ट्रपिता हैं मानव इस नाना प्रकार के मार्ग से होता हुआ, जब वह परमपिता परमात्मा के सर्वमार्ग में प्रवेश करता है अथवा उसमें ओतप्रोत हो जाता है, तो उसे यह अनुभूति होती है कि मैं ऐसे राष्ट्रपिता के राष्ट्र में आ गया हूँ, जैसे माता का बालक, क्षुधा से पीड़ित हो करके माता की लोरियों में प्रवेश करता है तो उसकी नाना रूप में जो क्षुधा जागरूक हो रही थी वह शान्त हो जाती है।

तो इसी प्रकार जब हम परमपिता परमात्मा के राष्ट्र में विद्यमान हो जाते हैं, तो परमात्मा का जो राष्ट्र है, एक अनूठा है, मानो उसमें जाने मे पश्चात, मानव इस नाना प्रकार के बन्धनों को जो जगत है, इससे वह मानव उपराम हो जाता है, और वह सर्वत्र उसी में अपने को प्रवेश कर देता है। अथवा समर्पित कर देता है तो मेरे प्यारे! हम यह विचारने लगे, कि जब प्रत्येक मानव ये विचारने लगेगा कि यह परमात्मा का राष्ट्र है और सब हम उस परमात्मा के राष्ट्र में उसके अनुशासन में अपने जीवन को व्यतीत करना चाहिए। परन्तु जब वह उसके जीवन में और परमात्मा की जो जीवन सत्ता है, उसके मध्य से मानो अन्तर्द्वन्द्व प्रतिपादित रहे, मानो उनका बहिष्कार कर देता है तो बेटा! सजातीय विचार रह जाते हैं, सजातीय क्रियाकलाप रह जाता है और जिन सजातीय क्रियाकलापों में प्रवेश हो करके, मानव अपने में ऊंची-ऊंची कल्पनाएं, ऊर्ध्वा में कल्पना करने लगता हैं, तो आओ, मेरे पुत्रो! मैं तुम्हे विशेष विवेचना तो देने नहीं आया हूं, आज मैं तुम्हे ये विचार देने के लिए आया हूं कि मानव को, अपने को परमात्मा के राष्ट्र में स्वीकार करना चाहिए। जिस प्रकार अबोध बाल्य, माता की लोरियों को, उसकी आभा को अपना राष्ट्र स्वीकार करता है, इसी प्रकार ज्ञान और विज्ञान के मार्ग से गमन करता हुआ, वे मुनिवरों! देखो, परमपिता परमात्मा के राष्ट्र में अपने को स्वीकार कर लेना चाहिए।

तो आज में पुत्रो! विशेष विवेचना न देता हुआ, विचार यह दे रहा हूं मैं तुम्हें वहीं ले जा रहा हूँ मानो जहाँ छह जिज्ञासुओ को ऋषि पिप्पलाद ने यह आज्ञा दी कि तुम जाओ और ब्रह्मचर्य व्रत से रहो और एक वर्ष तक गऊओं का पालन करो। तो मानो अपने-अपने विचार व्यक्त करते हुए उनका एक वर्ष व्यतीत हो गया। बेटा! एक वर्ष पूर्व के अन्त माह में एक समय बेटा! छह जिज्ञासु विद्यमान हो गए और यह मनन-चिन्तन करने लगे, कि आचार्य ने हससे पूर्व एक शब्द कहा था, मानो उसका एक वर्ष होने को है और उन्होंने यह कहा कि ब्रह्मचारियों! तुम व्रत से रहो और मैं तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर दे सकता हूँ। परन्तु द्वितीय विचारों में उन्होंने यह कहा, कि मैं जानता होऊंगा तो अवश्य उत्तर दूंगा। मुनिवरों! ऋषि-मुनियों की जो बुद्धि है, वह बड़ी तपोमयी कहलाती है और वह मेधा में, जब प्रवेश कर जाते हैं, तो वह प्रत्येक वाक् को और प्रत्येक शब्द को, वह बड़ा चिन्तनमयी बना करके, मानो अपनी बुद्धि और मेधा में प्रवेश हो करके, उसके स्वरूप को अपने अन्तर्हृदय में, एक विषय बना लेते हैं। तो बेटा! उन्होंने पिप्पलाद जी के इस वाक् को ले करके, अपना एक चिन्तन का विषय बनाया।

उन्होंने कहा कि ये उसमें ब्रह्मचारी कबन्धि ने यह कहा कि मेरे विचार में तो यह आता है कि ऋषि ने यह

कहा है कि मैं जानता होऊंगा तो तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर दूंगा। तो मानो उन्होंने यह क्यों कहा? क्योंकि ऋषि-मुनियों में अभिमान नहीं होता, और वह जो भी शब्द उद्गीत रूप में गाते हैं, मानो वह उपराम हो करके गाते हैं और उसमें निष्काम कर्म होता है, हमारे यहां निष्काम कर्म की बड़ी विवेचना मानी गई है। बेटा! आदि ऋषियों ने निष्कर्म अपने को बनाया और राष्ट्र को भी यह उपदेश दिया और परमात्मा के राष्ट्र में रहने के लिए परमात्मा का उद्गीत गाया और यह कहा कि परमपिता परमात्मा किसे प्राप्त होते हैं? परमात्मा उसे प्राप्त होते हैं जो निष्कर्मवादी होता है, जो निष्कर्म करने वाला होता है। निष्कर्म कौन करता है? निष्कर्म वह महान पुरूष करते हैं जिनके हृदयों में एक विशाल, ज्ञान रूपी अग्नि जागरूक होती है और वह दूसरों के प्रति जागरूक रह करके, अपने को जगाते रहते हैं। दूसरों को जागरूक बनाना और अपने में स्वतः सतर्क रहना है, अपने में मानो जगाना और अपने में जागना है, अपने में यागाम ब्रह्मः वो जगाना है। दुसरे को जागरूक करना, अपने को जगाना है, जो अपने को नहीं जगाता है, वह दूसरों को भी नहीं जगा सकता, मेरे प्यारे! वह दूसरों को जागरूक नहीं बना सकता। इसीलिए प्रत्येक मानव का यह कर्त्तव्य है कि वह अपने को जागरूक बनाए, दूसरों को जागरूक बनाने से पूर्व अपने में जागरूक बने।

तो मुनिवरों! देखो, ऋषि-मुनियों का एक बड़ा विशाल विचार रहा है। उन्होंने कहा कि आचार्य ने हमें जागरूक बनाया है। इसलिए कहा है कि तुम उस समय गऊओं का पालन करने लगे, इस प्रकार का पालन करो, जिससे तुम्हे जिससे अभिमान न आ जाए। मानो देखो, मैं जानता हूँ और मैं जानता होऊंगा, तो उत्तर दूंगा, ये दो वाक् हो गए। मानो देखो, जैसे उनका तप और अध्ययन था, उसके अनुसार तो आचार्य जानते थे परन्तु वे यह उच्चारण करना कि मैं जानता होऊंगा तो उत्तर दूंगा, उसका अभिप्राय यह है कि वह उस वाक् को इसलिए उद्गीत रूपों में गाते रहते थे, कि मैं मानो देखो, परमपिता परमात्मा के राष्ट्र में हूँ, मैं उसकी प्रजा हूँ, और वह मेरा स्वामी है, मेरी रक्षा करने वाला है, मानो हो सकता है, कि मैं तुम्हारें प्रश्नों का उत्तर न दे सकूं। मेरी बुद्धि भ्रमित हो जाए, मैं सुषुप्ति में चला जाऊं, जागरूक न रह सकूं, तो इसलिए मानो देखो, मैं जानता होऊंगा, तो तुम्हारें प्रश्नों का उत्तर दे सकूंगा।

मेरे प्यारे! इसका अभिप्राय यह हुआ, कि मानव को अभिमान नहीं करना चाहिए। ज्ञान हो, ज्ञान के साथ में विवेक हो, विवेक के साथ में तप हो। तप, ज्ञान और विवेक यह तीनों एक ही सूत्र के मनके कहलाते हैं। उन्होंने यह वाक् इसलिए कहा कि ऋषि और तपस्वी जो होते हैं वे निरभिमानी होते हैं, वे परमात्मा के विषयों को, ऐसे अपने में ओझल कर देते हैं, जैसे मानो देखो, मेघों में विद्युत अपना प्रकाश देती है, मेघों को तपाती है परन्तु मेघों में अपने को ओझल कर लेती है। इसी प्रकार देखो, मानव परमात्मा के विषय में अपने को ओझल कर लेते हैं। तो विचार-विनिमय क्या? पुत्रों! एक वर्ष तक मौन विचार चलता रहा और ये ब्रह्मचारी कबन्धि ने कहा कि वास्तव में आचार्य सुयोग्य हैं, यह पूज्य हैं, मानो निरभिमानी हैं।

मेरे प्यारे! देखो, जब एक वर्ष समाप्त होने वाला था, सब जिज्ञासुओं ने अपनी यह विचारधारा बनायी कि कैसे वे हमें जागरूक बनाएगें भी तो गऊओं का पालन करते हुए, गऊओं को अपने में धारयामि बनाते हुए, उनका दुग्धाहार करते हुए, हमारे यहां बेटा! दो प्रकार का दुग्ध आहार होता है एक तो भौतिक होता है, जिससे शरीर की पालना-पोषणा होती है, मानो वह तो पशु माना गया है। उस गौ नाम के पशु की रक्षा करना है। मानो देखो, एक है जो इन्द्रियों का जो रक्षक है, इन्द्रियों की रक्षा करनी है। रक्षा का अभिप्राय यह है कि प्रत्येक इन्द्रिय का जो विषय है, मानो देखो, उसका जितना भी ज्ञान है, विज्ञान है, उस ज्ञान और विज्ञान को जान करके, हमें क्रियाशील बनाना है और उनका एक साकल्य बनाना है, एक साकल्य बना करके और मानो देखो, यज्ञशाला में उसकी

आहुति देनी है, मेरे प्यारे! देखो, स्वाहाः कहना है। जैसे यज्ञशाला में यज्ञमान, नाना प्रकार के साकल्य को एकत्रित करता है, श्रद्धामयी घृत को ले करके, मानो देखो, वह अपने अन्तर्हृदय से उसको स्वाहाः उच्चारण करता है तो उस यज्ञमान की माला बन करके रहती है। मेरे प्यारे! जैसे मानव चक्षु प्रकाश के आश्रित रहता है, मेरे प्यारे! देखो, रसना स्वादों के रसों के आश्रित रहती है, त्वचा प्रेम और स्पर्श की आभा बन करके रहती है, इसी प्रकार, प्रत्येक इन्द्रियों का जो विषय है, उन सबका समावेश हृदय में माना गया है। हृदय में यह केन्द्रित हो जाते हैं और सबका साकल्य बन करके हृदय ही उनका कोष कहलाता है। मानो हृदय ही, उनमें समाहित हो जाता है, और हृदय में वह साकल्य समाहित हो करके, मेरे प्यारे! देखो, यज्ञमान इस प्रकार अपने हृदय को बना करके आहुति देता है स्वाहाः रूपी शब्द पर, साकल्य की तरंगें बन करके, अग्नि को अपना स्वाहा बना करके, द्यौ लोक को प्राप्त हो जाते हैं और द्यौ लोक से जो यज्ञमान चाहता है, हम देवताओं से वही प्राप्त कर लेता है। मेरे प्यारे! वही उन्हीं को प्राप्त होता है।

राम द्वारा वाजपेयी याग

हमारे यहाँ नाना प्रकार के यागों में, मुझे बहुत-सा काल स्मरण आता रहता है। हम तुम्हें ले जाना नहीं चाहते हैं, जब हम साहित्य में जाते हैं, तो राष्ट्र का राजा, जब अपने यहाँ याग करता है तो उसमें महानता की एक प्रतीति होने लगती है। मुझे स्मरण आता रहता है, भगवान राम ने त्रेता के काल की यह वार्त्ता है। भगवान राम ने जब लंका को विजय करके अयोध्या में प्रवेश किया तो उसके पश्चात बारह वर्ष का उन्होंने तप किया और तप करने के पश्चात राष्ट्रपिता बने, जब राष्ट्रवेत्ता बने तो कुछ समय तक वह राष्ट्र का पालन करते रहे परन्तु कुछ समय के पश्चात उनके राष्ट्र में एक अकाल पड़ गया जल प्लावन आ गया और वह भयंकर अकाल था। प्रजा मानो देखो, वह कैसा पण अकाल पडा सब ओर जल प्लावन आ गया। तो मुनिवरो! राम ने यह विचारा, कि अब मैं क्या करूं? मानो देखो, माता अरून्धती और वशिष्ठ दोनों विद्यालय में ब्रह्मचारियों को अध्ययन कराते रहते थे, मेरे प्यारे! देखो, ज्ञान और विज्ञान की उड़ाने उड़ाते रहते। राम और मुनिवरों! देखो, उनकी देवी सीता, दोनों ने भ्रमण करते हुए मेरे प्यारे! देखो, आचार्यकुल में प्रवेश किया। माता अरून्धती और वशिष्ठ ने उनका आदर किया उन्होंने कहो भगवन! तो राम ने कहा कि-प्रभु! आपको प्रतीत नहीं है कि हमारे राष्ट्र में अकाल हो रहा है। उन्होंने कहा कि बहुत प्रिय राम! तुम क्या चाहते हो? राम ने कहा यह अकाल नहीं रहना चाहिए, यह पण अकाल समाप्त होना चाहिए। उन्होंने कहा बहुत प्रिय।

मेरे प्यारे! महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने ये वार्त्ता प्रकट करते हुए यह कहा था सम्भवं ब्रह्मा ऋतं देवा मानो देखो, ये कहा कि तुम एक याग करो। मानो उन्होंने अग्निष्टोम याग को त्याग करके वाजपेयी याग किया और ऋषि ने पन्द्रह दिवस तक उनके हृदय को हृदयग्राही बनाया। राम और सीता, दोनों ने अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके पन्द्रह दिवस तक उन्होंने विद्या का अध्ययन किया, और उस अन्न को पान किया, जिस अन्न पर किसी का अधिकार नहीं था। मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, कि राम जैसे महापुरूष इस पृथ्वी के गर्भ ने नाना प्रकार के अन्न को उत्पन्न करके पान करते थे। एक गऊ थी जो महात्मा वशिष्ठ से उन्हें प्राप्त हुई। वह कामधेनु गऊ का, दुग्ध आहार करते थे और उस अन्न को पान करते, जो स्वयं मानो पुरूषार्थ करके उस अन्न का पान करना मेरे प्यारे! उसके पश्चात उन्होंने वाजपेयी याग किया। वाजपेयी याग करने के पश्चात मेरे प्यारे! देखो, मेघ समाप्त हो गए। वायुमण्डल में क्या, उनका विचार, उनका क्रियाकलाप स्वाहाः के साथ, द्यौ लोक में चला गया।

मेरे प्यारे! देखो, तीन प्रकार के शब्दों की मैंने तुम्हें विवेचना की है, एक शब्द भूः, भुवः, स्वः मानो भूः से मध्य लोक को ऊंचा बनाना, भुवः में रहना, निचले पृथ्वी तल को ऊंचा बनाना और मुनिवरों! देखो, स्वः लोक में

जाना जहाँ यह तीनों समाहित हो जाते हैं। तो विचार क्या? यह जो स्वः है, यह द्यौ मण्डल कहलाता है। द्यौ उसे कहते हैं मुनिवरों! देखो, जहाँ सर्वस्व प्रभु का भण्डार विद्यमान हो जाता है, अथवा स्थिर हो जाता है। वही तरंगों का भण्डार, अतिवृष्टि, अनावृष्टि के रूप में, सूर्य की किरण के साथ में, पृथ्वी की आभा, गुरूतव को ले करके मानो देखो, इसे जलमग्न करता रहता है या उष्णता में परिणत करता रहता है। तो परिणाम यह कि वह पण अकाल समाप्त हो गया। राम का अन्तर्हृदय बड़ा प्रसन्न हुआ। बेटा! हमारे विचारों का अभिप्रायः यह है विचारों का तारतम्य यह है मानव का विचार यह है कि यज्ञमान जब यज्ञशाला में विद्यमान हो तो उसे अपने विचार कैसे बनाने है। यदि वह चाहता है कि अग्निष्टोम याग के द्वारा मैं, पण अकाल को समाप्त करूं और वाजपेयी याग और उदगाता का हृदय से अग्निष्टोम के द्वारा मानो देखो, वृष्टि का संचार हो जाएं तो प्रायः वह जो हृदय है, यज्ञमान का हृदय, उदगाता का हृदय, अध्वर्यु और ब्रह्मा के हृदय से मिलान करता है उदगाता जब वेद मन्त्रों की ध्वनि को गाता है तो वह द्यौ लोक में छा जाती है। वही द्यौ लोक तो इस संसार का मानो देखो, केन्द्र माना गया है। जैसे मानव के कण्ठ का भाग, शरीर का केन्द्र माना गया है, इसी प्रकार वह भी केन्द्र माना गया है। तो विचार क्या मुनिवरों! देखो, भगवान राम ने इसी प्रकार का याग किया और यागों का कर्मकाण्ड बड़ा विचित्र है।

आज मैं विशेषता में नहीं, बेटा! बहुत दूरी चला गया हूं, मैं साहित्य में जाना नही चाहता हूं। हम उत्कृष्ट रूपों से ऋषि-मुनियों की वार्ता प्रगट कर रहे थें और विचार यह चल रहा था मुनिवरों! देखो, कि छह जिज्ञासु कल्पना कर रहे थे, वह उच्चारण कर रहे थे कि हृदय अगम्य है और मानव का हृदय, यज्ञमान का हृदय का परमात्मा के हृदय से जब मिलान होता है तो वह अपने प्रभु से जो वह अपने हृदय से चाहता है, वही उसे प्राप्त हो जाता है। तो मेरे प्यारे! वह इतना गम्भीर, इतना उद्गत और अद्वितीय विचारों वाला बन जाता है कि परमपिता परमात्मा की अमूल्यता को प्राप्त कर लेता है। तो मेरे पुत्रो! विचार देता हुआ मैं इतनी दूर चला आया हूँ गम्भीर विचारों से, मैं साहित्यों में चला गया हूं विचार यह चल रहा था कि ऋषि-मुनि अपने में अध्ययन करते हुए, वह एक समय बेटा! मध्यरात्रि के अन्तिम पहर में, महर्षि पिप्पलाद मुनि महाराज के कक्ष में पहुंचे। महर्षि पिप्पलाद मुनि महाराज जागरूक थे और अपने प्रभु से वन्दना कर रहे थे, और यह उच्चारण कर रहे थे कि हे प्रभु! तू तो वेदज्ञ है, स्वतः प्रकाश है, स्वतः मानो याग है, आध्यात्मिक हो, चाहे भौतिक हो। मानो वह इस प्रकार वह अपने प्रभु से एकान्त स्थली में, शान्त वायुमण्डल में, प्रभु के हृदय से अपने हृदय का मिलान कर रहे थे। मानो समन्वय हो करके, मानो संसार की आभा को त्याग करके मानो देखो, शून्य बिन्दु की तरंगों में अपने को शान्त करना चाह रहे थे। मेरे प्यारे! देखो, जब छह जिज्ञासुओं ने इस प्रकार ऋषि के कौतुक को दृष्टिपात किया तो बेटा! वे बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा कि ऋषि बड़े विचित्र हैं, यह सदैव चिन्तन में लगे रहते हैं और प्रभु के सान्निध्य में मानो अपने को समर्पित कर रहे हैं। इसी प्रकार हमने भी अपने को समर्पित कर दिया है।

मेरे प्यारे! देखो, इसी विचार में एक वर्ष हो गया। जब अन्तिम दिवस आया, तो छह जिज्ञासु, उस गौ-शाला को, उस गौ-स्थलि को त्याग करके मुनिवरों! देखो, ऋषि पिप्पलाद के द्वार पर पहुंचे। पिप्पलाद मुनि ने कहा, आओ, ब्रह्मचारी विराजो। वह ब्रह्मचारी एक पंक्ति में विद्यमान हो गए। सबसे प्रथम ब्रह्मचारी कबन्धि ने यह कहा कि महाराज! हम आपसे कुछ प्रश्न करना चाहते हैं? पिप्पलाद मुनि ने कहा, कीजिए भगवन! ब्रह्मचारी कबन्धि ने कहा कि-प्रभु! हम यह जानना चाहते हैं, पिप्लाद मुनि ने कहा कीजिए भगवन्! ब्रह्मचारी कवन्धी ने कहा प्रभु! हम यह जानना चाहते हैं कि ऋत् और सत् किसे कहा जाता है? ऋषि ने उसका उत्तर दिया कि प्रकृति को ऋत् कहते हैं और ब्रह्म को सत् कहते हैं। सत् का ऋत् में पिरोना और ऋत् का सत् में पिरोने का नाम, मानो यह जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है। मेरे प्यारे! देखो, यदि ऋत् और सत् नहीं होंगे, तो प्रकृति नहीं होगी, ब्रह्म की ब्रह्म

होगा, तो मानो देखो, यह रचना दृष्टिपात नहीं आएगी। हम भी तो ऋत् और सत् में पिरोए हुए हैं। मानो देखो, हम जैसे शिशु हम भी तो ऋत और सत् में पिरोएं हुए हैं माता के गर्भ में ऋत् और सत् का दोनों का समन्वय होता है। तभी तो माता अपने महान पुत्र को जन्म देती है। मानो देखो, उन्होंने अपना यह एक विचार दिया।

ब्रह्मचारी कबन्धि मौन होने लगे, तो मौन होते-होते कबन्धि ने कहा कि-प्रभु! यह जो हमने ऋत्यं ब्रह्मा यह ऋत् और सत्यमयी जगत है? उन्होंने कहा सर्वत्र जगत ऋत् और सत् में है। मानव हृदय से सकंल्प करता है और हृदय में ही वह सकंल्प समाहित हो करके, वह वाह्य रूप में आता है। और बाह्य रूप में उस संकल्प का साकार रूप बनता है और साकार रूप बन करके मानो देखो, वह उसकी क्रिया में आता है। तो आज हमें विचारना है क्या हम ऋत् और सत् को जान करके अपने विचारों को क्रिया में लाना चाहते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा क्या क्रिया तो उसी समय हो गई जब संकल्प जागरूक हो गया है और संकल्प का बाह्य रूप हो जाना यह हृदय के आन्तरिक उद्गार होते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि कहता है कि यह संसार की भी मानवीय सृष्टि का वर्णन है और यह प्रभु की सृष्टि का वर्णन है और ऋत् और सत् में यह प्रभु की सृष्टि का वर्णन है, मानो ब्रह्म का वर्णन है। यह मानवीय सृष्टि का जितना संकल्प है, इनका समन्वय बेटा! ऋत् और सत् से होता है। मेरे प्यारे! देखो, पिप्पलाद मुनि ने यह उत्तर दिया तो ऋषि बड़े प्रसन्न हुए।

द्वितीय सुनीति ब्रह्मचारी ने कहा कि हे प्रभु! हम यह जानना चाहते हैं, कि मानव किस के आश्रित रहता है? मानव किस के आधार पर मानो देखो, अपने जीवन को, व्यतीत करता है? तो ऋषि ने कहा कि मानव अपने जीवन का जो मानव अपने जीवन को निर्धारित कर रहा है, अपने को स्वीकार कर रहा है। जाने-अनजाने में मानो वह प्राण है यह प्राण ही सखा है जो संसार को निगलता रहता है। बेटा! मानव नाना प्रकार का आहार करता है। आहार के पश्चात प्राण ही व्यवहार करता हैं क्योंकि उसमें क्रिया है, क्रिया के बिना मानो देखो, व्यवहार अथवा वह अपने में गतिशील नहीं होता तो इसीलिए वही प्राणं ब्रह्मे मेरे प्यारे वही प्राण संसार की प्रत्येक वस्तु का निगल रहा है, वही मानो उसे सूक्ष्म बनाता है, मुनिवरों! देखो, वही पृथ्वी पर आ करके, पृथ्वी से समन्वय करके दूसरे रूप में परमाणु विद्यमान हो जाते हैं। यह प्राण ही तो सखा है जो गाता रहता है, उद्गीत गाता है। यह प्राण सखा है, जो आहार कर रहा है। आहारों से गतियां चल रही हैं, परमाणु बन करके अन्तरिक्ष में गमन कर रहे हैं। शब्दों की प्रतिभा में ध्वनि मानो देखो, ध्वनित हो करके द्यौ लोक में प्रवेश कर रही है, भू-लोक में प्रवेश कर रही है। मानो देखो, यह प्राण सखा श्वास के साथ में परमाणुओं को ले करके वही क्षुधा के मूल में विद्यमान है। पृथ्वी के गर्भ में वही मानो देखो, आपो प्राण शक्ति देता है, नाना प्रकार की वनस्पतियां उपज जाती हैं और वही वनस्पति मानव के किसी रूग्ण में, आहार के रूप में विद्यमान रहती है।

ब्रह्म का हृदय

मेरे प्यारे! कैसा अनूठा जगत है? आज मैं इसके वर्णन करने में असमर्थ हो जाता हूँ, ऐसा यह विचित्र जगत है। बेटा! एक-एक वस्तु पर विचार विनिमय करो, तो तुम्हारी वाणी मौन हो जाएगी, वाणी मानो देखो, क्रियाकलाप त्याग देगी। तो इसलिए विचारने से प्रतीत होता है कि मुनिवरों! देखो, यह प्राणसत्ता कहीं वायु के साथ रहती है, कहीं आपो-जल के साथ रहती है। कहीं यही प्राणसत्ता अग्नि के साथ रहती है, कहीं यही प्राणसत्ता अन्तरिक्ष के गर्भ में ओतप्रोत रहती है। मेरे प्यारे! जितनी भी क्रियाएं हैं, यह सब ऋत् और सत् से गुथी हुई हैं। जैसे मेरे प्यारे! मानव के हृदय में जितना संसार का भौतिक या आध्यात्मिक विज्ञान हमें दृष्टिपात आ रहा है, ये भौतिक विज्ञान और आध्यात्मिक विज्ञान ये मानव के हृदय से गुथा हुआ है और मानव का हृदय ऋत् और सत् से गुथा हुआ है। ऋत् और सत् का ब्रह्मव्रतो ज्ञान है, वह ब्रह्म का हृदय माना गया है। बेटा! मैं कहाँ चला गया हूँ,

यह विचार बड़े विचित्र हैं। दर्शनों में या वेदमन्त्रों के वांग्मय में जब हम जाते हैं तो वह अगाध समुद्र कहलाता है, वह ब्रह्म का समुद्र है। जो यह कहता है कि मैं ब्रह्म हूँ, मानो देखो वह ब्रह्म नहीं है, ब्रह्म तो एक अनूठा है, अरे, मानव तो मानव ही रहेगा।

परन्तु देखो, महर्षियों ने तो यह कहा है बेटा! एक समय मैंने च्यवन ऋषि के विचारों को ग्रहण किया था। जब च्यवन ऋषि की २००० वर्ष की आयु हो गयी, वह ब्रह्म के ऊपर चिन्तन करते ही रहते थे। एक समय वह यह उच्चारण करने लगे कि हे प्रभु! यदि मैं ऋत् और सत् के सम्बन्ध में जानता रहूँ तो मेरी सहस्त्रों वर्ष की आयु होनी चाहिए और इसके पश्चात भी मैं निश्चय नहीं कर सकता कि मैं आपके सम्बन्ध में सर्वत्रता को जान सकता हूं या नहीं। मेरे प्यारे! ऋषि-मुनियों का जो निरभिमानी, जो निर्भय विचार है, वह बड़ा विचित्र रहा है, वह बड़ा अनूठा रहा है। मानव के ज्ञान और विज्ञान में एक तीव्रता होनी चाहिए, महानता का दर्शन होना चाहिए, जिससे वह ज्ञान और विज्ञान की उड़ाने उड़ सकेगा।

मुनिवरों! देखो, महर्षि पिप्पलाद मुनि ने ये उत्तर दिया कि यह प्राण ही तो आहार करता है। प्राणसत्ता ही आपो के रूप में मानो देखो, पृथ्वी के गर्भ में नाना प्रकार के खाद्य और खनिजों का निर्माण कर देती है। मानो देखो, वही निर्माण मानव किन्हीं न किन्हीं रूपों में भोगता रहता है, विचारता रहता है, सूक्ष्म बनाता रहता है। वह प्राण रूपी वस्तुओं को का वहीं ले करके उस ऋत् में उसको पिरो देता है। मेरे प्यारे देखो, जैसे स्वर्ण है, स्वर्ण का परमाणु बन गया है, परमाणु बन करके नाना रूपों में परिणत हो जाता है और फिर उसी परमाणु के रूप में प्रवेश हो जाता हैं। कोई वस्तु न कहीं जाती है और न कहीं से आती है, मानो यह एक ऐसा क्रियाकलाप बना हुआ है कि अपनी-अपनी क्रियाओं में अणु, परमाणु रत्त रह करके अपने रूपों में प्रवेश कर जाते हैं। अपने रूप में बन करके बेटा! वह आध्यात्मिक विज्ञान, भौतिक विज्ञान के रूप में प्रवेश करके, बेटा! वह योगी बन करके, वह योग में अपने में प्रयोग कर लेता है। राजा के यहाँ वैज्ञानिक, उसी वस्तु में विज्ञान में रत्त हो जाते हैं। उन्हीं का यन्त्र बना करके, उन्हीं तरंगों का, नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों में गमन करने लगते हैं। तो मानो देखो, यह प्राण, अपने में मानो अनूठा है, यही आहार करता है, यही त्यागता है, यही मानव को अकृत बना देता है। तो विचार पिप्पलाद यह कह करके मौन हो गए द्वितीय उन्होंने कहा कि महाराज यह सृष्टि का चक्र बड़ा विचित्र है।

मेरे प्यारे! उन्होंने दस प्राणो की विवेचना की। मेरे पुत्रों! एक-एक प्राण की विवेचना, में विशेषता में तो जाना नहीं चाहूंगा। आज का विचार हमें क्या कह रहा है आज का वाक् हमें क्या प्रेरणा दे रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना और उसके ज्ञान को जानते हुए, अपने में महान बनते चले जाएं। मेरे पुत्रो! ऋषि मुनि सब मौन हो गए, तो पिप्पलाद ने उन्हें यह उपदेश दिया, कि ऋत् में मन और सत् में प्राण है। यह उन्होंने अपने वाक्यों में सिद्ध किया इसीलिए मुनिवरों! सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान जितना भी साधक वर्ग हुआ है, जितना भी साधक हुआ है वह सब अपने जीवन का तारतम्य बनाता है ईश्वर का, परमात्मा के मिलन करने का एक ही रूप बनाता है क्योंकि उन दोनों का विभाजन हो गया है। ऋत् का विभाजन हो गया है, सत् का विभाजन हो गया है। उस विभक्त क्रिया को एक सूत्र में लाना चाहता है साधक। वह कैसे लाता है? वह प्राण को ऋत् में पिरो देता है और ऋत् को सत् में पिरो करके उन दोनों का समन्वय हो करके एक पिण्ड बन जाता है, एक धारा बन जाती है, मानो एक तारतम्य बन जाता है, एक माला बन जाती है और उस माला को धारण करके बेटा! साधक उस ब्रह्म को प्राप्त कर लेता है।

ये है बेटा आज का हमारा वाक् बेटा! आज के वाक् उच्चारण करने का हमारा अभिप्रायः क्या आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करने नहीं आया हूं ये तो विचारों का मुनिवरों! देखो, वन है, इस वन को लेता हुआ बेटा! मैं

तुम्हे गम्भीरता में तुम्हें ले जाना नही चाहता हूं। केवल विचार यह कि हम, परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, इस संसार से पार हो जायें बेटा! वेद का ऋषि, अपना उदगार देता हुआ, अपने विचार व्यक्त करता हुआ इस संसार सागर से पार होने की कल्पना करता है। महानता में जाने की कल्पना करता है और यह चाहता है कि मेरे अन्तर्हृदय में शान्ति आ जाए, मैं मृत्युंजय बन जाऊं, मानो मैं अन्धकार में न रहूँ, प्रकाश में चला जाऊं। तो मानव को प्रभु के राष्ट्र में जाने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। आज का विचार, अब समाप्त होने जा रहा है, आज के विचारों का अभिप्राय यह है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, इस संसार से पार हो जाएं। कल मुझे समय मिलेगा तो मेरे प्यारे महानन्द जी, अपने विचारों को व्यक्त करने में तत्पर रहते हैं कई समय जिनकी धीमी-धीमी प्रेरणा आती रहती है, कल उनका विचार व्यक्त किया जा सकेगा। आज का वाक् समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन। ओ३म् देवाः लाक्षागृह, बरनावा ०४-०३-१९८७

५ कर्तव्य का पालन ०५ ०३ १९८७

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना, मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता हैं, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं और इस संसार रूपी राष्ट्र के वह स्वामीतव हैं, अथवा अनुशासन, निर्माणवेत्ता हैं। इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की प्रायः महिमा का गुणगान गाते रहते हैं क्योंकि हमें अपना जीवन अनुशासन में लाना चाहते हैं प्रत्येक मानव की यह कल्पना रहती हैं, अपने अन्तर्हृदय से विचारता रहता है, क्या मैं अपने में अनुशासनवादी बनूं और मेरा अनुशासन कैसे ऊँचा बनें, जबकि हम परमपिता परमात्मा, जो राष्ट्रपिता है मानो वह अपने चक्र को अनुशासन में निहित करता रहता हैं।

अनुशासन के लिए याग

तो इसीलिए हम परमपिता परमात्मा की उपासना करते रहते हैं कि-प्रभु! हमारा जीवन अनुशासित हो जाएं और जैसे आप राष्ट्रपिता हैं, राष्ट्रवेत्ता है और तेरे राष्ट्र में जब यह मानव प्रवेश कर जाता हैं तो मानो वह निर्भय और निरवय हो जाता हैं तो इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा अथवा उसके गुणों का गुणवादन करते रहते हैं और यह उन वाक्यों के वेदमन्त्रों की आभा में मानो हम सदैव रत्त रहते हैं और विचारते रहते हैं कि हमारा जीवन अनुशासित हो जाएं, हमारे यहाँ, कई समय हो गएं हैं हम बेटा! परमपिता परमात्मा को राष्ट्रपिता घोषित करते हुए मानो देखो, उसका जो नियमबद्ध जो संसार हैं ये अपने में अपनी वृत्तियों को प्राप्त होता रहता हैं मानो जिस भी काल में यह नाना प्रकार का जो रूप हमें दृष्टिपात आ रहा हैं, मानो उस ब्रह्म की आभा में हम सदैव रत्त रहते हैं, आज का हमारा वेदमन्त्र, ये उद्गीत गा रहा था ये उच्चारण कर रहा था क्या यज्ञमान जैसे ब्रह्मा यज्ञशाला में विद्यमान हो करके अपने यज्ञमान, होता जनों को मानो अनुशासन में परिणत करना चाहता है और वह अपने में भी अनुशासित रहना चाहता हैं जिससे हम कर्मकाण्ड की और परमपिता परमात्मा जो राष्ट्र पिता है हम उसकी आज्ञा का पालन कर सकें और मानो देखो, हम अपने में देखो, यज्ञ रूपी जो एक अनुशासन की प्रवृत्तियां है वह मुनिवरों! एक अनुशासित हो करके, उसका रथ अथवा उसमें जो क्रियाकलाप है, वह अन्तरिक्ष में अनुशासित होने वाले परमाणुओं को वह गति कर सके, और जो विजातीय परमाणु हैं विजातीय पदार्थ हैं मानो देखो, उनका विभाजन हो जाएं और वह विभक्तता में प्रतिष्ठित हो करके वह अपनेपन की आभा में रत्त हो जाएं।

तो मेरे पुत्रों! देखो, विचार यह है कि यज्ञमान अपने को अनुशासन में अपनी यज्ञमान को अनुशासन में लाना चाहता हैं अथवा यज्ञमान भी अनुशासन में इसीलिए क्योंकि उसका जो अन्तर्हृदय हैं अन्तर्हृदय से उसकी जो तरंगें है वह साकल्य और अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके यह अन्तरिक्ष से मानो ओत-प्रोत हो जाएं और वह द्यौ लोक को प्राप्त हो करके मानो वह समय आ जाएं कि यज्ञमान से वह तरंगें तंरगित होती रहती हैं। तो मेरे पुत्रों! आज का हमारा वेदमन्त्र बड़ी ऊर्ध्वा में उड़ान उड़ रहा हैं आज हम विशेष चर्चा नही देंगें केवल विचार यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और हम ऋत और सत का अपने में चयन करते हुए और सृष्टि का जो चक्र जो यह चल रहा है यह विचित्रता में मानो यह उद्धृत होता रहे और अपने में अपनेपन की आभा में सदैव रत्त रहें ऐसा हमारा मन्तव्य है अब मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द उद्गीत रूप में उच्चारण करेंगें।

पूज्य महानन्द जीः ओ३म् यमाः सर्वं ब्रह्मा वायु यदितं नमाः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल और मेरे भद्र समाज, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मानो यह नाना प्रकार का उद्गीत गाते रहते हैं मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अभी-अभी, परमात्मा को राष्ट्र का स्वामी और यज्ञमान इत्यादियों की विवेचना कर रहे थें। मैं तो कोई इनके

समीप मानो व्याख्याता नही हूँ और इनके समीप मैं विद्यमान हो करके मैं अपने में स्वीकार करता रहता हूँ क्या मैं पूज्यपाद गुरुदेव आपके चरणों की मुझे वन्दना मानो आपकी शरण ही मुझे प्राप्त होती रहती हैं मैं वन्दनीय बना रहूँ।

लाक्षा गृह की पुण्य भूमि

आज मेरे पूज्यपाद गुरुदेव कई समय हो गएं है, वह राष्ट्र की चर्चा और परमपति परमात्मा को और मानवीय दर्शन और देखो, प्रकृति विज्ञान है, इसके बडे मौलिक रूप की चर्चा कर रहे थे मानो जिस स्थली पर हमारी यह आकाशवाणी जा रही है, मेरा अन्तरात्मा बड़ा प्रसन्न रहता है, जब मानो इस स्थली पर वेदज्ञ ध्वनि और भिन्न-भिन्न प्रकार के विचारों का मैं अपने में अवलोकन करता रहता हूँ, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह वर्णन करता रहता हूँ और परिचय देता रहता हूँ क्या यह कैसी यह मानो ऐसी स्थली जिस स्थली पर देखो, महाराज दुर्योधन और पाण्डु पुत्रों के विवादाग्रस्त एक गृह का निर्माण हुआ था उस गृह में जो वैज्ञानिक तथ्यों से, निर्माणित तथ्यों से निमार्णित किया हुआ गृह था, जब मैं विज्ञान की चर्चा करता हूँ अपने पूज्यपाद गुरुदेव से तो मेरा अस्वत हो जाता है, और मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को अवलोकन कराता रहता हूँ निर्णय देता रहता हूँ क्या कि-प्रभु! यह वही स्थली हैं जहाँ महाराजा दुर्योधन और देखो, आचार्य द्रोण और जहाँ नाना देखो, महर्षि विभाण्डक नाना ऋषियों का आगमन होता रहा है महर्षि जैमिनी जी का भी यहाँ आगमन होता रहा हैं और यहाँ विज्ञान की बहुत-सी बहुत से तथ्यों का निर्माण भी होता रहा हैं मेरे पूज्यपाद गुरुदेव तो जानते हैं परन्तु आधुनिक मध्य काल में जहाँ राजेश्वरी विचारधारा हैं जहाँ आचार्य और गुरु का दोनों का संवाद होता हो जहाँ ऋषि-मुनियों की गोष्ठियां होती हों जहाँ ऋषि-मुनियों के आध्यात्मिक विचार और वैज्ञानिकों को वैज्ञानिक विचार मानो उद्बुद्ध होते रहते हैं, होते रहे है और होते रहते हैं मैं दो वाक् उच्चारण कर रहा हूँ परन्तु होते रहे हैं जब महाराजा द्रोण यहाँ ब्रह्मचारियों को राजकुमारों को शिक्षा देते रहते थे उन्हीं शिक्षा के माध्यम से नाना प्रकार की विज्ञानशालाएं मानो देखो, क्रियात्मक मानो देखो, अस्त्रों-शस्त्रों का निर्माण भी होता रहा है। मुझे वह काल स्मरण आता रहता है मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कई काल में वर्णन कराया क्या, इस स्थली पर बहुत प्रयास हुआ क्या पाण्डव पुत्रों का देखो, और धृतराष्ट्र के पुत्रों का दोनों का समन्वय हो जाएं परन्तु ऐसे स्वार्थी तत्त्वों का निकास हुआ, क्या वह उनका समन्वय नही हो सका, उस समन्वय न होने से, यहाँ नाना प्रकार की अग्नि के काण्ड हुए अन्त में यह हुआ क्या महाभारत देखो, यहाँ प्रारम्भ हुआ और महाभारत में देखो, यहाँ वैज्ञानिक पृथ्वी के वैज्ञानिक समाप्त हो गएं और बुद्धिमानों का ह्रस हो गया मानो इसका परिणाम यह हुआ कि ये संसार अन्धकार में चला गया और संसार के अन्धकार में जाने से, मानव का संस्कार मानो संसार से विहिन हो गया। जब किसी राष्ट्र में या किसी भी समाज में, या किसी भी काल में, जब वैज्ञानिक और देखो, बुद्धिमान और बुद्धिजीवी विवेकी पण्डिता नही होते बुद्धिमानो का ह्रस होता है तो वह समाज मानो रसातल को चला जाता है।

मैंने बहुत पुरातन काल में यह निर्णय दिया, क्या महाभारत काल के पश्चात नाना प्रकार की रूढ़ियों का जन्म हुआ हैं नाना प्रकार की रूढ़ियों का जन्म क्यों हुआ, क्योंकि राष्ट्र स्वार्थी बन गया, बुद्धिजीवी राजा नही और प्रजा को अनुशासन में नही ला सके मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अभी-अभी यह प्रगट कर रहे थे, कि अनुशासन होना चाहिए परमपिता परमात्मा का जो राष्ट्र हैं यह अनुशासन में रहता है और परमपिता परमात्मा इनके ऊपर अनुशासन करता हैं परन्तु मानव समाज के निचली स्थलियों में परमात्मा परमाणुओं को अनुशासन में कर सकता हैं मानो होता रहता है परन्तु जीव कर्म करने में स्वतन्त्र होने से यह अपने में मानो देखो, अनुशासित नही हो पाता जब यह अपने में यह अनुशासित हो जाता है तो इसको हम समाज का राष्ट्र का कल्याण हो जाता हैं मैंने मानो

देखो, उसके पश्चात अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कई काल में वर्णन करते हुए कहा क्या जिस काल में वेद की पतिका ऊर्ध्वा में गति करती हैं मानो वैदिकता को धर्म कहते हैं क्योंकि वेद का नाम प्रकाश हैं और धर्म में ही प्रकाश हैं परन्तु देखो, धर्म और वेद दोनों देखो, वेद का धर्म वेद का प्रकाश और प्रकाश ही धर्म है और वह जो प्रकाश जब तक रहता है जब तक वेद का प्रकाश रहता हैं तो मानव में भोलापन, मानव में वृत्तियाँ और कर्तव्य का पालन बना रहता हैं और कर्तव्य के पालन होने से समाज में महानता का जीवन मानो देखो, वहां बनता रहता है और राष्ट्रीयता की मानो देखो, उसे राष्ट्र की आवश्यकता नही रहती। मैने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कई काल में प्रगट करते हुए कहा था, क्या संसार में राष्ट्र का निर्माण, जब होता हैं जबकि प्रजा में देखो, अप्रियता देखो, निष्क्रियता आ जाती हैं और निष्क्रियता आ करके, उसमें मानो देखो, हीनता और बुद्धि ह्रस हो जाता हैं। कर्तव्य के वाद के लिए मानो अपनी बुद्धि का प्रयोग करता है, और मानव समाज को राष्ट्रवाद में लाता है मैं यह कहता रहता हूँ कि राष्ट्रवाद की संसार में आवश्यकता क्या है जब मानव अपने-अपने कर्तव्य का पालन करने लगता हैं, और जब तक मानो अपने कर्तव्य का पालन नही करता, समाज में अकर्तव्यवाद बना रहता हैं, तो राष्ट्रवाद बन करके मानो देखो, समाज को देखो, राष्ट्र निर्माणित कर देता हैं, या राष्ट्र का अपना शोषण करके अपने में आनन्दित हो जाता हैं। यह क्यों होते हैं? यदि मानव अपने-अपने कर्तव्य का पालन करने लगे, तो यहाँ राष्ट्र की, यहाँ नाना प्रकार के राष्ट्र की रूढ़ियों की आवश्यकता नही रहती संसार में, मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह वर्णन करते हुए कहा था, क्या महाभारत काल के पश्चात जिस स्थली पर यह हमारी आकाशवाणी जा रही है इसी भूमि पर देखो, राष्ट्र के विनाश की देखो, धारा का निर्माण हुआ था, यह वही स्थली है, जहाँ राष्ट्र की और देखो, यह वह भी स्थली हैं जहाँ विज्ञान के तथ्यों का निर्माण हुआ था, वैज्ञानिक तथ्यों का निर्माण भी हुआ था और देखो, राष्ट्रीय हस्तिनापुर के द्वारे ब्रह्मे अग्नि का जो प्रहार हुआ, वह इस स्थली से प्रारम्भ हुआ, परन्तु आज मैं इस स्थली की चर्चाएं, इतनी उद्गीत रूप में नही गाना चाहता हूँ, विस्तृत में लेना नही चाहता हूँ, विचार केवल यह हमारा कि हम परमपिता परमात्मा को अग्रणीय बनाते हुए और समाज को चाहते हैं कि यह समाज अपने कर्तव्य का पालन करे मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह कहता रहता हूँ मानो देखो, हमें सबसे प्रथम, राष्ट्र को ऊँचा बनाना है, प्रत्येक मानव को राष्ट्र की चिन्ता में मानो चिन्तित हो रहा है अरे, भोले प्राणियों यह चिन्ता का विषय नही हैं यह तो कर्मठता का विषय है यहाँ जब प्रत्येक मानव में जब शोषण प्रवृत्ति नही रहेगी जब यहाँ मानव अपने कर्तव्य का पालन करने लगता हैं मानो देखो, रूढ़ियों को अपने राष्ट्र में पनपने नही देता अपने समाज में तो यह मानो देखो, यह कर्तव्यवाद स्वतः आ जाता हैं।

मैंने बहुत पुरातन काल में कहा क्या जिस-जिस काल में समाज में देखो, नाना प्रकार की ईश्वर के नामों पर रूढ़ियाँ पनपी हैं नाना प्रकार के धर्मों की चर्चा राष्ट्र करता है, जानों की उसे राष्ट्र का विनाश होने वाला है। मानो देखो, जहाँ नाना प्रकार के धर्म के नामों पर, एक दूसरें के विचारों में देखो, विभाजन हो जाता है, उन विचारों के विभाजन होने से रक्तभरी क्रान्ति का संचार उत्पन्न हो जाता हैं, जब मैं यह विचारता रहता हूँ जब मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा था एक समय, क्या राष्ट्र की घोषणा मानव क्यों कर रहा है। अरे, मानव तू अपने धर्म और मानवता के मानो दर्शन की चर्चा क्यों नही कर रहा हैं मानो देखो, जब मानव दर्शन की जब चर्चा करता है कि मानव क्या है? धर्म क्या हैं? वेद क्या है? याग क्या हैं? और मानो इसके मार्ग पर चल करके, जिस प्रकार की विज्ञान की धाराओं का जन्म होता रहेगा, जब मैं यह विचारता रहता हूँ मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मैंने चर्चा कई काल में विचार व्यक्त करते हुए कहा था आज मैं कोई नवीन, नही देने आया हूँ, क्योंकि संसार में न कोई नवीन चर्चा हैं जब परमपिता परमात्मा ईश्वर के, परमपिता परमात्मा से दूरी हो जाता हैं

तो नाना प्रकार की रूढ़ियों का आश्रय प्राणी लेने लगता है और रूढ़ियों का आश्रय लेने से, वह राष्ट्र और समाज में उन रूढ़ियों के पनपने से ही देखो, राष्ट्र का ह्रस होता रहता हैं। आज मैं राष्ट्र को या राष्ट्र की चर्चा करूं राष्ट्र कैसे जिए। अनुशासन का नाम राष्ट्र हैं प्रशासन नाम अनुशासन है मानो देखो, अनुशासन में जब राष्ट्र यह विचारता रहता हैं क्या तेरा कर्तव्य क्या है? तू कितना ज्ञानी हैं? तू कितना तपस्वी है? मानो तेरे राष्ट्र में कौन-कौन-सा क्रियाकलाप महान हैं? जब इस प्रकार का राष्ट्र के हृदय में यह विचार आ जाता है मानो देखो, वह काल, वह विचित्रता में राष्ट्र परिणत हो करके राष्ट्र मानवता का प्रसार हो जाता है।

आज मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह उच्चारण करने लगूं कि राजा यदि अहिंसा परमो धर्मी बन जाता हैं तो यह राष्ट्र भी अहिंसा परमोधर्मी बनेगा, मानो यदि देखो, यदि राजा ज्ञानी होगा, ब्रह्म ज्ञानी होगा तो राष्ट्र भी ब्रह्म ज्ञानी बन जाएगा। यदि मानो देखो, राजा याज्ञिक होगा और वेदोक्त होगा, वह उसका राष्ट्र भी वेदोक्त बनेगा, जब राष्ट्र को यह चिन्ता लगी हुई हैं यदि तुमने भगवान का स्मरण क्या चिन्तन कर लिया तो दूसरे को मानो देखो, जो रूढ़िवादी है वह तुझे क्या कहेंगें, जब इस प्रकार का अपनी आत्मा को, जो अपनी अन्तरात्मा के हृदय जो अन्तरात्मा हृदय के वाक् को मानव या राजा नष्ट करता हैं उस राजा का स्वतः नाश हो जाता हैं। मैने कई काल में यह कहा है क्या मानव को अपनी अन्तरात्मा की वाणी को शान्त नही करना चाहिए, और अन्तरात्मा से अहिंसा परमो धर्म के उद्गारों का जन्म होता है परन्तु देखो, उसके ऊपर मानव विचारता नही हैं, आज जब मैं यह विचारता हूँ क्या संसार में मानो देखो, एक शब्द बना हुआ हैं, यहाँ एक शब्द है बलिदान, यहाँ एक शब्द है देखो, बलि देना, एक शब्द है मानो देखो, दूसरे को जैसे अपने को समर्पितक करना हैं मानो उस प्रकार के शब्दों का उद्घोष है जब मैं यह मानता हूँ मोहम्मद के मानने वालों के द्वार पर जाता हूँ, तो वह कहते हैं कि हम तो बलि प्रदान करते हैं अरे, नाना प्रकार के प्राणियों की बलि देने से, क्या तेरा कल्याण हो सकता है या नाना प्रकार की वेदियों पर बलि देने से कल्याण नही होगा। अरे, यह कुर्बानी का अभिप्रायः देखो, यह जो ब्रह्मे मानो देखो, जो बलि का अभिप्रायः यह है क्या मानव को पुरूषार्थ करना चाहिए अपने गृह को ऊँचा बनाना चाहिए अपने जीवन को चरित्रवान बना करके कर्तव्य का पालन करने का नाम ही बलिदान होना है जब मानव यह विचारता हैं तो यह राष्ट्र और समाज और देखो, नाना प्रकार की आभा में यह संसार ऊँचा बन सकता हैं मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कई काल में यह वर्णन कराया है, क्या जब मानव मानव का भक्षण कर जाता हैं जब मानो प्राणी प्राणी का भक्षण करने लगता हैं वह राष्ट्र कितना और वह समाज मानो कितना देखो, हीनता को प्राप्त होता रहता है, मुझे वह काल स्मरण आता रहता हैं जब यह संसार के प्राणी मानो कोई भी प्राणियों में महापुरूष आता है वह महापुरूष अहिंसा परमो धर्मी कहलाता हैं, वह अहिंसा परमो धर्मी पुकार को ले करके अपने उद्गीत गाता रहता है परन्तु उसके जो अनुयायी होते हैं उसके जो मानने वाले होते हैं वह अपने कुछ संस्कारों के विचारों को ले करके महान आत्माओं के हृदय भी दूषित कर देते हैं इनके क्रियाकलाप भी दूषित हो जाते हैं।

तो इसीलिए आज इनके हृदयों को अथवा इनके क्रियाकलापों को दूषित नही करना चाहिए। मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा था कि यह राष्ट्र बड़ा दुर्भागी होता हैं जो रूढ़ियों के नामो पर मानो देखो, एक-एक गृह में देखो, रक्त का रक्त बहाया जाता हैं वह धर्म नही है मानो देखो, वह रूढ़ि कहा गया हैं उनकी धृष्टता है और देखो, मैं अपने पूज्यपाद को कहता हूँ तो आश्चर्य आता हैं जब मैं मानो देखो, अपने में यह विचारता हूँ कि राष्ट्रीय विचारों की, आज वायुमण्डल में भी राष्ट्रीय विचारों का मानो देखो, एक विचार ऊर्ध्वा से जा रहा हैं और ऊर्ध्वा में जाता हुआ वह ऊर्ध्वा में रह रहा हैं और प्रत्येक मानव जो आध्यात्मिक और भौतिक जो जीवन है उसे वह नष्ट करता चला जा रहा हैं क्योंकि उसमें स्वार्थ है, उसमें स्वार्थपरता होने से देखो, वह राष्ट्रीयता

देखो, हिंसा का एक मूल बना हुआ हैं। जब मैं यह विचारता हूँ कि राष्ट्र कैसा हो? राजा का यह कर्तव्य है कि राजा राजा से मानो देखो, राजा से जब मिलन करता हैं और मैने देखो, विशेष वर्णन शैली उच्चारण की, आज देखो, ईश्वर के नामो पर, प्राणियों का रक्त बहाया जा रहा हैं जिनका कोई भी अस्तित्व नही हैं मानो देखो, वह बहाया जा रहा हैं विचारों में दूषितपना आ गया है, क्योंकि यह नाना प्रकार की रूढ़ियाँ, उसमें रूढियां मूल में रहती है नाना प्रकार की रूढ़ियाँ उसके मूल में है हे राजन! यदि आज तू यह चाहता है क्या मैं इसका कैसे निदान करूं? एकान्त स्थली पर विद्यमान होता है तो राजा यह विचारता है क्या मैं इसका कैसे निदान करूं, अपने राष्ट्र का कैसे निदान हो परन्तु यह तो विचारता है अन्तर्हृदय से परन्तु जब बाह्य जगत में आता है तो पद की लोलुपतता में लग जाता हैं वह पद की लोलुपता मानो देखो, उसके आत्मा की अथवा हृदय की जो पुकार है वह शान्त हो जाती हैं, और वह शान्त हो करके मानो देखो, वह भी शान्त हो जाता हैं जब मैं यह विचारता रहता हूँ पूज्यपाद गुरुदेव को मैंने कई कालों में यह वर्णन किया था यह वर्णन कराया था क्या राष्ट्र को ऊँचा बनाना है तो सबसे प्रथम जो नाना प्रकार की जो रूढ़ियाँ हैं उनके आचार्यों को एकत्रित करना चाहिए। उनके आचार्यों को एकत्रित करके और राजा को इसका मध्यस्थ बनना चाहिए और मानो देखो, अपने हृदय में वेद की पोथी हो, उपनिषदों की पोथियां हों अथवा उनके हृदयों में नाना प्रकार के रूढ़ियों के जो मुख्य-मुख्य मानो देखो, विचारों की पोथियां है वह उनके समीप हों, और उनको नाना ब्रह्मवेत्ता देखो, तपस्वी ब्राह्मण तपस्वी मानो देखो, वेदों को विचारने वालें, धर्म के मर्म को जानने वाले, वह विराजमान हो करके जितनी रूढ़िया सबका निर्णय देने वाले हों, और जो निर्णय दें विज्ञान पर, मानव दर्शन पर, मानो कर्तव्यवाद पर निहित हो जाएं वही राष्ट्र में मानो देखो, एकोकी धर्म होना चाहिए।

मैंने बहुत पुरातन काल में यह निर्णय दिया आज के संसार में, ऐसा क्यों हो रहा है? प्रत्येक मानव इस संसार का चिन्तित हो रहा हैं, चाहे वह समुद्रों के तल पर रहने वाला हो समुद्रों से दूरी रहने वाला हो परन्तु पृथ्वी मण्डल पर इसी की आभा में रत्त रहने से, मूल में यह है क्या देखो, जितने आचार्य हुए हैं जितने रूढ़ियों को आचार्य हुए है, वह मानो देखो, उन्होंने तपस्या तो की हैं परन्तु वह अन्त में स्वार्थ की परता में आ करके और मानो देखो, राष्ट्रीयता का कर्तव्य का और धर्म का ह्रस कर दिया। विचारा नही, क्योंकि इसको राजा को विचारना चाहिए, हमारे यहाँ मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे वर्णन कराया क्या राजा जब अश्वमेध याग करता है अश्वमेध याग का क्या अभिप्रायः है मानो देखो, मानव नही विचार रहा हैं अश्वमेध याग का अभिप्रायः यह है क्या कोई भी मानो देखो, राजा के राष्ट्र में रूढ़ि नही रहनी चाहिए, अश्व नाम राजा का और प्रजा मेध बन करके मानो जब सुगठित हो करके, राष्ट्र का पालन अथवा अपने-अपने कर्तव्य का पालन करता है, तो वह मानो अग्नि का चयन करता हुआ अपने कर्तव्य का पालन करता है और कर्तव्य का नाम ही अश्वमेध याग हैं हे राजा! और कर्तव्य तेरा उस काल में बनेगा जब तेरे राष्ट्र में रूढ़ि नही होगी जब मानो देखो, रूढ़ि बन जाती है जैसे मानो एक साधारण गृह है, साधारण गृह में पुत्र हैं, एक पुत्र वधु हैं, मानो एक पुत्री है, एक मानो देखो, पत्नी हैं, और भी नाना पुत्र है, जब प्रातः देखो, जब पिता में माता मे रूढ़ि बन जाती हैं, तो गृह में अग्नि के काण्ड होने लगते हैं, जब माता तो यह विचारती हैं क्या मैं कौन-सी पुत्र वधु से स्नेह करूं पिता यह विचारता है कौन-सा पुत्र मेरा सुयोग्य हैं मानो जब यह रूढ़ियाँ उसके विचारों में आनी प्रारम्भ होती हैं एक दूसरे में ईर्ष्या हो करके, गृह का विभाजन हो जाता हैं। इसी प्रकार देखो, राजा के राष्ट्र में भी इस प्रकार विभाजन हो जाता हैं, विभाजन जब भी होता है जब होता है जब स्वार्थपरता आ जाती हैं और स्वार्थपरता आने से देखो, राजा के राष्ट्र में देखो, नाना प्रकार की रूढ़ियाँ होने से नाना प्रकार की रूढ़ियों के मूल में विभाजन देखो, उसके गर्भ में निहित होता हैं जब मैने बहुत पुरातन काल में,

अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा था कि विज्ञान क्या है? मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे बहुत-सी विज्ञान की चर्चाएं प्रगट की, दूषित वायुमण्डल की चर्चाएं तो मैं कल प्रगट कर सकूंगा यदि मेरे पूज्यपाद आज्ञा देंगें आज तो मैं केवल इतना उच्चारण करने के लिए आया हूँ क्या राष्ट्र की यह घोषणा होना राष्ट्र का यह कर्तव्य है कि प्रजा को एक सूत्र में लाने का प्रयास करें, और वह सूत्र कौन-सा है क्या ये नाना प्रकार की रूढियां जब तक इनके ऊपर संघर्ष नही होता, जब तक सत्य का निर्णय नही होता और राजा इतना शक्ति शाली हो उसकी यह घोषणा करे, क्या मैं उस विचारधारा को, राष्ट्रीयता दूंगा जिस विचार में विज्ञान हो, मानव दर्शन हो, कर्तव्यवाद हो, अहिंसा परमोधर्म हो, ऐसा राजा जब घोषणा करता है तो राष्ट्र ऊँचा बनता हैं। परन्तु देखो, आज प्रत्येक मानव नरसंहार की चर्चा करता है, नर संहार ही कहता कहता चला जाता हैं कि नर संहार हो रहा हैं अरे, यह नर संहार क्यों हो रहा हैं? मानो देखो, इसके मूल मे स्वार्थ हैं, इसके मूल में स्वार्थ है और वह स्वार्थपरता ही मानो देखो, नर संहार करा देती हैं। विचार देते हुए मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव से वर्णन कराया था, क्या यह नाना प्रकार की रूढियां नष्ट होनी चाहिए, नाना प्रकार की रूढ़ियों का हृस होना चाहिए, मानो देखो, यहाँ नाना प्रकार की वृत्तियों में मानव परिणत हो रहा हैं उसकी आभा में रत्त रहना चाहिए आज मैं जब इस विचारधारा को लेता हूँ तो मेरा हृदय यह कहता रहता हैं कि आज यह समाज कहाँ चला गया मुझे वह काल स्मरण आता रहता हैं मुझे वह काल स्मरण मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे वर्णन कराया आज प्रत्येक मानव भगवान राम की चर्चा करता रहता हैं, भगवान कृष्ण के मुखारबिन्दु से उद्गीत, उदगार मानो देखो, मानो देखो, अपने हृदय का उदगार बनाना चाहता हैं, परन्तु जब यह विचार आता है क्या भगवान कृष्ण और भगवान राम का जीवन कैसा, उनका उनके जीवन में कितनी प्रतिभा रही हैं भगवान राम सदैव मानो देखो, शाकाहार में परिणत रहते थे, शाकाहार किसे कहते हैं मानो देखो, जो पृथ्वी के गर्भ से अपना मानो देखो, अपना जो अपना जो आहार है उसको वह पान करते थे, उस आहार को पान करना उसी में वह सतोगुणी भावना को जन्म देना। आधुनिक काल को जो मानो देखो, जो राम को मानने वाले हैं या कृष्ण को मानने वाले हैं मानो उनके आहार और व्यवहार दोनों दूषित हो रहे हैं। जब आहार दूषित हो रहे हैं, वह मानो देखो, फल इत्यादियों का पान करते थे, गो घृत का पान करते थे, गो रस का पान करते थे, अहा गऊओं के मांस का भक्षण कर जाते हैं तो कितना अन्तर्द्वन्द्व आ गया हैं। विचार आता रहता है और वह यह राष्ट्र यह कहता है कि मैं राम राज्य लाना चाहता हूँ अरे, राम राज्य कैसे आ सकता हैं? राम राज्य जब आयेगा, जहाँ प्रत्येक प्राणी की रक्षा होगी, प्रत्येक प्राणी जब तक देखो, रक्षा में नही हो सकती चाहे वह प्राणी जलचरों में रहने वाला हों, चाहे वह अन्तरिक्ष में गमन करने वाला हो, चाहे मानो देखो, पृथ्वी के गर्भ में रमण करने वाला हो, प्रत्येक प्राणी की जब तक राष्ट्र मे रक्षा नही होगी राजा का राष्ट्र पवित्र नही बना करता।

मैंने बहुत पुरातन काल में भगवान मनु की चर्चा मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे प्रगट कराई थी, जब भगवान मनु समुद्रों में स्नान करने जाते, तो संध्या और तर्पण करते रहते थे जब उन्होनें संध्या और तर्पण किया तो कमण्डलु में मछली आ गई जब मछली आ गई तो वह मछली को ले करके अपने आश्रम में आए आश्रम में आने के पश्चात उन्होनें मानो देखो, जब वह कमण्डलु में मछल ब्रहे उसको अर्पित ब्रहे मानो मछली को दूरी करने लगे तो वह मछली अपनी वेदनामयी कहती है क्योंकि प्रत्येक प्राणी अपनी-अपनी वेदना में देखो, वेदनित रहता हैं अरे, उस भाषा को जानने वाला मानव होना चाहिए मानो उसकी भाषा बड़ी विचित्र भाषा होती हैं उसकी आत्मा की बड़ी महान तरंगें होती हैं उस तरंगों योगी जन जानते हैं क्योंकि भगवान मनु योगी थे भगवान मनु योगेश्वर होने से उन्होंने उनकी वेदना को स्वीकार किया और उनकी वेदना यह कह रही थी वह वेदनित थी हे मनु! मैं तुम्हारी शरण में आई हूँ क्योंकि समुद्रों का जो मिलन है प्रकृति का नियम हैं क्या देखो, बड़ी मछली सूक्ष्म मछलियों का

आहार बना करके और वह अपने उदर की पूर्ति करती रहती है मेरी इच्छा यह है कि मैं आपकी शरण में आई हूँ, मैं किसी का आहार नही बनना चाहती। मानो देखो, भगवान मनु ने, उस मछली की रक्षा की, गढेला बनवाया मछली प्रबल हो गई वही मछली देखो, भगवान मनु की रक्षक बन गई, वह कैसे रक्षक बनी? जब मानो देखो, मछली प्रबल हो गई, विशाल मछली हो गई तो उस समय मछली ने एक समय भगवान मनु से कहा हे भगवन! मैं अब अपने पूर्ण रूपेण हो गई हूँ मानो देखो, अमुक समय पर जल प्लावन आयेगा, और जल प्लावन में जाने के लिए तुम एक नौका का निर्माण करो, तो भगवान मनु ने उस नौका का निर्माण कराया और नौका में अपना वास किया उसी समय पर जल प्लावन आया और मछली ने कहा मैं हिमालय से मिलन होगा नौका को देखो, उसमें जकड़ देना जब भगवान मनु ने नौका को उससे जकड़ा तो वही मछली जिसकी रक्षा की वही मानो देखो, भगवान मनु की रक्षक बन गई। अरे, जिस प्रकार का राजा हो, इस प्रकार का समाज हो, मानो देखो, प्रत्येक प्राणी की जो रक्षा करने वाला हो, क्योंकि यह अपनी रक्षा करती हैं, अपने में शुद्धिकरण करती है, और वह शुद्धिकरण करते-करते अपने में अभ्योदय हो जाती हैं। तो विचार क्या, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव को मैं अपने को, मैं यह निर्णय देता रहता हूँ अपने विचारों को व्यक्त करता रहता हूँ कि यदि समाज को ऊँचा बनाना है तो अहिंसा परमो धर्म में प्रत्येक मानव कहता है कि गऊ की रक्षा होनी चाहिए प्रत्येक प्राणी कहता है मैं वायुमण्डल में उसको ग्रहण करता रहता हूँ अरे, भोले प्राणियों यह जो नाना प्रकार के प्राणी मानो अपनी आहार में ला करके, व्यवहार में ला करके देखो, विलासता का एक क्षेत्र बना रहा हैं अरे, यह जो नाना प्राणियों का मछली इत्यादियों को पान करने वाला, मानव अपने को विलासता के रूप में परिणत कर रहा हैं नाना देखो, अजा को पान करने वाला नाना अपने विलासता के क्षेत्र को बना रहा है क्या भोले प्राणियों देखो, गऊ और प्रत्येक प्राणी राष्ट्र कि लिए लिए ही तुल्य माना गया हैं। विचार आता रहता है कि संसार में प्रत्येक प्राणी की रक्षा होनी चाहिए कौन प्राणी ऐसा है संसार में जो एक दूसरे से कटिबद्ध नही, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे कई काल में वर्णन कराया था, कई कालों में यह कहा है क्या मानो देखो, प्रत्येक प्राणी, परमपिता परमात्मा के राष्ट्र में रहता हैं और प्रत्येक प्राणी मानो एक दूसरे से गुथा हुआ है, एक दूसरे को लाभप्रद देने वाला है, एक दूसरे का सहयोगी बना हुआ है अरे, यह तो परमात्मा की रचना की मानो विचित्र माला हैं इस माला को जो जान लेता हैं वही तो अहिंसा परमोधर्मी बनता है आज जब मैं यह विचारता रहता हूँ क्या संसार में कोई मानो पुत्र न रह करके, वह नाना प्राणियों का आहार की वृत्तियों में बलि के प्राण प्रस्तुत करने लगता है देखो, मोहम्मद के मानने वाले कहते हैं, क्या मैं तो अप्रतं ब्रह्मा क्या देखो, हमारे यहाँ बलि दी जाती है अरे, इदानं ब्रहे देखो, ब्रहे मानो देखो, इनके पूर्वजों ने, पुत्र की बलि दी, मानो पुत्र नही रहा तो तीन प्राणी बलि के बन गएं अरे, भोले प्राणियों! मैं जानना चाहता हूँ पुत्र भी प्रभु का है और भी प्राणी प्रभु के हैं और कहते हैं कि हम प्रभु को मानने वाले है अरे, प्रभु का जो मानने वाला होता है, वह किसी प्राणी का भक्षण नही करता प्रभु को मानने वाला मेरे पूज्यपाद गुरुदेव उच्चारण कर रहे थे देखो, कई समय हो गएं देखो, जिज्ञासु यह अपना निर्णय दे रहे हैं क्या प्रभु हैं जब यह निर्णय हो जाता है कि-प्रभु! है तो वह प्रभु के होने पर तो वह किसी का बलिदान नही करते वह मानो देखो, किसी को बलि नही देते अरे, बलि की तो प्रथा हैं यह महाभारत काल के पश्चात प्रारम्भ हुई उसी बलि की प्रथा को यहाँ देखो, और नाना रूढ़िवादियों ने अपनाना प्रारम्भ हुआ उसके अपनाने से यह बलि प्रथा का प्रारम्भ हुआ जब मैं यह उच्चारण करता रहता हूँ कि समाज में बलि नही पुरूषार्थ होना चाहिए अरे, बलि ही पुरूषार्थ हैं पुरूषार्थ ही बलि है मानो देखो, अपने जीवन को ऊँचा बनाना हैं पुरूषार्थ करते-करते परमात्मा के निकट जाना है तो इसीलिए नाना प्रकार की जो रूढ़ियाँ हैं नाना प्रकार का जो अहिंसक जो विचार है हिंसा का विचार है वह अहिंसा में परिणत होना चाहिए जब अहिंसा में परिणत हो जाता हैं

तो यह राष्ट्र और समाज उल्टे मार्ग पर चला जाता हैं।

मैं यह कहता रहता हूँ जहाँ उतानपाद मानो देखो, राजा याग करते रहते थे इस आभा को मैं कल प्रगट करूंगा यदि मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मुझे आज्ञा देंगें, आज का विचार तो मैं केवल इतना उच्चारण करने जा रहा हूँ, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे आज्ञा दी मैंने कुछ परिचय दिया है और परिचय यह है कि प्रत्येक मानव को, अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए, चाहे वह राजा हो प्रजा हो जब तक कर्तव्य का पालन नही होगा, मानो देखो, राष्ट्र और समाज कदापि ऊँचा नही बन सकता यह राष्ट्र और जब समाज ऊँचा बनता है जब कर्तव्यवाद की वेदी पर मानव तत्पर हो जाता है, पुरूषार्थ और देखो, नाना देखो, राजा अपने राष्ट्र में शान्ति चाहता हैं मानवता चाहता है यदि वह मानवता और महानता चाहता है तो रूढ़ियों का विनाश होना चाहिए रूढ़ियों का विनाश ज्ञान का और वेद का प्रसार होना चाहिए ब्रह्म ज्ञान का प्रसार होना चाहिए, मानव दर्शन प्रत्येक प्राणी के समीप होना चाहिए।

आज का यह विचार क्या हैं मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से वर्णन कराता रहता हूँ पूज्यपाद गुरुदेव से यह उद्गीत गाता रहता हूँ क्या प्रत्येक जैसे पूज्यपाद गुरुदेव ने हमें परम्पराओं से यह शिक्षाएं दी हैं क्या प्रत्येक मानव अपनी मानवीयता का तत्पर रहना चाहिए आज मैं देखो, राष्ट्रवाद या समाजवाद किसी भी प्रकार की आभा में रत्त नही रहना चाहता हूँ कल मुझे मेरे पूज्यपाद मुझे समय देंगें तो कल मैं साम्यवाद की चर्चा करूंगा कि वेद और मानवीयता में कितना साम्यवाद हैं कल वह मुझे समय मिलेगा तो चर्चा करूंगा देखो, जिन राष्ट्रों में आज उनकी संस्कृति का हृस हो गया प्राचीनता का मानो देखो, अतीत की सृस्कृति न रही उसकी मैं चर्चा कल करूंगा अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊंगा

पूज्यपाद गुरुदेवः- मेरे सम्भवा, मेरे प्यारे महानन्द जी ने, अभी-अभी अपना वाक् प्रगट किया इनके विचारों में साधारणतव, बड़ी गम्भीर वाक् मानो हमें प्राप्त होते रहते हैं, इनके वाक्यों में बड़ी एक महानता रही है इनके विचारों में राष्ट्रीयवाद कर्तव्यवाद और मानवता की आभा रत्त रही हैं। कल मेरे प्यारे महानन्द जी अपने विचार और उद्गीत रूप में गा सकेंगें, आज का वाक् अब यह समाप्त होने जा रहा हैं, कल समय मिलेगा तो कल मेरे पुत्र इसी भूमिका आगे बनायेंगें आज का विचार समाप्त ओ३म् देवाः आभ्यां रथं माणा वाचन्नं

६ वैदिक साम्यवाद ०६ ०३ १९८७

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना मेरे प्रभु का गुणगान गाया जाता है मानो वे परमपिता परमात्मा सर्वज्ञ हैं, संसार की स्थली ऐसी नही हैं जहाँ वे परमपिता परमात्मा न हो, मानो आज का हमारा वेदमन्त्र, याग के सम्बन्ध में मानो उस परमपिता परमात्मा गुञ्जार होता हुआ हैं जैसे मानो चन्द्रमा और सूर्य दोनो एक दूसरे के पूरक हैं, मानो एक ऊर्ज्वा देता है, तो एक अमृत बहा रहा हैं, सूर्य प्रकाश देता है, चन्द्रमा भी प्रकाश देता हैं, परन्तु वह जो प्रकाश है वह चन्द्रमा दे रहा है वह प्रकाश अपने में बड़ा अनूठा हैं, वह मानो देखो, उत्पति के मूल में रहता हैं और चन्द्रमा और सूर्य मानो उसकी उत्पति के मूल के रूप में वे उस प्रकाश बन करके रहता है और वह प्रकाश देता रहता हैं तो जब हम अपने प्रकाश की चर्चाएं करते हैं तो मानो चन्द्रमा और सूर्य दोनों का विज्ञान प्रायः हमारे समीप आने लगता हैं और यह कहा जाता है कि चन्द्रमा तो अमृतमयी प्रदान करता रहता हैं, सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक वैज्ञानिकों ने, चन्द्रमा से जो मानो देखो, ऊर्ज्वा को जाना हैं जो अमृत के रूप में विद्यमान रहती हैं मानो जो सूर्य के आँगन में, जो ऊर्ज्वा बन करके रहती हैं वही तो ऊर्ज्वा मानो देखो, उस मानव के और ब्रह्माण्ड की प्रतिभा में रत्त होती रही है।

तो आज मैं बेटा! तुम्हें विज्ञान के वांगमय में नही ले जाऊंगा, केवल आज का हमारा जो वाक् है हम परमपिता परमात्मा के यज्ञोमयी स्वरूप का प्रायः हम वर्णन करते रहते हैं और ये विचारते रहते हैं कि यह ब्रह्म एक अनूठा है मानो देखो, इसी वाक् को ले करके महर्षि पिप्लाद मुनि महाराज ने छह जिज्ञासुओं को यही कहा है क्या यह मानो प्राण स्वरूप हैं ये जो प्राण है ये दस रूपों में रत्त रहने वाला हैं मानो यह प्राण जब भिन्न-भिन्न प्रकार के रूपों में रत्त होता रहता है, तो मानो वह प्राण ही भोगतव्य है और प्राण ही भोगता माना गया हैं मानो देखो, यह प्राण ही आहार करता हैं और यह ही जानता हैं यह उपज देता हैं और वही ऊर्ध्वा में प्रवेश करा देता हैं।

तो आज हम मुनिवरों! मुझे इतना समय तो आज्ञा नही दे रहा है तो आज मैं प्राणो के ऊपर अपनी विवेचना प्रगट करूं, परन्तु संकेत में इतना हैं क्या यह जो प्राण है, यह अपने में मानो क्रियाशील है और वह प्राणतव अपने में क्रिया में रत्त रहने वाला, अभ्योदय होता रहता है। जिस आभा में मानव सदैव रत्त होता रहता है और जीवन की अनूठी-अनूठी धाराओं में और उत्पति के मूल में मानो वह अपने क्रियाकलापों में, इस संसार को एक आभा में निहित कर रहा है जिसके ऊपर हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, ऋषि-मुनि बेटा! अनुसन्धान करते रहते हैं परन्तु कोई वाक् आते रहते हैं मानो एक ऋत है एक सत हैं मानो देखो, ऋत में यह ब्रह्माण्ड जो दृष्टिपात आने वाला हैं ये सब ऋत कहलाता हैं अब जो परोक्ष रूप से विद्यमान हैं। अथवा क्रियाकलाप कर रहा है इन क्रियाकलापों में मेरे प्यारे! देखो, वह सतप्रद्धे वह सत ही विद्यमान हैं मानो देखो, जब तरंगों का विभाजन किया जाता हैं जैसे वैज्ञानिक एक अणु, परमाणु, और त्रेसेणु इत्यादियों का जब विभाजन करता है अथवा उसकी विभाजन तत्त्वों में, एक मानो उसके गर्भ में जो एक चेतनतव सत्ता हैं वही तो मेरे प्यारे! देखो, सत के रूप में विद्यमान है वह मानो देखो, सतमयी कहलाती हैं, अन्तरात्मा के समीप मानो विद्यमान होने वाला एक आत्मा परमपिता परमात्मा हैं दोनों ने ही तो अपने में भोगतव्य वृत्तियों में मानव निहित हो करके मुनिवरों! देखो, दोनो अपने में मग्न वृत्तियों में विद्यमान होते हैं।

तो आज बेटा! मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नही आया हूँ आज मैं विज्ञान के वांगमय में नही मानो एक-एक परमाणु के विभक्त करने से, इतनी ऊर्जा का जन्म हो जाता हैं कि उस ऊर्जा को ले करके हम अपने मे महान बनते रहते हैं अब मेरे प्यारे महानन्द जी देखो, उनका समय देने से पूर्व आज का हमारा वेदमन्त्र याग के सम्बन्ध में उद्गीत गाया जा रहा था, वेद का मन्त्र याग के लिए मानव को बाध्य कर रहा हैं मानो देखो, यागां ब्रह्म लोकां याग वही प्राणी करता है जो संसार में जागरूक रहता हैं अथवा जो जागता रहता है वही तो मेरे पुत्रों! देखो, याज्ञिक माना गया है आओ, मेरे प्यारे! आज का विचार अपने विचारों को हम यही विराम दे रहे हैं अब मेरे प्यारे महानन्द जी अपने कुछ वाक् मानो उद्गीत रूप में गायेंगें।

पूज्य महानन्द जीः- ओ३म् पश्चौ रथं भविता माणौ सर्वं भद्राणि गन्धर्वो वाचन्नमाः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अथव मेरे भद्र ऋषि मण्डल और भद्र समाज मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अभी-अभी मानो गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे पूज्यपाद गुरुदेव सदैव ज्ञान और विज्ञान में अपनी उड़ान उड़ते रहते हैं उनके विचारों का जो माध्यम अथवा उनके विचारों की जो प्रतिक्रियाएं है वह मानो देखो, परम्परागतों से बड़ी विचित्र मानी गई है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने अभी-अभी मानो कुछ विज्ञान के वांगमय में जाना चाहते थे और विज्ञान की कुछ इन्होंने चर्चाएं भी की हैं परन्तु मेरे पूज्यपाद गुरुदेव तो बहुत समय से एक-एक वस्तु पर अन्वेषण करते रहते हैं और विचार-विनिमय करते रहते हैं परन्तु उन विचारों में कितनी विचित्र उड़ाने हैं और उनकी कितनी मानो एक दूसरे पर कितना अध्ययन हम यह अपने में मानो शान्त हो जाते हैं। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने अभी-अभी कुछ वाक् उच्चारण किए मानो देखो, मैं और विशेष चर्चा तो देने नही आया हूँ बहुत समय हो गया भगवान राम के काल में और उससे पूर्व कालों में भी ऋषि-मुनियों की सभाएं और उनका प्रदर्शन होता रहता था मेरे पूज्यपाद गुरुदेव से मैंने कई काल में यह प्रश्न भी किया था परन्तु जहाँ अध्ययन का करने यह प्रतीत हुआ है क्या सृष्टि के प्रारम्भ से क्या भगवान मनु के काल से कुछ पश्चात ऋषि-मुनियों का एक समूह विद्यमान हुआ। और भगवान मनु महाराज ने ऋषि-मुनियों को वेद की पोथी में रत्त किए गए और ये उन्हें कहा गया कि हे ऋषि जनों! यह जो समाज हैं मानो यह जो प्राणी मात्र है इनके जीवन में अस्वस्थता होने वाली हैं मानो देखो, ये कर्तव्य विहिन हो रहे हैं तो ऐसी नियमावली बनाईए जिससे मानो यह क्रियाकलापों में तत्पर हो करके और यह अपने मानो देखो, दूरिता एक क्रिया न बना सके और उसके मनन की जो क्रियाकलापता है वह याज्ञिक रूप में परिणत हो जाएं।

वैदिक साम्यवाद

तो मेरे भद्र पुरूषों मानो देखो, ऋषि-मुनियों का समाज एकत्रित हुआ, और उस समाज में मानो देखो, उन्होंने यह प्रश्न किया था, क्या राष्ट्रीयता निर्माण करो कि राष्ट्रीयता को हम निर्धारित कर सकें, तो मानो देखो, उस समय उन्होंने सबसे प्रथम साम्यवाद की चर्चाएं की मानो देखो, हमारा जो वेद का मन्त्र है वह साम्यवाद की चर्चा कर रहा हैं साम्यवाद किसे कहते हैं? मानो देखो, समूह का वाद हैं जो समूह के विचार हैं सामान्य विचार है, मानो उन विचारों को ले करके मानो साम्यवाद विचारों से क्रियाकलाप होता हैं हमारे यहाँ मैं बहुत पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाता हुआ परन्तु परिचय दूंगा क्या मानो देखो, हमारे वैदिक वांगमय में, हमारे यहाँ सबसे प्रथम ब्रह्मयाग आता है पूज्यपाद गुरुदेव ने ब्रह्मयागों की बड़ी विचित्र चर्चाएं अथवा बड़ी महान से महान उड़ाने उड़ी हैं, उन उड़ानों में, पूज्यपाद गुरुओं ने और भी नाना ऋषियों ने और उस काल के ऋषियों ने यह निर्णय दिया, कि ब्रह्मयाग होना चाहिए, जिस परमपिता परमात्मा ने हमारा निर्माण किया हैं, जिस परमपिता परमात्मा ने नाना प्रकार की सृष्टि का सृजन किया हैं, जिस परमपिता परमात्मा ने उस ब्रह्माण्ड की रचना की हैं और रचना करके उनको जो क्रिया दे रहा हैं, मानो उस परमपिता परमात्मा के सम्बन्ध में, प्रातःकालीन चिन्तन करने वाले बनें चाहे राजा हो चाहे

सामान्य प्राणी हो, चाहे मानो देखो, युवक हो, चाहे युवक पत्नी और पति हों किसी भी रूप में मानव विद्यमान हो ब्रह्म का चिन्तन अवश्य करने वाले बनें। मानो देखो, जो माता-पिता सुयोग्य होते हैं जिन माता-पिताओं के हृदय में यह वेदना होती है कि मैं माता के हृदय में यह वेदना की मैं सुयोग्य सन्तान को जन्म देना चाहती हूँ तो मानो माता-पिता को तपस्या करनी होगी क्योंकि बिना तपस्या के सन्तान सुयोग्य उत्पन्न नही हुआ। करती तपस्या का अभिप्रायः क्या है क्या अपने क्रियाकलापों को मानो देखो, संयमी बनाता रहे, अपने क्रियाकलापों में त्रुटियां नही होनी चाहिए और जब मानो देखो, त्रुटियां नही होंगी तो उनके हृदय के उदगार, उनके हृदय की तरंगें, दोनों के हृदय की तरंगें मानो जब समावेशता में आती हैं तो सन्तान सुयोग्य उत्पन्न होती हैं।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कई कालों में यह चर्चाएं की हैं, आज मैं उसकी पुनरूक्ति तो देने नही आया हूँ विचार यह है कि मैं मानो यह जो ब्रह्मयाग होना चाहिए उस याग में, जब हम देखो, ब्रह्मयाग के पश्चात देखो, देव याग की पूजा करते हैं। देव याग किसे कहते हैं, देवताओं को हमें कुछ अर्पित करना हैं हमारे यहाँ देवताजनों के सम्बन्ध में, भिन्न-भिन्न प्रकार की आख्यिका आती रहती है। मुझे पूज्यपाद गुरुदेव ने कई कालों में वर्णन कराया, चरणों में विद्यमान हो करके, नाना प्रकार के प्रश्न और उत्तर होते रहते हैं मानो देखो, हम देवताओं की पूजा करते हैं, अग्नि होत्र करते हैं, अग्न्याध्यान करके यज्ञमान देखो, उद्गाता और अध्वर्यु बन करके, ब्रह्मा इत्यादि पुरोहित बन करके याग कर्म करते हैं। यागां ब्रह्मा उसका क्रियाकलाप उसका कर्मकाण्ड बड़ा भिन्न होता है परन्तु मैं कर्मकाण्ड की पद्धतियों में बड़ा विचित्र एक याग हैं देव याग का अभिप्रायः है कि यह जो देवता हैं जैसे बुद्धिमान हैं मानो राजा है, ब्रह्मणे ब्रह्मा यह राजा तो देवता नही जैसे जल, अग्नि, तेज वायु हैं ये सर्वत्र मानो देवता है और हम मानो देखो, देव पूजा करते हैं, जिससे वायुमण्डल पवित्र हो जाएं मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा कि प्रत्येक मानव यह कह रहा है कि मानो देखो, वायुमण्डल दूषित हो गया हैं दूषण काल भी हैं मानो देखो, जो अन्तरिक्ष में वह परमाणुओं के परमाणुओं के मानो देखो, झुण्ड के झुण्ड विद्यमान हैं वे परमाणु जैसे मानो देखो, वर्षा काल आ करके देखो, पर्वतों की माला मानो देखो, निचली स्थलियों पर आने लगते हैं उसी प्रकार विज्ञान की मानो देखो, परमाणुवादों की जो तरंगें हैं उनमें देखो, भिन्नता आ गई हैं मैं यह कहता रहता हूँ क्यों है मैं साम्यवाद की चर्चा इसीलिए कर रहा हूँ यदि याग हो जाएं देवता जन प्रसन्न हो जाएं तो परमाणुवाद मानो देखो, अपनी स्थलियों से द्वितीय स्थलियों पर नही जा सकता क्योंकि याग राजा को करना चाहिए प्रजा में होना चाहिए परन्तु देखो, इस प्रकार के जो विचार है इस प्रकार का जो वेद का साम्यवाद है वह यह कहता है कि याज्ञिक बने रहो मैं यह दृष्टिपात करता रहता हूँ मैनें अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह कहा है जिस स्थली पर हमारी आकाशवाणी जा रही है मानो देखो, वहाँ नाना प्रकार के देखो, रूढ़िवादी प्राणी भी रहते हैं आधुनिक काल रूढ़िवाद से बड़ा सम्पन्न हो रहा हैं रूढ़िवादों का बड़ा नृत्त हो रहा हैं मानो देखो, यहाँ मोहम्मद के मानने वाले और भी नाना प्रकार के विचारार्थ प्राणी रहते हैं परन्तु एक दूसरे के विचारों में बड़ी विडम्बना हैं बड़ा मानो देखो, मतावलम्ब है विचारते रहते हैं कि यह जो याग हो रहे हैं यह मानो हमारे प्राणों के हमारे लिए प्रतीत नही एक समय क्या होगा ऐसा विचारते रहते हैं मैं यह कहता रहता हूँ मैं यह कहता रहता हूँ कि हे भोले प्राणियों क्या तुम चाहे मोहम्मद के मानने वाले हों चाहे ईसा के मानने वाले चाहे मानो देखो, तुम नाना प्राणियों को भक्षण करते हों उस काल में तो नही विचारते कि हमारे लिए क्या होना हैं परन्तु जहाँ याग होते हैं जहाँ सुगन्ध आती है जो हमारी प्राचीनता जो मानव का सबसे महान क्रियाकलाप हैं जब मैं यह विचारता हूँ तो आश्चर्य और दृष्टिपात करता हूँ तो आश्चर्य आता हैं क्या मानो देखो, यह जो सुगन्ध है। यह उनके गृहों में नही उनके मानो देखो, दर्शनों में उनकी घ्राण इन्द्रियों में भी यह सुगन्ध जाती हैं। इसको वह नष्ट नही कर सकते। परन्तु ऐसा साम्यवाद है ऐसी साम्य चक्रिका है जिसको कोई भी प्राणी

मानो देखो, पान किए बिना रह सके, विचार आता है विचारं ब्रहे परन्तु देखो, इसको हम देव याग कहते हैं, जिससे देवता प्रसन्न होते हैं, वायु पवित्र होती है वायु देखो, अग्नि को पवित्र करती हैं वायु देखो, जल का शोधन कर देती हैं और जल पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश हो जाता है मानो यही प्राण सत्ता को प्रदान करने वाला हैं मेरे पूज्यपाद गुरूदेव देखो, याग का नाम ही साम्यवाद हैं ऐसा साम्यवाद यह चक्र है जिसको धारण करने के पश्चात मानव का जीवन एक महानता की वेदी पर आ जाता हैं मेरे पूज्यपाद गुरुदेव आज मैं जो आपको परिचय देना चाहता हूँ द्वितीय साम्यवाद का, जब यज्ञमान मानो देखो, याग करता है वह देव याग से वायुमण्डल पवित्र हो गया हैं वह कहता है कि वायुमण्डल में रहने वाला, जो प्राणी मात्र है मानो देखो, यज्ञमान कहता है मैं सभी का सेवक हूँ, मानो सभी को मुझे अर्पित करता है वह अपने कर्मकाण्ड की पद्धति में, याग ब्राह्मणजन जाता हैं, पुरोहित जाता है जैसे ब्रह्मा अध्वर्यु जाता है तो वेद के कुछ आख्यिकाएं मन्त्र हैं मानो देखो, वह प्रत्येक प्राणी के लिए याग करता हैं। वह अतिथि याग करता है अतिथि कौन है? किसी भी गृह के पति पत्नी और बाल्य बालिका उनके गृह से कोई भी महापुरूष आ जाएं प्राणी आ जाएं मानो कोई अज्ञान अतिथि आ जाएं, उसको भोज कराता है, उसको भोज कराने का नाम हमारे यहाँ मानो देखो, उसे हमारे यहाँ अतिथि याग कहा जाता हैं वह अतिथि याग है, अतिथि याग मानो कौन है मानो कोई भी अतिथि आ जाएं उसको भोज्य कराना उसका आदर करना मानो देखो, उसकी पूजा, पूजा का अभिप्रायः यही है कि उसकी इच्छाओं को पूर्ण करना हैं परन्तु देखो, द्वितीय याग है, वह मानो जो इससे पूर्व याग है, वह पितर याग हैं, हमारे यहाँ पितरों की कोटि में यह सर्वत्र जगत के प्राणी आते हैं मानो देखो, जितने पितर जन हैं, मातृ जन है, महापिता है, पड़ पिता हैं, वह भी संसार में राजा भी हमारा मानो पितर कहलाता है जो अनुशासन करता कराता है मानो देखो, और भी पितर कहलाते हैं जैसे आचार्य जन हैं, मानो देखो, पितर याग करना है, उनकी पंक्ति लगी हुई हैं और भोज्य कराना है मानो पुरोहित जन है, वह सब मानो पितर कहलाते हैं, आज हम पितरों की कोटि में प्रवेश कर जाते हैं तो मानो वही बाल्य ब्रह्मे मानो देखो, वही उनकी सेवा करते रहते हैं उनकी सेवा करने का नाम पितर याग है, परन्तु इसके पश्चात वह मानो देखो, सब देखो, नाना प्रकार के प्राणी है, जो प्राणी मानो जैसे कुतर है, मानो बिल्ल है, कृतिका है, उन सबको मानो यज्ञमान अपनी इच्छानुसार भाग देता हैं मानो अरे, यहाँ यह जो बड़ा विचित्र है वेद का साम्यवाद है। जहाँ मानव के लिए नही प्राणी मात्र के लिए मानो जो अपने में से ग्रास प्रदान करता रहता हैं यह कितना विशाल साम्यवाद है परन्तु देखो, वेद का साम्यवाद रहा जहाँ वह याग भी करता है, जो प्राणी चले गएं हैं परन्तु देखो, ऐसा विश्वसनीय है, क्या अन्तरिक्ष में आत्मा भ्रमण कर रही हैं मानो देखो, जल के द्वारा अन्न के द्वारा उन प्राणियों के प्रति भी मानव श्रद्धांजलि करता है विचार देता है यह साम्यवाद कैसा साम्यवाद हैं जब राजा मानो देखो, वह साम्यवादी राजा कहलाता है वह समाज कहलाता हैं, जिस समाज में मानो देखो, प्रत्येक गृह में याग होना ब्रह्मयाग होना, देव याग होना अतिथि याग होना, पितर याग होना, बलि वैश्व याग होना, मानो देखो, यहाँ यागों की क्रिया होती रहती हैं। याग का अभिप्रायः है क्या कोई भी प्राणी देखो, राजा के राष्ट्र में, समाज में, मानो देखो, अन्न जल से विमुख न रहे उसका नाम साम्यवाद कहलाता है। परन्तु देखो, यह तो साम्यवाद हुआ, जिस साम्यवाद में, प्रत्येक मानव मानव का प्रिय बन करके मानो देखो, उसकी आभा में रत्त हो जाता हैं मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आदि ऋषियों ने मानो देखो, इस प्रकार की साम्यवाद की चर्चा की हैं।

आज मैं आधुनिक काल, के साम्यवाद पर आना चाहता हूँ, आधुनिक काल का साम्यवाद, वह कहलाता हैं जो मानो देखो, द्रव्यपति है आधुनिक काल का साम्यवाद वह है जो दूसरे के मानो देखो, द्रव्य का शोषण करके अपने को कहता है मैं साम्यवादी हूँ, मानो देखो, आधुनिक काल का साम्यवाद वह है जो एक दूसरे राष्ट्र को अपने

नीचे दबा करके मानो देखो, अपने राष्ट्रवाद का प्रसारण करना चाहता हैं आधुनिक काल का साम्यवाद यह कहता हैं, आधुनिक काल का साम्यवादी कहता है, क्या परमपिता परमात्मा को मानो देखो, नाम मात्र कहलाता हैं। आधुनिक काल का साम्यवाद यह कहता है क्या ब्रह्मे मानो देखो, मैं अपने को ऊँचा बनाऊं, मैं साम्यवाद के लिए प्रश्न करता रहता हूँ, क्या मानो देखो, जब एक-दूसरे को दमन करके और और अपने में ऊर्ध्वा में बनना चाहते हो, तो यह साम्यवाद नही कहलाता है। वास्तव में साम्यवाद वह कहलाता हैं जहाँ साम्य प्रवृत्तियां बन जाती है जहाँ सामान्य जिसका आहार और व्यवहार बन जाता हैं आज मानो देखो, मैं किसी भी राष्ट्र में जाना चाहता हूँ, किसी भी राष्ट्र की प्रतिक्रियाएं, आधुनिक जगत का जब मैं वर्णन करना चाहता हूँ, तो नाना प्रकार के अणु और परमाणुओं का निर्माण हो रहा है और वह मानो देखो, साम्यवादी निर्माण कर रहे हैं जो साम्यवाद की घोषणा करते हैं, मैं यह जानना चाहता रहता हूँ, मेरी यह प्रक्रिया रही है, क्या मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों की वन्दना करता हुआ, यह उच्चारण करता रहता हूँ क्या जिस काल में साम्यवाद है प्रजा को समाज को एक दूसरे को साम्यता देने वाला उसको अणु और परमाणुओं की आवश्यकता क्यों होने लगी अणु और परमाणुओं की आवश्यकता तो वहाँ होती है जहाँ द्वेष होता है मानो देखो, एक यह भी कि मानव अपनी जानकारी करना चाहता है नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण करना चाहता है आधुनिक काल में प्रत्येक मानव चिन्तित हो रहा है कि इसका विज्ञान का बनेगा, क्या इस विज्ञान का परिणाम क्या होगा।

मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह प्रश्न किया था, और मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने हमें यह निर्णय भी कराया, और मैं भी आधुनिक काल के जगत को दृष्टिपात करके ये कहा करता हूँ कि देखो, यह अणु और परमाणु मानो देखो, जिनका निर्माण हुआ हैं, निर्माण हो रहा है और मानो देखो, मानव की जितनी वाणी है, वह माता-पिता के रूप की वाणी हो चाहे विद्यालय की वाणी हो, चाहे देखो, राष्ट्रीयता की वाणी उसको उद्घोष कहते है उस वाणी से वायु मण्डल देखो, भुः भुवः यह दोनो अशुद्ध हो गएं हैं और दोनो के अशुद्ध होने से ही वाणी के कारण यही शब्द मानो देखो, आभा में निहित होते रहते हैं, यही शब्द मानो देखो, इन्हीं शब्दों के कारण गृह अपवित्र कहलाते हैं और राजा के राष्ट्रों में भी अपवित्रता आ रही है देखो, जब मैं यह विचारता हूँ वेद के वांगमय में प्रवेश करता हूँ या गम्भीर यौगिक मुद्रा में सदैव हम जाते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है क्या मानो देखो, यह जो विचारों की समूहता के साथ विद्यमान हैं जो द्यौ लोक में प्रवेश करते हैं जो द्यौ लोक में मानो देखो, अपनी स्थिति किए हुए हैं उनका अणु और परमाणु बन करके वही निचली स्थलियों पर आना चाहते हैं आ रहे हैं परन्तु देखो, उसी को दूषित वायु मण्डल कहते हैं इसी को मानो देखो, दूषणता कहते हैं जब मैं यह विचारता हूँ कि हे भोले प्राणियों! तुम्हें अपने कर्तव्य का पालन करना हैं, जब तुम अपने कर्तव्य का पालन करोगे, तो यह यह विज्ञान अनूठा बन करके, यह विज्ञान महान बन करके मानो देखो, एक आभा में निहित हो जाएगा। मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा था, महर्षि भारद्वाज मुनि के विचारों से मानो देखो, उनके विचार बड़े विचित्र हैं जो कागभुषुण्ड जी महाराज ने अपने विचार दिए हैं, लोमश मुनि के सहित, वह बड़े विचित्र हैं। आज मैं आधुनिक काल के मानो आध्यात्मिक वेत्ताओं से यह कहता रहता हूँ, क्या तुम आध्यात्मिकवाद का प्रगट तो करते रहते हो, परन्तु देखो, आध्यात्मिक तुम्हारा जो मार्ग हैं वह तुम विपरीत जा रहे हो। हमारे यहाँ पुरातन काल में, जहाँ नाना ऋषि-मुनियों की विचारधाराएं परिणत होती है, परन्तु आज नाना प्रकार के रूढ़िवादी है, वह जो रूढ़ियाँ, मैंने कल भी रूढ़ियों की चर्चा की, जो धर्म के नामों पर, ईश्वर के नामों पर, जो नाना प्रकार की रूढ़ियाँ है, वे रूढ़ियों से जितने अध्यक्ष महोदय हैं, वह सब मानो देखो, ब्रह्म ही ब्रह्म कहते हैं, अपने को सब ब्रह्म कहते हैं परन्तु यदि कोई प्राणी उनके शरीर से स्पर्श कर जाता है, तो ब्रह्म की आभा को सबको नष्ट कर देते हैं। वहाँ ब्रह्म नही रहता, क्योंकि वहाँ

दुखद हो रहा हैं। विचार आता है कि ब्रह्म तो मानो देखो, हिंसक प्राणी में भी है, अहिंसा में भी विद्यमान है। विचार आता रहता है मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव को निर्णय किया, क्या जब तब यह समाज मानो देखो, अपने को ब्रह्म कहता हुआ, लज्जित नही होता, जब तक आध्यात्मिकवाद का उत्थान नही हो सकता, और आध्यात्मिकवाद जब ऊँचा बन जाएगा। मानो देखो, अणु और परमाणुओं की प्रतिभा नष्ट हो जाएगी।

विचार आता रहता है मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कई काल से कहा है क्या एक योगी हो जाएं संसार में मानो जो परमात्मा के प्राणों से और मन का समन्वय करने वाले हो, एक सहस्त्र राजाओं के तुल्य कहलाता हैं। विचार आता रहता है मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाते हुए कई वाक् मैंने पूर्व काल में प्रगट किए थे। आज मैं यह विचार दे रहा हूँ कि मानव का साम्यवाद, मैं साम्यवाद की चर्चा कर रहा हूं, दोनों प्रकार के याग हमारे समीप रहते हैं दोनों प्रकार के मानो विचारों में हम भ्रमण करते रहते हैं जहाँ हम यागों में साम्यवाद हैं वेद का साम्यवाद भिन्न है आधुनिक काल का साम्यवाद भिन्न कहलाता हैं वेद का साम्यवाद यह कहता है कि अहिंसा परमोधर्मी बनो और देखो, जो साम्यवाद आधुनिक काल का है वह यह कहता है क्या भक्षणां ब्रह्मे देखो, प्राणियों का भक्षण करो जिससे अन्न की पूर्ति हो जाएं ऐसा मानव कह रहा है ऐसा मानव क्यों कह रहा है क्योंकि अज्ञान है कर्तव्यवाद में विज्ञान का दुरूपयोग हैं विज्ञान के दुरूपयोग में कोई मानव यह चाहे, क्या मैं आध्यात्मिकवाद को ऊर्ध्वा में ले जाऊं, तो मानो असम्भव प्रतीत होता होगा। आज विज्ञान का दुरूपयोग है, जब मैं यह विचारता रहता हूँ, मैं विद्यालयों में मानो किसी भी स्थली पर भ्रमण करूं जब मैं यह विचारता रहता हूँ कि विचार क्या हैं मानो देखो, माता-पिता कहाँ जा रहे हैं माता-पिता के गृह में मानो बाल्य का जन्म हुआ, वह युवा हो गया हैं मानो वह युवा हो करके चर्चा करता है नृतिकाओं की, वह चर्चा कर रहा है विज्ञान मानो चित्रावलियां की, अरे, राजन! तू चाहे कि मेरा राष्ट्र आज ऊँचा बन जाएं यह असम्भव हैं परन्तु देखो, जब तक तेरे यहाँ विज्ञान का दुरूपयोग होगा, हे संसार के प्राणियों! जब तक तुम्हारे विज्ञान का दुरूपयोग होगा, न तो तुम्हारा विद्यालय ऊँचा बनेगा, और न तुम्हारा समाज ऊँचा बनेगा, परन्तु देखो, वह एक दूसरे के रक्त का पान होता रहेगा। परन्तु देखो, मैंने बहुत पुरातन काल में कहा था पूज्यपाद गुरुओं ने वर्णन करते हुए कहा था मैं तो उनके वाक्यों को पुनरूक्ति कर रहा हूँ मैं उनके विचारों की पुनरूक्ति करता रहता हूँ आज माता-पिता है अपने बाल्यों को ले करके जब मानो देखो, नृतिकाओं के समीप विद्यमान होते हैं अरे, उनका ब्रह्मचर्य कहाँ चला गया मानो देखो, मैं जब विचारता रहता हूँ भगवान राम की जीवन जब मानो देखो, विद्यालयों में विराजमान हो करके वशिष्ठ और अरूणधती के चरणों की वन्दना करते वह अपने में विज्ञान वेद के विज्ञान, को ले करके वेद के साम्यवाद को ले करके, राम का पवित्र जीवन व्यतीत हो रहा हैं आधुनिक काल का राष्ट्र आधुनिक काल का राष्ट्र गुरु के चरण को प्राप्त होते नही क्योंकि जब तक राजा को ऊर्ध्वा में विचार देने वाला ब्रह्मवेत्ता नही होगा राजा कदापि ऊँचा नही बनता। मैंने बहुत पुरातन काल में वर्णन करते हुए अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह कहा था कि जब देखो, राम राज्य का निर्माण कर रहे थे विष्णु राष्ट्र की स्थापना कर रहे थे उस समय वशिष्ठ और माता अरूणधती मानो देखो, राम को शिक्षा दे रहे हैं राम को कहते हैं तुम्हारा चरित्र महान होगा मानवता ऊँची होगी तो तुम्हारा राष्ट्र पवित्र होगा मैंने बहुत पुरातन काल में पूज्यपाद गुरुदेव के मुखारबिन्दु से श्रवण किया गया, क्या जिस समय देखो, गंगोत्री अपने जीवन को समाप्त करने लगी तो महाराजा शान्तनु से यही कहा कि हे पति देव! मेरा तो देव लोक को गमन हो रहा हैं, मैं तो अपने लोक को जा रही हूँ परन्तु देखो, यह जो राष्ट्र है, आप राजा बन रहे हैं, राजा हैं, परन्तु देखो, किसी भी द्वितीय मानो देवी के प्रति तुम्हारा दुष्विचार नही होना चाहिए आज मैं यह विचारता रहता हूँ आधुनिक काल का राष्ट्र आधुनिक काल के मानो देखो, कर्णधार जब मैं यह विचारता हूं, जब पति, पत्नियों को त्याग करके नाना देवियों के सतीत्व

को हनन किया जाता है चाहे वह तो यह राष्ट्र कैसे ऊँचा बनेगा जहाँ पुरातन वैदिक विचारों को ले करके हम चलते हैं तो हमें यह प्रतीत होता है कि हमें अपने जीवन को कहाँ पंहुचाना है जब मेरी पुत्रियाँ चित्रावलियों में नृत्यं करती हैं तो बाल्य बालिका दोनों का जीवन भ्रष्ट हो रहा हैं आज हमारी सन्तान युवक समाज पवित्र बने राष्ट्र ऊँचा बने यह असम्भव हैं। आज संसार में यह अग्नि प्रदीप्त हो रही है, कौन राष्ट्रवेत्ता ऐसा है जो इस अग्नि को नष्ट कर सकता हैं कोई राष्ट्रवेत्ता ऐसा प्रतीत नही हो रहा हैं।

आधुनिक काल में जो कुरीतियां हैं उनको विचारना है, हे राष्ट्रवेत्ताओं! तुम एक स्थली पर विद्यमान हो करके तुम एक दूसरे को नष्ट करने की मत विचारों कि राष्ट्र में चरि कैसे आये? परन्तु आधुनिक काल के राजा एकत्रित होते हैं तो ऐसी-ऐसी वार्त्ता प्रगट करते हैं कि अमुक राष्ट्र में क्या और क्यों संग्राम हो रहा हैं? परन्तु जब सब राजा विद्यमान हो करके विचारेंगें कि विज्ञान का दुरूपयोग नही होना चाहिए, नृतिका नही होनी चाहिए और बाल्य जब उनके चरित्रों को दृष्टिपात करेंगें, तो विज्ञान का सदुपयोग होगा विज्ञान का सदुपयोग होगा तो कर्तव्यवाद आऐगा, तो विद्यालय राष्ट्र और समाज पवित्रता की वेदी पर विद्यमान हो जाएगें। जिस काल में प्रत्येक मानव अपनी यह पुकार कर रहा है कि मुझे अधिकार प्राप्त होना चाहिए मानो जो व्यवसाय करने वाले हैं वह तो अपने से कहते हैं कि हमें अधिकार प्राप्त हो उनके सेवक कहते हैं कि हमें अधिकार प्राप्त हो राजा कहता है कि मैं अधिकार चाहता हूँ, सभी अधिकार चाहते हैं, कर्तव्य कोई नही कर पाता, तो यह समाज कैसे पवित्र बनेगा।

अरे, जिस राष्ट्र में प्रातःकाल होते ही नाना प्राणियों के रसों का पान किया जाना हो, नाना प्रकार के प्राणियों को नष्ट करके अपनी जीविका को ऊर्ध्वा में लाया जाता हो यह राष्ट्र कैसे अहिंसा परमोधर्मी बनेगा। हे राजन! तुझे अहिंसा परमोधर्म को लाना है। अहिंसा परमोधर्म तेरे राष्ट्र में जब आएगा, तब तू स्वतः अहिंसा परमोधर्मी बनेगा। प्रजा में महानता आ जाएगी। उस महानता का परिणाम यह होगा, कि प्रत्येक मानव कर्तव्यवादी बनेगा राजा जब कर्तव्यवादी होता है, जब उसके गुरुजन कर्तव्यवादी होते है, जब ब्रह्मवेत्ता गुरुजन होते हैं आधुनिक काल के जो राजा हैं, उनका कोई आचार्य ब्रह्मवेत्ता नही हैं आधुनिक काल में जो विचार देते हैं वह राजा से निचली श्रेणी के होते हैं। यह नीचे विचार देते है तो मानो यह विचार कोई महान नही हुआ करते।

राष्ट्र की उच्चता का आधार

जब भगवान राम लंका को विलय करने के पश्चात अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो गये, तो विभीषण जी ने का कि मैं राम को अपने यहाँ अन्न पान कराना चाहता हूँ, उस समय राम ने अपनी गोष्ठियां की, विचार-विनिमय करने लगे कि मैं क्या करूं। उस समय उनमे महा-पुरोहित कौशलिक ऋषि महाराज उनके आश्रम में आऐ और हनुमान जी को उन्होंने कहा कि जाओ राम से कह दो कि इस निमन्त्रण को स्वीकार न करे, राम ने उस निमन्त्रण को स्वीकार नही किया। क्योंकि राम स्वतः भी जानते थे कि उनके कुटुम्ब का लंका में संग्राम हुआ था, वह राम को भी नष्ट कर सकते थे। इस प्रकार की विचारधारा जब आचार्यजन देते हैं, तो यह विचारधारा महानता में होती हैं, जब राम अयोध्या के राष्ट्र की स्थापना कर रहे थे तो वशिष्ठ ने कहा कि तुम्हें सुचरित्र और महानता का गमन करना है सीता से कहा कि तुम्हें भी महानता का गमन करना हैं जब सर्वत्र एक महातना की वेदी पर आ जाते हैं तो समाज में बुद्धिजीवी प्राणी वेद का प्रकाश और नाना प्रकार की रूढ़ियाँ नष्ट होना ही मानवीयता और राष्ट्र का ऊर्ध्वा में गमन करना हैं। प्रत्येक मानव राष्ट्र में शान्ति से रहे अपने कर्तव्य का पालन करने वाला हो और साम्यवादी विचारधारा को अपना करके एक दूसरा प्राणी प्राणी का सहयोगी बना रहे विचारधारा यह होती है इस विचारधारा को कौन देता हैं इस विचारधारा को ब्रह्मवेत्ता देता हं और ब्रह्मवेत्ता जब तक राजा के राष्ट्र में नही होंगे जब तक राष्ट्र ऊँचा नही बना करता।

कर्तव्यवादी को अधिकार

विचार क्या कि मैंने ऊर्ध्वा में एक वाक्य कहा था कि पाण्डितव वह होता है जो निर्वाचन प्रणाली को पवित्र बना सके निर्वाचन प्रणाली में बुद्धिमानो का संग होना चाहिए और बुद्धिमान भी तपस्वी हो प्रत्येक मानव को मानवता की दृष्टि से मानव का अधिकार दिया जाना चाहिए अधिकार भी जब दिया जाना चाहिए जब वह कर्तव्यवादी हो। राजा कर्तव्य का पालन करने वाला हो तो उसे अधिकार तो स्वतः प्राप्त हो जाता हैं एक मानव पुरूषार्थी बना हुआ है पुरूषार्थ कर रहा हैं तो देखो, उसको अधिकार स्वतः प्राप्त हो रहा हैं कर्तव्यों के पश्चात अधिकार तो प्राप्त हो जाता हैं आज बुद्धिमानो का कर्तव्य है चाहे वह राष्ट्र का निर्वाचन करने वाले हों वेद के मर्म को जानने वाले जो पाण्डितजन ब्रह्मवेत्ताजन हैं उन्हें नाना प्रकार की रूढ़ियाँ नष्ट कर देनी चाहिए। जब तक राजा मे रूढ़ियाँ बनी रहेंगी उनकी ईश्वर वाद के ऊपर श्रद्धा नही होगी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कहा था कि परमपति परमात्मा तो राष्ट्रवेत्ता है वह राजा है वह धिराज हैं यह स्वीकार करके मानो उसका सेवक बन करके राजा सेवना नही करेगा तो उसका राष्ट्र समाप्त हो जाएगा। अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा चाहूँगा।

पूज्यपाद गुरुदेवः- मेरे प्यारे ऋषिवर! मेरे प्यारे महानन्द जी ने आज बहुत-सी वार्त्ताएं सामाजिक पद्धतियों के आधार पर, और उनमें जो त्रुटियां थी, प्रगट की, उग्रता के क्षेत्र मे ऋषियों ने कहा था कि चन्द्रमा परमपिता परमात्मा हैं, क्योंकि वह अमृत देता हैं और वह उत्पति के मूल में रहता हैं, ऋषि पिप्लाद ने कहा था कि ऐसा नही है, यह तो एक शिक्षा है जैसे माता-पिता अपने बाल को योग्य बनाने के लिए शिक्षा देते हैं, इसी प्रकार जिज्ञासुओं ने ऋषि को से कहा कि हम सूर्य को भगवान स्वीकार करते हैं, ऋषि ने कहा कि इसका जो प्रकाश है, वह अनुपम है, ऊर्ज्वा युक्त हैं जो खनिजों के मूल में रहता हैं और प्रकाश की आभा में रत्त रहता है। इसीलिए यह सूर्य भी जैसे माता-पिता अपनी सन्तान को ऊँचा बनाना चाहते हैं या गुरु शिष्य को ऊँचा बनाना चाहता है तो यह साधारण एक व्यवस्था एक विचार है यह तो बेटा! एक बड़ी विचित्र माला है जिसको अभी मैंने प्रगट किया।

आज मेरे प्यारे महानन्द जी ने साम्यवाद की चर्चा की परन्तु यह साम्यवाद कहा से ले आते हैं भगवान मनु के यहाँ नाना ऋषि विद्यमान हुए यह तो वाक्य यथार्थ है उन्होंने राष्ट्रवाद का निर्माण किया और राष्ट्रवादों में उन्होंने भिन्न-भिन्न प्रकार की विवेचना की, परन्तु उन अर्थों में सबसे प्रथम भगवान मनु ने और ऋषियों ने यह माना कि सुयोग्य राजा और राष्ट्र की प्रणाली पवित्र हो और राजा याज्ञिक और ब्रह्मवेत्ता हो, ऐसा भगवान मनु ने वर्णन किया है। परन्तु इन्होंने इन वाक्यों की पुनरूक्तियां की, विचार यह कि इनका विचार, साधाराणतव रूप में बड़ा विचित्र रहा है, रहा विज्ञान, इनका विज्ञान और विज्ञान के ऊपर हम अपनी टिप्पणीयाँ कल प्रगट करेंगें। क्या विज्ञान अपने में कैसा अनूठा हैं, और आधुनिक काल के विज्ञान की चर्चाएं, मेरे पुत्र ने अभी-अभी प्रगट कीं और इन्होंने भौतिक विज्ञान के सम्बन्ध में सबसे प्रथम विज्ञान के मानो युग की चर्चा की हैं विज्ञान का दुरूपयोग नही होना चाहिए। विज्ञान के दुरूपयोग के काल में मानो राष्ट्र और समाज दोनों नष्ट हो जाते हैं, ऐसा प्रायः कही मानो देखो, राजाओं के यहाँ ऐसा हुआ हैं। वह चर्चाएं कल प्रगट करेंगें आज का वाक् मानो समाप्त होने जा रहा हैं।

७ ऊर्ध्वा में कर्तव्य ०७ ०३ १९८७

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना, मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी हैं मानो वह सर्वत्रता में ओत-प्रोत हैं वह महान और विचित्रतव कहलाता हैं। जब हम यह विचारते रहते हैं कि हमारा प्रत्येक वेदमन्त्र, उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान का वर्णन करता रहता हैं, हमारे यहाँ ऋषि-मुनियों ने और परमपिता परमात्मा के सम्बन्ध में मानो ऋषि-मुनि अपना विचार-विनिमय करते रहें है। उन विचारधाराओं में आदि आचार्यों ने बेटा! भिन्न-भिन्न प्रकार की आभाओं का प्रायः वर्णन किया है अथवा उसके गुणों का गुणवादन, अपनी वर्णन शैली में उद्गीत रूपों में गाने लगते हैं, तो हमारा प्रायः हृदय पवित्रतव हो जाता है। संसार में प्रत्येक प्राणी चाहे वह किसी भी लोक-लोकान्तरों में रमण करने वाला हो, चाहे वह पृथ्वी मण्डल पर हो, परन्तु सर्वत्र प्राणी की एक ही पिपासा रहती है, कि मैं आनन्दवत में प्राप्त हो जाऊं, और मुझे हर प्रकार का, नाना प्रकार का, आनन्दवत मुझे प्राप्त हो जाएं।

तो मेरे प्यारे! जितने भी मानव नाना प्रकार के अनुष्ठान करता हैं नाना प्रकार के यागों में सम्वृत्तियों में रत्त हो जाता हैं चाहे वह भिन्न-भिन्न प्रकार की उड़ान उड़ने वाला हो परन्तु उस उड़ान उड़ने वालों ने, अपनी-अपनी आभाओं में सदैव रत्त रहने वाला, मानो अपने में अभ्योदय होता रहता है, और यह विचारता रहता है कि मैं आनन्दवत हो जाऊं, मानो एक राजा राष्ट्र का पालन कर रहा हैं, वह नाना प्रकार के विचारों में वही अपना उद्गीत गाता हैं क्या मेरा राष्ट्र मेरी प्रजा में महानता का दर्शन हो जाएं। एक सूत्र में प्रत्येक मानव सूत्रित हो जाएं, तो यह हमारे यहाँ, परम्परागतों से और वेद के वांगमय में चिन्तन करने वालों ने प्रायः इस प्रकार की कल्पनाएं और विचार-विनिमय किया हैं। आज मैं उन विचारों में न जाता हुआ, केवल यह कि मानव इतना आनन्दित कैसे हो सकता हैं? उस आनन्द को हम कैसे प्राप्त कर सकते हैं? जिस आनन्द के लिए माता भी पिपासी रहती हैं, पिता भी पिपासी रहता है माता पिता भी यह चाहते हैं कि हमारा गृह स्वर्ग बन जाएं मानो गृह में एक आनन्दवत हो जाएं और इससे ऊर्ध्वा में जाता है मानो वह विज्ञान में जाता है तो अपने अन्तर्हृदय में एक परमपिता परमात्मयी चेतना को, अपने में धारण करने वाला वह धारण करने के लिए तत्पर होता है, यह कहता है कि मैं धारयामि बन जाऊं और मैं इसको अपने हृदय में धारण करने लगूं मानो देखो, इस प्रकार उसकी विचित्र अपनी आन्तरिक विचारधारा होती हैं।

इससे पूर्व काल में, मेरे प्यारे महानन्द जी राष्ट्रवाद की चर्चा कर रहे थे कहीं साम्यवाद के ऊपर विचार दे रहे थे कहीं मानो देखो, वह साम्यवादी विचारों को प्रगट कर रहे थे आज मैं उन विचारों में न जाता हुआ, मेरे पुत्र ने एक वाक् बहुत प्रियतम कहा था क्या संसार में ऋषि-मुनियों का एक जो मन्तव्य है, अथवा ऋषि-मुनियों का जो विचार रहा है, कि मानव का अनुशासन मानव का अनुशासन, मानो देखो, वह राष्ट्र को ऊँचा बनाता हैं। मानव के हृदय में, जब मानव हृदयग्राही बन करके और विद्या का अध्ययन करता हैं और विद्यालयों में अनुशासित प्राणी मानो देखो, अपने में प्राणवर्द्धन करने लगता है और प्राण वर्चोसि बन जाता है मानो देखो, राजा के राष्ट्र में, एक मानवीयता का प्रसार हो जाता हैं। मेरे प्यारे महानन्द जी ने मुझे एक वाक् और बड़ा विचित्र प्रगट किया, क्या प्रत्येक इन्होंने रूढ़िवादियों की चर्चाएं की, परन्तु मैं यह वाक् इतना नही जानते, क्या रूढ़िवादी क्या है? परन्तु जो ईश्वरवाद के ऊपर भिन्न-भिन्न प्रकार के विचार होते रहते हैं, अथवा भिन्न-भिन्न प्रकार की जो धाराएं हैं, उनमें जो

मानव रत्त रहना चाहता हैं, वही उसके मानवीय दार्शनिक, मानवीय विचार और मानव को ऊर्ध्वा में ले जाने वाले हैं।

आओ, मेरे पुत्रों! मैं तुम्हें विशेषता में तुम्हें नही ले जाऊंगा, आज मैं तुम्हे उसी क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ, जहाँ ऋषि-मुनि प्रत्येक स्थलियों पर विद्यमान हो करके, प्रत्येक वस्तु के ऊपर अन्वेषण करते रहे हैं। मेरे पुत्रों! उन्होंने याग के सम्बन्ध में, जैसा इन्होंने उच्चारण किया, कि साम्यवाद, एक साम्यवाद क्या हैं? उनकी दृष्टि ऋषि-मुनियों का विचार हैं, ऋषि-मुनियों ने अपने अकाटय विचार दिए हैं और तप करने के पश्चात, उन्होंने अपने विचार दिए हैं, मानो जब मुझे ये तो यहाँ नाना ऋषि-मुनियों के, एक विचार मुझे स्मरण आने लगते हैं, इन विचार धाराओं में मानो एक विचार है कि हम अपनी प्रतिभा को ऊँचा बनाना चाहते हैं मानो देखो, मुझे स्मरण आता रहता है, भगवान राम का वह राष्ट्र, स्मरण आता हैं जब भगवान राम मानो देखो, लंका को विजय करने के पश्चात, उन्होने देखो, बारह वर्ष का तप किया, और बारह वर्षों तक उन्होंने अपने प्रवृत्ति का शोधन किया जो मानो देखो, रजोगुण प्रवृत्ति हैं, उनमें मानो देखो, नर संहार की वार्त्ता आई, या अपने राष्ट्र के लिए, या अपने कर्तव्य के लिए मानो जो कर्तव्यवाद करता रहता है मानो देखो, उन्होने उसी प्रकार ब्रह्मणं ब्रहे को अस्तुति उन्होंने मेरे पुत्रों! देखो, तप करने के पश्चात, अपनी राष्ट्रीयता का निर्माण किया, वास्तव में राष्ट्रीयता का निर्माण तो महाराजा भरत ने ही कर दिया था, परन्तु देखो, राम जब मानो लंका से अयोध्या में आए तो उन्होने एक वाक् अपने विधाता से कहा, कि हे भरत! मानो मेरी इच्छा यह है, कि मैंने जब इस प्रकार का तप किया है, तो मैं राष्ट्रवाद में मुझे पूर्णरूपेण क्यों प्रवेश करना चाहते हो? मेरे पुत्रों! देखो, उस समय महाराजा भरत ने और महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने यह कहा कि हे राम! देखो, तुम्हें इसीलिए धिराज बनाना चाहते हैं, क्या राजा के राष्ट्र में प्रजा में, यदि राजा तपस्वी नही होगा, राजा तप में नही होगा, तो वह अपने राष्ट्र को ऊँचा नही बना सकता। इसीलिए आज हमारी इच्छा यह है, कि तुमने जो तप किया है, तुम्हारा जो रजोगुण, जो तमोगुण, जो लंका में तुमने संग्राम किया वह मानो देखो, उसका तुमने अनुष्ठान किया, क्या मेरी जो प्रवृत्ति थी, वह मुझसे दूरी हो जाएं और तुम्हारा हृदय पवित्र बन गया है, और तुम्हारे हृदय में नाना प्रकार की सात्विक विचारधाराएं, मानो प्रायः हमें दृष्टिपात आती रहती हैं क्योंकि बिना मानो सात्विक विचार के, सात्विक अपने जीवन को बनाएं बिना, मानव के अन्तर्हृदय में शान्ति नही हुआ करती है क्योंकि राजा के राष्ट्र में बुद्धिजीवी प्राणी भी होने चाहिएं तपा हुआ, राजा के राष्ट्र में बुद्धिजीवी प्राणी इसीलिए और राजा के राष्ट्र में ईश्वरवाद के ऊपर, परमपिता परमात्मा के नामों के मानो देखो, नाना प्रकार के रूढ़ियाँ, विचारधारा न बन जाएं, क्योंकि बुद्धिजीवी प्राणी की आवश्यकता इसीलिए होती हैं, जब मानो देखो, माता अपने पुत्र को निर्माणित कर देती और अपने पुत्र का निर्माण कर देती है, अपनी लोरियों का पान कराते-कराते, अपने विचारों को दे करके मानो बुद्धिजीवी बन करके, वह माता के नामोकरण का उद्गीत गाता हैं माता के हृदय को ऊँचा बनाता हैं, तो इसीलिए मैंने पुरातन काल में यह वर्णन करते हुए कहा था जब माता के तपस्या में रत्त रहना चाहिए, क्योकि तपश्चर ही तो मानव को ऊँचा बनाता है, जब माता गृह को ऊँचा बनाना चाहती हैं, राजा राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहता हैं क्योंकि राजा में भी पालन करने की प्रवृत्ति होती हैं और माता में भी पालन करने की प्रवृत्ति, उसे स्वतः प्राप्त रहती हैं तो मानो देखो, दोनों एक ही सूत्र के मनके कहलाते हैं, परन्तु देखो, आज का हमारा, यह विचार भगवान राम ने जब देखो, भगवान राम ने यह वाक् जब श्रवण किया, श्रवण करने के पश्चात राम ने कह-प्रभु! मंप यह चाहता रहता हूँ, क्या मेरा तो तपोमय जीवन है वह तपोमयी बना रहे और राष्ट्रीयता का निर्माण भी प्रायः होता रहे मेरे प्यारे! यह भरत ने वाक् स्वीकार कर लिया, मुनिवरों! देखो, मुझे कुछ ऐसा स्मरण आ रहा हैं, ऐसा प्रतीत होता रहता है, क्या मुनिवरों! देखो, राम ने जब राष्ट्रीयता का निर्माण

किया, तो उन्होंने सबसे प्रथम समाज को यह कहा कि हे समाज यदि तुम्हारी इच्छा हो तो मैं राष्ट्रीय मानो देखो, राष्ट्र का पिता बन जाऊं सब प्रजा ने एक स्वर में कहा बुद्धिजीवी प्राणियों ने कहा क्या बहुत प्रियतम। मेरे प्यारे! देखो, वह जब राष्ट्र का पालन करने लगे, राष्ट्रं ब्रह्मा मानो देखो, राष्ट्र के नियमावली को, उन्होंने अपनाया। मेरे प्यारे! देखो, इतने में ही और ऋषि-मुनियों के प्रश्न उत्तर होने लगे, महर्षि कागभुषुण्ड जी और महर्षि लोमश मुनि महाराज मानो देखो, जब राम के समीप आये, जब राम को राज्यभिषेक होने वाला था तरे राम को यह दायित्व दिया गया, कि राष्ट्र को ऊँचा बनाना है।

तो मुनिवरों! देखो, उस समय कागभुषुण्ड जी ने, राम से कहा कि हे राम! तुम इस राष्ट्र को क्यों अपनाना चाहते हो? मानो तुम्हारा इसमें कौन की स्वार्थपरता हैं, जब तुम्हें परमपिता परमात्मा ने जीवन तपस्या के लिए दिया हैं, तो मेरे प्यारे! भगवान राम ने बड़े ऊँचे स्वरों में कहा क्या हे ऋषिवर! क्या मैं इसीलिए देखो, राष्ट्र में अपने कर्तव्य का पालन करने के लिए राजा कर्तव्य का पालन करता है तो मानो देखो, आप जैसे महापुरूषों की चरणों की धूलि को अपने मस्तिष्क से मानो आलिंगन करता है और आलिंगन करके राष्ट्र को ऊँचा बनाता हैं परन्तु देखो, जब राम ने यह कहा तो कागभुषुण्ड जी ने कहा क्या मेरे प्रश्न का कोई उत्तर नही बना हैं उन्होंने कहा तो प्रभु! अन्तिम उत्तर यह है कि जैसे हमारे इस मानव शरीर में मानो देखो, यह आत्मा शासन रूप में रहती हैं जैसे मन मानो प्रत्येक इन्द्रियों के साथ लगा रहता है, और उस का चित्त से समन्वय होता है, और चित्त का समन्वय चेतना से होता है और चेतना का समन्वय महान चेतना से होता हैं। तो मानो देखो, ब्रह्म चेतना आत्म चेतना मनों वृत्तियाँ मानो देखो, इन्द्रियों का समागम जब होता है। तो यह एक अनुशासन है। मानो देखो, यह एक हृदय की आकांक्षा रहती है जैसे परमपिता परमात्मा मानो देखो, अनुशासन करने वाला है जैसे आत्मा ही, इस शरीर पर शासन करने वाला है, प्रत्येक इन्द्रियों के ऊपर मानो देखो, मन शासन कर रहा हैं, वह उससे कटिबद्ध रहता है, कि सूत्र बन करके मानो देखो, मन इन्द्रियों का सूत्र है और देखो, मन बुद्धि का देखो, मन बुद्धि चित्त अहंकार यह मानो देखो, साम्यवस्था में आत्मा का सूत्र बने हुए हैं मानो देखो, प्राणतव के सूत्र बने हुए हैं वही सूत्र मानो देखो, आत्मा का जो सूत्र है वह ब्रह्म हैं और ब्रह्म सूत्र में देखो, इस संसार को जब देखो, जब हम स्वीकार करते हैं, तो मुनिवरों! देखो, राष्ट्र पवित्र बन जाता हैं यह भौतिक याग, आध्यात्मिक याग दोनों का समन्वय हो जाता हैं तो मेरे पुत्रों! देखो, जब भगवान राम ने, आत्मिक चर्चाएं प्रगट की, तो कागभुषुण्ड जी बड़े प्रसन्न हुए, परन्तु कागभुषुण्ड जी ने यह प्रश्न किया क्या आप अपने राष्ट्र का क्या नियम बनाना चाहते हो?

उन्होंने कहा जब मैं बाल्य काल में वशिष्ठ मुनि महाराज और माता अरूणधती के चरणों को चुम्बन करता रहता है, श्रद्धा में, मानो मैं अपने में ओत-प्रोत करता था कि उन्होंने राष्ट्रीयता की बहुत-सी चर्चाएं की हैं मानो देखो, मैं भयंकर वनों में वन में रहा हूँ तो ऋषि-मुनियों ने मुझे बहुत से उदगार दिए हैं, उन्ही उदगारों के साथ मैं यह चाहता रहता हूँ कि राजा का राष्ट्र यदि ऊँचा बनना हैं तो राजा के राष्ट्र में विद्यालय में अनुशासन होना चाहिए विद्यालयों में अनुशासन जब होगा जबकि गृह में मानो देखो, माता-पिता दोनो अनुशासित रहेंगें तो मानो देखो, यह दो वाक् हो गएं उनमें कौन-सा प्रश्न है जो ऋषि ने बेटा! इसका उत्तर देते हुए क्योकि राम जब देखो, ऋषितव को प्राप्त हुए उन्होंने कहा क्या इसीलिए मैं राष्ट्र का भी निर्माण करूंगा तो सबसे प्रथम प्रत्येक गृह में मानो देखो, याग होना चाहिए प्रत्येक गृह में देव पूजा होनी चाहिए। वह प्रत्येक गृह में जब मानो सुगन्धित मेरा राष्ट्र हो जाएगा यह मेरे पितरों मानो देखो, महापिता ने दिलीप के विचारों ने यहाँ प्रत्येक गृह में सुगन्धि होती रही हैं महाराज अज के समय में सुगन्धि होती रही हैं मेरे पिता ने उस सुगन्ध को कुछ शान्त कर दिया हैं मैं पुनः से उस सुगन्ध को जागरूक करना चाहता हूँ। यदि मुझे राष्ट्र और समाज के ऊपर विचारना है और मानव के मोक्ष की आभा में रत्त

करना हैं तो भगवान राम ने कहा क्या सबसे प्रथम क्या, मैं सबसे प्रथम प्रत्येक माता से यह कहूँगा क्या हे माता! तू नाना रूपी भौतिक श्रृगार को त्याग करके मानो तुझे अपने कण्ठ के श्रृगार को अपनाना है मानो देखो, कण्ठ का शृंगार क्या है क्या माता के कण्ठ में कितना माधुर्यतम होना चाहिए जिससे बालक को लोरियां देती हुई, उसको ब्रह्म का ज्ञान करा दे, वह याग का ज्ञान करा दे मानो देखो, माता के हृदय में अपने में इस प्रकार की क्षमता होनी चाहिए जब मानो देखो, माता का हृदय सजातीय बन जाता हैं, ज्ञान में परिणत हो जाता है तो मानो देखो, माता का जो शिक्षा का जो स्तर है, शिक्षा की जो वृत्तियाँ है, वह जब मानो देखो, ऊर्ध्वा में गति करने लगती हैं वेदों का अध्ययन करते हुए, दर्शनों का अध्ययन करते हुए, माता अपने कण्ठ को सजातीय बना देती हैं मानो देखो, जहाँ नाना प्रकार के, आभूषणों से माता देखो, आभूषित हो जाती हैं, ऐसे माता के हृदय में ज्ञान होना चाहिए और विवेक होना चाहिए मानो देखो, माता अपने पुत्र को जब तक ब्रह्मवेत्ता या याज्ञिक नही बनाएगी, ज्ञान में परिणत नही करेगी तो तब तक मानो देखो, यह लोक ऊँचा नही बनेगा मानो देखो, उसके पश्चात जब माता अपने बालक को, ब्रह्म आभा में, याग में परणित कर देती है वह जब विद्यालय में जाता है तो विद्यालय में जो भी प्रवेश करता हैं, तो मानो देखो, आचार्य उस ब्रह्मचारी को अपने गर्भ में धारण करता हैं, अपने गर्भ में धारण करता हुआ कहता है, हे ब्रह्म ब्रहे मानो तू मुझे इन्द्रियों को प्रदान कर, यह सर्वत्र इन्द्रियों को प्रदान कर देता है, और इन्द्रियों को प्रदान करके उनके विषयों को आचार्य मानो उस विषयों को तपा करके ज्ञान के माध्यम से वेद के मन्त्र के द्वारा मानो देखो, बालक को देखो, विद्या अध्ययन कराता हुआ, वह प्रकाश में देखो, गो मेध याग करा देता हैं। हमारे यहाँ गो मेध यागों, को भिन्न-भिन्न प्रकार के स्वरूप माने गएं हैं। परन्तु आज मैं देखो, गो मेध याग का यही स्वरूप मैं तुम्हें उद्गीत रूपों में गाना चाहता हूँ। राम ने उच्चारण किया है राम ने कहा है क्या प्रत्येक मानव देखो, गो मेध याग होना चाहिए, गो मेध याग का अभिप्रायः यह कि ब्रह्मचारी विद्यालय में जब अध्ययन करता है तो गो मेध यागों में परिणत होता हो करके मानो देखो, आचार्य याग की प्रणाली में स्वर्ण बना देता है, वैज्ञानिक बना देता हैं, पुरोहित बना देता है, वह मानो लोक-लोकान्तरों की उड़ान उड़ने में मानो तत्पर हो जाता हैं। जब वह लोक-लोकान्तरों की उड़ाने उड़ने लगता है, तो राष्ट्र में विज्ञान होता है, राष्ट्र में मानवीयता होती हैं मानव दर्शन होता है वास्तव में मानव दर्शन क्या हैं हे माता! जब तू अपने पुत्र को, हे आचार्य! जब तू अपने पुत्र को, यह निर्णय देता हैं क्या धर्म क्या है मानो देखो, धर्म मानव की इन्द्रियों का निणर्य करा देता है कि इन्द्रियों में कैसा धर्म तेरी मानवीयता तेरी ओजस्ता मानो देखो, उसमें विद्यमान रहती हैं। आचार्य इस प्रकार का, जब ज्ञान करा देता हैं, तो इस संसार में देखो, उस राष्ट्र में नाना प्रकार की रूढ़ियों का जन्म नही हुआ करता है।

जैसे मुझे महानन्द जी ने इससे पूर्व काल में प्रगट किया क्योंकि अज्ञानता में ईश्वरवाद के ऊपर नाना प्रकार की रूढ़ियाँ बना करती हैं, और जब बुद्धिमान प्राणी होते हैं, मानो देखो, राष्ट्र में ब्रह्मवेत्ता जैसे मेरे पुत्र ने इससे पूर्व वर्णन किया था, क्या राजा राम जैसे ब्रह्मवेत्ता हों, जो ब्रह्म की उड़ान उड़ने वाले हों, आचार्यों के समीप मानो देखो, पत्नी एक धर्म देवी को स्वीकार करके, माता और पुत्री और देखो, वह भोजी के तुल्य स्वीकार और दृष्टिपात करने वाले सर्वत्र राष्ट्र होंगें, तो वह राष्ट्र ऊँचा बनता हैं। तो मानो देखो, भगवान राम ने कागभुषुण्ड जी से उत्तर देते हुए कहा, क्या मैं मानो सबसे प्रथम मेरा नियम, मेरी माताएं, मेरे पुत्रियाँ मानो देखो, कण्ठ में सजातीय हो जाएं, उनका कण्ठ माधुर्य रहना चाहिए, उनके कण्ठ में माधुर्यता नही पालन करने की भी क्षमता होनी चाहिए, परन्तु शिक्षा में अग्रणीय होने चाहिए, इसी प्रकार जब राजा के राष्ट्र में इस प्रकार बुद्धिजीवी प्राणी उत्पन्न होता रहेगा, तो राजा के राष्ट्र में रक्त भरी क्रान्ति नही आती, राजा के राष्ट्र में केवल कर्तव्यवादी प्राणी होते है। और कर्तव्यवादी प्राणी ही संसार को ऊँचा ऊर्ध्वा में ले जाते हैं।

तो मानो देखो, राम ने कहा कि मेरे राष्ट्र में, एक शंख ध्वनि होनी चाहिए, प्रत्येक गृह में प्रातःकालीन मानो देखो, ध्वनि होनी चाहिए जैसे शंख ध्वनि होती हैं, शंख नाद होता हैं। नाद का अभिप्रायः है कि वाणी से वेदों का उद्गीत गाया जाएं, वेदमन्त्रों की ध्वनियां होनी चाहिए, मानो देखो, प्रातःकाल क्या, सांयकाल क्या, मानो देखो, वह अग्नि के समीप विद्यमान हो करके, अग्नि को और अपने को प्रकाश में लाना हैं वही प्रकाश ही मुनिवरों! संसार को ऊँचा बनाता हैं। प्रत्येक प्राणी मात्र को, महान बना देता हैं। तो मानो देखो, राम ने जब कागभुषुण्ड जी के प्रश्नों का उत्तर दिया, तो कागभुषुण्ड जी मौन हो गये, और यह कहा कि आपके वाक्यों से मेरा अन्तर्हृदय बड़ा प्रसन्न हो रहा हैं, मैं प्रशंसनीय बन रहा हूँ, परन्तु आपका नियम और क्या होगा, उन्होंने कहा मेरे राष्ट्र में मानो देखो, कर्तव्यवाद का महत्व विशेष होगा, और जब प्रत्येक हम ब्रह्मे देखो, कहा कि-प्रभु! आप क्या कर्तव्य करेंगें? उन्होंने कहा मैं प्रातःकालीन मानो देखो, अपने प्रभु का धन्यवाद दूंगा, अपने प्रभु का गुणगान गाता रहूंगा, क्योंकि ब्रह्मयाग, ब्रह्म का चिन्तन करना और ब्रह्म को यह स्वीकार करना, कि मेरे अन्तरात्मा में मानो देखो, ब्रह्म विद्यमान हैं और उसके पश्चात मैं याग करूंगा क्योंकि-प्रभु! याज्ञिक हैं और वेदों की ध्वनि मानो देखो, मेरे अन्तर्हृदय में जब उद्गीत गाती रहेंगी तो मानो देखो, समाज मेरा अनुकरण करेगा, और प्रजा का अनुसरण ही मानव के, हमारे इस राष्ट्र को ऊँचा बना सकता है जब हमारे राष्ट्र में इस प्रकार देखो, क्रियाकलाप होंगें, तो उनके हमारे क्रियाकलापों को मानो देखो, द्वितीय राष्ट्र अपनाने वाले होंगें यदि मेरे राष्ट्र में पनपेगा मैं, विज्ञान को लाना चाहता हूँ विज्ञान हमारा एक अंग बना हुआ है, परन्तु विज्ञान में नाना प्रकार की चित्रावलियाँ होनी चाहिए और नाना प्रकार की चित्रावलियों में जो चित्रों का दर्शन होगा वह मानो देखो, ऋषि-मुनियों के तपस्यामयी विचार होंगें, और ऋषि-मुनियों के क्रियाकलाप होंगें, और मेरी पुत्रियों के, मेरी माताओं के चरित्र, जीवन चरित्र उनका चरित्र उनकी महानता, उनका उद्गीत याज्ञिक जब देखो, चित्रालियों में दृष्टिपात किया जाएगा तो मेरा राष्ट्र मानो देखो, विज्ञान को होता हुआ, विज्ञान के वांगमय में मानो देखो, परिणत करता हुआ, महानता का मानो दर्शन का मानो देखो, दर्शन करता रहेगा, इसी प्रकार जब उन्होंने कहा मेरे राष्ट्र में देखो, विज्ञान अपना अनुशासन करता रहेगा नाना प्रकार की ऊर्ज्वा से मेरे राष्ट्र में विज्ञान मानो देखो, नाना प्रकार के धातु विज्ञान के रमण करने वाला विज्ञान होना चाहिए। मैंने क्योंकि देखो, बाल्यकाल में भारद्वाज मुनि के यहाँ मेरे पूज्यपाद गुरुदेव देखो, मुझे निर्णय कराते रहते थे, ऋषिवर।

तो मेरे प्यारे! ऋषि देखो, वह ऋषियों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए, उन्होंने राष्ट्रीयता को अपनाते हुए कहा, क्या समाज में अनुशासन जब वह करता है जबकि मानव चरित्रवान बनेगा और चरित्र की प्रतिभा महानता में रत्त होती रहेगी, तो मानो देखो, राजा के राष्ट्र में, चरित्र और मानवीयता मानो देखो, रक्तोंमयी जीवन नही बनता, रक्तों में तो जब से यह शासनवादी की, प्रवृत्ति, संसार में उत्पन्न हुई हैं मानो उद्धृत हुई है उसी काल से देखो, रक्तों का एक दूसरें में आदान प्रदान होता रहा हैं। देखो, राम ने यह कहा कि साम्यवाद यह कहता है, साम्यवाद मेरा राष्ट्र हो, इससे प्रत्येक प्राणी को, अपने विचारों में अधिकार होगा परन्तु वह अधिकार बुद्धियुक्त हो विज्ञान से युक्त होना चाहिए, वही विचार तो देखो, मानव को ऊँचा बनाते हैं वही विचारधारा मानो देखो, मानव को महानता में ले जाती हैं तो राम ने देखो, यह वाक् कहा था। आज मैं सम्बन्ध में राम के चरित्र में या देखो, राम के क्रियाकलापों में आज मैं विशेष जाना नही चाहते हैं विचार केवल यह कि देखो, इन्होंने अयोध्या में अपने राष्ट्र की स्थापना की मानो देखो, उनके यहाँ अश्वमेध याग, गो मेध याग और देखो, वाजपेयी याग और देखो, अग्निष्टोम यागों का चयन, प्रायः राजा के राष्ट्र में होता रहा।

तो मेरे प्यारे! देखो, समय-समय पर, विद्यालयों में प्रवेश होना, विद्यालयों की प्रतिक्रियाओं को ऊँचा बनाना, मानो देखो, यह सिद्ध हो गया, क्या विद्यालयों में जिना चरित्र मानो देखो, आचार्य तपा हुआ, महान होगा,

उतना विद्यालय पवित्र होगा, और राजा के राष्ट्र में, जितना राजा तपा हुआ होगा, उतना ही मानो देखो, प्रजा को सुखद दे सकता है। इसी प्रकार, जब यह विचार मानो देखो, समीप आते रहते हैं, क्या हम यह विचारते हैं, कि मानो दर्शन क्योंकि दर्शनों का ज्ञान होना बहुत अनिवार्य है प्रत्येक मानव के यहाँ मानव का दर्शन होना चाहिए मानव दर्शन क्या है? क्या बेटा! देखो, मानव दर्शन उसे कहते हैं प्रत्येक मानव की ज्ञानेन्द्रियों कर्मेन्द्रियों का जो क्रियाकलाप है वह क्रियाकलाप ब्रह्माण्ड से उनका क्या समन्वय रहता है ब्रह्माण्ड से कैसे उनको क्रियाकलाप होता रहता है उन कल्पनाओं में जब हम रत्त होते हैं तो मानो देखो, ब्रह्माण्ड और पिण्ड की एक कल्पना करके मुनिवरों! हमारा जीवन पवित्र बन जाता हैं। मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्माण्ड और पिण्ड, दोनों एक ही सूत्र में हम लाना चाहते हैं।

परन्तु देखो, परमपिता परमात्मा, जैसा मैंने इससे पूर्व काल में, मैने देखो, तुम्हें वर्णन करते हुए कहा था देखो, महर्षि पिप्लाद मुनि महाराज और वह छह जिज्ञासु जब ब्रह्म के आँगन में विराजमान हो करके बेटा! ऋषि से प्रश्न करते हैं क्या हे भगवन! कौन आहार करता है? कौन व्यवहार कर रहा है ?और कौन किसको मृत्युंजय बना रहा हैं ?और कौन किसको जीवन दे रहा हैं? तो पिप्लाद मुनि ने यह कहा कि प्राण ही भक्षण कर रहा हैं प्राण ही मानो देखो, क्रिया दे रहा हैं प्राण ही ब्रह्मे देखो, जैसे मानव जब स्वप्न में सुषुप्ति में चला जाता हैं तो यह मन ब्रह्मे मानो देखो, यह जो मन अपनी सुषप्ति में चला जाता है तो प्राण आत्मा के साथ जागरूक रहता हैं, आत्मा के साथ जब जागरूक रहता है, परन्तु वही प्राण कहलाता हैं।

आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना में नही जाना चाहता हूँ आज मैं कोई व्याख्याता नही हूँ केवल तुम्हें परिचय देने के लिए चला आता हूँ और वह परिचय क्या हैं मानो देखो, जैसा मेरे पुत्र महानन्द जी ने इससे पूर्व कालो में नाना प्रकार के यागों का चयन, यागों की प्रतिभा का वर्णन किया, मानो उसी का मैं पुनः से विशेषण कर रहा हूँ अथवा उसकी की पुनरूक्तियां कर रहा हूँ, क्या हम मानो देखो, पंच यागों में रत्त हो करके, और ब्रह्मयाग में परितण हो जाएं, मानो देखो, यह पृथ्वी ही तो उद्गीत गाती रहती है, यह पृथ्वी ही तो वसुन्धरा बनी रहती हैं, मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्म की गोद में, जब प्राणी चला जाता हैं तो ब्रह्म ही ब्रह्म मानो चेतना में चेतनित हो करके अपने जीवन को महान बनाता हैं।

आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ आज बेटा! देखो, मैं यह कई कालों में, तुम्हें याग के सम्बन्ध में वर्णन करते हुए कहा था, जब मानो देखो, उस याग में, यज्ञमान विराजमान हो करके, पुरोहित इत्यादियों के सहित विद्यमान हो करके, यज्ञमान अपना स्वाहाः कह करके, वह अपने मन, कर्म वचन के द्वारा, मानो देखो, स्वाहाः उच्चारण करके वह याग की आत्मा को ब्रह्म सूत्र में बेटा! वह पिरोता रहता है। मानो देखो, मैंने बहुत पुरातन काल में कहा, एक वाक् मुझे स्मरण आ गया एक समय बेटा! बहुत समय की वार्त्ता हैं, एक समय बेटा! देखो, ऋषि-मुनियों का एक समूह विद्यमान था। मानो देखो, उस समय सुनीति नाम के राजा मानो सुनीति नाम के मानो अयोध्या में एक राजा थे, तो राजा की धर्म देवी ने कहा क्या हे भगवन! हे राजन! हमारे जो पूर्वज थे, वह यागों में हमारा राष्ट्र यहाँ राष्ट्र में बहुत समय हो गया हैं याग हुए इसी महापुरूष किसी महापुरूष के द्वारा याग होना चाहिए, तो उस समय देखो, सुनीति राजा ने, देवी के वाक्यों को स्वीकार कर लिया, उन्होंने कहा-देवी! तुम्हारे विचार बड़े प्रिय हैं वह भ्रमण करते हुए ब्रीहि कृतं मानो देखो, ऋषि-मुनियों के समूह में जा पंहुचे, जहाँ देखो, महर्षि कागभुषुण्ड, जी और महर्षि लोमश और भी नाना ऋषिवर जैसे महर्षि विभाण्डक, महर्षि कणवृत्ति मुनि महाराज और मुनिवरों! देखो, महर्षि वैशम्पायन और भी नाना ऋषि-मनि विद्यमान थे। मेरे प्यारे! देखो, जब वह उस समूह में पंहुचे, तो मुनिवरों! ऋषि-मुनियों के चरणों की वन्दना की, और ऋषियों ने कहा आईए राजन, वे

विराजमान हो गएं और विराजमान हो करके मानो ब्रह्मे वृतं मानो अपनी आख्यिका वह प्रगट करने लगे। उन्होंने कहा कि-हे प्रभु! आज हम मानो देखो, मध्य रात्रि में मैं और मेरी देवी हम ब्रह्म का चिन्तन कर रहे थे और ब्रह्म के चिन्तन में हमें देखो, याग का प्रकरण आ गया, हमारे पूर्वज यागों के मानो देखो, मर्मज्ञ देखो, बुद्धिमान और विचारक रहे हैं, और यागों में उनका जीवन व्यतीत हुआ हैं। तो प्रभु! मेरी देवी ने मुझे प्रेरणा दी हैं, क्या आप याग करो। क्या कि-प्रभु! मेरी इच्छा यह है, क्या मैं अयोध्या में एक याग करना चाहता हूँ, प्रभु मैं निमन्त्रण करने आया हूँ, और मुझे किस प्रकार का याग से पूर्व, मुझे किस प्रकार का पालन करना चाहिए क्या साकल्य एकत्रित करना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, राजा के वाक्यों को पान करके वेद का ऋषि एक दूसरे के मुखारबिन्दु को दृष्टिपात करने लगा। मेरे प्यारे! देखो, जब कोई उद्गीत न गा सका, राजा ने कहा भगवन! आप तो वेद के मर्म को जानने वाले हो, वेद की प्रतिभा को जानते हो, परन्तु आप मौन क्यों हो रहे हैं? उन्होंने कहा कि हे राजन! हम मौन इसीलिए हो गएं हैं क्या, तुम किस प्रकार का कैसा याग कराना चाहते हो? उन्होंने कह-प्रभु! मेरे राष्ट्र में, हर प्रकार का सुखद है, प्रजा बड़े आनन्द से रहती हैं, एक दूसरे से प्रसन्न, मेरा राष्ट्र हैं परन्तु देखो, मैं ऐसा याग करना चाहता हूँ, जिससे मेरा अन्तरात्मा पवित्र हो जाएं और मेरे अन्तरात्मा पवित्र होने से मेरा राष्ट्र ऊँचा बन जाएं ऐसे याग का मानो देखो, आत्मा स्वाहा है, इसी प्रकार देखो, मेरे राष्ट्र का जो स्वाहा है, वह प्रजा का राजा हैं और राजा के लिए प्रजा स्वाहा है मानो देखो, एक दूसरे की आत्मोन्नति के लिए हम कल्पना करते रहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, जब राजा ने यह कहा, तो ऋषिवर बड़े प्रसन्न हुए, उसमें महर्षि वैश्म्पायन जी ने कहा क्या आप याग कीजिए भगवन! आप जैसा याग चाहते हैं, वैसा ही होगा। मेरे प्यारे! देखो, याग का समय नियुक्त किया गया, और साकल्य एकत्रित करने के लिए, आज्ञा दी और राजा ने याग से पूर्व, प्रजा में भ्रमण किया, याग का प्रारम्भ होने लगा, जब प्रारम्भ हुआ, तो उन्होंने अपनी प्रजा में मानो प्रारम्भ से पूर्व प्रजा में भ्रमण किया और प्रजा को दृष्टिपात किया कि मेरी प्रजा में कोई मानो अन्न से पीड़ित तो नही हैं, मेरे राष्ट्र में बुद्धि की कोई सूक्ष्मता नही है, मानो देखो, इस प्रकार का उन्होंने राष्ट्र में भ्रमण किया और भ्रमण करके वह जो ऋण था, उस ऋण को मानो देखो, राजकोष से मानो अवऋण किया और अवऋण करने के पश्चात उन्होंने याग में बेटा! देखो, यज्ञशाला का निर्माण करके, याग को प्रारम्भ करने लगे, जब याग का प्रारम्भ हुआ, तो बेटा! महर्षि वैशम्पायन, महर्षि विभाण्डक, महर्षि श्रृंगी और महर्षि उदगोतिक ऋषि महाराज मेरे प्यारे! देखो, कोई उसमें से उद्गाता बना, कोई ब्रह्मा बना, मानो देखो, कोई होता बना, कोई उद्गीत गाने लगा और राजा देखो, यज्ञमान बन करके बेटा! याग प्रारम्भ हो गया जैसे याग प्रारम्भ हुआ इतने में बेटा! कहीं से भ्रमण करते हुए, वायु मुनि महाराज के मानो देखो, पौत्र महर्षि कुक्कुट मुनि महाराज भी भ्रमण करते हुए, मानो देखो, उस याग में प्रवेश हुआ, राजा से कहा राजन! क्या आप याग में तल्लीन हैं? उन्होंने कहा-प्रभु! मैं याग में तल्लीन नहीं हूँ मैं अपने कर्तव्यवाद में तल्लीन हूँ। उन्होंने कहा कर्तव्य किसे कहते हैं? उन्होने कहा कि आत्मा की पुकार को स्वीकार करना, और उसको बाह्य जगत में क्रियाकलाप का नाम मानो देखो, वही चरित्र कहलाता हैं। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने आगे इतने में उद्गीत रूप में उन्होने गाया क्या मानव के अन्तर्हृदय की प्रेरणा अन्तर्हृदय का विचार और अन्तर्हृदय की मानो जो तरंगें हैं वही देखो, राष्ट्र और समाज को गृह को ऊँचा बना देती हैं, मेरे प्यारे! देखो, वही तरंगें यदि अशुद्ध हो जाएं, तो दूषित वायुमण्डल में प्रवेश करा देती हैं तो विचार क्या जब विज्ञान मानो देखो, अपनी भावनाओं में पवित्र बन गया याग का जैसे प्रारम्भ हुआ, तो देवी से बोले कि देवी! मैंने यह श्रवण किया है क्या तुमने राजा को प्रेरणाष दी है कि हे राजन! तुम याग करो, उनकी पत्नी का नाम श्वेतकेतु श्वेधनि था, वह श्वेधनि बोली कि-प्रभु! मैं इसीलिए प्रेरक बनी हूँ, क्योंकि संसार में पत्नी से ऊँचा कोई भी पति का प्रेरक नही हुआ करता जो पत्नी प्रेरणा दे देती हैं मानो देखो, वह प्रेरणा महान बन

करके गृह को ऊँचा बना देती हैं मानो देखो, वही प्रेरणा मैंने दी कि राष्ट्र को गृह को ऊँचा बनाना है यदि राजा के राष्ट्र में विचारों की सुगन्धि और साकल्य की सुगन्धि दोनों का समन्वय हो करके और देखो, हृदय की आभा को स्वीकार करना ही मानो देखो, यह समाज को ऊँचा बना देता है।

मेरे प्यारे! देखो, राजा, जब राजलक्ष्मी ने यह वाक् प्रगट किया तो ऋषिवर मौन हो गये, मानो देखो, ऋषि ने आगे क्या उनकी जो रूपं ब्रह्मा मेरे प्यारे! देखो, उद्गाता से नाना प्रश्न किया क्या उद्गाता किसे कहते हैं? उन्होंने कहा उद्गाता कहते हैं जो उद्घोष करने वाला है जो वेदमन्त्रों को स्वरों से हृदय से गाता हैं, ऐसा मानो उद्गीत गाने वाला होना चाहिए, जिसका मन, कर्म, वचन एक सूत्र में लय रहें परन्तु मन, कर्म, वचन एक सूत्र में रह करके जब वह वेद का गान गाता हैं वही वेद का गान मानो देखो, सुगन्धित हो करके, साकल्य को ले करके वायुमण्डल में छा जाता है और दूषित वायुमण्डल को समाप्त कर देता हैं।

मेरे प्यारे! देखो, जब उद्गाता ने यह वाक् कहा तो ऋषि बड़े प्रसन्न हुए, उन्होंने कहा उद्गाता उद्गीत गाता हैं, और वह आत्म हृदय से उद्गीत गाता हैं परन्तु जो मानव जिस क्रियाकलाप को करना चाहता हैं उसका मन कर्म वचन एक सूत्र में रह करके जब गाता है, तो वह सम्पन्न होता हैं यदि मानो नाना क्रियाकलाप कर रहा हैं, मन कहीं भ्रमण कर रहा है मानो इन्द्रियाँ कहीं क्रियाकलाप कर रही हैं, और आत्मा मानो सुषुप्ति में विद्यमान हैं तो वह यज्ञमान अपने क्रियाकलापों में सफल नही हुआ करता।

तो विचार-विनिमय क्या, वेद के ऋषि ने बेटा! बहुत ऊँची वार्त्ता प्रगट की, और प्रगट करके मुनिवरों! देखो, याग प्रारम्भ हो गया, याग के प्रारम्भ होने से, सुवर्ण का उद्घोष होता रहा बेटा! कहीं अध्वर्यु के रूप में, अध्वर्यु अपने द्रव्य का स्वामी बना हुआ हैं, द्रव्य में दृष्टिपात करता है हिंसा तो नही हो रही हैं, क्योंकि याग में हिंसा नही हुआ करती है, याग मानो देखो, मानव के आनन्द का पहला उत्थान हैं ऐसा वह चरण है जिससे मानव देखो, आनन्द के लिए प्रेरित होता हैं मानो देखो, योगाभ्यास काल में, सबसे प्रथम मानो देखो, साकल्य के द्वारा याग किया हैं जिससे वायुमण्डल में पवित्र हो जाएं, मैं योगाभ्यास कर सकूं दूषित वायुमण्डल में देखो, योगाभ्यास भी नही हुआ करता।

तो विचार-विनिमय क्या, मानो देखो, जब मानव साधना में प्रवेश होता है, वही साधना मानव को ऊँचा बनाती हैं, तो विचार क्या मुनिवरों! देखो, मैं उद्गीत गा रहा था, क्या हे राजन! राजा याग कर रहा हैं, राजा सुनीति, सुनीति मुनि महाराज अपने राष्ट्र में याग कर रहा हैं, याग में परिणत हो रहा है, याग की प्रतिभा का प्रतिपादन कर रहा हैं, और प्रजा को संकेत दे रहा है। मेरे प्यारे! देखो, जब यह समाज ऊँचा बनता हैं, जब मानव तप और त्याग और तपस्या की प्रतिभा में परिणत हो जाता हैं और उग्र क्रिया देखो, परमपिता परमात्मा की उग्र क्रिया से संसार का निर्माण हुआ हैं, ऐसे ही मानव अपने जीवन का जीवन का निर्माण, चरित्र का निर्माण, मानव का चरित्र आभा में वह मानव जन्म लेने लगता हैं तो मेरे प्यारे! देखो, बुद्धिजीवी जितने प्राणी होते हैं बुद्धिजीवी तपस्या में जितना राजा होता है यज्ञमान होता है मानो देखो, वह अज्ञान को नष्ट कर देता है, और प्रकाश को लाने का प्रयास करता हैं, आओ, मेरे पुत्रों! अब मैं विशेष चर्चा प्रगट करना नही चाहता हूँ, प्रत्येक मानव साधक बनना चाहता है, प्रत्येक मानव के हृदय में यह आशंका लगी रहती है, मैं आनन्द को प्राप्त हो जाऊं। बेटा! वह आनन्द जब प्राप्त होता हैं, जब ज्ञान होता है, ज्ञान में विवेक होता हैं, और विवेक के द्वारा मानो देखो, मानव के जीवन की प्रतिभा को ऊँचा बनाता हैं। मानो देखो, एक साधक ने, गुरु तो बनाया है, आचार्य को सिद्ध कर दिया हैं परन्तु ज्ञान हैं नही, तो अज्ञान में देखो, उग्र क्रिया नही है, तो वह समाप्त हो जाएगा। तो आज का हमारा वाक् क्या कहता है, हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, मानो अपने ऊर्ध्वा में, क्रियाकलापों को अपनाते हुए,

अपने जीवन और समाज को ऊँचा बनाते हुए इस संसार सागर से पार हो जाएं यह है बेटा! आज का वाक् कल मुझे समय मिलेगा मैं शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन पाठन

८ निष्पन्नता ०८ ०३ १९८७

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी हैं, अथवा यज्ञोमयी स्वरूप माने गएं हैं, याग उस परमपिता परमात्मा का आयतन माना गया हैं, अथवा उसका गृह है, उसका सदन है, और वह उसमें वास कर रहा है, तो इसीलिए हम परमपिता परमात्मा की महिमा का सदैव अपने में गुणगान गाते रहे, और उसकी महानता को जानते रहें, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा जितना यह ब्रह्माण्ड रूपी चाहे वह यज्ञशाला है उस सर्वत्र यज्ञशाला का वह स्वामीतव करने वाला है।

तो आओ, मेरे प्यारे! आज का हमारा वेदमन्त्र, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गा रहा हैं अथवा उसके गुणों का वर्णन कर रहा है उसके गुणों का वर्णन करता हुआ प्रत्येक वेदमन्त्र मानो देखो, भिन्न-भिन्न प्रकार की उड़ाने उड़ता रहता हैं और अपने में अभ्योदय होता रहता है जिससे मानव के हृदय में एक महानता की अमूल्य महान ज्योति प्रदीप्त हो जाती हैं और वह ज्योतिवान बन करके अपनी मृत्यु के कारण को वह जानने लगता है। तो आज का हमारा वेदमन्त्र क्या कह रहा है, यज्ञं भवितां ब्रह्मा वर्णो देवाः क्या वह याग है वह हमारा वरणीय हैं, वह यज्ञोमयी जो स्वरूप हैं, वही हमारा वरणीय, हमें उसे वरणा चाहिए, क्योंकि जो मानव उस परमपिता परमात्मा को अपना वरणीय स्वीकार करता है अथवा उसे वरता है उसको पुरोहित बनाता हैं और उसी में वह रत्त रहने के लिए वह तत्पर होता हैं, तो बेटा! वह महान अपनी महानता का प्रायः अपने में दर्शन करता रहता है। तो विचार क्या वेद का मन्त्र यह कहता है यज्ञं ब्रह्मा यज्ञं रणुप्रह्वा या कथं ब्रह्वे वणुं स्वस्थाः वेद का वाक् कहता है, कि वह वरणीय है, तो हमें सब प्राणी मानो देखो, उसको अपना वरणीय स्वीकार करें, और उसको वरणे वाले बनें।

तो आओ, मेरे पुत्रों! आज मैं विशेष विवेचना में तुम्हें ले जाना नही चाहता हूँ आज का हमारा वेदमन्त्र यह कहता है जितने भी नामो का वर्णन आता हैं अथवा जितने गौणिक नामों का वर्णन आता है उसके गर्भ में वह याग विद्यमान रहता हैं। वह याग अपनी आभा में निहित रहने वाला हैं। तो आओ, मेरे पुत्रों! आज का हमारा वेदमन्त्र, वेद की प्रतिभा, हमें किसी मार्ग के लिए प्रेरित कर रही हैं, उसी प्रेरणा को हमें स्वीकार करना चाहिए। तो मेरे पुत्रों! आज का हमारा वेदमन्त्र कहता है, कि हे मानव! मानो तू ब्रह्मयागी बन क्योंकि ब्रह्म का चिन्तन करना तेरा कर्तव्य है वह विज्ञानमयी स्वरूप रहने वाला है, प्रत्येक विज्ञानवेत्ता मानो उस परमपिता परमात्मा की आराधना करता हुआ ज्ञान और उसके ज्ञान उसके विज्ञान को जानने के लिए वह तत्पर रहता है तो आधुनिक काल मानो देखो, योग का आतिप्रह्वा गुरुदेव का जो वाक् हैं वह हमें यह कहता हैं क्या देखो, वर्तमान, भविष्य और मानो भूत काल में ही याग एक ही रस रहने वाली एक महानता में क्रियाकलाप मानी गई है। वह क्रियाकलापों में सदैव तत्पर होते हैं जैसे याज्ञिक अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो करके अपनी गति को ध्रुवा और ऊर्ध्वा में बनाता रहता हैं तो आज मानो देखो, मैं विशेष विवेचना देने नही आया हूँ आज मानो देखो, मैं अपनी यह विवेचना देने के लिए आया हूँ कि हम परमपिता परमात्मा की महिमा क्योंकि वह विज्ञानवेत्ता हैं विज्ञान उसका गृह है, उसका आयतन है, वह मानो देखो, अपने में अपने का दर्शन प्रायः हम करते रहते हैं, जब हम यह विचारते हैं कि हमारा पुनः से अपनेपन का दर्शन हो रहा हैं।

तो वही दर्शन मानव को ऊर्ध्वा में ले जाता हैं अथवा वित्रितम बना देता है तो आओ, मेरे पुत्रों! दहा वरुणां

ब्रह्मा वाचन्नं ब्रहे कृतं देखो, वह यज्ञं ब्रहा हमें कुछ विशेष आभा में अपने जीवन को ऊँचा बनाना हैं और समाज और मानवीयता को ऊँचा बनाना हैं आज मैं विशेष चर्चा तो प्रगट नही करूंगा, आज मेरे प्यारे महानन्द जी अपने दो शब्द उच्चारण करेंगें।

पूज्य महानन्द जीः- ओ३म् देवं भद्रा मां गतं मनाः वायुरन्धनं। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मानो कुछ यागों के विज्ञान के गर्भ में प्रवेश कर रहे थे, और हमें यह प्रतीत होता रहा हैं क्या, हमारे यहाँ जो पूज्यपाद गुरुदेव अपने उदगार अथवा अपना अध्ययन किया हुआ जो अनुपम विचार है वह जो उद्गीत करते रहते हैं तो प्रायः हमारा अन्तरात्मा पवित्र होने के लिए तत्पर हो जाता हैं क्योंकि मानव का संसार में एक ही उद्देश्य रहा है क्या जितनी भी संसार की वस्तुएं हैं मानो सर्वत्रता में वह उसे उनकी मानो जानकारी हो जाएं क्योंकि मन का जो स्वभाव है मन की जो प्रतिभा हैं वह सदैव प्रकृति के ऊर्ध्वा में रत्त और सूक्ष्मतम होने से, यह उत्कट इच्छा बनी रहती हैं। कि मेरे आचार्यों ने कई कालों में वर्णन किया है मेरे पूज्यपाद गुरुदेव भी मुझे वर्णन कराते रहते हैं परन्तु देखो, आज का यह हमारी जो आकाशवाणी जा रही हैं, यह आकाशवाणी उस स्थली पर जा रही है जहाँ मानो देखो, जिस काल में हस्तिनापुर में एक विचार हुआ था हस्तिनापुर में एक विचार हुआ क्या राष्ट्रीयता का विभाजन नही होना चाहिए राष्ट्रीयता का विभाजन उस काल में नही होगा, जब ये पाण्डु पुत्र रहेंगें जब तक मानो देखो, विभाजन बना रहेगा, विचारों में विभाजन होगा तो एक समय वह आयेगा, तो इसका बाह्य जगत भी विभक्त हो सकता हैं मानो देखो, यह वाक् दुर्योधन इत्यादियों ने यह वाक् अपनी सभा में दिये, परन्तु देखो, इसका परिणाम यह हुआ कि विचारा गया क्या, एक गृह का निर्माण किया जाएं, और उस गृह को देखो, अग्नि के मुखारबिन्दु में परिणत कर दिया जाएं ऐसा विचार बना, परन्तु देखो, यह वही स्थली मुझे दृष्टिपात आ रही है आज मानो देखो, उसी दृष्टि से मैं अपने वाक् को ले करे चला हूँ क्या मानो देखो, यहाँ एक भव्य का निर्माण हुआ उस निर्माण पांचो पाण्डों प्राणों को ले करके चले गएं और वह मानो देखो, गृह अग्नि में समाप्त हो गया।

तो विचार क्या मानो देखो, समय-समय प्रवृत्तियां, समय-समय पर साहित्य अपने स्थलियों पर परिवर्तित होता रहता है। यहाँ साहित्य तो परिवर्तित हुआ हैं, वह भी काल स्मरण आता रहता है जब भीम और भीम के पत्रु घटोत्कच्छ और भी देखो, ब्रणीहि नाम के वैज्ञानिक थे जब अनुसन्धान होता रहता है मानो देखो, भीम ने ऐसे यन्त्रों का निर्माण किया था जिन यन्त्रों में देखो, वह वायुमण्डल में भ्रमण करते रहते हैं। आधुनिक काल में भी बहुत से यन्त्र वह भीम ने देखो, अन्तरिक्ष में त्याग दिए थे वह भ्रमण कर रहे है वह मानो देखो, अभी-अभी बहुत कुछ समय हुआ अपने पूज्यपाद गुरुदेव को वर्णन किया, क्या पातालपुरी का एक यान मानो देखो, अन्तरिक्ष की यात्रा करने के लिए गमन करता हैं और वह जब गमन किया तो उन्होंने जब पृथ्वी की परिक्रमा करने लगा तो मानो देखो, यह यान भीम का यान भ्रमण कर रहा था, भीम के यन्त्र भ्रमण कर रहे हैं, उनको हतोहत नाम के यह यन्त्र मानो जाते हैं, हतोहत नामों से मानो यन्त्र भ्रमण कर रहा था, जब यन्त्र का उससे मिलन हुआ, तो वह यन्त्र कुछ नष्ट होने लगा, तो वह पृथ्वी मण्डल पर आ गया। यह आधुनिक काल में जो पातालपुरी कहलाती हैं, वह उसका यान था, वह शनै-शनै वैज्ञानिकों ने अपनी आभा में आभायित किया। परन्तु देखो, विचार यह कि उनका विज्ञान, उनके वैज्ञानिक यन्त्र, आधुनिक काल में भी वह देखो, जब ही से भ्रमण कर रहे हैं, बहुत समय हो गया है, विचार आता रहता है, आज का हमारा, यह वाक् क्या कह रहा है, आज मैं उस विज्ञान के वांगमय में न जाता हुआ, मानो देखो, वह साहित्य का परिवर्तन हुआ, इतिहास के पृष्ठों का मानो देखो, एकोकीकरण न रह करके उन्होंने विभाजनवाद आया तो वह मानो देखो, महाराजा परीक्षित के समय में यहाँ देखो, न्यायालय की कुछ प्रतिका बनी

जो मानो देखो, खण्डरात रूप में अग्नि के मुखारबिन्दु में प्रवेश हो गएं थे, बहुत समय हुआ परन्तु देखो, उसके पश्चात पुनः परिवर्तन आया, समय के परिवर्तन होने से यहाँ मोहम्मद के मानने वालों ने नाना रूप में देखो, यहाँ की वायु में कुछ मानो देखो, प्रतिक्रियाएं हुईं आज मैं देखो, उसे उच्चारण करने के लिए सदैव उद्गीत गाता रहता हूँ यहाँ मानो देखो, नाना सम्प्रदाय के प्राणियों ने नाना देखो, रूढ़िवादी प्राणियों ने इसको नष्ट किया इसको भ्रष्ट किया और भ्रष्ट करने के कारण परन्तु देखो, समय का जब परिवर्तन होता हैं कहीं से मेरे पूज्यपाद गुरुदेव का मानो देखो, कहीं से आगमन का प्रादुर्भाव हो गया, कहीं से आत्मा आ गई परन्तु देखो, वह आत्मा इन्होंने बहुत पुरातन काल में देखो, इस भूमि पर देखो, यहाँ नदी के तट पर देखो, तट पर एक याग किया था। एक लाखों वर्षो पूर्व याग हुआ था हरनन्दम् ब्रहे और उस याग के संस्कार मानो पूज्यपाद गुरुदेव के हृदय में सदैव तत्पर जैमिनी महाराज ने भी, यहाँ अपना वास किया है, जैमिनी जी ने व्यास मुनि तो मानो महाराज मानो देखो, प्रत्येक वर्ष याग मानो देखो, पाण्डु पुत्रों का जब परीक्षफल होता उनके आवृतियों होती मानो देखो, वह यहाँ आते देखो, उनका उपदेश होता ज्ञान और विज्ञान की वार्त्ताएं प्रगट होती रहती थी, अस्त्रों-शस्त्रों की विद्या का मानो देखो, विधान होता रहता था और वह अस्त्रों-शस्त्रों की विद्या मानो देखो, हमारे यहाँ द्रोणाचार्य के काल में अद्वितीय मानी जाती हैं। जब वह अद्वितीय काल ज्ञान और विज्ञान की प्रतिभा में सदैव रत्त रहा है। आज मैं वही आना चाहता हूँ वह भी काल मानो देखो, इतिहास का जब साहित्य के पृष्ठों में परिवर्तन आया तो मानो देखो, वही काल, कहीं शमशान भूमि में परिवर्तित हो गया, कहीं शमशान भूमि में परिवर्तित हुआ, कहीं मानो देखो, यहाँ अनाचार के और आतातियों के भी देखो, नाना प्रकार के आतंक हुए, उन आतंक आने से देखो, यहाँ नाना मेरी पुत्रियों का सतीतत्व भी हनन हुआ है, मेरी पुत्रियों का सतीत्व भी हनन हुआ, आज मानो वही भव्य भूमि हैं आज जब मेरा अन्तरात्मा जब मैं दृष्टिपात करता हूँ, उसी भूमि की मानो देखो, उसी लाक्षागृह पर यहाँ मानो देखो, मृतक विचार बने, मृतक विचारों से शमशान भूमि के रूप में परिवर्तित हुआ, यही मानो देखो, सतीत्व के हनन करने में परिवर्तित हुआ, आज वही मानो देखो, भूमि का जब उदय होता हैं, देखो, जो पुण्य भूमियों का जब उदय होता है तो याग की प्रतिभा वेदज्ञ ध्वनियां आना प्रारम्भ हो जाती है वही वेदज्ञ ध्वनि जो मैं अपने श्रोत्रों से श्रवण करता रहता हूँ, मैं पूज्यपाद गुरुदेव से यह वर्णन कराना चाहता हूँ मैं यह उद्गीत गाता रहता हूँ कि हमारा कितना सौभाग्य है आज नाना यज्ञमान मानो देखो, द्वितीय रूपों से जीवनं ब्रहे वह अपने विचारों में मानव दूरी नही होता हैं, वह विचार सदैव एक ही रूपों में विद्यमान रहते हैं उन्ही विचारों को ले करके याग की प्रतिभा सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक मैंने अपने पूज्यापाद गुरुदेव को कहा था महाभारत के काल में अथवा यवनों के काल में इस याग पर नाना प्रकार के आक्रमण हुए हैं मानो देखो, आहारों में व्यवहारों में जब परिवर्तन आया तो यहाँ नाना प्रकार के आक्रमण यागों के ऊपर हुए, याग में सबसे प्रथम जहाँ अहिंसा परमोधर्मी मेरी पुत्रियाँ और मेरी मातृ शक्ति रही हैं मानव रहा हैं मानो देखो, राष्ट्र और प्रजा रही हैं अश्वमेध यागों में सदैव उनकी प्रतिभा निहित रही हैं ऐसे काल में देखो, जब यागों पर आक्रमण हुआ, तो सबसे प्रथम याग में मांस की आहुति दी गई, वेदों के अर्थों को न जान करके, वेदों की प्रतिभा को न जान करके, इस मानव ने अपने ऊर्ध्वा में देखो, उल्टे मार्ग को अपना करके मानो देखो, याग में आक्रमण हुआ, उस याग का वह प्रभाव हुआ, क्या यहाँ का संसार का प्रत्येक प्राणी देखो, मांस भक्षक हो गया यह याग के तिरष्कार का मूलन हैं जब याग का तिरस्कार हुआ, तो यहाँ प्रत्येक प्राणी आहार में व्यवहार में अशुद्ध हो गया हैं आज मानो देखो, जब यह कहते हैं गुरुओं से, गुरु यह कहते हैं कि तुम साधना करो, कहते हैं कि मांस भक्षण देखो, जब करते हैं तो देखो, गुरुओं के द्वारा शिष्यों की सूक्ष्मता हो जाती हैं अरे, भोले प्राणियों! विचारों, जब तक साधना के मूल में तुम अंकित करना चाहते हो, और उनका आहार और

व्यवहार अपवित्र हैं, तो वह कैसे अपनी साधना में पूर्ण हो सकेंगें? कैसे साधना में मानो साधक बन करके, ऊर्ध्वा में जाएंगें। तो विचार क्या, मैंने अपने विचारों को इस दिशा में ले जाना नही है विचार, केवल यह कि आज हमारा यह सौभाग्य हैं, आज मैं अपने में बड़ा सौभाग्य अपने को स्वीकार करता रहता हूँ क्या मानो देखो, याग के देखो, संस्कारों को उद्बुद्ध करने वाले प्राणी है, वह मानो देखो, याग में परितृण हो करके अपने देखो, विचारों की, साकल्यों को आहुति दे करके, द्यौ लोक को पवित्र बनाया जा रहा हैं, यह वही पावन भूमि है जहाँ मानो देखो, वेदोव्यास अपने ब्रह्मचारियों को ऊर्ध्वा में शिक्षा देते थे ऊर्ध्वा में मानो देखो, गमन कराते और ज्ञान और विज्ञान की उड़ाने उड़ी जाती थी ज्ञान और विज्ञान का देखो, उड़ान होना देखो, वायु मण्डल में नाना यन्त्र भ्रमण कर रहे हैं जिनका देखो, लगभग बीस-बीस हजार वर्षों का आयु हैं यन्त्रों की आयु में मानो देखो, उनका भाव, उनकी विचित्रता अथवा उनका जो क्रियाकलाप है, वह उसमें विद्यमान रहता हैं। आज मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, पूज्यपाद गुरुदेव को यह इतना उच्चारण करना चाहता हूँ, जहाँ मानो देखो, वेदज्ञ ध्वनि होती हैं, ब्रह्मवर्चोसि अपने में पालना में, सदैव तत्पर रहते हैं, हे यज्ञमान! मेरा अन्तरात्मा तो मानो यज्ञमान के साथ रहता हैं, और मैं यह कहता रहता हूँ कि हे यज्ञमान! मानो देखो, मेरा अन्तर्हृदय यह पुकार कर कहता हैं क्या तेरा हृदय सदैव याज्ञिक बना रहे और मानो देखो, तेरे जीवन की सदुपयोगता ऐसे द्रव्य का सदुपयोग होना हे यज्ञमान! मेरा अन्तरात्मा सदैव प्रसन्न रहता है, हे यज्ञमान! मैं तो यह कहता रहता हूँ तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, क्योंकि तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे क्योंकि द्रव्य का सदुपयोग होना, देखो, यह द्रव्य भी ममतामयी माँ हैं, माँ का जितना भी सदुपयोग करता हैं, माता उससे प्रीति करती हैं, और माता का जितना कोई दुरूपयोग करता हैं, दूरिता करता है, माता अपने कण्ठ से दूरी कर देती हैं, तो यह जो द्रव्य है यह जो माया हैं, लक्ष्मी है, मानो देखो, यह परमपिता परमात्मा की श्री कहलाती हैं, यह परमात्मा श्री कहलाती हैं, जैसे पति और पत्नी दोनों एक दूसरे में श्री कहलाते हैं, यज्ञमान कहलाते हैं, इसी प्रकार यह जो ममता में माया है, यह मानो देखो, देखो, लक्ष्मी हैं, यह देखो, जहाँ लक्ष्मी का पूजन होगा, तो भगवान का पूजन, भगवान प्रसन्न होंगें। पूजन का अभिप्रायः यह है क्या द्रव्य का सदुपयोग होना चाहिए, द्रव्य का दुरूप्योग नही होना चाहिए जब यज्ञमान के गृह में द्रव्य का दुरूपयोग नही होगा, और द्रव्य का सदुपयोग होता है, वह गृह सुन्दर बनेंगें भावना में पवित्र बनेंगें और ब्रह्मयाग और देव याग नाना प्रकार के यागों में मानव सदैव परिणत होता रहेगा, आज मैं विचार यह देना चाहता हूँ, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह विचार दे रहा हूँ, कि आधुनिक काल में विज्ञानवेत्ताओं की भिन्न-भिन्न रूपों में गोष्ठियां होती रहती हैं, आधुनिक काल में यह विचारते रहते हैं, क्या देखो, दूषित वायु मण्डल हो रहा है, भूः भुवः और स्वः मानो देखो, यह जो इसमें दूषित वायु मण्डल हो रहा है, इसका क्या बनेगा हमारे ऋषि-मुनियों ने पूज्यपाद गुरुदेव ने मानो देखो, यह अपना एक नृत्त किया हैं, वेदमन्त्रों का अध्ययन किया है, उसके ऊपर तपस्या की है, और तपस्या करने के पश्चात एक क्रियाकलाप मानो देखो, यह उद्धृत किया हैं जिस क्रियाकलाप में याग सुगन्धि और ध्वनि दोनों का मिश्रण होता हैं, देखो, विचारों की सुगन्धि और पदार्थों की सुगन्धि अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके, जब वह वायुमण्डल में परमाणु रूप में रमण करती हैं, तो अशुद्ध परमाणुओं को निगलती है, शुद्ध वायुणमडल को निर्मािणत कर देती हैं। तो इस प्रकार विज्ञान मानो इसमें निहित रहता हैं, यह विज्ञान मानो देखो, हमारे आचार्यों ने देखो, विद्यालयों में, विज्ञान की प्रतिभा रही है, जब हम विद्यालय में, आचार्य पूज्यपाद गुरुओं के द्वारा अध्ययन करते थे, तो मानो यह आचार्य जन हमें नाना प्रकार के हमें इस प्रकार के क्रियाकलाप इस प्रकार की प्रतिभा का, वह प्रायः वर्णन कराते रहते थे आज मैं इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना नही देता हुआ केवल यह कि आज देखो, मैं सूक्ष्म क्या आधुनिक काल में आना चाहता हूँ मैं वर्तमान के काल में जाना चाहता हूँ प्रत्येक

मानव यह कहता है, राष्ट्रवेत्ता यह कहते हैं, कि हम निरपेक्ष रहना चाहते हैं, हम मानो देखो, निष्पक्षता में विश्वास करते हैं, अरे, मानव! तू जानता होगा, निष्पक्षता को? जब ही तो तू विश्वास करेगा। और जब जानता नही तो विश्वास ही क्या होना है। विचारना यह है कि देखो, निष्पक्षता को कौन जानता हैं, कौन विचारता है केवल इसीलिए कि इनकी स्वार्थ की पूर्ति हो जाएं और उन शब्दों को उच्चारण कर लें और उनका स्वार्थ पूर्ण हो जाएं। तो इसका नाम आज राष्ट्रवाद कहलाता हैं, विचार क्या मैं राष्ट्रवाद के ऊपर कोई विचार देना नही चाहता हूँ, विचार केवल इतना ही देना चाहता हूँ, यदि आधुनिक काल का जो यह वायुमण्डल यह मानो दूषित हो रहा है, विज्ञान के द्वारा विचारों के द्वारा मानो देखो, कर्मठता के द्वारा जो देखो, दूषित वायुमण्डल हो रहा हैं, इसका एक ही क्रियाकलाप है, कि राजा याग करने लगे प्रजा याग करने लगे और देखो, विचारों की सुगन्धि वायुमण्डल में प्रसारित होगी, मानो देखो, वही राष्ट्र को समाज को ऊँचा बना सकती हैं, मैंने बहुत पुरातन काल में कहा परन्तु यह क्यों करने लगें हैं जब तक नाना प्रकार की रूढ़ियाँ पनपती रहेंगीं, तब तक सत्य को सत्य नही कहा जाएगा, मानो मिथ्या को मिथ्या नही कहा जाएगा, जब तक मानव का कल्याण होने वाला नही मानव देखो, राष्ट्र और समाज का कल्याण होने वाला नही हैं, मेरे सत्यं ब्रह्मा देखो, सत्य में ब्रह्म हैं और देखो, ब्रह्म ही सर्वत्र प्रकृति का ब्रह्माण्ड हैं और वह ब्रह्म से पिरोया हुआ हैं, इसीलिए वह सत्यमयी कहता हैं वह सत्यमयी जो बन जाता हैं।

तो विचार क्या मानो देखो, कोई मानव निष्पक्ष नही है क्योंकि निष्पक्षता को जानते नही, होना हो जब ही, जब जानते हों निष्पक्षता मानो देखो, उसे कहा जाता हैं, जो मानो देखो, अपनी आत्म को जान ले और सबमें भूतेषु स्वीकार करे कि वह पंच महाभूत सबमें क्रियाकलाप कर रहे हैं अरे, मानो देखो, जब तुम मानव को तो देखो, निष्पक्ष कहते हो और गऊ और देखो, प्राणियों का भक्षण कर जाते हो, उसमें भी तो आत्मा विद्यमान हैं और जब उसमें आत्मा विद्यमान हैं तो तुम निष्पक्षता की वार्त्ता कैसे प्रगट कर सकते हों देखो, सर्वभूतेषु जब भगवान कृष्ण का यह उपदेश स्मरण आता हैं जो तो मानो देखो, भगवान कृष्ण ने अर्जुन को कहा था हे अर्जुन! संसार में मानव को निष्पक्ष रहना चाहिए और निष्पक्षता को उसी को कहा जाता है, जो सर्वभूतेषु सब में एक ही आत्मा का दर्शन करता हैं, सबमें चेतना का दर्शन करता हैं, अरे, मानो सब में चेतना का दर्शन नही होगा, जब तक निष्पक्ष कहना तुम्हारे लिए व्यर्थ बन जाएगा मानो देखो, जब यहाँ वास्तव में वास्तव में दृष्टिपात किया जाएं, तो इन विचारों के भगवान मनु के और भगवान मनु ने मछली से ले करके प्रत्येक प्राणियों की रक्षा के लिए प्रजा को उद्घोष किया था, और राजा से यह कहा था कि प्रत्येक प्राणी की रक्षा होनी चाहिए राजा वह कहलाता है मानो देखो, जहाँ नाना प्राणियों का भक्षण कर जाते हैं और उनको कहते हैं कि हम निष्पक्ष हैं मानववाद मे निष्पक्ष नही हो तुम अपने स्वार्थवाद में निष्पक्षता हैं, ज्ञान में निष्पक्षता नही हैं मानो तुम्हारे क्रियाकलापों में निष्पक्षता नही है तुम्हारा अन्तरात्मा जब सर्व पंच महाभूत आत्मा तुम्हारे मानो शरीरो मे विद्यमान हैं और तुम्हारे हृदयों में इसके पश्चात भी कटुता विद्यमान रहती है और नाना देखो, देवालयों के ऊपर, मानो संग्राम होते हैं और देखो, कटुता होती है, प्राणियों का ह्रस होता हैं, अरे, राजन! यदि तू मानो निष्पक्ष होता, तो यह नरसंहार नही हो सकता था, नरसंहार उसी काल में होता हैं, जब कि मानव अपने में मानव की आभा को नही जान पाता है और ज्ञान न होने से ब्रह्म ज्ञान न होने से मानो देखो, सब कुछ होता है, जब राजा ब्रह्म ज्ञानी होता है, आत्मा की चर्चा करता है, याग की वार्त्ता कहता हैं जब तक मानव की क्षुधा की वार्त्ता कह रहा हैं तो मानव उसके ऊपर विचार करता हैं और अपने में अहिंसा परमोधर्मी बन जाता हैं तो मानो देखो, यह राष्ट्र इस समाज को सुखद दे सकता है, सुखद बना सकता हैं। अपने कर्तव्य की आभा में रत्त हो सकता हैं।

आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ विचार यह दे रहा हूँ क्या मानो देखो, इस भूमि की मैं चर्चा में कर रहा

था महाभारत के काल में जब राष्ट्र अव्यवस्था हो गई, राष्ट्र में अशान्ति आने लगी, तो उस राष्ट्र में क्रान्ति का परिणाम यह हुआ क्या हस्तिनापुर में अग्नि प्रविष्ट हो गई उस समय मानो देखो, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने वर्णन करते हुए कहा था, मानो मैनें भी वर्णन करते हुए कहा है आज कोई भी मानव इसी रूप में भी हमारे दृष्टिपात करने का जो माध्यम हैं, वह बड़ा विचित्र है, मानो देखो, जब हम यह विचारते हैं क्या कोई किसको स्वीकार कर रहा है, अथवा नही तो मानो देखो, वह किसी भी संचालक, को स्वीकार नही कर रहा हैं कोई भी संचालक किसी भी रूढ़ि का ऐसा नही हुआ, जिन्होंने मांस इत्यादि का भक्षण किया हो, वह सदैव शाकाहारी रहे हैं और वह अपने में बहुत सूक्ष्म आहारी रहे हैं परन्तु उसके मानने वाले, उसके विपरीत चलते हैं उसकी पोथी के विपरीत चलते हैं और जब पोथीयों के विपरीत चलते हैं तो मानो देखो, वह अग्नि के काण्ड बन करके रहते हैं, स्वार्थ की प्रतीति होने लगती है, वही मानो देखो, हमारे विचारों को जो दृष्टिकोण रहा है, वह यह रहा है, क्या कोई भी मानव न तो मोहम्मद के मानने वाला रहा है, न ईसा के मानने वाला रहा है, न भगवान राम और कृष्ण को मानने वाला, इसमें केवल स्वार्थपरता हैं, और स्वार्थपरता होने से मानो देखो, आज हम कहते हैं अमुक व्यक्ति को मानने वाले कोई किसी आभा में, स्वीकार नही कर रहा हैं उनकी अच्छाईयों को महानता को त्यागा है और अशुद्धियों को लेने का प्रयास कर रहता है, भगवान राम का जीवन मानो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव उच्चारण करते रहते हैं, भगवान कृष्ण के जीवन में कोई भी पाप नही किया गया। उन्होंने अपने जीवन में समुद्र के तटों पर विद्यमान हो करके, याग करते थे और याग करने से उनका राष्ट्र पवित्र कहलाया और आहार उनका कितना सात्विक मानो देखो, लवण युक्त आहार करते थे, आधुनिक काल में देखो, उनके मानने वाले मानो देखो, लवण क्या, क्या पान कर रहे हैं और उसके देखो, विचारों की आभा के सदैव रक्त हो रहा हैं, तो मैं यह उच्चारण करना चाहता हूँ, मैं कटु नही उच्चारण कर रहा हूँ, आज जो मुझे सत्यमयी दृष्टिपात आ रहा हैं, मानो देखो, उसको उच्चारण कर रहा हूँ विचार क्या देखो, यह सत्यं ममं ब्रहे यह सत्यमयी माना गया हैं, समय आता रहता है, परिवर्तन होता रहता हैं, साहित्य परिवर्तित हो जाता है, परन्तु विचार क्या क्या आज मानो देखो, भूमि के सम्बन्ध में हम यह उच्चारण कर रहे थे, क्या यह हमारा कितना सौभाग्य हम कितने सौभाग्यशाली हैं, मानो देखो, परोक्ष में अपरोक्ष में क्रियाकलाप होता है, मानो देखो, यह जहाँ नष्ट करने की स्थली का निर्माण हुआ वहा न्यायालय रहे वहाँ विद्यालय रहें परन्तु देखो, वही शमशान भूमि रही वही विनाशकाल की भूमि रही, परन्तु देखो, आज मेरा मैं क्या दृष्टिपात कर रहा हूँ, इतने युगों से दृष्टिपात करता हुआ, आज मैं वेदज्ञ ध्वनि को स्वीकार करता हूँ, आज मेरे नेत्र देखो, मेरी जो श्रोत्र इन्द्रियाँ हैं, वह बड़ी प्रसन्न रहती है, जब वेदों का उद्गीत होता है, साम गान गाया जा रहा है, मानो देखो, ज्ञान काण्ड की आहुति दी जा रही हैं, यह पारायण पुरातन काल में, आचार्य जन मानो प्रत्येक देवता को प्रसन्न करते रहते थे, विचार क्या देखो, जब मैं विज्ञान के ऊपर जाता हूँ, इस विज्ञान की जो उपलब्धि है, वह याग नही हुआ करती है, पुरातन काल का जो वैज्ञानिक था वह याग करता, याग में तरंगें उत्पन्न होती उन तरंगों की प्रतिभा वायुमण्डल में, परन्तु उस समय यज्ञमान आधुनिक काल का, यज्ञमान तो अपने ऊपर क्या-क्या चिन्तन करता रहता हैं, परन्तु देखो, पुरातन काल का वैज्ञानिक मन, कर्म और वचन तीनों को एक सूत्र में ला करके अपनी भावना को अपने याग में अग्नि की धाराओं पर विद्यमान करके, वह वायुमण्डल में प्रवेश वह द्यौ लोक में देता रहता था वही शब्द द्यौ लोक में जाते हैं और वही द्यौ लोक वाला जो शब्द हैं वही उसके मानो जीवन की प्रतिभा बन करके रहता है अथवा विचित्र बन करके रहता हैं। आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ, केवल यह उच्चारण कर रहा हूँ हे यज्ञमान! मेरा तो अन्तर्हृदय तुम्हारे साथ रहता है कि तुम्हारे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, महानता की प्रतिभा में रक्त होता रहे परन्तु देखो, आज का वाक् यह क्या कह रहा है, क्या ब्रह्वे कृतं लोकां हे यज्ञं ब्रहे देखो, यह विज्ञान, यह

शब्द, यह विज्ञान के ऊपर निर्धारित हो करके वायु में प्रवेश करता मण्डलों में जाता हैं, यही तो विज्ञान हमारे यहाँ सार्थक बन करके रहा है। महर्षि भारद्वाज मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे वर्णन कराया एक समय मैं और मेरे पूज्यपाद गुरुदेव एक समय भारद्वाज मुनि के यहाँ पंहुचे, तो भारद्वाज मुनि के यहाँ मानो देखो, प्रातःकाल का समय था, आचार्य ने कहा आओ, ऋषिवर! हम विराजमान हो गएं तो पूज्यपाद से कहा देखो, क्या हमारे यहाँ नियम हैं क्या तुम याग करो जब हमने याग प्रारम्भ किया तो यन्त्रों में देखो, उनके हमारे चित्र आहुति देते हुए दृष्टिपात आ रहे थे, और वही आहुतियों में मानो वह अन्तरिक्ष में शब्द अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके गमन हो रहे थे, तो यह विज्ञान जब तक देखो, राजा के राष्ट्र में या समाज में जागरूक नही होगा क्या हम यन्त्रों में मानो देखो, यागों को दृष्टिपात करें, याग क्रियाकलाप आते रहें, उन्ही यन्त्रों में मानो देखो, देखो, समाज का कल्याण होता हैं, समाज अपने में महान बनने लगता हैं, तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने यज्ञशाला में अपने पूज्यपाद गुरुदेव का वर्णन व्रत्यं ब्रहा मानो देखो, अपने में अभ्योदय हो रहा था, तो विचार क्या मानो देखो, उसके पश्चात विज्ञान की चर्चाएं हुई, क्योंकि वैज्ञानिक यन्त्र ही मानो देखो, उन धाराओं पर विद्यमान हो करके, दृष्टिपात आते थे, तो आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ विचार क्या है, क्या हे यज्ञमान! मेरा अन्तर्हृदय तुम्हारे साथ हैं, क्या तुम्हारे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, और तुम्हारे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे, और दुरूपयोग न हो, क्योंकि दुरूपयोग होना तुम्हारी हीनता हैं, सदुपयोग होना तुम्हारा कल्याण है, क्योंकि यह जो द्रव्य है, यह किसी की सम्पदा नही हुई, आज तक यह मानो देखो, प्रभ की सम्पदा है और प्रभु ही इसे प्रदान करने वाला है मानो देखो, यह सम्पदा तो प्रत्येक मानव के क्रियाकलापों के लिए होती हैं, यह द्रव्य मानो सदुपयोग याग जैसे कर्म करने के लिए होती हैं, आज का विचार क्या हैं, आज के विचारों का अभिप्रायः यह कि परमपिता परमात्मा आराधना में रत्त रह करके अपने पूज्यपाद गुरुदेव से अब मैं आज्ञा पाऊंगा।

पूज्यपाद गुरुदेवः- मेरे प्यारे ऋषिवर! आज मेरे प्यारे महानन्द जी, ने अपने भव्यतव ऊर्ध्वा में विचारों का उद्गीत गाया मेरा अन्तरात्मा बड़ा प्रसन्न हो रहा हैं, क्या पुत्र ने एक साहित्यिक चर्चा को ले करके एक ऐतिहासिक पृष्ठों को ले करके मानो अपनी चर्चाएं की हैं, याग अपने मे बड़ा अनूठा माना गया है, हमारे यहाँ ऋषि-मुनियों ने याग के ऊपर बड़ा अनुसन्धान किया, याग के ऊपर अपना अनुसन्धान करते हुए महानता का दर्शन किया हैं, आज का वाक् क्या कह रहा है, कि परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, इस संसार सागर से हम पार हो जाएं, मेरा भी अन्तरात्मा कहता है कि हे यज्ञमान! तुम्हारा हृदय हे यज्ञमान! तुम्हारा अन्तर्हृदय पवित्र बना रहे तुम्हारे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे इसके साथ अब यह वाक् अब समाप्त होने जा रहा हैं। ओ३म् देवाः आभ्यां रथं मा ना वाची नमाः ओ३म् तनु गन्धर्वा। लाक्षागृह बरनावा।

९ चित्त मण्डल के संस्कार १५-०५-१९९१

देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी है और महिमावादी है। क्योंकि जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वे परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं। क्योंकि वे दृष्टा है और अनन्तमयी माने गएं हैं। तो उस परमपिता परमात्मा की महिमा अथवा उसके गुणों का गुणवादन करना ही हमारा कर्तव्य कहलाता है और उसकी महिमा को अपने अन्तर्हृदयों में धारण करना और अपने में क्रियात्मक कर्म करना ही मानवीय माना गया है। इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की अनन्तमयी धाराओं को जानते हुए इस संसार सागर से पार होने का प्रयास करें और हम अपने में, अपनी आभा में परिणत होते चले जाएं।

आत्मा का मूलक

तो आओ मुनिवरों! देखो, आज का हमारा वेदमन्त्र हमें क्या कह रहा है। वेदमन्त्र यह कहता है मनं व्रस्त बृद्धि व्रणः कि यदि मानव परमपिता परमात्मा के समीप जाना चाहता है और मनस्त्व के लिए अपनी आभा में लाना चाहता तो उस मानव को अपने में यह चिन्तन करना चाहिए कि आत्मा के प्रतिबिम्ब, मानो जितने भी मूलक हैं, उनको हमें जानना चाहिए। जैसे आत्मा के मूलक, मानों सर्व चित्त मण्डल कहलाता है। तो चित्त मण्डल में देखो, सबसे प्रथम मनस्त्व आता रहता है और उससे द्वितीय आती है बुद्धि और तृतीय अहंकार और देखो, चित्तमण्डल में यह वृत्ति विद्यमान रहती है-मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार, मानो चित्त व अहंकार में जब तक मानवीयता में इस चित्त के मण्डल में संस्कार विद्यमान होते हैं तो चित्त अपने में क्रियाकलाप करता रहता है और यह जो मन बुद्धि चित्त अहंकार है इन्हीं के माध्यम से वह क्रियाकलाप कराता रहता है क्योंकि आत्मा अपने में क्रियाशील है। जैसे, मानव जीवन को क्रिया में लाने वाला यह मनस्त्व, मानो यह आत्मा तत्त्व माना गया है। इसी प्रकार जैसे बाह्य जगत और आन्तरिक जगत को वे परमपिता परमात्मा क्रियाशील बनाता रहता है, जैसे मानव के शरीर में आत्मा है परन्तु जितना भी आन्तरिक जगत है, मानवीयता में उसी के आधारित अपने में क्रियाकलाप करता रहता है।

ज्ञान की अनन्त धाराएँ

तो मुनिवरों! देखो, इसीलिए वह मानव जो परमपिता परमात्मा के समीप जाना चाहता है, वह ज्ञानी बनने के लिए सदैव तत्पर रहे। क्योंकि ज्ञान एक ऐसी अमूल्य, अमोलक वस्तु मानी गई है जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से अन्वेषण करता चला आया है और यह इसीलिए कि मैं ज्ञान के माध्यम में रत्त हो जाऊँ और ज्ञानी बनूँ। नाना ऋषिवर बेटा! परम्परागतों से अन्वेषण करते रहे हैं और यह विचारते रहे हैं कि मैं ज्ञानी बन करके परमपिता परमात्मा के समीप पहुँचू। परन्तु ज्ञान की एक धारा नहीं है, अनन्तमयी धाराएँ हैं जिसके ऊपर अन्वेषण करता हुआ मानव अन्त में मौन हो जाता है। इसीलिए हमें विचारना है कि परमपिता परमात्मा का अनन्तमयी यह जो जगत है जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से अन्वेषण करता चला आया है और यह विचारता रहता है कि मैं परमपिता परमात्मा को अपने में धारयामि बनाना चाहता हूँ। तो धारयामि बनने के लिए मानव परम्परागतों से विचार-विनिमय करता रहता है और चित्त के मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार रूपी आन्तरिक जगत को मानो चित्त मण्डल में ही जो प्रवेश करता है को जान लेना चाहता है। और मन प्रकृति का सूक्ष्म तत्त्व माना गया है। तो इसीलिए मन से

विचारना है। और यह जो मन है मानो इसकी नाना धाराएँ मानी गई हैं। आत्मा के प्रतिबिम्ब में आकर के यह अपना क्रियाकलाप करता रहता है। आत्मा का प्रतिबिम्ब जब चित्त के मण्डल में जाता है तो चित्त में स्मरण शक्ति जागरुक हो जाती है। इसी आत्म तत्त्व की जब छाया अहंकार में जाती है तो बेटा! यह संसार पिण्डरूप में दृष्टिपात आने लगता है। और जब देखो, यह अमृतम् आत्मा का मूलक, जब सुषुप्ति में चला जाता है तो चित्त मण्डल में भी शून्यता आ जाती है और संस्कार अपनी आभा में शून्यवत् को प्राप्त हो जाते हैं।

अन्तःकरण

तो मेरे प्यारे! देखो, विचार यह कि हम अपने में उस महान देव को धारण करना चाहते हैं और महान देव को अपने समीप लाना चाहते हैं जिससे हमारा मनस्त्व मानो किसी प्रकार की विडम्बना में न चला जाए और विड़म्बित न हो जाए, ऐसी मनोनीत की भावना रहती है। ऋषिमुनि, परम्परागतों से बेटा! अन्वेषण करते रहे हैं और विचार-विनिमय करते रहे हैं कि हम वास्तव में देखो, इन नाना प्रकार की धाराओं को जानना चाहते हैं जिन धाराओं को जानने से हम आत्मा के समीप चले जाएं और परमात्मा के निकटतम आत्मा जाकर के मानो आत्म तत्त्ववेत्ता बन जाए। ऐसा वेद का एक मन्त्र कहता है। वैदिक मन्त्रों में नाना प्रकार की विद्या का, विद्या की वेदियाँ होती रही हैं, जानकारी भी होती रही है। परन्तु विचार केवल यह कि वह ब्रह्मणे वाचप्रवाह वर्णम्, मानो मानव परमपिता परमात्मा के समीप जाना चाहता है, परमात्मा को अपने में लाना चाहता है। तो वेद का मन्त्र यह कहता है, मनो वर्णस्वताहं वर्णं ब्रह्मः वर्णस्वतम् इस परमपिता परमात्मा को अपना वरुण बनाना होगा और जब परमात्मा अपना वरणीय बन जाता है अथवा जब उसे हम वरणे लगते हैं तो यह ज्ञान हमारे यहाँ स्पष्टीकरणता में प्रायः हमें प्राप्त होता रहता है।

इसीलिए बेटा! आज का वेद का मन्त्र हमें यह प्रेरणा दे रहा है अथवा हमें यह विवेचना के लिए बाध्य कर रहा है कि ये, मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार जो यह सर्वज्ञा है, यह चतुष अन्तःकरण कहलाता है। तो बेटा! इसका हमें शोधन करना है।

आओ बेटा! मुझे वह काल स्मरण आ रहा है जिस काल में महर्षि रेवक मुनि महाराज अपने आचार्य के समीन विद्यमान थे। तो रेवक मुनि महाराज ने अपने बाल्यकाल का, उनका युवा जीवन था और वह अपने पूज्यपाद गुरुदेव वशिष्ठ मुनि से यह बोलने लगे, मानो उद्गीत गाने लगे कि हे प्रभु! मैं यह जानना चाहता हूँ कि तपो मनस्तप्रवाः मैं परमात्मा को अपने समीप लाना चाहता हूँ अथवा मैं परमपिता परमात्मा के समीप जाना चाहता हूँ। यह जो मेरा आत्मा है आत्मब्रह्माः, ये जो आत्मतत्व है, आत्मा का आत्मा में वास हो जाए तो मेरा अन्तर्हृदय पवित्रता में परिणत हो जाए।

जब ऋषि ने अपने ब्रह्मचारी वांगमय में यह उद्गीत सुने तो उन्होंने कहा हे ब्रह्मचारी! हे रेवक! अमृत को प्राप्त करने वाला मानो अमृत को ही प्राप्त करता रहता है। यदि तुम यह जानना चाहते हो कि मैं आत्मा के समीप मानो कोई वस्तु न ला पाऊँ तो इससे ऊर्ध्वा में गमन करना होगा और तुम्हें तपस्वी बनना होगा। रेवक मुनि ने कहा प्रभु! हमें इसे प्रकट कीजिए। उन्होंने कहा, यज्ञं ब्रह्मः वर्णब्रहे तुम्हारे इस मानव शरीर में मानो प्राण है-प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान देखो, यह जो तुम्हारे समीप रहता है इन्हीं को एकाग्र करने का प्रयास करो और यह जो प्राण है यह प्राण जब एक सूत्र में आना प्रारम्भ हो जाते हैं तो मनस्त्व भी उसी में क्रीड़ा करने लगता है और यह जो मन है यह प्रकृति का सूक्ष्म तन्तु होने से मानो यह चारों विकार उसी के कारण माने गए हैं। सबसे प्रथम मन है, मन आत्मा के प्रकाश में अपने को प्रकाशमान बनाता है। परन्तु एक दूसरा, एक दूसरे के प्रकाश में ही मानो प्रकाशित होना चाहता है।

आत्मा का प्रकाश

परन्तु रेवक मुनि ने अपने पूज्यपाद गुरु से यह प्रश्न किया कि हे प्रभु! मैं आत्मा के समीन जाना चाहता हूँ, आत्मा के प्रकाश में ही प्रकाशमान होना चाहता हूँ। उन्होंने कहा, बहुत प्रियतम। हे ब्रह्मचारी! सुमंगलः देखो, तू वेद के वांगमय में प्रवेश हो जाओ। वहाँ अपने में ही अपनेपन का भान करो क्योंकि जैसे मन है, बुद्धि है चित्त और अहंकार है, ये चारों अवस्थाएँ ही मानो मनस्तव की मानी गई हैं। देखो, मन से ही बुद्धि का निर्माण होता है और बुद्धि भी कई प्रकार की मानी गई है। जैसे मैंने तुम्हें बुद्धि के ऊपर वर्णन करते हुए कहा कि सबसे प्रथम बुद्धि है, उसके पश्चात मेधा है। मेघा उसे कहते हैं जो दृष्टिपात करता है और वह उससे मानो स्मरण शक्ति के रूप में परिणत होती है मानो वह बुद्धि, मेधा कहलाती है और वह मेधावी क्या करता है? बेटा! वह उसे परमात्मा के ज्ञान में और विज्ञान में रत्त होने लगता है। देखो, चित्त के मण्डल में सर्वसंस्कार विद्यमान होते हैं। जितने भी जन्म जन्मान्तरों के संस्कार होते हैं वे सब चित्त के मण्डल में विद्यमान होते हैं। चित्त का मण्डल, जब उन भोक्तव्य पदार्थों को, कर्मों की आभा में रत्त होने लगता है तो मानो उसी के अपनेपन और उसी में उसी को दृष्टिपात करता है।

चित्त मण्डल

मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा न देता हुआ केवल यह कि चित्त मण्डल में जब तक संस्कार विद्यमान होते हैं। जब तक यह आत्मा मानो शरीरों को धारण करता रहता है और जब तक चित्त का मण्डल मानो अपने इन संस्कारों से विहीन हो जाता है, निरावृत्तियों में रत्त हो जाता है तो मोक्ष का अधिकार उसे प्राप्त होने लगता है मानो वह आनन्द की आभा में रत्त हो जाता है।

अहंकार से निर्माण

मुनिवरों! देखो, मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार में, एक अहंकार ऐसा है जिससे देखो, पिण्डों का निर्माण होता है। यह चित्त मण्डल ही तो है, चित्त ही तो है। मानो जो पिण्ड के रूप में विद्यमान रहता है और वह जो अंधकार है उसी के परमाणु एकाग्रता में धारण करके, मानो पिण्डों का निर्माण हो जाता है। यह अहंकार कहलाता है। अहंकार से ही हम एक दूसरे में कटिबद्ध रहते हैं, मानो एक दूसरे की आभा में परिणत हो जाते हैं। यदि हमारे द्वारा यह अहंकार नहीं होगा तो यह संसार पिण्ड के रूप में निर्माणित नहीं हो सकता। जैसे माता के गर्भस्थल में पिण्डों का निर्माण होता है तो सब वस्तु उसमें निहित होती है। परन्तु एक अंकुर होता है जीवात्मा के साथ में, कि शरीरों को धारण करने का एक अंकुर, संस्कार होता है। उसी आधार पर वह देखो, माता के गर्भस्थल में और माता उसे निर्माण के रूप में मानो अन्नादि प्रदान कर देती है। कहीं कोई वस्तु प्रदान कर देती है उससे उसके रूप में नाना प्रकार की धाराएँ उत्पन्न होने लगती है। तो यह जो पिण्ड है, इस पिण्ड का जो निर्माण है उसके मूल में अहंकार रहता है। चाहे यह पिण्ड मानव का शरीर हो, चाहे पुत्रो! हमारा शरीर हो, चाहे यह देखो, ब्रह्माण्ड हो और ब्रह्माण्ड में जितना प्राणी मात्र क्यों न हो। परन्तु जब यह आकार में पिण्ड आएगा तो उसके गर्भ में अहंकार विद्यमान होता है। तो अहंकर से ही देखो, चित्त के मण्डल की धाराओं का जन्म होता है। और चित्त मण्डल में ही देखो, यह बुद्धियों से ही देखो, मनस्तव। प्रायः वास्तव में ऐसा माना गया है कि मन, बुद्धि क्योंकि मन जो है यह प्रकृति का विकार है और प्रकृति के पश्चात मानो प्रवाह वर्णस्तम् यही विकार मानो बुद्धि के रूप में परिणत होता है। बुद्धि, बेटा! मेधा से दृष्टिपात करता है और प्रज्ञा से उसे ज्ञान देता है, निर्माणित करता देता है और ऋतम्भरा में मुनिवरों! जान कर मौन हो जाता है और मेधावी देखो, उसे प्रभु की प्रतिभा का दर्शन हो जाता है। वह परमात्मा

के समीप क्या, आत्मा के समीप जाता हुआ, आत्म तत्त्व का, परमात्मा से समन्वय होता है।

बुद्धि के प्रकार

तो मेरे प्यारे! देखो, बुद्धि कितने प्रकार की है वास्तव में बुद्धि के इतने पर्यायवाची शब्द हैं जैसे रेणुका इसे कहते हैं, मेधावी इसे कहते हैं, गोवर्णी इसे कहते हैं, सुमिता इसे कहा जाता है और भी नाना प्रकार मानो प्रकृति के स्वरूप में इसकी प्रतिभा का दर्शन होता है। तो विचार-विनिमय क्या? मुनिवरों! देखो, यह हमारा वेद का मन्त्र हमें यह उद्गीत के लिए बाध्य कर रहा है। जिस उद्गीत को गाने के लिए मानव अपने में मानवीयता का दर्शन करता है। देखो, जब हम इतने विचारों को जानने लगते हैं कि मन का विकार बुद्धि है और बुद्धि का विकार मानो मेधावी है जो निर्माण कर देती है और यह जो ऋतम्बरा है यह ऋतम्बरा उसे अनुभव कराती है। ऋतम्बरा के पश्चात प्रज्ञा है, जो संसार को समेट करके, जगत को, अपने में निहित करके मौन हो जाती है। तो उस समय बेटा! परमात्मा के दर्शन के लिए कोई किसी प्रकार की विडम्बना नहीं होती। परमात्मा का दर्शन करता रहता है एक एक अणु में।

एक परमाणु में सृष्टि

बेटा! मुझे वह काल स्मरण है जब नाना ऋषिवर अपनी स्थलियों पर विद्यमान होकर के परमाणु के ऊपर अध्ययन करने लगे। परमाणु के ऊपर जब अध्ययन करने लगे तो महर्षि मौलुक ऋषि महाराज ने उस परमाणु का जब विभाजन किया तो उसको मानो विभक्त रूप में लाए। तो उस परमाणु में मानो इस सृष्टि का निर्माण हो रहा है और सर्व सृष्टि उसी एक परमाणु में निहित है। तो बेटा! यह परमात्मा के समीप जाने का एक मार्ग है। जब एक एक परमाणु में ब्रह्माण्ड है, एक एक अणु में मानो परमात्मा का दर्शन होता रहता है। परमात्मा अणु ब्रह्मणे आत्मन् ब्रवः तो मानव अपने में यह चिन्तन करता रहा है कि यह प्रभु का मुझे दर्शन हो रहा है। एक एक परमाणु में ब्रह्माण्ड है, एक एक परमाणु में मानो यह सर्व जगत निहित हो रहा है।

प्रभु के दर्शन

बेटा! मुझे स्मरण आता रहता है कि जब गाड़ीवान रेवक और उनके पूज्यपाद मौलुक ऋषिर महाराज एक समय भ्रमण करते हुए महर्षि भारद्वाज मुनि के द्वारा पहुँचे और भारद्वाज मुनि से यह कहा गया कि महाराज! इन्हें परमात्मा का दिग्दर्शन कराइए। उन्होंने कहा कि मैं कैसे करा सकता हूँ ऋषिवर? आप तो ब्रह्मवेत्ता हैं और ब्रह्मवेत्ताओं के हृदयों में मानो विवेक विद्यमान है और विवेक के गर्भ में देखो, परमाणु और परमाणु के गर्भ में ही वह सर्वत्र ब्रह्माण्ड निहित रहता है। इसमें परमपिता परमात्मा वास करता रहता है। जब ऋषिवरम्ब्रहे भारद्वाज मुनि के आने से यह निर्णय हुआ, भारद्वाज मुनि ने कहा जितना भी ये व्रहः कथ्यं ब्रवः ये जो बुद्धि है जैसे यह ऋतम्बरा कहलाती है तो ऋतम्बरा बुद्धि में अनुभव करता रहा है परन्तु जब वह प्रज्ञावी में प्रवेश करता है तो प्रज्ञावी में प्रभु के दर्शन के द्वितीय रूप में वह नहीं जाता है और वहाँ उसे परमानन्द प्राप्त होने लगता है। क्योंकि वह जो प्रज्ञावी है मानो ऋतम्बरा और मेधावी कहलाती है, ये सब देखो, मन के विकार माने गए हैं। आत्मा का मन्थन माना गया है। परन्तु जब यही चित्त के मण्डल में प्रवेश होता है तो बेटा! चित्त मण्डल में जब जागरुक करते हैं ऋषिवर, तो अपने संस्कारों का समूह प्राप्त होता है।

अन्तरात्मा में प्रभु

मेरे प्यारे! मुझे वह काल स्मरण है जब एक समय महर्षि अंगिरस अपने में विद्यमान थे। वह यह विचारने लगे कि मुझे अपनी अन्तरात्मा में प्रभु का दर्शन करना है। मैं चित्त के मण्डल को जागरुक करना चाहता हूँ

जिससे मुझे परमात्मा से मिलने में किसी प्रकार की वृत्तियाँ उदबुद्ध नहीं हो पाती। तो मैं इसमें रत्त होना चाहता हूँ। मानो चाहने वाला चाहता रहता है। अंगिरस मुनि का जीवन मुझे स्मरण है। वे बेटा! अपने में विचारने लगे कि मुझे अपने चित्त के मण्डल को जानने के लिए मन की पवित्रता चाहिए और मन की पवित्रता जब हो जाएगी तो मैं मेधावी और ऋतम्भरावी बनूँगा और मेधावी क्या मानो प्रज्ञावी बनकर मैं प्रभु का दर्शन करुँगा। इस प्रकार उनका विचार-विनिमय हो रहा था। इसी विचारधारा में मेरे पुत्रो! अमृतां भूवर्णं ब्रह्मः वर्चस्वति सुप्रजाः वेद का ऋषि बहुत ऊर्ध्वा में उड़ान उड़ाने के लिए कहता है।

तो अंगिरस मुनि महाराज ने १२ वर्ष का एक अनुष्ठान किया। जिस अनुष्ठान में उन्होंने देखो, जल का पान किया। जल के साथ कुछ स्थूल पदार्थों का पान भी करते रहे। वेद मन्त्रों का अध्ययन करते हुए उन्होंने १२ वर्ष का अनुष्ठान किया। उससे उनके चित्त मण्डल में कुछ व्याहृतियों का जन्म हुआ। पुनः वह १२ वर्ष के अनुभव के साथ १२ वर्ष का तप करने के लिए देखो, अपने प्राणों का चिन्तन करने लगे। प्राण को अपान में, अपान को प्राण में, प्राण को समान में, समान को व्यान में। जब इन प्राणों को विचारने लगे तो बेटा! १२ वर्षों तक उन्होंने प्राणों के ऊपर अध्ययन किया और प्राण में इतने पूर्ण हो गए कि प्राणायाम समाधि होते ही अपनी अन्तरात्मा की वार्त्ता को जानते रहे। मेरी प्यारी माताएँ भी प्रायः इस विद्या को जानती रही हैं। मेरे प्यारे! मुझे माता मलदाल्सा का वह काल स्मरण आता रहता है। माता मलदाल्सा को जब गर्भ की आत्मा से चर्चा करने की उत्सुकता होती तो वे सबसे प्रथम प्राण को अपान में प्रवेश कराती। अपान से बेटा! पृथ्वी के गर्भ को जाना जाता है और अपान के पश्चात उसे व्यान में ले जाते। व्यान देखो, सर्वत्र विलक्षणवादी है। और व्यान में जब प्रवेश हुए, तो बेटा! समान में चले गए और समान से उदान में प्रवेश करके वह मेरी प्यारी माता अपने गर्भ की आत्मा, जो गर्भ में शिशु विद्यमान है, उस शिशु में प्रवेश हो जाती। मेरी प्यारी विदूषी माताएँ अपने गर्भ की आत्मा से वार्त्ता प्रायः प्रकट करती रही हैं।

चित्त मण्डल के संस्कार

आज मैं बेटा! इसके आन्तरिक गर्भ में तो तुम्हें नहीं ले जाऊँगा। विचार केवल यह कि जब प्राण के ऊपर ऋषि ने १२ वर्ष का अनुष्ठान किया और वे प्राण का सेवन करते रहे। बेटा! देखो, अग्नम् ब्रह्मः उन्होंने पिफर अग्नि के ऊपर १२ वर्ष का अनुष्ठान किया। यह अग्नि कैसे विद्यमान रहती है? बेटा! नाना प्रकार की अग्नि मानी गई है। जैसे ब्रह्माग्नि और उस अग्नि का कैसे वृत्त होता है? वह अग्नि कैसे वैश्वानर में प्रवेश होती है? और वैश्वानर अग्नि, गार्हपथ्य अग्नि में जब प्रविष्ट होती है और गार्हपथ्य अग्नि वैश्नावर में प्रवेश होकर बेटा! उस अग्नि से अपान मिलान करती है। तो मेरे प्यारे! देखो, उस मानव का जीवन, तेजोमयी बन जाता है और तेजोमयी बनकर के मुनिवरों! देखो, सब परमाणुओं को जानने के लिए तत्पर हे जाता है।

बेटा! मैं बहुत गम्भीर विषय में तुम्हारे समीप उद्गीत नहीं गाना चाहता हूँ, केवल यह कि मानव के जीवन का विज्ञानमयी यह चित्त मण्डल कैसा विचित्र है। जहाँ बेटा! ऋषि ने १२ वर्षों तक प्राणों के ऊपर अनुष्ठान किया तो चित्त मण्डल के संस्कार जागरुक होने लगे। और वे संस्कार जागरुक होने से देखो, अनेक जन्मों का रूप समस्त जन्मों का संस्कार हूँ।

मेरे प्यारे! उन्होंने १२ वर्ष का एक और अनुष्ठान किया कि वह वायु का सेवन करके मौन रहें। और वायु का सेवन करके देखो, खेचरी मुद्रा से और प्राणायाम करने से, संकल्प प्राणायाम करने से उदर की पूर्ति हो जाती। और जब वे शीतली प्राणायाम करते तो जल की पूर्ति हो जाती। और जब देखो, वासुक प्राणायाम करते तो उससे उनके शरीर की प्रतिभा का जन्म हो जाता। मुझे कुछ ऐसा स्मरण आ रहा है, ऐसा कुछ वैदिक काल से भी प्रतीत

होता है कि इस प्राणायाम से और इस चित्तम वायु का सेवन करने से मानव कुछ जन्म जन्मान्तरों के चित्रों को जान लेता है। बेटा! चित्त मण्डल में जो जन्म जन्मान्तरों के संस्कार होते हैं उन्होंने दो अनुष्ठान अग्नि अन्नाः और जल के ऊपर जब अनुष्ठान किए तो उन्होंने लगभग ८५ वर्षों के इस प्रकार के अनुष्ठान करने से उनके चित्त मण्डल में बेटा! लगभग अंगः सम्भवं बृहि, देखो, ८५ वर्षों का अनुष्ठान करने से लगभग एक लाख ८५ जन्मों के जो चित्त में संस्कार थे, बेटा! उन्हें वे मानो प्रत्यक्ष कर पाए। बेटा! वह यह जान गए कि और भी नाना संस्कार रह गए हैं।

बेटा! ये जो करोड़ों जन्मों के संस्कार इस चित्त में विद्यमान होते हैं और तब तक परमात्मा और चित्त मण्डल का कोई समन्वय नहीं रहता। यह प्रकृति का मण्डल है और प्रकृति के मण्डल को, जब तक आवागमन की प्रवृत्ति से नहीं जाना जाएगा तब तक हम परमात्मा में विडम्बना व्यापी बन जाते हैं। और परमात्मा का अपना विश्वसनीय, अपने में विश्वसनीय बन कर के परमात्मा का दर्शन तो हो जाएगा परन्तु यदि हम यह चाहें कि परमात्मा में हमारा विलय हो जाए अथवा इसमें हमारी प्रतिभा अपने में रत्त हो जाए तो बेटा! यह सम्भव नहीं।

बेटा! मैं बहुत दूरी नहीं जाना चाहता हूँ विचार केवल यह कि चित्त के मण्डल को जागरुक करो। हमारे यहाँ योगों के अनष्ठान करने वाले भी यही चाहते हैं कि हमारे चित्त के संस्कारों का प्रोडाश बन जाए और प्रोडाश बन कर के अपने अन्तःकरण में विज्ञप्तियों को उत्पन्न करते हुए हमारे हृदयों में याग होने लगे जिससे, हृदय का समन्वय परमात्मा के हृदय से लेकर के दोनों हृदयों का एक समन्वय हो जाए। जिससे उग्र रूप बनाकर के अपने में रत्त हो जाएं। जैसे मातृ और पितर होते हैं और वे मानो सन्तान के उपार्जन में दोनों का हृदय एक युक्तियों में रत्त हो जाता है तो उसमें उग्रवाद एक सात्विकता को लेकर के उत्पत्ति के मूल में क्रिया कलाप करने लगता है।

तपस्या

आओ, बेटा! देखो, मैं इस विषय में विशेष चर्चा न प्रकट करता हुआ, ऋषि कहता है कि चित्त के मण्डल को जानना है। और चित्त में देखो, यह हमारा मानवीय चित्त और बाह्य जो परमात्मा का चित्त मण्डल है इन दोनों का समन्वय हो जाए। मेरे प्यारे! देखो, मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन किया कि यह ब्रह्माण्ड परमात्मा का चित्त है, क्योंकि इस चित्त में नाना प्रकार के लोक लोकान्तर गमन कर रहे हैं। नाना प्रकार की निरवृत्तियों में रत्त रहने वाला उसी में रत्त रह कर अपने में धारयामि बने हुए हैं।

तो विचार आता रहता है बेटा! कि चित्त मण्डल में करोड़ों जन्मों के संस्कार विद्यमान होते हैं। उन संस्कारों को जानने के लिए बेटा! तपस्या की आवश्यकता होती है। और तपस्या किसे कहते हैं? मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन किया। तपस्या कहते हैं आहार को पवित्र बनाना है और प्राण की प्रतिभा में इसकी पुट लगानी तो देखो, वह तपस्वी कहलाता है। तपस्या का अभिप्राय केवल अपनी मोह ममता से नहीं है मानो तपस्या का अभिप्राय है कि अपने मन को पवित्र बनाना है। क्योंकि मन का विकार ही बुद्धि मानी गई है और जब यह बुद्धि, मेघा ऋतम्भरावी बनकर के चित्त के मण्डल के समीप चली जाती है और चित्त के मण्डल से बेटा! मेधावी, मानो देखो, जैसे बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञावी, जब देखो, चित्त के मण्डल में प्रवेश करती है तो जन्म जन्मान्तरों के संस्कारों को, तरंगों को जागरुक करने लगती है और वही, पिण्डाकार बन कर के अहंकार कहलाता है। बेटा! मैं इस सन्दर्भ में नहीं जाना चाहता हूँ। विचार केवल यह कि यह जो मनस्तव है यह मानो देखो, प्रारम्भ की पूँजी कहलाती है। जिसके ऊपर ऋषि मुनि परम्परागतों से अन्वेषण करते रहे हैं और विचार-विनिमय हुए हैं मानो अपने में अपनेपन को धारयामि बनाते रहे हैं।

आओ मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रकट करने नहीं आया हूँ। विचार केवल यह कि हमें चित्त के

मण्डल को जानना है। चित्त कहते हैं प्रकृति को, पृथ्वी को भी चित्त कहा जाता है जिसमें नाना वनस्पतियों के अंकुर इसके गर्भ में विद्यमान होते हैं, जब समय आता है तो देखो, वर्षाकाल में वे मानो अंकुर उपजने लगते हैं और शरद ऋतु आती है तो उसमें अंकुर उत्पन्न होने लगते हैं। इसी प्रकार जब ग्रीष्म काल आता है तो उसमें वे उपजने लगते हैं। इसी प्रकार जो चित्त का मण्डल है मानो इसमें भी संस्कार उपजते रहते हैं, जन्मों की तथा शरीरों की धारणा बनी रहती है। वह इसी प्रकार जैसे एक परमाणु में ब्रह्माण्ड विद्यमान रहता है। मुनिवरों! देखो, ऐसे ही चित्त के मण्डल में जन्म जन्मान्तरों के संस्कार समन्वय रूप में विद्यमान होते हैं। एक एक परमाणु से, और अणु और परमाणु की प्रतिभा जब उसमें दर्शित होती है तो सर्वत्र ब्रह्माण्ड उसमें दृष्टिपात आने लगता है।

आनन्द की प्राप्ति

आओ बेटा! देखो, आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रकट करने नहीं आया हूँ। केवल विचार-विनिमय यह देने के लिए आया हूँ कि मैं भयंकर वनों में चला गया हूँ। मैं विचारों के अन्वेषण में जाना नहीं चाहता हूँ। केवल विचार-विनिमय यह कि हम अपने को ही प्रभु को समर्पित करते हुए एक दूसरे के तपस्या के रहस्यों को जान जाएं। तपस्वी उसे कहते हैं जो मन का पवित्र बनाता है और मन पवित्र तब होता है जब कि उसका आहार पवित्र होता है। आहार के पवित्र होने से देखो, मन पवित्र होता है और मन के पवित्र होने से बुद्धियों की उपज हो जाती है और बुद्धि अपने कार्यों में अपने क्रियाकलापों में रत्त हो जाती है। बुद्धि पवित्र होती है तो बेटा! चित्त के मण्डलों में जब हम अनुष्ठान करते हैं तो देखो, उस चित्त के मण्डल में से जन्म जन्मान्तरों के संस्कार उभर करके आते हैं और वह संस्कार जो उपज जाते हैं तो उनका हम दर्शन करते हैं। और जब तक संस्कार चित्त के मण्डल में विद्यमान हैं तब तक मोक्ष की पगडंडी को हम ग्रहण नहीं कर सकेंगे। संसम्ब्रहः अमृतं ब्रह्मः वर्णस्वतः मेरे प्यारे! चित्त के मण्डलों के संस्कार विहीन हो जाना ही आनन्द की प्राप्ति हो जाना है। और जब तक चित्त का मण्डल विद्यमान है, देखो, उसमें आत्मा का प्रकाश आता रहता है। आत्मानं भू वर्णम्, देखो, वह मण्डलम् कहलाया गया है। इसीलिए आत्मा का समन्वय जब तक मन से रहता है और क्योंकि मन ही प्रतिबिम्ब है और मन से बुद्धि की प्रतिक्षमता का जन्म होता है और उसी से चित्त का विकार बनता है। और चित्त मण्डल जब तक आत्मा के समीप रहता है अथवा मन विकृतियों में विकृत रहता है तब तक देखो, आनन्दत्व को प्राप्त नहीं होता। मेरे प्यारे! देखो, अंग संग रहने वाला जो ब्रह्माण्ड है, अंग संग रहने वाली मानो जो धाराएँ हैं वे इतनी पवित्र होनी चाहिए जिससे मानव अपने में मानवीयता का दर्शन कर सके।

तो आओ बेटा! आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा न देता हुआ विचार केवल यह कि ऋषि मुनियों में यह विषय प्रायः विचार-विनिमय होता रहा है। गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से चर्चा करते हुए यह निश्चय कर लिया कि मैंने विद्या का अध्ययन तो कर लिया है परन्तु इस विद्या को क्रियात्मक में लाना चाहिए। मुझे स्मरण है बेटा! गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने इसी चिन्तन के लिए, आनन्द को प्राप्त करने के लिए १०५ वर्ष तक यह निश्चय कर लिया कि मैं गाड़ी के नीचे अपने जीवन को व्यतीत करूंगा। तो गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज के नामों से ऋषि को देखो, नामोद्गीत गाया जाता है। और वे चित्त मण्डल के ऊपर अन्वेषण करते रहे। तो बेटा! गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने लाखों वर्षों के संस्कार अपने में क्रियात्मकता में लाने का प्रयास किया और वे महान व्यक्तित्व को प्राप्त हो गए।

मेरे प्यारे! देखो! मैं इससे आगे की शेष चर्चा तुम्हें कल प्रकट करूंगा। आज का विचार-विनिमय क्या? मेरे पुत्रों! देखो, प्रत्येक मानव अपने चित्त के मण्डल में प्रवेश होना चाहता है, प्रत्येक मानव एक आनन्द की अनुभूति में रमण करना चाहता है और वह इस संसार के अवयवों में आनन्द चाहता है। देखो, कोई द्रव्यपति बन कर के

कहता है कि मैं आनन्द को प्राप्त करना चाहता हूँ, कोई राष्ट्रवादी बन कर के उद्गीत गा रहा है कि मैं राष्ट्रवेत्ता बन कर के आनन्द को प्राप्त करना चाहता हूँ। नाना प्रकार के अनुष्ठान करने वाला आनन्द को प्राप्त कर, आनन्द में रत्त होना चाहता है। कोई अपने आसनों से ऊर्ध्वा में गमन करना चाहता है। परन्तु विचारधारा बड़ी विचित्र है। यह होता तब ही है जब मानव अपने जीवन में मानवीयता को, अपने में क्रियात्मकता में लाने का प्रयास करता है और तपस्वी बनता है। तपों में निष्ठा होना ही मानवीयता कहलाती है। तो बेटा! यह है आज का वाक्, जो अब सम्पन्न होने जा रहा है। कल समय मिलेगा तो मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रकट कर सकूंगा। आज का वाक् समाप्त। अब वेदों का पठन पाठन होगा। दिनांक-१५-०५-१९९१

१० इन्द्रियों का अनुशासन १६-०५-१९९१

देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है।, जो मानो अनन्तमयी विद्यमान है और उसका ज्ञान और विज्ञान, अपने में पूर्णता की घोषणा कर रहा है-और वह अपने में ही मानो पूर्ण कहा जाता है। तो हम पूर्णमयी परमपिता परमात्मा की महती को सदैव जानने का प्रयास करें। क्योंकि प्रत्येक मानव परम्परागतों से ही, उस महान देव की महिमा का गुणगान गाता रहा है क्योंकि उसका अनन्तमयी जो ज्ञान है और अनन्तमयी जो विज्ञान है मानो ज्ञान और विज्ञान, दोनों का, समन्वय करने का प्रयास किया गया है। यह कर्म, यह क्रिया कलाप, प्रायः सृष्टि के प्रारम्भ से ही होता रहा है और इसके ऊपर अन्वेषण अनुसंधान, प्रायः होता रहा है। प्रत्येक मानव अपनी अन्तर्स्थलियों में विद्यमान होकर के एक एक वाक्य के ऊपर चिन्तन करता रहा है और वेद मन्त्रों का बखान करता हुआ अथवा उसमें गुरूतव, तरलत्त्व और तेजोमयी को जानने के लिए सदैव तत्पर रहा है। क्योंकि मानव अपने में मानो अपनेपन को ही, जानना चाहता है। परन्तु वह अपने को ही अपने में ब्रह्माण्ड का दर्शन करना चाहता है।

आनन्द की पिपासा

तो विचार यह कह रहा है कि अमृतं ब्रह्मः वृत्तम्, प्रत्येक मानव परम्परागतों से ही, अपने में यह चाहता रहा है कि मेरा जीवन आनन्द का मौलिक बन जाए और मैं सदैव आनन्द को अपने में ही दृष्टिपात करता रहूँ। परन्तु देखो, वह नाना प्रकार के अनुष्ठानों से नाना प्रकार के क्रियाकलापों में परम्परागतों से ही, आनन्द की पिपासा में लगा रहता है। परन्तु वह जो पिपासा है, वह शान्त नहीं हो पाती। उसका मूल यह है कि उसका निदान पवित्रतव को प्राप्त नहीं हुआ है अथवा उसका निदान नहीं हो पाया। जैसे कोई मानों अपने में रुग्ण हो गया है और यदि रुग्ण का निदान पवित्रता में और जानकारी में आ गया है तो बेटा! रुग्ण शान्त हो सकता है। परन्तु जब निदान नहीं हो पाता है तो उसकी प्रवृत्ति बिखर जाती है और बिखरने से ही वह अपने में खिन्न हो जाता है। तो विचार यह है बेटा! कहते हैं कि कोई भी क्रिया कलाप हो संसार का, परन्तु उस क्रिया कलाप के साथ में देखो, उसका निदान अच्छा होना चाहिए, चाहे वह कोई भी रुग्ण हो, विचार हो, चिन्तन हो। जैसे वेदमन्त्र का उद्गीत गाने वाला अपने में वेद मन्त्रों के अर्थ का जब निदान कर लेता है तो वेद मन्त्र, हमें ज्ञान और विज्ञान की उड़ान कर देता है। इसी प्रकार मानव के ऊपर प्रायः मनन और चिन्तन होता रहा है।

तो विचार आता रहता है कि उस परमपिता परमात्मा का जो वैदिक साहित्य है, अथवा वैदिक जो विचारधारा है मानो उसको उसकी गम्भीर मुद्रा में ले जाता है, प्राणी उसको अपने में धारण करना चाहता है। परन्तु विचार आता है कि उसको अपने में सरल बनाकर के उद्गीत गाना चाहता है जिससे अपने वैदिक साहित्य को सफलता के मार्ग पर ले जाए और वह अपने में ही मानो वेद को अपने चिन्तन में लाता रहता है क्योंकि वेद नाम प्रकाश का है अथवा ज्ञान का और उसी वेद के विचारों के तीन भागों में-चतुर्थ भाग में विभक्त किया और वही जो चतुर्थ भाग है वह मानो अपने में बड़ा पूर्ण है। तो हमें विचारना चाहिए कि वैदिक ज्ञान और वैदिक मन्त्रार्थ का हम सदैव विचार-विनिमय करते रहें जिससे हमारी मानवीयता अपनी आभा में रक्त होती रहे।

तो आओ, बेटा! मैं तुम्हें विशेष चर्चा नहीं कर पाऊँगा, केवल विचार-विनिमय यह है कि केवल वैदिक साहित्य को विचार में लाना चाहते हैं। परन्तु वेद में नाना प्रकार के सूक्त इस प्रकार के आए हैं जिनमें यौगिक क्रियाओं का बड़ा विशेष विश्लेषण होता रहा है और कुछ मन्त्र इस प्रकार के है जो देखो, रुढ़ि से मानव को दूरी

करते रहते हैं। तो मेरे पुत्रो! देखो, विचार आता रहता है कि हम अपनेपन में मानो अपने में ही समाहित हो जाए जिससे अपने में ही जब समाहित हो जाते हैं तो हमारे मानवीयतव की आभा में रत्त होने लगता है।

तो बेटा! आज मैं तुम्हें विशेषता में न ले जाता हुआ, मानो मानव नाना प्रकार के अनुष्ठान करता रहता है अपने मानवीयतव को सुखद में ले जाने के लिए और नाना प्रकार के ज्ञान और विज्ञान की उड़ाने उड़ने लगता है। मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब ऋषि ने भयंकर वनों में चिन्तन करते हुए देखो, उन्होंने एक अनुष्ठान किया और वह अनुष्ठान कैसा मानो जो वेदां भूः भुवरणं ब्रह्मा उनके समीप तीन प्रकार की व्याहृतियाँ थीं-भूः, भुवः, स्वः। ये व्याहृतियाँ कहलाती हैं और इन व्याहृतियों में यह सर्वत्र जगत अपने में व्याप्त होता रहा है और जब उद्गाता अपने में उद्गीत गाता है और वह उद्गीत गाता हुआ अपने में समाहित हो जाता है तब उसका वही उद्गीत उदान में परिणत हो जाता है और उदान में उसका परिवर्तन होता हुआ अपने में चिन्तन और महानता की आभा में रत्त हो जाता है।

शतपथ ब्राह्मण

तो आओ, बेटा! मैं तुम्हें विशेष चर्चा नहीं प्रगट करुंगा। केवल विचार-विनिमय यह कि महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने एक शतपथ ब्राह्मण नाम की पोथी का निर्माण किया था और वह शतपथ ब्राह्मण नाम की जो पोथी है वह बड़ी विचित्र है। परन्तु उस ऋषि का मन कितना पवित्र हो गया था जब उसकी लेखनियाँ बद्ध हुई। बेटा! ऋषि ने बारह वर्ष तक संलक्षण अन्न को ग्रहण किया और वे मानो गायत्री छन्दों का मनन करते रहते थे। और जब मन एकाग्र हो गया तो उन्होंने बेटा! एक पोथी का निर्माण किया और उस पोथी को शतपथ ब्राह्मण की पोथी कहा जाता है। जहाँ ब्राह्मण सत का पथ ग्रहण करने वाला हो मानो वही तो पथी कहलाता है। तो इसीलिए शतपथ ब्राह्मण देखो, इसीलिए इसको ब्रह्मवेत्ता अध्ययन करते रहते हैं। तो देखो, इसका अभिप्राय यह है कि जो मानव अपने मन, कर्म, वचन को मानो जब एकाग्र सूत्र में सूत्रित हो जाते हैं तो वह अपनी लेखनी को भी पवित्रता में लेखनीबद्ध करता रहा है। बेटा! ऋषि ने १२ वर्ष तक उस अन्न का ग्रहण किया जिस अन्न पर किसी का अधिकार नहीं था। वह संलक्षण अन्न कहा जाता है। तो इसीलिए मैं यह कहता रहता हूँ कि यज्ञमान जब अपनी यज्ञशाला में विद्यमान है तो महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपनी लेखनीबद्ध करते हुए कहते हैं कि यज्ञमानों को देखो, अपने मन से एकाग्र होना चाहिए और यदि मन योग में नहीं है तो याग अपने में सफलता को प्राप्त नहीं होगा। इसीलिए हमारे वैदिक साहित्य में यह कहा गया है कि मन की एकाग्रता बुहत अनिवार्य है और यदि मन में एकाग्रता नहीं है तो कर्म और वचन भी एकाग्रता में नहीं है। तो याग उतना सफलता को प्राप्त नहीं होता जितना वह मानव चाहता है अथवा जो उद्गाता-अध्वर्यु चाहते हैं। तो इसीलिए उनका मन-वचन-कर्म और इन्द्रियों का जो अप्रतम् मानो देखो, प्रत्येक इन्द्रिय का आह्वान करता है यज्ञमान और पुरोहित कराता रहता है। तो इसीलिए प्रत्येक इन्द्रिय में यह पाया गया तो वह मुनिवरों! देखो, वह अपने में रत्त हुआ।

अनुशासन

तो वैदिक साहित्य में हमारा एक एक मन्त्र क्या उद्गीत गा रहा है? और क्या उस निर्णायक को अपने में धारण करने वाला है तो बेटा! देखो, वह योग सिद्ध और यौगिक आत्मा होती है, जो योग के ऊपर बेटा! अपना अनुसंधान करते रहे हैं। मैंने बेटा! तुम्हें कई कालों का वर्णन कराया, आज भी मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जिस काल में बेटा! देखो, हम योग के ऊपर अपनी विचार धारा, महर्षि पतंजलि और भी नाना ऋषियों का जो मन्तव्य है, और वेद का जो मन्तव्य है, बेटा! उसका हम उद्गीत गाने के लिए आए हैं। मानो वेद, अमृतं ब्रह्मः वर्णास्तप्रवाः उग्रेः मेरे प्यारे! देखो, योग कहते हैं, जो अनुशासन में रहता है। अनुशासन किसे कहते हैं? जो मन

कर्म वचन एकाग्र होते हैं और इनके एकाग्र होने से जब मंगलं ब्रह्मः मानो उसको अनुशासन कहते हैं। हमारे यहाँ अनुशासन की बड़ी विचित्र व्याख्याएँ मानी गई हैं। अनुशासन बेटा! हमारे यहाँ बड़ा विचित्रतव् में रत्त होता रहा है और बिना अनुशासन मानव योगी नहीं बन सकता और बिना अनुशासन के मानव में विवेक उत्पन्न हो नहीं सकता। मैं बेटा! यह उद्गीत गा रहा था कि अनुशासन और बुद्धि का अनुशासन भिन्न है और मन का अनुशासन भिन्न है। और जो मन और बुद्धि के ऊपर अनुशासन करना चाहता है वह योग की प्रथम पगडण्डी को ग्रहण कर लेता है। तो अनुशासन ही मानव का जीवन है और अनुशासन में आहार भी आता है और व्यवहार भी आता है। अनुशासन में जगती भर की चर्चाएँ आती रहती हैं परन्तु विचार-विनिमय यह कि हमारा विचार विनियम ऊँचा हो। ऋषि अनुशासनम् द्वितीय कहता है चित्तो{हं ब्रह्मः वृत्तं ब्रह्मः गृत्तिः द्वितीय वाक्य में कहता है कि चित्त की जो वृत्तियाँ हैं इनको प्रायः अनुशासन में लाना चाहिए। बेटा! चित्त से जो तरंगों का प्रादुर्भाव होता वे तरंगे, जो चित्त की तरंगे हैं, उन तरंगों में क्या क्या विद्यमान है इसके ऊपर विचार-विनिमय करना चाहिए।

हमारे यहाँ दो प्रकार का चित्त माना गया है, एक चित्त हमारे अन्तःकरण में कहलाता है, जो आन्तरिक जगत में निहित रहता है और दूसरा चित्त बाह्य जगत में निहित रहता है। बाह्य जगत में मानव जब अनुसंधान करता है और चित्त की प्रवृत्तियों को अपने चिन्तन में लाना प्रारम्भ करता है तो अनुशासन करता हुआ वह जो प्राण सखा है उस को प्राप्त हो जाता है और जब प्राण सखा को प्राप्त हो जाता है तो मन, कर्म वचन यह सब मानों वृत्तियों में रत्त रहने लगते हैं। तो विचार आता रहता है कि चित्त की वृत्तियों का निरोध करना ही मानव का जीवन है। जब चित्त में से तरंगे उत्पन्न होती हैं, प्रवृत्ति उत्पन्न होती है तो उन प्रवत्तियों के ऊपर मानव को अन्वेषण करना है, उन्हें अनुशासन में लाना है। चित्त की वृत्तियों को ही तो निदान में लाना है और उस पर अनुशासन करना है।

अनुशासन की प्रतिभा

बेटा! एक राष्ट्रीय अनुशासन होता है। परमात्मा का जो नियमबद्ध जगत है बेटा! वह एक दूसरे में ओत प्रोत हो रहा है। तो उस जगत के, उस चित्त को हमें जानना है। चित्त मण्डल में वह सर्व जगत विद्यमान है। मुझे स्मरण है कि एक समय गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज से एक ऋषि ने कहा प्रभु! यह अनुशासन क्या है? उन्होंने कहा कि यह सर्वत्र जगत ही अनुशासन है। इसमें परमात्मा का अनुशासन भिन्न है और मानव का अनुशासन भिन्न है। मानव अनुशासन में इन्द्रियों को जानता हुआ चित्त की प्रवृत्तियों पर अनुशासन करता है और जब चित्त की प्रवृत्तियों पर अनुशासन करता है तो वही प्रवृत्ति एक समय महान बन कर के रहती है। बेटा! यह तो तुम्हें प्रतीत होगा मैंने तुम्हें पुरातन काल में इसके ऊपर बहुत अध्ययन कराया था और यह अध्ययन आज भी स्मरण आ रहा है मुझे। यह अनुवृत्तियों में रत्त होने वाली जगत धारा है। तो विचार आता रहता है कि यह जो चित्त मण्डल है चित्त-मण्डलं ब्रह्मः इस चित्त मण्डल में ही तो धाराएँ विद्यमान हैं और उन धाराओं पर लोक लोकान्तर विद्यमान है और एक एक धारा पर मानो यह जगत भी विद्यमान हो जाता है। तो वेद का ऋषि कहता है कि चित्त में जो प्रवृत्ति है उसको एक अनुशासन में निहित करके अपने समीन लाना है जिससे चित्त की वृत्तियों का निदान होता हुआ मानो वही अनुशासन योगी को ऊँचा बनाता है यह यौगिकवाद को लाने में सफलता को प्राप्त होता है। तो विचार यह आता रहता है कि यह जो चित्त की प्रवृत्तियाँ है उनका निरोध करना है, उन्हें एकाग्र करना है। और जब यह प्रवृत्ति एकाग्र हो जाती है तो उस प्रवृत्ति के गर्भ में क्या क्या विद्यमान है इसके ऊपर बेटा! ऋषि मुनि परम्परागतों से अन्वेषण करते रहते हैं और अनुशासन करते हुए अनुशासन की प्रतिभा में रत्त हो जाते हैं।

तो बेटा! मैं विशेषता में तुम्हें नहीं ले जाऊँगा। विचार केवल यह कि हमें अपने चित्त के मण्डल को विचारना है। जैसे देखो, मन का विकार बुद्धियाँ है और बुद्धियाँ का विकार ही मानो चित्त मण्डल कहा जाता है।

चित्त की वृत्तियों का निरोध

मैंने तुम्हें कई काल में यह वर्णन कराया है कि जब यह आत्मा शरीर को त्यागता है तो यह चित्त के मण्डल को चला जाता है और चित्त के मण्डल को लेकर के यह जब यह गमन करता है अथवा चित्त के मण्डल में प्रविष्ट होकर के जब यह गमन करता है तो यह चार प्रकार की वायु में रत्त हो जाता है। क्योंकि यह जो अन्तरिक्ष है इसमें नाना प्रकार का क्रियाकलाप होता रहता है। चित्त मण्डं ब्रह्मः कृतं देवः वर्णास्तवतं ब्रह्मः जब यह चित्त के मण्डल में प्रवेश होता है तो बाह्य चित्त में तो देखो, यह एक दूसरे को पिरोया हुआ दृष्टिपात करता है। बेटा! जहाँ यह चित्त की प्रवृत्ति चली जाती है उसी क्षेत्र में अनुशासन करता हुआ मानो लोक लोकान्तरों तक की पुकार उसकी हो जाती है। नाना जो ज्ञानं ब्रह्मः तेरे द्वारा मानो जो आवृत्तियाँ विद्यमान है उसका वस्त्र विद्यमान है उसका भी परिवर्तन हो जाता है।

योग साधना

मेरे प्यारे! मैं आज तुम्हें विशेषता में नहीं ले जाऊँगा। केवल तुम्हें यह उद्गीत गाने के लिए आया हूँ कि यह जो योग साधना है यह क्या है? साधक अपने में साधना करना चाहता है और यह साधना क्या है जिससे मानव का जीवन सुखद और आनन्द को प्राप्त हो जाता है? मेरे पुत्रो! मुझे स्मरण आ रहा है कि चित्त के मण्डल में से जब यह बाह्य जगत में चला जाता है तो लोक लोकान्तरों की माला बनाता है, नाना पृथ्वियों की माला बनाता है, नाना मंगल मण्डलों की माला बनाता है, बृहस्पति मण्डलों की माला बन जाती है। इसी माला के स्वरूप में देखो, उनमें नाना लोक लोकान्तर अपनी आभा में रत्त होते रहते हैं। तो यह जो बाह्य चित्त का मण्डल है मानव के समीप उस चित्त का और मानव चित्त मण्डलों का, दोनों का समावेश हो जाता है। जब दोनों का समावेश हो जाता है तो देखो, लोक लोकान्तरों की माला अपने में दृष्टिपात आने लगती है। उन मालाओं को दृष्टिपात करता है और वह माला देखो, एक दूसरे में पिरोई हुई होती है। जैसे भिन्न भिन्न प्रकार के मनकों को पिरोया जाता है और पिरोने से वह माला बन जाती है। इसी प्रकार नाना मालाओं को किसी सूत्र में पिरोया जाता है तो बेटा! वह महामाला दृष्टिपात आती है। तो विचार आता है कि वह जो साधक है, जो परमात्मा की साधना में लगा हुआ है उसके समीप नाना प्रकार की धाराओं का जन्म होता है और उन धाराओं में जब ब्रह्मः उनको वह जान लेता है तो बेटा! वह योग सिद्ध आत्मा हो जाती है।

तो विचार आता है मेरे पुत्रो! मैं इस सन्दर्भ में तुम्हें विशेषता नहीं ले जाना चाहता हूँ परन्तु लोक लोकान्तरों को दृष्टिपात करने वाला एक योगी है और साधक जब देखो, लोक लोकान्तरों को अपने में अन्तःकरणीय एक विषय बना लेता है जो सहज ही उसे प्राप्त हो जाता है। कैसा अनूठा यह जगत है? बेटा! परमपिता परमत्मा ने जब मानव शरीर का सृजन किया अथवा रचना की तो उसमें आन्तरिक जगत का उन्होंने निर्माण किया और उसमें मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार ये मानों उसके कारण से यह बन पाता है। इसी के साथ इसकी धाराएँ हमारे समीप आनी शुरु हो जाती हैं। तो देखो, चित्त मण्डल में जितना यह ब्रह्माण्ड है जो लोक लोकान्तरों वाला हमें दृष्टिपात आता है यह दृष्टिपात आने लगता है।

आओ बेटा! आज मैं तुम्हें महर्षि शिकामकेतु के यहाँ ले जाना चाहता हूँ। महर्षि शिकामकेतु उद्दालक एक समय मानो लोक लोकान्तरों की माला बना रहे थे। मानो वह उसे किसी सूत्र में पिरोना चाहते थे। वे बड़े अनुशासनीय थे। वे सौ वर्षों तक अनुशासन में रहे। अनुशासन उसे कहते हैं जहाँ प्रत्येक इन्द्रियों का जो विषय है उस विषय से इन्द्रियाँ बाह्य जगत में न जा पाएं, वह अनुशासन है। जैसे मानव के जो नेत्र हैं वह जब व्यापकता से दृष्टिपात करते हैं। मानो धर्म के ऊपर जब यह अपने नेत्रों को ले जाते हैं। तो बेटा! यह धर्म क्या है? इसके ऊपर ऋषि अपनी टिप्पणियाँ करता है और जब धर्म को विचारता है कि वह धर्म कहते हैं सुदृष्टिपात को तो नेत्र

जब माता को माता की दृष्टि से पान करेगा उसमें मानो वही मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार को दृष्टिपात करेगा और देखो, उसे अपने सूत्र में पिरोना प्रारम्भ करता है तो यह उसके चित्त की प्रवृत्तियों का एक अनुशासन बनता है और देखो, अनुवृत्तियों में रत्त होकर के उनमें रत्त हो जाता है।

बेटा! मुझे स्मरण आता रहता है कि ऋषियों का जीवन। जिन ऋषियों ने बड़ा अनुशासन और अपने में अन्वेषण किया है। शिकामकेतु उद्दालक अन्तःस्थली में विद्यमान है और वे अपने चित्त मण्डल को जानना चाहते हैं और अपने अन्तःकरण में जन्म जन्मान्तरों के जो संस्कार हैं उन्हें उद्बुद्ध करना चाहते हैं। बेटा! वे संस्कार उद्बुद्ध होने लगते हैं जबकि प्रत्येक इन्द्रियाँ अनुशासित हो जाती हैं और वे अपनी चित्त वृत्तियों का अपने में निरोध करने लगता है।

बेटा! अनुशासन किसे कहते हैं? नेत्रों का अनुशासन यह कि सुदृष्टिपात करें और यदि कोई देवी का दर्शन हो रहा है तो उसमें मातृत्व रहना चाहिए। जब मातृत्व रहता है और आगे जाता है तो वह मातृभाव भी समाप्त हो जाता है और वह परमात्मा की रचना को दृष्टिपात करता है। जब परमात्मा की रचना आ जाती है तो उसके नेत्र, मन और बुद्धि मानो अनुशासित हो जाते हैं। और जब अनुशासित हो जाते हैं तो चित्त की प्रवृत्तियों का जब वह निरोध करना प्रारम्भ करता है। तो जो भी तरंगे उत्पन्न होती हैं वे तरंगे भी ज्ञान के वांगमय में होकर के अध्यात्मवाद में प्रवेश कर जाती हैं और जब तरंगे आध्यात्मिकवाद में प्रवेश कर जाती हैं तो अध्यात्मवादी परमात्मा के राज्य में अपने को स्वीकार करता है। देखो, प्रत्येक इन्द्रियों का जो अनुशासन है मानो उनके साथ में मन, कर्म, विचार लगा रहना चाहते हैं और वह एक सूत्र बन जाता है और उस सूत्र को लेकर के वह गमन करता रहता है परन्तु जब वह तरंगों को दृष्टिपात करता है तो उसमें ब्रह्माण्ड है, उसमें नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों की माला है। मुनिवरों! देखो, शिकामकेतु उद्दालक ने एक समय महर्षि भृंगी से यह कहा था कि मैं अब तक एक सौ मालाओं में पहुँच गया हूँ मानो उन्हें जान गया हूँ। बेटा! मालाएं किसे कहते हैं? मालाएँ कहते हैं एक समूह को, समूह का नाम माला है। जैसे एक सूत्र का मनका है। मनका जब एक सूत्र में पिरोया जाता है तो वह माला बन जाती है और वह माला मनकों का समूह कहलाती है। इसी प्रकार वह जो एक माला है लोक लोकान्तरों का एक प्राण रूपी सूत्र में पिरोई दृष्टिपात आती है। वाह रे, देव तू कितना विचित्र है। मेरे पुत्रो! देखो, वह माला ही बनकर के अन्तःकरण से उसका अपने में अवधान करता है तो माला में एक सूत्र है वह उसे जान लेता है और सूत्र को अपने में अनुभव करता है। तो उस ब्रह्मसूत्र में जो मालाओं का जो अवधान हो रहा है उसे वह अपने में धारण कर रहा है। मनस्त्वं वृषो ब्रहाः तो चित्त के मण्डल को विचारने से यह प्रतीत होता है कि यह जो बाह्य चित्तमण्डल है जिसमें लोक लोकान्तरों की मालाएं बनी हुई हैं इन मालाओं को धारण करने वाला शिकामकेतु उद्दालक कहता है कि मालाओं को मैंने कुछ जाना है। वह कितनी मालाएं जानते थे, इसमें बड़ी विवेचना आती रहती है। तो उन्होंने यह कहा कि मैं उन मालाओं को जानता हूँ जिनका मैंने अनुसंधान किया है। चित्त के मण्डल की जो एक एक धारा है उसमें से नाना मालाएं बनी हुई हैं। जैसे बाह्य जगत में यह जो पृथ्वी है ये माला बनकर के रहती है। जब वैदिक साहित्यवादी विज्ञान के क्षेत्र में पहुंचे तो वैज्ञानिक जनों ने इस पृथ्वी के ऊपर अन्वेषण किया तो तीस लाख पृथ्वियों तक ऋषि पहुँचे, जिन्होंने उन्हें जानने का प्रयास किया और वे पृथ्वियाँ एक सूत्र में पिराई गई हैं। वह सूत्र तेजोमयी कहलाता है मानो वह सूत्र तेजोमयी ब्रह्मः वह सूर्य का तेजोमयी ब्रह्म है जिसमें पिरोने से माला बन गई है। ३० लाख पृथ्वियों की एक माला बनी है। बेटा! अब तुम विचार करके देखो, कितना विशाल एक माला का क्षेत्र है। इसी प्रकार वे मालाएं कौन से तेजोमयी सूत्र में पिरोई गई हैं और तेजोमयी सूत्र में पिरोने से बेटा! ब्रह्म उसका सुमेरु कहलाता है, माला का जो सुमेरु है वह ब्रह्म है।

बेटा! ऋषि आगे विचार-विनिमय करता हुआ कहता है सम्भवः ब्रह्मणेः मानो एक माला नहीं, सूर्य मण्डलों की भी माला बनती है। तो इतना विशाल यह सूर्य है जिसमें ३० लाख पृथ्वियों की माला बनके समाई हुई है और सहस्र मनकों ,सूर्योंद्ध की आगे माना बनी है और उन्हें एक दूसरे में पिरोया गया है। बेटा! माला कैसे बनती है? देखो, जब चित्त की वृत्तियों को मानव अपने में धारण करता रहता है अनुशासन के द्वारा तो वह ब्रह्माण्ड का एक अनुशासन बनता है। और अनुशासन बनकर के जो सूर्य मण्डलों में जो तरंगे हैं, वे जो तेजोमयी तरंगे हैं, वे तरंगे कहाँ समाहित होती हैं? मानो उन समूहों को जानकर के एक बृहस्पति मण्डल कहलाता है। उसमें एक सहस्र सूर्यां की माला बनी हुई है और वह सूर्यों की माला और वह जो पृथ्वियों की माला है, उन मालाओं के ऊपर एक सुमेरु कहलाता है और वह सूमेरु ब्रह्मसूत्र कहलाता है। बेटा! इसीलिए तो ऋषि मुनियों ने बाह्य जगत को अध्यात्मवाद में उसका समन्वय किया है।

तो बेटा! साधक जब अपनी साधना में प्रविष्ट होता है और मानो वह साधना करने लगता है और वह चित्त मण्डल को दृष्टिपात करता है तो यह जो बाह्य जगत है, बाह्य चित्त है वह प्रभु का चित्त है मानो यह आन्तरिक जगत एक आत्मा का चित्त माना गया है। यह आत्मा के क्षेत्र में मानो आत्मतव में रत्त होता रहा है। विचार आता रहता है मेरे पुत्रो! उस दूसरे क्षेत्र में क्षेत्रित बना हुआ है। क्षेत्रज्ञ वह कहलाता है जिसके ऊपर ऋषि मुनियों ने टिप्पणियाँ की है।

तो विचार-विनिमय बेटा! कहते हैं कि यह चित्त का मण्डल, यह जो बाह्य चित्त मण्डल है इसमें मैं उद्गीत गा रहा था कि जब यह आत्मा इस शरीर को त्यागता है तो यह चित्त के मण्डल में अपने सूक्ष्म शरीर को लेकर के गमन करता है, चित्त के मण्डल को लेकर के यह गमन करता है सूक्ष्म शरीर। से तो यह सूक्ष्म शरीर वाला जो आत्मा है मानो वह ऐसे वायु मण्डल में चला जाता है जहाँ देखो, इन्द्र नाम की एक वायु है एक मृतिका नाम की वायु है एक ऋधिप नाम की वायु है और एक स्वेत्ता नाम की वायु है और इन वायु में सूक्ष्म शरीर का मन्थन होता है और मन्थन होकर के प्रभु के नियम के अनुसार जिस जन्म को त्याग कर के आया है, जिस स्थूल शरीर को उस स्थूल शरीर में जितनी स्मरण शक्ति है वही स्मरण शक्ति चित्त के आन्तरिक जगत में समाहित हो जाती है और बाह्य जगत में स्मरण से शून्य हो जाता है। वह स्मरण शक्ति उसकी ऐसे क्षेत्र में मानो चित्त मण्डल में चली जाती है और पुनः वह अनुशासन में रह कर के चित्त की वृत्तियों का निरोध करता हुआ साधना करता है। उसका अहंकार वायुमण्डल में समाहित हो जाता है। खेचरी मुद्रा से जल को अपने में प्राणापान के द्वारा अपने में सिंचन करता है।

तो बेटा! देखो, उन अनुष्ठानों से वे जन्म जन्मान्तरों के संस्कार उसके रूप में आ जाते हैं। प्रायः मैं इस जगत में जाना नहीं चाहता। यह बड़ा विशाल जगत है। ऋषि मुनियों ने इसके ऊपर बड़ा अन्वेषण किया है। शिकामकेतु उद्दालक का यह कथन है कि इस प्रकार जन्म जन्मान्तरों की प्रतिभा अपने में प्रतिभासित होती रही जिससे वह उसको जानता रहा है।

जन्म जन्मान्तरों के संस्कार

तो मेरे पुत्रों! विचार आता रहता है कि हम उस स्मरण शक्ति को मानो पुनः से जानना चाहते हैं, वह जन्म जन्मान्तरों के संस्कारों को जागरुक करना चाहते हैं। तो देखो, वायुमण्डल को विचारना होगा मानो उन तथ्यों को विचारना होगा, जिन तथ्यों में से सब तरंगे विद्यमान हो जाती हैं अथवा समाहित हो जाती हैं। जैसे अग्नि की धारों के ऊपर शब्द गमन करता है, तरंगे गमन करती रहती हैं देखो, उन्हीं तरंगों से तरंगित होता रहता है। तो विचार आता रहता है कि प्रत्येक वस्तु का जब मन्थन किया जाता है तो वह वस्तु निर्माणता में वह निर्माणित होने लगती

है।

आओ, मेरे पुत्रो! मैं इस सम्बन्ध में तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट नहीं करुंगा। विचार-विनिमय यह कि सबसे प्रथम सभी इन्द्रियों पर अनुशासन करना है और चित्त की वृत्तियों पर तुम्हें अनुशासन करना है। उसके पश्चात योग में परिणत हो जाना है। योग कहते हैं बेटा! धारणा, ध्यान, समाधि का नाम मानो योगस्थ कहा जाता है। प्रायः देखो, जैसे धारणा की जाती है कि ईश्वर है परन्तु देखो, धारणा, ध्यान और उसके ऊपर ध्यानावस्थित हो जाता है और ध्यान से अवस्थित होता हुआ देखो, धारण ध्यान उस मानव में देखो, चित्त का मण्डल और मन की प्रवृत्ति बुद्धि में और बुद्धि की तरंगे चित्त में समाहित होकर के चित्त मण्डल में जब वह प्रवेश हो जाती है तो वह नाना प्रकार के जगत को दृष्टिपात करता है, समाधिष्ट करता हुआ। बेटा! प्रभु के राष्ट्र में चला जाता है जहाँ लोक लोकान्तर अपनी परिक्रमा कर रहे हैं। एक मण्डल दूसरे मण्डल की परिक्रमा कर रहा है। जैसे इस जगत में माता का पुत्र बनकर के ही तो वह परिक्रमा का व्यवसाय उत्पन्न होता है जैसे माता का पुत्र माता की परिक्रमा कर रहा है, पत्नी अपने पति की परिक्रमा कर रही है और पति पत्नी की परिक्रमा कर रहा है। इसी प्रकार आचार्यों की परिक्रमा शिष्य कर रहा है और कहीं आचार्य शिष्य की परिक्रमा कर रहे हैं। परिक्रमा का अभिप्राय यह है कि एक दूसरे के पुरुषार्थ में मानो निहित हो रहे हैं, एक दूसरे में लिप्त दृष्टिपात आते हैं और वह परिक्रमा है। जैसे माता का ज्ञान जब ही होता है जब पुत्र होता है और यदि पुत्र नहीं होगा तो माता का निर्णय नहीं दे सकेगा। इसी प्रकार देखो, प्रजा राजा का निर्णय देती है और यदि प्रजा नहीं होगी तो राजा का निर्णय नहीं होगा। बेटा! देखो, मुझे विचारना है कि मैं प्रभु के राष्ट्र में रह कर के महानता को प्राप्त करुँ, अनुशासन को प्राप्त करुँ मन में तरंगे आना प्रारम्भ हो जाती हैं। तो वह अनुशासन कर सकता है। अनुशासन का अभिप्राय यह है कि मैं प्रभु के राष्ट्र में विद्यमान हूँ। परमात्मा का राष्ट्र कैसा विचित्र है।

तो मेरे प्यारे! देखो, मैं इस सन्दर्भ में विशेष चर्चा नहीं, विचार केवल यह कि इससे आगे की चर्चा तो मैं तुम्हें करता ही रहूँगा। तो विचार-विनिमय क्या, कि परमात्मा का एक ऐसा नियम है, ऐसी उसकी रचना है कि जिसके ऊपर मानव अनुसंधान करता हुआ इस जगत से ओझल हो जाता है। बेटा! मुझे वह काल स्मरण है जब मेरे पूज्यपाद गुरु जी इन वाक्यों के ऊपर अन्वेषण करते रहते थे। विचार में, अन्तःस्थल में, वह संसार में ओझल हो जाते थे। यह संसार मानो परमात्मा की धरोहर है, यह इदन्नमम् हमारा नहीं है मानो हमें इसे परमात्मा की धरोहर जानकर भोगतव्य में लाना है। तो देखो, जो इस प्रकार अपने जीवन को यहाँ संसार में, बाह्य जगत में जो चित्त मण्डल में अपने में ले जाता है मानो वह महानता की आभा को प्राप्त करने लगता है।

ओ३म् रूपी सूत्र

आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा तो प्रकट करने नहीं जा रहा हूँ। केवल विनिमय यह कि जो चित्त का मण्डल है इसमें सर्वत्र ब्रह्माण्ड एक दूसरे में क्रियाकलाप कर रहा है एक दूसरे में पिरोया हुआ है। देखो, वेदमन्त्र के उद्गीत गाने से पूर्व ओ३म् का उच्चारण करते हैं मानो उसमें यह जगत विद्यमान रहता है, मानो यह क्रम हैं जब उद्गीत गाने वाला अपने शब्दों से एक माला बनाता है तो वह जो माला है वह ओ३म् ब्रह्माः वर्णाम् मानो उसमें ओ३म् रूपी सूत्र है और उसमें शब्द पिरोए हुए हैं और शब्द पिरोए होने से उसे ऋचा कहा है, उसे मन्त्र कहते हैं और एक शब्द और मन्त्र में जितना ज्ञान और विज्ञान है वह ज्ञान और विज्ञान ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोया हुआ है। इसी प्रकार यह जो सर्वत्र जगत है यह परमपिता परमात्मा का जो नामोकरण है बेटा! उसमें पिरोया हुआ है।

मेरे प्यारे! यह लोक लोकान्तरों के सूत्रों की चर्चा तो मैं कल प्रकट करुंगा। आज का विचार-विनिमय क्या कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और वेद मन्त्रों में जो ज्ञान और विज्ञान है उसके ऊपर अन्वेषण

करते हुए मानो अपने में अनुशासन करते चले जाएं। अनुशासन की चर्चा तो बेटा! मैं कल प्रकट करुंगा। आज इतनी अनुशासन की चर्चा तो नहीं हो सकी क्योंकि चित्त मण्डल का जो एक विशाल जगत है वह बड़ा अद्वितीय माना गया है। जैसे बहुत-सी विचार धाराएं प्रकट होती रही हैं। जैसे याज्ञिक जब अपने याग की विवेचना देने लगता है तो वह भी विशाल वन है। इसी प्रकार मानव के शरीर में मानव का आध्यात्मिकवाद और भौतिक विज्ञान बड़े विशाल माने गए हैं। तो इसके ऊपर शेष चर्चाएं हम कल प्रकट करेंगे।

आज का वाक् अब सम्पन्न होने जा रहा है। आज के विचारों का अभिप्राय यह कि देखो, नाना प्रकार की वायु, नाना प्रकार का यह जो अनुपम जगत है। इसके ऊपर विचार-विनिमय करना है कि माला क्या है, माला को पिरोना चाहते हैं और पिरोकर के उसे जानना चाहते हैं। यह हे बेटा! आज का वाक्। क्योंकि परमपिता परमात्मा सर्वज्ञ है और वह महानता का प्रतीक माना गया है। तो आज का विचार अब सम्पन्न होने जा रहा है, समय मिलेगा तो शेष चर्चाएं मैं तुम्हें कल प्रकट करुंगा। दिनांक-१६-०५-१९९१

११ चित्त की प्रवृत्तियों के ऊपर अनुशासित बने १७ ०५ १९९१

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणागान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस परमपिता परमात्मा की महिमा का हम सदैव गुणागान गाते रहें और वह अनुपम हैं वे परमपिता परमात्मा हमारा सखा हैं, और इसी के स्वरूप की हम सदैव वर्णन करते रहते हैं, प्रत्येक मानव परम्परागतों से ही, उस मनोहर देव की महिमा का, सदैव गुणागान गाता रहा है। क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके, जो क्रियाकलाप चल रहा हैं, मानो वह बड़ा अनुपम है, हमारे यहाँ नाना प्रकार की धारणा में, मानव अपने को धारयामि बनाता रहा हैं, जिससे उस मानव को यह ज्ञान हो जाएं कि मैं परमपिता परमात्मा के अमूल्य राष्ट्र में विद्यमान हूँ, और जब अपने में धारणा बना लेता है तो मन के आन्तरिक जगत में यह प्रवेश कर लेता हैं, और उस आन्तरिक जगत में प्रवेश हो करके बेटा! यह अपने में मानो उन प्रवृत्तियों को जिन प्रवृत्तियों के लिए मानव परम्परागतों से विचार-विनिमय करता रहा हैं तो हम परमपिता परमात्मा की महती, अथवा उसके महान देवतव को, हम प्राप्त होते रहे। क्योंकि देवतव को जाना ही मानवीयतव, अपने में देवतव को धारण करता रहा हैं। तो वह जो धारयामि है। परमपिता परमात्मा, जो हमारे अन्तर्हृदयों में विद्यमान रहता है। परमात्मा को जो मानव कण-कण में स्वीकार करता है, तो एक-एक कण-कण में वे विद्यमान रहने वाला मानो तुम अमृत ब्रहे वह मेरे में विद्यमान रहता है और मैं उसी की तरंगों में गमन करता रहता हूँ। जब यह मानव बेटा! अपने में धारणा बनाता हैं, तो वह मुनिवरों! देखो, वह अपनी इन्द्रियों पर संयम करने का प्रयास करता हैं। बेटा! मुझे एक वाक् स्मरण आ रहा है, एक समय बहुत पुरातन काल की वार्त्ता हैं, बहुत ऋषि-मुनि बेटा! एकत्रित हुए और वह एकत्रित होने वाली जो वृत्तियाँ हैं वह महर्षि प्रवाहण मुनि महाराज के, सानिध्य में बेटा! वह सभा विद्यमान हैं, और उसमें नाना ऋषिवर विद्यमान थे, तो प्रवाहण जी ने बेटा! उस सभा में विचार गोष्ठी में अपना एक विचार-विनिमय प्रारम्भ किया। उन्होंने ऋषि-मुनियों से कहा क्या हे भगवन! ये अनुशासन क्या हैं? क्योंकि जब भी वेद का अध्ययन करते हैं, तो अनुशासन की वार्त्ता आती है। उन्होंने कहा कि अनुशासन तो कई प्रकार का होता हैं। एक बाह्य जगत का अनुशासन होता है, एक आन्तरिक जगत का होता हैं। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा-प्रभु! हम दोनों प्रकार के अनुशासन को जानना चाहते हैं उन्होंने कहा यह जो बाह्य जगत है इसका जो अनुशासन है, उसको तो प्रायः तुम जानते हो मानो देखो, यहाँ अपने में अनुशासन कैसा तो यह बाह्य जगत का अनुशासन यह बड़ा विचित्र हैं। परन्तु उसको अपने में क्रिया लाने का प्रयास करता हैं, और यह बाह्य अनुशासन में चित्त विद्यमान है। उसमें हमारा कैसा अनुशासन होना चाहिए, जैसे गृह स्थली पर अपने बाल्य बालिका के साथ विद्यमान है। तो वहाँ कैसा अनुशासन हो, मेरे प्यारे! कहीं सभा ब्रह्मवेत्ताओं का समाज एकत्रित हो रहा है। वहाँ हमें कैसा अनुशासन लाना हैं, गृह में अनुशासन को लाना है, तो प्रत्येक मानव बेटा! अनुशासन को नही जान पाता। परन्तु पुनः जब यह वाक् आया बाह्य अनुशासन है, परन्तु आन्तरिक जो जगत हैं, वह हमारा अनुशासन कैसा हो तो बेटा! उन्होंने सबसे प्रथम कहा कि हमें मौन रहना चाहिए। उन्होंने कहा प्रत्येक इन्द्रियों का जो अनुशासन है, वह कैसा हो मेरे प्यारे! देखो, घ्राण इन्द्रियों में अनुशासन होता हैं, कर्मेन्द्रियों में शासन होता रहता है, ज्ञान और कर्म दोनों का जब बेटा! हम ज्ञान के सागर में प्रवेश करते हैं। तो अनुशासन को हम जानना चाहने के लिए हम सदैव तत्पर रहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, नेत्रों का अनुशासन कैसा होना चाहिए? नेत्र संसार को दृष्टिपात कर रहा हैं, परन्तु देखो, वहाँ अनुशासन करना है कि मुझे योग सिद्ध बनना हैं, और अनुशासन के साथ में चलना है, तो मेरे प्यारे! देखो, नेत्रों का अनुशासन बड़ा विचित्र हैं। संसार को दृष्टिपात कर रहा है परन्तु वह एक अनुशासनं ब्रह्मा

वर्णासुतं और नेत्र उसके समीप मानो अपनी क्रियाओं में रत्त रहते हैं।

तो विचार आया वह इन्द्रियां का अनुशासन नेत्रों का अनुशासन माना गया हैं, रसना का अनुशासन है बेटा! प्रत्येक इन्द्रियों के ऊपर मानव जब अुनशासनित बन जाता हैं, और वह मुनिवरों! देखो, कुछ समय के पश्चात उसमें तेज की उत्पति होने लगती हैं। क्योंकि अनुशासन ही तेज को अपने में धारण करता हैं, तो इसीलिए मानव को अनुशासन करना चाहिए। जिस प्रकार बाल्य बालिका विद्यमान रहते हैं माता-पिता उनके मध्य में हैं, परन्तु दोनों अनुशासित हैं, और बाल्यों को भी वह अनुशासित करते रहते हैं। तो इसीलिए अनुशासन बड़ा विचित्र माना गया हैं। तो वेद का ऋषि कहता है कि अनुशासन करना मानव का कर्तव्य हैं। प्रत्येक इन्द्रिय के देवता प्रत्येक इन्द्रिय की तरंगें मानो अनुशासित करनी हैं, और अनुशासन करने वाला जैसे नेत्रों का अनुशासन है, घ्राण का अनुशासन हैं, और रसना का अनुशासन कहलाता है। नाना प्रकार बेटा! देखो, वृत्तियाँ आ रही हैं, और उनमें वह अनुशासन में लाना चाहता हैं। तो बेटा! वह अनुशासित है, एक बाह्य जगत का अनुशासन है, एक आन्तरिक जगत का अनुशासन है, तो आन्तरिक जगत का जो अनुशासन है, वह बड़ा विचित्र है। जब यह अनुशासन करने लगता है, प्रत्येक इन्द्रिय पर उसके पश्चात बेटा! देखो, चित्त की प्रवृत्तियों के ऊपर मानो वह निरोध करने मं लग जाता हैं। शान्त मुद्रा में विद्यमान है, तरंगें आ रही है, प्राण को अपने में संचय कर रहा हैं। प्राण का आवागमन हो रहा है। परन्तु वह देखो, जो प्राणों का आवागमन है, वही चित्त की प्रवृत्तियों को तरंगों को अपने में धारण कर रहा हैं। मेरे प्यारे! देखो, इसके लिए आहार और व्यवहार की आवश्यकता हैं, मुझे बहुत-सा काल स्मरण आता रहता है, बेटा! जब तक मानव अपने आहार के ऊपर अनुशासन नही करेगा, जब तक मुनिवरों! वह मानो इन वाक्यों को नही जान सकता, और तरंगों को एकाग्र नही कर सकता वह जो चित्त की तरंगें उत्पन्न हो रही हैं। मेरे प्यारे! देखो, जब भी मानव ब्रहे वर्णनं चित्त की वृत्तियों को जिज्ञासु अपने में निरोध करता हैं, और उन्हें एकत्रित करता हुआ बेटा! अपने में महान बन जाता हैं, तो विचार आता है बेटा! अनुशासन जब हमारी इन्द्रियों पर नही हो पाता तो बेटा! देखो, हमारा अनुशासन चित्त की वृत्तियों को हम निरोध कैसे कर सकते हैं। परन्तु जब तुम अनुशासन में लग जाओगे तो ऋषि ने कहा है अपने शिष्य गणों से कि जब तुम अनुशासन में लग जाओगे तो देखो, अनुशासन तुम्हारे समीप नही हो पाएगा। क्योंकि अनुशासनं ब्रह्मा वर्णन ब्रहे क्योंकि प्रत्येक इन्द्रियों पर अनुशासन करना। मेरे पुत्रों! देखो, वायु का सेवन करो, अन्न का सेवन करो, परन्तु इसमें पवित्रता और महानता की तरंगें होनी चाहिए। तो मेरे प्यारे! चित्त की वृत्तियों को एक मानव निरोध करना चाहता हैं। एकान्त स्थली पर विद्यमान हैं, प्राण को अपने में संचय कर रहा हैं, और प्राण को जैसे ही संचय करता रहता हैं बेटा! अंकुर रूप में अनुशासन करता है, अथवा अनुशासन की उसकी विभक्त क्रिया बन जाती हैं। वह चित्त की वृत्तियों को बेटा! अपने में निरोध करने लगता हैं। जब चित्त में बेटा! देखो, ब्रह्माण्ड को दृष्टिपात करता हैं। मैंने तुम्हें इससे पूर्व काल में कहा था क्या पांचों इन्द्रियों के ऊपर अनुशासन करना और पांचों प्राणों को उसमें मानो सम्मिलत करना जब प्राण का निरोध करके बेटा! वह अभ्यं ब्रह्मा देखो, वह तरंगों का वर्णा ब्रहे वह चित्त के वृत्तियों को जब अपने में निरोध करने लगता है, तो बेटा! वह उस मार्ग का पथिक बनने के लिए तत्पर हो गया है। तो मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण आता रहता हैं, मैं जब मानो देखो, आहार ब्रहे चित्त की वृत्तियों पर जाता हूँ, तो मुझे बेटा! सत्यकाम मा जीवन स्मरण आता रहता हैं, सत्यकाम ब्रह्मचारी ने बेटा! जब आचार्य से आज्ञा पाई, क्या कि-प्रभु! मुझे आज्ञा दीजिए। इस क्रियाकलाप में देखो, अवृत होना चाहता हूँ, परन्तु जब आचार्य ने कहा जाओ, तुम गऊओं को ले जाओ, और यह गऊ जब तक मानो एक सहस्र नही होगी जब तक तुम्हें आश्रम में नही आना हैं। क्योंकि ऋषि ने उसे ब्राह्मण की उपाधि प्रदान कर दी थी।

तो मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण है, जब वह सत्यकाम को गो घृत के द्वारा याग करते थे, और गो दुग्ध का आहार करते थे, तो मेरे प्यारे! देखो, उसमें वह साधक बने, आहार व्यवहार मानो देखो, वनस्पतियों का पान करना, आहार को अपने को लाना, तो बेटा! उसी में महानता की आभा में उड़ाने उड़ाने लगे, तो बेटा! मुझे स्मरण आता रहता है वृख ने सबसे प्रथम बेटा! उसे ज्ञान कराया, और उसके पश्चात गुरु के आश्रम को गमन किया, तो द्वितीय स्थली में आ करके बेटा! उसे अदिति करके सूर्य ने उसे ज्ञान कराया, आज यह जब व्रतं ब्रह्मा ब्रहे तो बेटा! उन्हें षोडश कलाओं का ज्ञान मानो इसी प्रकार हुआ। मेरे प्यारे! कहीं अग्नि ने उसे ज्ञान कराया, और अग्नि हमारे शरीरों में विद्यमान रहती है। और वह अग्नि ज्ञानयुक्त जो अग्नि रहती है। मेरे प्यारे! देखो, वही अग्नि ब्रह्माग्नि हैं, वह चित्त के मण्डल में विद्यमान होती हैं। और उसी अग्नि में से मानो देखो, तरंगें आती रहती हैं। उन तरंगों को ग्रहण करते रहते, चित्त की वृत्तियों का निरोध करते रहते हैं। तो मेरे पुत्रों! विचार आता है कि निरोध करना है अपने आहार को पवित्र बनाना होगा और इन्द्रियो पर अनुशासन करना होगा, जब तक इन्द्रियों पर अनुशासन नही होगा, तो आहार पवित्र नही बनेगा और आहार के पवित्र बनने से मन की प्रवृत्ति ऊँची बनती है, बुद्धि प्रखर हो जाती है वही मुनिवरों! देखो, निरोध करने के लिए तत्पर हो जाता हैं। कहीं वह प्राण का आश्रय लेता हैं, प्राणायाम करता हैं, और प्राण को जब वह मुनिवरों! योगेश्वर इकला करता हैं जब प्राण को लिया, और प्राण को वह सबसे प्रथम प्राण को उदान में बेटा! उसको धारयामि बनाता हैं, और देखो, प्राण को जब अपान में ले जाता हैं, तो अपान में ले जाने से बेटा! देखो, तो प्राण और अपान का जब वह मिलान करना प्रारम्भ करता है, तो बेटा! देखो, वह मूल में प्रवणी हो जाता हैं। और वह मुनिवरों! देखो, पृथ्वी की पृथक और पृथ्वी के गर्भ में जो-जो खनिज जहाँ-जहाँ भी विद्यमान है, वह मानो बेटा! देखो, इस मानव के शरीर में गुरूतव परमाणुओं में विद्यमान रहता हैं। वह उन्हें जानने के लिए तत्पर होता हैं तो मुनिवरों! देखो, इससे उसका निरोध होता रहता हैं, अपने में धारण करते रहते हैं। तो बेटा! मैं विशेषता में तुम्हें वन में नही ले जा रहा हूँ, इस विशाल वन को मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों में विद्यमान हो करके पान किया हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है, जो पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे वर्णन कराया है, कि ये निरोध की ऊर्ध्वा क्रिया है, मेरे प्यारे! देखो, प्राण और अपान के मिलान होने से और उसमें जब मुनिवरों! देखो, चित्त की प्रवृत्तियों में रत्त होते हैं, तो ये पृथ्वी के गर्भ में पार्थिव जितने तत्त्व हैं, देखो, लोक हैं, यह उनमें रमण करने के लिए तत्पर हो जाता हैं। मेरे प्यारे! प्रभु के ब्रह्मण्ड का वह दर्शन करने लगता हैं, और जब प्राण और अपान के जब व्यान की पुट लगा दी जाती हैं तो जितने भी मानो देखो, प्राणी मात्र जो अपानं ब्रह्म वर्णासुताः जब यह उस आभा में परिणत होते हैं, तो बेटा! उसके मनोनीत की वार्त्ता मन के द्वारा मन से उनका समन्वय कर लेता हैं।

मेरे प्यारे! देखो, मुझे वह काल स्मरण है क्या देखो, सत्यकाम से वृख कहता है, कि चार कलाओं का ज्ञान हो गया, और चार कलाओं का ज्ञान तुम्हें अग्नि देवता प्रगट करेंगें, और चार कलाओं का ज्ञान तुम्हें मानो देखो, तुम्हें अदिति तुम्हें ज्ञान करायेंगें मेरे पुत्रों! देखो, उसको षोडश कलाओं का ज्ञान इसी प्रकार हुआ। क्योंकि आहार के पवित्र होने पर मानव की प्रवृत्तियों पर अनुशासन होता हैं, और प्रवृत्तियों पर अनुशासन होने पर वह बेटा! चित्त की वृत्तियों को निरोध करने लगता हैं। और वह जन्म जन्मान्तरों की धाराओं में मुनिवरों! वह तत्पर होने के लिए तत्पर रहता हैं।

तो मेरे प्यारे! देखो, विचार आता रहता हैं निरोध करना बहुत अनिवार्य है, परन्तु द्वितीयं ब्रह्मा देखो, यह तीन प्राणों की पुट लगाई और जब इसी में समान प्राण को मानो उसकी पुट लगा दी जाती है, तो अन्तरिक्ष में बेटा! यह जो लोक-लोकान्तर गमन कर रहे हैं, कौन-सा लोक कहाँ रहता है, कौन से लोक की प्रतिभा हैं, तो उसे

जानने लगता है, तो मुनिवरों! देखो, उसी में रत्त हो जाता हैं। परमात्मा की महिमा का दर्शन करता हैं, परमपिता परमात्मा को दार्शनिक अपना बना करके उर्ध्वा उड़ाने उड़ता है। मेरे प्यारे! जब इसको उदान में प्रवेश कर दिया जाता है, उदान की जब पुट लगा दी जाती है, तो मुनिवरों! देखो, जन्म जन्मान्तरों के चित्त मण्डल में संस्कार विद्यमान होते हैं। बेटा! उनका वह साक्षात्कार होने लगता है। तो इसीलिए बेटा! यह जो प्राण है यह मानवीय शरीर की वृत्ति कहलाती हैं और इस जगत की भी वृत्ति कहलाती है। जिसमें वह रत्त रह करके और ब्रह्माण्ड को जानने के लिए तत्पर होने लगता हैं। मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहां चित्त के निरोध की चर्चाएं जब चित्त में निरोध करना प्रारम्भ करता है वृत्तियों को, तो जन्म जन्मान्तरों की धाराओं का बेटा! जन्म होने लगता हैं, क्योंकि आहार पवित्र बन गया है, धाराएं पवित्र बन गई हैं, तो बेटा! देखो, एक धारा एक दूसरें में रत्त हो गई हैं। मेरे प्यारे! मुझे वह काल स्मरण हैं मैंने तुम्हें सत्यकाम की चर्चा कराई, वृख को भी यह ज्ञान हो गया है, अदिति अपने में अदितिपने में लग गएं षोडश कलाओं का ज्ञान हो जाता है तो मेरे प्यारे! चित्त मण्डल जब मानव प्रवेश करता है। मुनिवरों! देखो, संस्कारों का एक समूह है। और वह मानो देखो, मानव ये चाहता है कि मैं परमात्मा से मिलन करना चाहता हूँ, बेटा! परमात्मा से कैसे मिलन होता हैं? एक मानव इस संसार को यथार्थता में दृष्टिपात करता है, मानो यथार्थी बन जाता है, द्वितीय मानव मेरे प्यारे! देखो, सत्य में दृष्टिपात करने वाला, सत्य में मानो ब्रणं ब्रह्वे व्यानं ब्रहा मुनिवरों! देखो, इसको अपने में धारण कर रहा है, जब मुनिवरों! देखो, एक प्रवृत्ति मानव की वह होती है, वह इसमें आहार व्यवहार में इतना विशुद्ध बन गया हैं वह अपनी प्रवृत्तियों को सूक्ष्म बना करके, मेरे प्यारे! देखो, परमात्मा को अपने में और अपने को परमात्मा में दृष्टिपात करता है, क्योंकि परमात्मा तो स्वतः हमारे अन्तःकरण के समीप विद्यमान हैं। मेरे पुत्रों! देखो, वह उसमें ध्यानावस्थित होने लगता है। और ध्यानावस्थित हो करके मुनिवरों! देखो, चित्त को अपने में और चित्त की प्रवृत्तियों को अपने में लाने के लिए तत्पर हो जाता है। और जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार अपने में उद्बुद्ध हो जाते हैं। और वही मानो देखो, उद्धबुद्ध हो करके आत्मा का ईंधन बन जाता हैं, और आत्मा का ईंधन जब बन जाता है, तो आत्मा के समीप, जो मन विच्छेद आवरण आ गएं हैं, वह मुनिवरों! देखो, वह उससे शुद्ध और पवित्र बन जाते हैं, जो मन विच्छेद के आवरणों को नष्ट करना ही मानव की साधना कही जाती हैं। क्योंकि देखो, परमात्मा गुणी नही हैं परमात्मा तो हमारे अन्तःकरण में विद्यमान रहता हैं हमारे समीप रहता है आत्मा के समीप रहता है तो मुनिवरों! देखो, परमात्मा का दर्शन कहाँ करें? विचार आता है जहाँ भी तू जाता है वहीं परमात्मा विद्यमान है अरे, मानव! तू उसको दृष्टिपात तो कर, तू मानो देखो, अपने ऊपर अनुशासन तो करके दृष्टिपात कर, जब तेरा तेरी इन्द्रियों पर तेरे क्रियाकलापों पर अनुशासन हो जाएगा, तो मानो देखो, वे परमपिता परमात्मा जो हमारे अन्तःकरण में विद्यमान है जो हमारा सखा बन करके, हमें महानता की ज्योति प्रदान करता हैं। तो मेरे प्यारे! विचार आता रहता है, क्या हम मुनिवरों! देखो, अपने में महान बनना चाहते हैं, तो एक मानो बेटा! देखो, एक जन्म में बेटा! एक मानव बेटा! देखो, अपने एक ही जन्म में आहार नही कर रहा है। वह मानो देखो, वायु का सेवन कर रहा हैं खेचरी मुद्रा में जल को अपने में सिंचन कर रहा हैं, और प्राणायाम करके बेटा! देखो, प्राण को अपानं ब्रहे वह अपान ही मानं ब्रह्मा वह अपान उदान में लगा हुआ हैं मेरे प्यारे! देखो, वह मानव अपने को धन्य स्वीकार करता हैं, वह परमात्मा को मानो देखो, प्राण में पाहि अपान में पाहि उदानं में पाहि मेरे प्यारे! देखो, वह उस सखा को दृष्टिपात करता हैं। वह प्राणी में भी कहता है प्राणं में पाहि उदान में पाही मेरे प्यारे! देखो, व्यान में पाही वह प्राणों में पाना चाहता है, कि मेरा सखा प्राणों में विद्यमान हैं परन्तु देखो, जब वह अन्त कहता है सम्भवं ब्रह्वे वाचन्नम ब्रह्मा मैं इसमें भी दृष्टिपात नही कर रहा हूँ क्योंकि ये भी प्रकृति का एक मण्डल है, और मैं प्रकृति के मण्डल में मानो जब मैं ही दूरी हूँ तो मेरा सखा भी मेरे

समीप विद्यमान हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, एक तो ये एक मानव वह कहलाता है। जो ब्रह्म में समाधिष्ट करता है। एक मानो ब्रह्म में समाधिष्ट हो जाता है और एक मानव वह है जो मेरे प्यारे! जनता में जर्नादन को दृष्टिपात करता हैं। जो मुनिवरों! देखो, जनता में जर्नादन में को दृष्टिपात करने लगता हैं, प्रभु का दर्शन करता है, मेरे प्यारे! वही मानव ब्रह्म में समाधिष्ट हो जाता हैं, वह समाधि में ब्रह्म का दर्शन करता हैं, परन्तु दोनों का तारतम्य एक ही माना गया हैं, मेरे प्यारे! देखो, वह ब्रह्म में समाधिष्ट होने वाला, ब्रह्मनिष्ठ हो जाता है और मुनिवरों! देखो, ब्रह्मणो जब कण-कण में ब्रहा कृति देवाः और जब मुनिवरों! देखो, जनता में जर्नादन को दृष्टिपात करता हैं दोनों ही मार्ग बड़े विचित्र है, परन्तु दोनो ही धारा बड़ी विचित्र है यदि जनता में दर्शन करता हैं, प्रभु का अपना भी दर्शन अपने में दृष्टिपात करता है, मेरे प्यारे! देखो, वह जनतां ब्रह्मा देखो, जनता में जर्नादन हो जाता हैं और जो ब्रह्म में समाधिष्ट हो करके बेटा! प्राण को अपान में अपान को व्यान में व्यान में समान को मेरे प्यारे! देखो, उदान में प्रवेश करता रहता हैं। एक दूसरे के मिलन करने में लगा हुआ हैं, वह ब्रह्म में समाधिष्ट हो जाता हैं। और वह ब्रह्म में समाधिष्ट हो करके बेटा! वह ब्रह्म का दर्शन करता हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्म को अपने में, इस संसार को अपने से दूरी कर देता हैं। तो विचार-विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, वह जब संसार में भी, ब्रह्म है अपने में भी ब्रह्म है, तो कहाँ जाएगा? तो विचार आता रहता है बेटा! उस समय वह नम्र बन जाता हैं, और नम्रता में देखो, उसको एक मार्ग उसमें भी एक मानो जनता में जर्नादन का मार्ग है, और वह मुनिवरों! देखो, ब्रह्म में समाधिष्ट होना है दोनों को मुनिवरों! देखो, अपनी प्रवृत्तियों में रत्त करना हैं। और वह ब्रह्मणां ब्रह्वा कृतं देवा मेरे प्यारे! वही तो देवता कहलाता हैं, जैसा मैंने तुम्हें कई काल में कहा है ब्रह्मवर्चोसि एक शब्द होता हैं और वह ब्रह्मवर्चस बनने के लिए, ब्रह्मचारी तत्पर रहता है, जब ब्रह्मचारी वर्चस बन जाता है। तो बेटा! वह देखो, अपने में ब्रह्म का ही दर्शन करता रहता हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्म को अपने को मौन कर लेता हैं। अपने को ब्रह्म में समेट लेता हैं तो मुनिवरों! देखो, बाह्य जगत उसके लिए शून्य हो जाता हैं।

तो बेटा! मैं तुम्हें विशेषता में नही ले जाऊंगा केवल विचार-विनिमय क्या जब परमपिता परमात्मा, आत्मा के समीप विद्यमान रहता है, तो बेटा! वह अपना सखा है, और वह मित्र बन करके बेटा! मित्रता को हमें प्रदान कर रहा है, तो विचार आता रहता है कि हम परमपिता परमात्मा को और अपने को ही अपने को ही मानो देखो, दोनों को एक सूत्र में लाने में लगे रहें, और विचार-विनिमय करते रहें। जिससे बेटा! मानव जीवन पवित्र बन जाएं, मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है, मुझे वह काल स्मरण है, जब बेटा! कुछ ऋषि-मुनियों का एक समूह बेटा! अपने आश्रम से गमन करता है, और गमन करता हुआ, महर्षि पिप्लाद के द्वार पर पंहुचा, और पिप्लाद मुनि ने बेटा! उनका स्वागत किया, पिप्लाद मुनि ने ब्रह्मचारियों से जिज्ञासुओं से कहा कि हे जिज्ञासु तुम कहाँ भ्रमण कर रहे हो? उन्होंने कह-प्रभु! हम इसीलिए आए हैं, कि ऋत और सत को जानना चाहते हैं? जब मुनिवरों! देखो, वह पिप्लाद ने कहा हे ब्रह्मचारियों! हे निष्ठावासियों जिज्ञासु! तुमने तुम्हारे आचार्यों ने कोई निर्णय दिया हैं, या नही दिया। उन्होंने कहा-प्रभु! हमे निर्णय दिया हैं। और वह मानो देखो, एक मंगलं श्वेतकेतु मुनि है उन्होंने निर्णय दिया हैं क्या ऋत नाम मानो प्रकृति को कहते हैं, तो उन्होंने हमें प्रकृति का निर्णय कराया। और देखो, जल ब्रहा उन्होंने कहा दूसरा, उन्होंने एक समय देखो, उन्होंने उद्दालक का नाम ले करके कहा, कि श्वेतकेतु अमृतं उद्दालक जी ने ये निर्णय कराया है, क्या सत्य देखो, ब्रह्म का प्रतीक माना गया हैं। मेरे प्यारे! देखो, उस समय ऋषि ने कहा क्या सत और ऋत दोनों में मानव का सत विद्यमान नही हैं? उन्होंने कह-प्रभु! यह तो हमें किसी आचार्य ने निर्णय नही कराया उन्होंने कहा मेरे विचार में तो सत्य और चित्त दोनों ही मानो देखो, सत्यं ऋत और सत दोनों ही मानो देखो, यह सत्यता की प्रतीक माने गएं हैं। अब मुनिवरों! देखो, इसीलिए जिज्ञासु ने कहा कि-प्रभु! इनका

नामोकरण भिन्न-भिन्न क्यों हैं? उन्होंने कहा देखो, यह भिन्न हैं क्या सत नाम जो है वह ब्रह्म का प्रतीक हैं और ऋत नाम प्रकृति का प्रतीक है परन्तु ऋत और सत दोनों मिलान करते हुए हैं इन दोनों का समन्वय होते हुए मानो देखो, ये चित्त की धारा बनती है और यह चित्त की धारा बन करके ही मानो देखो, जब जिज्ञासु, इसमें उग्र क्रिया को धारण करता हैं, तो इसमें जन्म-जन्मान्तरों के संस्कारों को चित्त के मण्डल में दृष्टिपात करता हैं उन्होंने कहा-प्रभु! मेरा चित्त से कोई समन्वय नही हैं, उन्होंने कहा जब ऋत और सत दोनों मिल करके चित्त बनेगा, तो इसको कहाँ उद्गीतं ब्रहे उन्होंने कह-प्रभु! मैं सत को जानना चाहता हूँ, ऋत को भी जानना चाहता हूँ, उन्होंने कहा तो ये जो सत है, ये प्रकृति हैं, ये जो ऋत है, यह प्रकृति हैं, परन्तु देखो, इसमें जो ब्रह्म देखो, अपने में मिलन कर रहा हैं, उसको मानो देखो, सत में परिणत कर देते हैं, परन्तु वह एकं ब्रह्मा एको रथं ब्रह्मा वर्णनं वेद का आचार्य एक वाक् और कहता है क्या देखो, ऋत देखो, सत और ऋत मानो सत्यं ब्रह्मे मानो एक दूसरे में सत रमण कर रहा है। जैसे सत मानो देखो, रजोगुण में भी विद्यमान हैं, और रजोगुण तमोगुण में विद्यमान हैं, परन्तु तीनों एक दूसरें के मनके कहलाते हैं। एक दूसरें में क्योंकि सत रजोगुण में भी हैं, मिश्रित हो रहा हैं, और तमोगुण में भी सत मानो देखो, मिश्रित है। और देखो, तमोगुण में पालना का एक प्रतीक है, तो इसी प्रकार जब मैं ये विचारता रहता हूँ, क्या जब वह जो मानो देखो, सत्यं ब्रह्मा वर्णा देखो, वह जो ब्रह्म है, वही सत और ऋत को त्याग देता हैं। मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्म एक रस रहने वाला हैं, यह सतचिताम मानो देखो, एक सत चित्त एक रस नही रह पाता इसीलिए देखो, सत और चित्त दोनों को मानो देखो, जब मानव इसके ऊपर विश्लेषण करता हैं तो बेटा! सत कहते हैं ब्रह्म सत कहते हैं पालना करने वाले, को और ऋत कहते हैं, जिसमें वह पालना कर रहा हैं बेटा! देखो, इसी प्रकार हमारे यहाँ, आत्मा और प्रकृति सत है, और आत्मा मानो सत चित्त कहलाती है जब आत्मा सत चित्त कहलाती हैं, तो मेरे प्यारे! आत्मा के सत चित्त होने से यह आत्मा की पिपासा में रहता है यह आनन्द इसमें विद्यमान तो रहता हैं। परन्तु उसको अपने में धारण करना चाहिए। तो इसीलिए मानो देखो, सत चित्त आनन्द की विवेचना यह हमारे आचार्यों ने की है कि सत चित्त के ऊपर ऋषि-मुनि अपने में परम्परागतों से बेटा! अन्वेषण करते रहे है। तो चित्त के मण्डल में बेटा! संस्कार है सत में मानो उन चित्त मण्डलों का हम अपने में पालना में लगे हुए हैं, और परमपिता परमात्मा के आनन्द को प्राप्त करना चाहता है। बेटा! आनन्द जब ही प्राप्त होता हैं जब सत चित्त दोनों को वह जान लेता हैं, क्योंकि प्रकृति सत हैं, और आत्मा सत चित्त हैं और परमात्मा सत चित्त आनन्द कहलाता हैं। मेरे प्यारे! परमात्मा में सत भी है चित्त भी हैं और मुनिवरों! देखो, आनन्द वह स्वतः कहलाता है। तो मानव उस आनन्द की पिपासा में लगा रहता है। परन्तु वह जब वैदिक वांगमय में जाते हैं, तो वे परमपिता परमात्मा एक रस कहलाता हैं, परमपिता परमात्मा जब एक रस है, तो मेरे पुत्रों! देखो, वह कहाँ नही हैं? कौन-सी स्थली ऐसी है, जहाँ नही हैं, परन्तु मानव को अपने सत और चित्त को स्वतः जब जान लेता है, तो आनन्द उसे स्वतः प्राप्त होने लगता हैं तो मेरे प्यारे! देखो, वह चित्त की वृत्तियों को निरोध कर लेता हैं, परन्तु मानो देखो, जब आहार और व्यवहार और अपनी दैनिक क्रिया को अपने में बेटा! शान्त मुद्रा में लाना प्रारम्भ करने लगेगा, तो बेटा! इस संसार का अनुभव हो जाएगा और संसार का अुनभव होने से अपने आन्तरिक जगत का अनुभव हो जाएगा, और आन्तरिक जगत का अनुभव हो करने लगता है बेटा! वह सत चित्त आनन्द को प्राप्त कर लेगा क्योंकि प्रत्येक मानव बेटा! जबकि साधना में परिणत होता हैं, तो आनन्द की पिपासा को जानने में लगा हुआ हैं। मेरे प्यारे! जितने भी नाना प्रकार के क्रियाकलाप करता रहता हैं, योग साधना है, चाहे प्राण को अपान में मिलाना है, अपान को समान में वह यह जानता है कि मैं चित्त के मण्डल को जान करके, मैं ब्रह्माण्ड वेत्ता बनूं, और ब्रह्मण्ड को जान करके जिस परमात्मा ने ब्रह्माण्ड को रचाया है, मेरे को रचा करके, उसमें वह विद्यमान हैं मैं उसी को

जानने में तत्पर हो जाऊं। तो मेरे पुत्रों! इस प्रकार की वृत्तियों का एक समूह कहलाता हैं।

आज मैं बेटा! तुम्हें यह निर्णय देना चाहता हूँ, क्योंकि चित्त का जो मण्डल है, यह बड़ा विचित्र मण्डल कहलाता हैं। जिसके ऊपर ऋषि-मुनि परम्परागतों से, मेरे प्यारे! देखो, अध्ययन करते रहे हैं। और मैंने भी देखो, इसके ऊपर अध्ययन किया हैं, वर्षों-वर्षों अध्ययन किया है, मानो देखो, कहीं देखो, अमृतं ब्रह्मा कहीं समाधि में प्रवेश, कहीं मानो जनता जर्नादन में प्रभु का दर्शन ये दोनों अपनी-अपनी आभा में रत्त होते रहे हैं। तो विचार-विनिमय क्या मेरे पुत्रों! मैं इस गम्भीर रहस्य में चला गया हूँ, यह विचारों का वन है, बेटा! आज मैं तुम्हें देखो, गम्भीर रहस्यों में ले जाना नही चाहता हूँ, केवल विचार-विनिमय क्या जब वेदमन्त्र का स्मरण आ जाता है तो उसके आधार पर अपने विचार देना बहुत अनिवार्य हैं। क्योंकि नाना प्रकार की धाराओं को जानना, जान करके मुनिवरों! देखो, वह ब्रह्माण्ड को एक ही अंग में दृष्टिपात करना ये मानव का कर्तव्य है, बेटा! देखो, जितना ज्ञान है, अथवा विज्ञान है वह अपने में बड़ा विचित्र माना गया है, यह परमात्मा की धरोहर हैं, परमात्मा देखो, समूह हैं इसमें विद्यमान हो रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो, क्योंकि परमात्मा एक-एक कण-कण में व्याप्त हैं, प्रवृत्तियों में व्याप्त रहता है, तो मेरे पुत्रों! देखो, उसे अपने में धारयामि बनाना है, बेटा! आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा नही दूंगा, केवल विचार-विनिमय ये मुनिवरों! देखो, ऋषि-मुनि अपने में चिन्तन करते रहे हैं। महर्षि वैशम्पायन ने ये वाक् को ले करके, चित्त के मण्डल को ले करके, बेटा! बारह वर्ष तक देखो, उन्होंने चित्त के मण्डल में, चित्त के मण्डल को जानने में बेटा! उन्होंने तपस्या की, तपस्या का अभिप्रायः मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन कराया तपस्या कहते हैं मन को पवित्र बनाना और मन पवित्र बनता हैं। आहार से आहार से व्यवहार व्यवहार से मनस्वत बना ब्रहे वह अपने में मानो देखो, मन पवित्र बन जाता हैं मन के पवित्र होने से प्रवृत्ति पवित्र बन जाती हैं और देखो, अनुशासन हो जाता हैं और अनुशासन बेटा! जब तक नही होता जब तक हम प्रभु के आनन्द में अपने को नही ले जाते इसीलिए मेरे प्यारे! देखो, कोई भी क्षेत्र हो, हमारे यहाँ देखो, उस मार्ग को प्राप्त करना होगा, उन प्रवृत्तियों में जाना होगा जिन प्रवृत्तियों में मानो देखो, उग्र बन करके, अपनी प्रवृत्तियों का निर्माण होता रहा हैं।

आओ, मेरे प्यारे! देखो, मनं ब्रहे तपस्यां भू वर्णनं तपस्या अन्न के पवित्र को कहते हैं जिससे प्रवृत्तियों की तरंगें उत्पन्न होती हैं तो इसीलिए मुनिवरों! देखो, प्रत्येक मानव को चाहिए, क्या हम बेटा! देखो, आनन्द में जाने के लिए, हमारा आहार और व्यवहार पवित्र हो। जब तक आहार में पवित्रता नही आएगी मन पवित्र नही बनेगा मेरे पुत्रों! मुझे बहुत-सा काल स्मरण आता रहा हैं। बहुत-सी वार्त्ताएं स्मरण आती रही हैं। एक समय बेटा! मेरे पूज्यपाद गुरुदेव और मानो कुछ ब्रह्मचारी विद्यालय में हम भी उसमें विद्यमान थे आचार्य को निमन्त्रण आया महाराजा अश्वपति के यहाँ से, और अश्वपति के यहाँ जब पंहुचे तो मुनिवरों! देखो, महाराजा अश्वपति और उसकी देवी ने, आचार्यों का ब्रह्मचारियों का स्वागत किया। क्योंकि राजा होने से अपनी राजस्थली को त्याग दिया, और उन्होंने कहा आईए ऋषिवर क्योंकि ऋषि जो होता हैं। वह राजा से ऊर्ध्वा में गमन करने वाला होता है। राजा से देखो, राजस्थली नही चाहिए उसे तपस्या चाहिए। जो जिज्ञासु यथार्थी ब्रह्म का होता हैं। मानो देखो, वह ब्रह्म में लीन रहने वाला, वह देखो, आहार के ऊपर कितना नियम संयम होता हैं, उसे राजस्थली नही चाहती, वह चाहता है कि राजस्थली एक नारकिक द्वार कहलाता हैं। यह राजस्थली नारकिक द्वार है, क्योंकि इसमें अभिमान आ जाता हैं, इसमें विडम्बना और देखो, इसमें विडम्बना भी आ जाती हैं, तो इसी प्रकार देखो, राजा के राष्ट्र में, राष्ट्र जब भी ऊँचा बना है, जब बना है जब विवेकी महापुरूष होते हैं राष्ट्र में प्रजा में देखो, महापुरूष जो अपने में आत्म निर्णय देने वाले हों आत्मा में विश्वासी होते हैं, और यथार्थी होते हैं। तो राजा ऐसे महापुरूषों को दृष्टिपात करके, मुनिवरों! देखो, वह अमृतां भू वर्णनं ब्रह्मा व्रते राजस्थलियों को त्याग दे देते हैं। राजस्थली जैसे राजा अश्वपति ने त्याग दी

तो मानो देखो, वह विराजमान हो गएं, और ब्रह्मचारियों के एक, राजा भी विद्यमान हो गया। मेरे प्यारे! कुछ वार्त्ताएं प्रगट हुईं, ज्ञान विज्ञान की, आत्मा की चर्चाएं हुई, चर्चाएं जब हुई तो महाराजा अश्वपति ने कह-प्रभु! आप क्या पान करेंगें? देखो, उस समय देखो, पूज्यपाद गुरुदेव ने कहा क्या हे राजन! हम तुम्हारा अन्न नही ग्रहण करेंगें। उन्होंने कहा भगवन! मेरा अन्न क्यों नही ग्रहण करोगे? उन्होंने कहा तुम राजा हो और राजा के राष्ट्र कोष में जो अन्न आता है। वह रजोगुण तमोगुण से सना हुआ अन्न होता है, इसीलिए मैं उस अन्न को ग्रहण नही करूंगा और न अपने ब्रह्मचारियों को करने दूंगा। तो महाराजा अश्वपति ने कह-प्रभु! आप देखो, भगवन! आप निरीक्षण कर लीजिए। मैं उस अन्न को ग्रहण करता हूँ जिससे मेरी बुद्धि रजोगुणी न हो जाएं, राजा की बुद्धि सतोगुणी होनी चाहिए। भगवन! देखो, दण्ड के समय तो रजोगुणी प्रवृत्ति रहती है। परन्तु सदैव उसकी बुद्धि सतोगुणी रहती हैं। हे भगवन! देखो, मैं और मेरी देवी हम प्रातःकालीन मानो देखो, कामधेनु के दुग्ध को मन्थन करते हैं। उसमें घृत होता है, तो उसका याग करते हैं, और कुछ पान करते हैं, परन्तु देखो, जितना भी हम अपने यहाँ अन्न को उपार्जन करते हैं, और उस अन्न को हम ग्रहण करते हैं राष्ट्र का अन्न ग्रहण नही करते। (पुस्तक से) राष्ट्र की तो हम सेवा करते हैं हम सेवक हैं कि-प्रभु! हम तो सेवक बन करके राष्ट्र के क्रियाकलापों में लगे रहते हैं।

मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण आता रहता हैं पूज्यपाद गुरुदेव ने जब निरीक्षण कर लिया तो उसके पश्चात अन्न को ग्रहण किया मुनिवरों! देखो, विचार आता रहता हैं कि अन्नम ब्रह्रे व्रतं देवाः इस प्रकार जब मानव की प्रवृत्ति बनती हैं, तो मनस्तव और बुद्धि के निर्माण होते हैं, और उन्हीं निर्माण से मानव का व्यापक हृदय बन जाता है। व्यापतकता आने से वह अनुशासित बन करके चित्त की वृत्तियों का अपने में निरोध करता है, और निरोध करके उनके ऊपर अनुशासित ब्रह्म हो जाता हैं। बेटा! मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नही आया हूँ मैं कोई व्याख्याता नही हूँ, केवल तुम्हें परिचय देने के लिए आया हूँ, मैं कोई व्याख्याता नही हूँ, केवल तुम्हें परिचय देने के लिए चला आता हूँ, और वह परिचय क्या हैं? कि हम चित्त की प्रवृत्तियों के ऊपर अनुशासित बने। मेरे प्यारे! देखो, जहाँ लोक-लोकान्तरों का दर्शन होता है। उन्हीं प्रवृत्तियों की चर्चायें मैं कल प्रगट करूंगा। आज का वाक् हमारा क्या कह रहा हैं कि हम परमपिता परमात्मा की महिमा और उसके गुणाधानम् उसके गुणों को अपने में धारण करते रहें। यही परमपिता परमात्मा के अमृत को पान करना हैं जिससे मानव अमृत बनाता हैं। आज की वार्त्ता समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन होगा।

१२ चित्त की वृत्तियों का निरोध १८ ०५ १९९१

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महती का हम सदैव गुणगान गाते रहते हैं, और उसका जो ज्ञान और विज्ञान हैं, वह प्रायः उसी में रत्त रहता है। तो इसीलिए आज का हमारा वेदमन्त्र, अपने में उद्गीत गाता रहता हैं। अपने में ही मानो उसकी प्रतिभा का वह प्रायः दर्शन करता रहता हैं। तो इसीलिए प्रत्येक मानव अपने में मानो देखो, दार्शनिक बनने के लिए तत्पर रहता हैं। क्योंकि वेदमन्त्रों में, दर्शनों की प्रतिभा को जानने वाला, मानो अपने में ये चाहता है कि मैं दार्शनिक बन करके और इस परमात्मा के भव्य जगत में, मैं सदैव रमण करता रहूँ। तो बेटा! ये वेद का मन्त्र ये कहता है कि हम परमपिता परमात्मा जो अग्निमयी स्वरूप है, हे अग्नि! तू कल्याण करने वाला हैं मानो वही अग्नि तेजोमयी में निहित रहती हैं और उस तेजोमयी अग्नि को अपने अन्तःकरण में मानो उसे अपने में स्थली प्रदान करता रहता हैं। तो बेटा! हमारा वेद का मन्त्र, हमें क्या उद्गीत गा रहा हैं? वेदों में बहुत से मन्त्र आते रहते हैं। जो मानव की प्रतिभा का परिवर्तन करते रहते हैं। तो हम उस परमपिता परमात्मा जो एक अनूठा हैं और आनन्दमयी है तो उसके ऊपर आओ, हम कुछ विचार-विनिमय करते चले जाएं, हमारे यहाँ विचारों का अपना बड़ा मूल्य माना गया हैं। इसीलिए प्रत्येक विचारवेत्ता मानो देखो, अपने में उस पगडण्डी को ग्रहण करना चाहता हैं, जिस पगडण्डी में हम परिणत हो करके हम उसी में समाहित हो जाएं। तो ऐसा बेटा! प्रत्येक मानव का अपना मन्तव्य रहता हैं, और उसकी आभा में मानो वह रत्त रहता है और जानना चाहता रहता है जो ऋषि ने कहा वह यथार्थ हैं अथवा नही। परन्तु इसी आभा में वह अपने को ले जाता है, और अपनी प्रतिभा को मानो प्रतिभाषित करता रहता हैं।

तो आओ, बेटा! आज मैं तुम्हें विशेषता में नही ले जा रहा हूँ, केवल विचार-विनिमय ये कि वे परमपिता परमात्मा अनूठा हैं, और वे परमपिता परमात्मा सर्वज्ञ है, और एक-एक परमाणु में वे निहित रहने वाला हैं, जब मुनिवरों! वेद के साहित्यवेत्ता ये कहते हैं ब्रह्म मं भू वर्णनं ब्रह्म वर्तस्वाहा तो नाना प्रकार के हम मानो वैदिक साहित्य में, जब हम विचार-विनिमय करते हैं। तो प्रायः हमारा अन्तर्हृदय और अन्तरात्मा उसी में निहित हो जाता हैं। तो आओ, मेरे पुत्रों! आज मैं तुम्हें वैदिकता में पूर्ण रूप से ले जाना चाहता हूँ, जहाँ मानव मानव में रत्त हो जाता हैं, जहाँ ये ब्रह्माण्ड ब्रह्माण्ड की परिक्रमा करने लगता है। एक आकाश सम ब्रह्म वृत्ति कहीं मानो देखो, और भी वह विडम्बना करता हैं। कहीं द्वितीय प्रहा में और भी विडम्बना करता हैं, तो मानव को वेद कहता है मानव को विडम्बनित नही रहना चाहिए। अपने में अपनेपन को जानना, और वह नाना प्रकार की प्रतिभा में प्रकाशित हो जाता हैं। तो आओ, बेटा! आज का हमारा वेदमन्त्र हमें क्या कह रहा है मुझे बेटा! वह काल स्मरण आता रहता है जिस काल में वैदिक साहित्य को ले करके अपने मे अन्वेषण होता रहा है, मानो ये अपने में ही नही संसार की प्रतिभा में निहित होता हैं। सम्भो ब्रह्मे वाचस्सुतप्रह्मा प्रत्येक मानव बेटा! गान गाना जानता है गान गाने के लिए तत्पर होता हैं। परन्तु वह जो गायन है, जो अपने हृदय से गाया जाता हैं, और जो हृदय में मानो समाहित हो जाता है वह ज्ञान हैं और वह ज्ञान के लिए मानो नाना प्रकार का प्रयास करता रहा हैं।

तो आओ, बेटा! देखो, विचार-विनिमय क्या वर्सम्भवा वेदों नममं ब्रह्मा नाना ऋषिवर अपनी-अपनी स्थलियों पर बेटा! विचार-विनिमय करते रहे हैं आओ, आज मैं तुम्हें उसी क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ। जहाँ बेटा! देखो, नाना प्रकार की वृत्तियाँ, मानव के समीप आ करके अपनी वार्त्ता उदगीत के रूप में परिणत करती हैं तो मेरे प्यारे! देखो, मैं तुम्हें वही ले जाना चाहता हूँ जहाँ चित्त की वृत्तियों में मानव लगा हुआ रहता हैं। जहाँ अनुशासन की

आवश्यकता हैं। मैंने बहुत पुरातन काल में बेटा! इस चित्त के ऊपर अपनी बहुत-सी टिप्पणियाँ दी, बहुत-सी विचारधाराएं दी है, कि हमारा ये जो चित्त का मण्डल है यह बड़ा विचित्र हैं। मेरे प्यारे! देखो, चित्रं भवि वर्णसुतं ब्रह्मा ये जो नाना प्रकार का जो चित्रांग हो रहा हैं, उस चित्रांग में नाना प्रकार की आभांए मानव के समीव आती हैं तो बेटा! ये कैसा अनुपम एक जगत है, मैंने तुम्हें कई काल में कहा, कि मानव जब अनुशासित रह जाता हैं, तो चित्त की वृत्तियों को वह अपने में समेटने लगता हैं। और समेट करके ही मुनिवरों! देखो, उसमें कुछ तथ्य हमें प्राप्त होता हैं। बेटा! मुझे वह काल स्मरण है, जब मुनिवरों! देखो, वेदोक्त मन्त्रों का अध्ययन करते थे, जब संकल्पयुक्त हो करके जब वेद का अध्ययन करता हैं तो मानव के समीप नाना प्रकार की मानसिक तरंगें उत्पन्न होने लगती हैं, और वह तरंगें, महर्षि व्रेती सम्भूति ऋषि थे, यह प्रश्न किया गया कि महाराज! ये क्या हो रहा है कैसा विचित्र यह अध्ययन है आपका? तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने उत्तर देते हुए कहा, सम्भव ब्रह्मा सम्भवं ब्रह्मणे वाचस्सुतप्रह्ना, मेरे प्यारे! देखो, वह वस्तु मानव को प्राप्त और चित्त की वृत्तियाँ उसके समीप आने लगती हैं। और चित्त की वृत्तियों में जो मानो गति हो रही है, और जो गति हो करके वह शान्त हो जाती हैं। मानो उन तरंगों को जब हम अन्वेषण करते हैं अनुसन्धान करते हैं, तो वह मुनिवरों! देखो, चित्त की जो प्रवृत्ति है, चित्त की जो धारा हैं, वह मानो देखो, अपान में सिमट जाती हैं, और व्यान की जब पुट लगती है, तो वह बेटा! नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों वाले जगत को दृष्टिपात करने लगती हैं। लोकां भू वर्णनं ब्रह्मा लोकां रूद्र वाचस्वति, मेरे प्यारे! देखो, उसी में वह रत्त होने लगता है। तो मानो देखो, वह जब चित्त के मण्डल में, जब प्राण और अपान में पुट लगती है। तो बेटा! उसमें मानो जन्म-जन्मान्तरों की धाराओं का प्रादुर्भाव होने लगता है, और जन्म-जन्मान्तरों को अपने में दृष्टिपात करने लगता है। तो मेरे प्यारे! देखो, विचार ये कहता है, गर्भं ब्रह्मा, मेरे प्यारे! देखो, उसी में अपनी आभा में परिणत हो जाता है। तो आओ, मेरे प्यारे! देखो, इस सन्दर्भ में नही ले जाऊंगा, केवल विचार-विनिमय ये कि लोक-लोकान्तर उस योगी के हृदय में, मानो उसे दृष्टिपात आने लगते हैं। तो मेरे पुत्रों! देखो, मैं विचार की चर्चाएं, विचारकों की चर्चाएं कर रहा हूँ। जैसे मुनिवरों! देखो, विचार अस्तुतो ब्रह्मा वाचो वेद का वाक् ये कहता है कि अपने में अपनेपन को धारण करते रहो। मेरे पुत्रों! देखो, मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन करते हुए कहा हैं, कि मानो देखो, जब यौगिक क्षेत्र में प्रवेश करता है, तो ये मानो देखो, इन्द्रियों का जो विषय है, वह साकल्य बन करके आता हैं, और वह इन्द्रियों का विषय जब साकल्य बन जाता है, तो हृदय रूपी यज्ञशाला में वह याग करने लगता है, और हृदय रूपी यज्ञशाला में जब याग होने लगते हैं। तो बेटा! देखो, यह यागां भू वर्णनं विज्ञानां ब्रह्े व्रतं ज्ञान रूपी अग्नि जब प्रदीप्त होती हैं, तो बेटा! मानो यह सर्वत्र जगत ज्ञान कहलाता हैं, मुनिवरों! देखो, प्राणों की आभा अपान की आभा और अपान की जो चित्रता हैं वह मुनिवरों! देखो, मनस्तव के मण्डल को ले करके मण्डल में प्रमाणां ब्रहे बेटा! वह देखो, आत्मा के समीप प्रवेश हो जाता हैं। आत्मा की तरंगें ही है जो बेटा! देखो, ब्रह्मणे प्राण की ही तरंगें है जो वरिष्ठ कहलाती हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, उन तरंगों में तरंगों का जब मिलन होने लगता है, एक-एक तरंग का जब विभाजन किया जाता हैं, योग के द्वारा, तो बेटा! वह नाना प्रकार के ब्रह्माण्ड का दर्शन करने लगता हैं। और आकाश गंगाओं का दर्शन करने लगता हैं। तो मेरे प्यारे! मैं इस सम्बन्ध में कोई विशेष चर्चा तुम्हें परिणत करना नही चाहता हूँ, केवल ये क्या ऐसा एक गम्भीर क्षेत्र है जहाँ बेटा! माताएं देखो, अपने में योगाभ्यास में परिणत होती रही हैं। मेरे प्यारे! मुझे वह काल स्मरण है, जब महाराजा अश्वपति के यहाँ विद्या अध्ययन करया जाता, तो उस विद्या में मुनिवरों! देखो, वेद के मन्त्रों का उद्गीत गाया जाता, और मुनिवरों! देखो, कन्याओं को अध्ययन कराने के लिए मेरी पुत्रियाँ उस विद्या का अध्ययन करती, जिन विद्याओं से, जिस ज्ञान के द्वारा वह मानो देखो, प्राण की प्रतिक्रिया को जानने लगती। मेरे पुत्रों! मुझे वह काल स्मरण है, जब

महाराज अश्वपति के यहाँ, नाना विद्यालय और उन विद्यालयों में मुनिवरों! देखो, नाना शिक्षक, मुनिवरों! देखो, वह जो पुत्रियों को नाना प्रकार की विद्या में ले जाते और वह मुनिवरों! देखो, प्राण को प्राण के ऊपर मानो सखा को दृष्टिपात करते रहे। बेटा! देखो, जब विद्यालयों में शिक्षा, ब्रह्मचारिणी को ये शिक्षा देते हैं, कि तुम्हें गृह में प्रवेश होना हैं, गृह में तुम्हें जाना है, तुम प्राणायाम करो। तुम प्राण सखा को जानों, क्योंकि प्राणों के आँगन में तुम्हारा शिशु मानो खिलवाड़ करेगा, इन आनन्द का अनुभव करेगा और तुम मानो देखो, तेजोमयी बाल्य का उत्पन्न कर सको तो बेटा! देखो, मुझे स्मरण है विद्यालय में इस प्रकार का, एक कक्ष रहता, जहाँ कन्याओं को विद्यालय में शिक्षा प्रदान, इससे मुनिवरों! देखो, वह गर्भाशय में एक महान सन्तान को जन्म दे सकें।

तो मुनिवरों! मुझे स्मरण है देखो, एक महर्षि दुर्वासा क्योंकि दुर्वासा ऋषि की एक उपाधि चली आ रही हैं, तो महर्षि दर्वासा मुनि महाराज बेटा! देखो, उस विद्या शिक्षा के बड़े पारायण थे और वह उस विद्या का प्रदान कर दी। वेदमन्त्रों का उद्गीत गाते प्राण को सखा को जानते और प्राणों का जो विषय है, यह अनुभवी कहलाता हैं। प्राण अपान को मिलाना, और अपान को मिला करके समान में प्रवेश कर देना, समान को मुनिवरों! देखो, उदान से समन्वय करते हुए, प्राण में प्रवेश हो जाना। तो बेटा! देखो, मेरी प्यारी माताएं इस योग के द्वारा मेरी प्यारी माताएं योगाभ्यास के द्वारा वह अपनी अन्तरात्मा में जो शिशु विद्यमान हैं, उससे वह प्राण के माध्यम से आत्मा का मिलान हो करके बेटा! आत्मा की चर्चा होती रहती हैं और वह माताएं पुत्रियाँ बेटा! अपनी गर्भ की आत्मा से चर्चाएं करती रहती हैं। इसी प्रकार बेटा! देखो, प्राणं ब्रह्वे ब्रहा बाह्य जगत का ये जो ब्रह्माण्ड है और आन्तरिक जगत का जो यह ब्रह्माण्ड हैं, दोनों एक सूत्र मे होने चाहिए। मेरे पुत्रों! मुझे वह काल जब ऋषि-मुनि अपने शरीर को त्याग देते हैं, तो वह एक लघु क्रिया होती हैं, और लघु क्रिया ऐसी होती है जिस क्रिया में मुनिवरों! वह अपने शरीर को आत्मा और शरीर पृथक हो जाते हैं। आत्मा और शरीर पृथक जब हो जाते हैं तो वह आत्मा कहीं भी भ्रमण करके उसी में वास कर सकता हैं। उसी शरीर में पुनः से वास कर सकता हैं और इसी से वह निकट आता है परन्तु प्राण की आभा और एक सूत्र में, प्राण सूत्रित हो करके बेटा! देखो, उसके श्वास की आभ्यां गति देता है गतिवान रहता हैं। परन्तु आत्मा अपने चित्त की प्रतिक्रियाओं को ले करके वह शान्त हो जाता हैं। तो बेटा! इस सन्दर्भ में जाना नही चाहता हूँ कहीं-कहीं ये प्रसंग उत्पन्न होता हैं क्या, आत्मा के बिना यह प्राण कैसे रहेगा? मैं यह कहा करता हूँ कि प्राण गति देता रहता है परन्तु आत्मा के आत्मा अपने मण्डल में प्रवेश हो करके मानो मण्डल में उसे सूत्र में सूत्रित किया जाता हैं तो बेटा! यह बड़ा गम्भीर एक लघु विद्या कहलाती हैं। इसको धारण करने के पश्चात मानव अपनी मानवीयता में मानव रत्त रहता है। तो बेटा! देखो, मुझे स्मरण आता रहता हैं, ऋषि-मुनि बेटा! अपने शरीर से, आत्मा को पृथक करके बेटा! वह किसी से वार्त्ता भी प्रगट कर लेते थे। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव प्रायः ऐसा करते रहे, और मुनिवरों! देखो, प्राण की क्रियाओं से ही मानव मानव की आत्मा से वार्त्ता प्रगट करता है। मेरे प्यारे! देखो, ये जो प्राण की कम्पन हैं, ये कम्पन मानो देखो, ब्रह्माण्ड की और कम्पनता से इस कम्पनता का समन्वय हो जाता हैं। मेरे प्यारे! देखो, वह जो कम्पायमान हो रहा हैं, यह बड़ी विचित्रता कहलाती हैं। तो विचार आता रहता है, बेटा! देखो, वह अपनी आत्मा शरीर को त्याग करके, आत्मा इस शरीर से निकस करके कहीं वार्त्ता प्रगट करके पुनः प्रवेश कर जाता हैं। तो बेटा! देखो, प्रवेश करके उसमें क्योंकि अनिमानी आत्मा नही है, इसीलिए उसमें गमन करता हैं और उसी लघु विद्या का अध्ययन करता हुआ, बेटा! देखो, वेदों का ज्ञान में पारायण बन जाता है। और वह स्वर संगम में प्रवेश हो करके, स्वर गमन करता है मेरे प्यारे! देखो, जितने भी संसार के क्रियाकलाप हैं, वे सर्वत्र इसी से सम्बन्धित रहते हैं। तो विचार आता रहता है कि हमारे यहाँ, जो योग का एक अनुपम विषय हैं, ये मानवीयता के लिए मानो देखो, बड़ा विचित्रतव माना गया है। जिससे वह लघु

मस्तिष्क में, विचारों के समूह को जागरूक करता हैं। प्राणों की धुक-धुकी लगा करके, मुनिवरों! देखो, उसको जागरूक बना देता हैं। मुझे स्मरण आता रहता है कि जब अपान और प्राण का दोंनो का समन्वय करते हुए, वह जब व्यान प्राण मे धुक-धुकी लगाता हैं, तो बेटा! देखो, अन्तःकरण में जो संस्कार है, उसको रूप में वह संस्कार सब उद्बुद्ध हो जाते हैं, और संस्कारों को उद्बुद्ध होने से मेरे प्यारे! देखो, उन्हीं संस्कारों से आवागमन बनता हैं, और वह देखो, उसका दर्शन करते हुए, मानो देखो, कितनी नस नाड़ियाँ हैं, उनका क्या-क्या क्रियाकलाप है, वह सर्वत्रता का अध्ययन करता है। तो बेटा! मैं इस सन्दर्भ में विशेष चर्चा नही प्रगट करूंगा, केवल विचार-विनिमय ये कि प्राणायाम और प्राण की विधियां अपने में धारण कर लेनी चाहिए। जिससे मुनिवरों! देखो, वह लघु विद्या को धारण करने वाला, वह लघु वृर्णियों में परिणत हो जाए। जैसे यज्ञशाला में, यज्ञमान जब विद्यमान होता हैं, तो मुनिवरों! देखो, यज्ञमान अपनी देवी से कहता है, हे देवी! आओ, हम देवताओं का आह्वान करें, जिससे देवता हमारे इस याग को सम्पन्न करें। तो मुनिवरों! देखो, वह दोनों आह्वान करते हैं, ब्रह्मवर्चोसि बनाने के लिए ब्रह्म से कहते हैं प्रभु! मेरी इन्द्रियों को पवित्र बनाईयें, यदि मेरी इन्द्रिय पवित्र हो जाएगी, तो मेरा याग भी सम्पन्न हो जाएगा। और यदि मेरी इन्द्रियों में पवित्रता नही आई, तो मेरा याग सम्पन्न नही होगा, इसीलिए मैं अपने को वर्चोसि बनाना चाहता हूँ, वह ब्रह्मणं बेटा! उद्गाता से वेदमन्त्रों की ध्वनि से ध्वनि कराता है, और वह ध्वनियों में ध्वनित हो करके ही मुनिवरों देखो, उस आभा को प्राप्त कर लेता है। इसी प्रकार जो योगेश्वर होता हैं, वह मुनिवरों! देखो, आत्मा और प्राण से इनका मिलान करके, इनका एक दूसरे में मिलान करते हुए, एक दूसरे में गठबन्धन होते हुए, बेटा! देखो, अपने में वह मानो उस आभा का दर्शन करते हैं, जिसको उसकी इच्छा होती हैं, वह भ्रमण भी कर लेते हैं। परन्तु ये जो प्राणां ब्रह्मा प्राणां सुते ये जो प्राणों का समूह है, जैसे दस प्राण हैं, तो दस प्राणों का मानो ये शरीर एक खम्बा हैं, और दस ही प्राणों के, दस ही खम्बे इस ब्रह्माण्ड में निहित रहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्माण्ड को जो जानां भू वर्णनं गति देने वाला है। व,ह परब्रह्म परमात्मा है, और मानो शरीर में जो देवतव हो रहा है, उसको मानो आत्मा अपने में धारण करता रहता है। इसीलिए आत्मा को जानना हैं, और आत्मा को जान करके बेटा! देखो, उसके ब्रह्माण्ड को जाना जाता हैं, तो ब्रह्माण्ड को जब जाना जाता है, तो बेटा! देखो, वह अन्त में मौन हो जाता हैं। क्योंकि इन्द्रियों का जो विषय है उससे आगे कोई विषय नही है, जब उसे पूर्ण रूप से जानता-जानता अन्तिम चरण सीमा पर चला जाता हैं, तो बेटा! वहाँ जा करके मौन हो जाता है, कोई भी इन्द्रिय हो कोई भी विषय हो कोई भी जब तक उसको चिन्तन करता-करता अन्तिम चरण नही दे देता, तब तक वह मौन नही होता, और वह मौन हो जाता हैं। इसी प्रकार बेटा! ये जो योगश्चित वृत्ति निरोध हैं, ये जो चित्त की वृत्तियों का निरोध करना है, वृत्तियों का निरोध करने वाला ही बेटा! देखो, लघु विद्या को जानने वाला हैं। जहाँ वेद में मन्त्र आते हैं, तो मन्त्रार्थ में परिणत हो जाता है। तो इसीलिए विचार आता हैं, कि वेद का मन्त्र यही कहता है, वेद की धारा यही कहती है, योग सम्ब्रहा क्या योग में जाने का प्रयास कर बेटा! योग कहते हैं दो वस्तुओं के मिलान का नाम इसी प्रकार बेटा! हमारे यहाँ मिलन होना चाहिए। जैसे चित्त की वृत्तियों का निरोध करता हैं, निरोध का अभिप्रायः ये कि वह चित्त की धाराओं को अपने में एकत्रित करता हैं, और एकत्रित करके जो-जो उसमें लघु वृत्तियाँ विद्यमान हैं, उन्हें वह भिन्न करता रहता हैं, और भिन्न-भिन्न करता हुआ, बेटा! देखो, मन और प्राण, दोनों को एक सखा बना करके एक सूत्र दे करके वह बेटा! देखो, चित्त के मण्डल में उसी में जो प्रायः क्रियाकलाप हो रहा है, बेटा! उसमें वह रत्त हो जाता हैं। गमन करने लगता है, और गमन करता हुआ बेटा! देखो, वह भूः भुवः और स्वः इन मानो देखो, इन तीन लोकों में वह गमन करने वाला है। और द्यौ में प्रवेश होता रहता है यदि भूः भुवः स्वः स्वः में बेटा! देखो, वह परिणत हो जाता हैं। तो बेटा! देखो, विचार आता रहता है

आज मैं तुम्हें योगिक ब्रह्मणे अनुशासन तो करो, अनुशासन करके चित्त में वृत्तियों को एकत्रित करो और एकतित्र करके मौन रह करके तुम विचारों मानो यह कहाँ तक यह यथार्थ हैं, मानो बेटा! देखो, वेद का मन्त्र कहता है परन्तु मानव जब इसके साथ क्रियाकलाप बनाता हैं, तो ब्रह्माण्ड के चक्र को वह अपने में धारण करता हुआ, वह अपने में चक्रित करता रहता हैं। तो बेटा! मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन करते हुए कहा था, मैंने तुम्हें ये कहा है कि प्राण की विद्या को जानना हैं, और मनस्तव के लिए ये आत्म तत्त्व की विद्या को जानना हैं, मेरे प्यारे! देखो, जब मेरी प्यारी माताएं, अपने गर्भस्थल के शिशु से वार्त्ता, योगाभ्यास के द्वारा मानो कर और अपने में वार्त्ता प्रहे चर्चाएं करते रहते है। मेरे प्यारे! माता वेदमन्त्र का उद्गीत गा करके कहती है कतमोसि कानामासि कणां ब्रहे कृतं जब वेदमन्त्रों का इस प्रकार उद्गीत गाती है माता मानो देखो, प्रायः कन्याएं अपनी गर्भ की आत्मा से वार्त्ता प्रगट करना और कुशलता की वार्त्ताओं में बेटा! उन्हें प्रवेश हो जाना, मेरे प्यारे! माताएं अपने गर्भ की आत्मा से चर्चा, जब परिचय नही प्राप्त हुआ, तो अपना स्वतः परिचय दे देती हैं। तो परिणाम ये होता है, यज्ञं ब्रह्मा कृतं देवत्वां वेद का मन्त्र यही कहता है कि तुम गर्भ की आत्मा को विद्या से जानने का प्रयास करो। बेटा! यह विद्या कहाँ-कहाँ रही है? मैंने कई कालों में प्रगट किया ये विद्याएं मुनिवरों! देखो, माता कौशल्या के द्वारा भी ये विद्या थी, वह एकान्त स्थली पर विद्यमान हो जाती और वह आत्मा से चर्चा करती रहती, और उसको कुशलता के आह्वान में रत्त रहना है। इसी प्रकार बेटा! देखो, जब द्वापर के काल में या त्रेता के काल में प्रविष्ट होते हैं, द्वापर के काल में तो बेटा! माता कुन्ती इस विद्या को जानती थी। मेरे प्यारे! देखो, विद्या क्या है? एक मानो वेदमन्त्र है उसका अध्ययन करना हैं, और गर्भ में जो शिशु विद्यमान हो गया है, वही मन्त्रों का उद्गीत गाना, माता ये चाहती है जिस देवता के स्वरूप में मुझे कौन से पुत्र या पुत्री को जन्म देना हैं। तो मानो देखो, माताएं उस विद्या का अध्ययन करना, उसी मन्त्र को देवतव के द्वारा देखो, उसका अध्ययन करना और उस पर मनन करना और मौन हो करके बेटा! देखो, प्राण में उस मन्त्र का प्रविष्ट करा देना, और प्रविष्ट करा करके प्राण सखा को ले करके, बेटा! वह अपने गर्भ के उस आत्मा से चर्चा करना, चर्चा करने के लिए बेटा! इसे योगावृत्ति कहते हैं, मेरे प्यारे! देखो, उसी में वह रत्त रह करके अप्रतं ब्रह्मा वर्णासुते मेरे प्यारे! देखो, माता यह जानती थी, क्या मुझे अमुक देवता के सम्बन्धी मानव को जन्म देना है। उसी का अध्ययन करना, और उसी के द्वारा मानो आहार करना उसकी वनस्पति ला करके जैसे इन्द्र देवता की सम्बन्ध में कहा जाता है कि इन्द्र देवता के सम्बन्ध में वह इन्द्र को जन्म देना हैं मानो इन्द्र से इन्द्र ब्रह्वे और माता वेदमन्त्र को ले करके मानो जो इन्द्र सम्बन्धी जो वेदमन्त्र हैं, उसको वह उद्घोष करती है, मनन करती हैं तो बेटा! देखो, मैंने यह श्रवण किया है कि माता उसी देवता के गुणों को सन्तान को जन्म देना। परन्तु देखो, प्राण सखा क्योंकि प्राण इन्द्र हैं, प्राण ही वेगवान हैं, इसी प्रकार बेटा! पवन भी वेगवान हैं और वेगां भू वर्णानं ब्रहे देखो, वेद के गमन करने वाला है। मेरे पुत्रों! देखो, जिस देवता के सम्बन्ध में माता चाहती है, उसी को जन्म दे देती है। परन्तु देखो, यह विद्या मनन में आनी चाहिए। जैसे मुनिवरों! देखो, उसी प्रकार का आहार होना चाहिए, जैसे इन्द्र एक आहार होता है, इन्द्र नाम की औषध होती हैं, इन्द्र में देखो, इन्द्र औषध बनाई जाती है, वट के द्वारा, वटेश्वर व्रणीति और देवो र्वसुतं मानो देखो, इन तीन औषधियों को जल में तपाया जाता हैं, और तपाने से पुनः खरल बनाया जाता हैं, तो माताएं मानो देखो, इस प्रकार का आहार करना, जल में तपा-तपा करके, उन औषधियों को देखो, मन्त्रों का जाप और देखो, उसके ऊपर अध्ययन करना, और प्राणायाम करना, तो माताएं बेटा! देखो, अपने गर्भ की आत्मा को मानो सुसज्जिता में दृष्टिपात करती रही हैं। और उसी देवता के गुणों को ले करके, देवतव को धारण करा देती हैं। तो बेटा! ये हमारे वैदिक साहित्य में नाना प्रकार की विद्याएं हैं और चित्त की वृत्तियों को मानो वह एकाग्र करके उसमें पुट लगा देती है तो विचार आता है बेटा! यह जो चित्त का मण्डल है

यह जन्म-जन्मान्तरों का समूह कहलाता हैं, इसमें संस्कार विद्यमान होते हैं, और मुनिवरों! देखो, उन संस्कारों को जागरूक करने के लिए, मानव प्राणायाम करता हैं। मानो साधना करता है, तरंगों को तरंगों से मिलान करता रहता हैं। मेरे प्यारे! देखो, मैंने तुम्हें माताओं के सम्बन्ध में, चर्चाएं की माता मानो देखो, इस संसार को देवता से पिरो सकती है माताएं देवता की आभा में रमण करा देती हैं। मैनें तुम्हें कई काल में प्रगट किया, कि महर्षि दुर्वासा इस विद्या को जानते थे, और दुर्वासा उसी को कहते हैं जो दुर्वं ब्रहे कृतं जो मानो देखो, अपने जीवन में महान हो, और महानता की आभा परिणात करता हुआ, देवियों को उसे अधिकार प्राप्त हो जाएं कि मैं इस विद्या को दे सकूंगा अथवा नही। उस विद्या को दे करके वह तप करता है, और तपस्या के द्वारा मन, बुद्धि, मन, मस्तिष्क को एकाग्र करता है और एकाग्र करके बेटा! देखो, उसे अपने आत्मा की पुट लगा देता है। और उसके पश्चात भी मुनिवरों! देखो, वह तपस्या में परिणात हो करके उस विद्या को पुत्रियों को प्रदान करता हैं। मेरे प्यारे! देखो, मैं बहुत दूरी नही जाना चाहता हूँ, विचार-विनिमय ये है कि मुनिवरों! देखो, मेरी पुत्रियाँ जब एकान्त स्थली में विद्यमान हो तो परमात्मा की चर्चा करें। जैसे महात्मा देखो, वशिष्ठ मुनि महाराज के यहाँ बेटा! जब अरूणधती वार्त्ता प्रगट करती थी, तो ज्ञान और विज्ञान की चर्चाएं करती रहती थी, ज्ञान और विज्ञान में अपनी उड़ाने उड़ना, और देखो, वशिष्ठ से, उनका उत्तर लेना, मेरे प्यारे! कहीं किसी काल में ब्रह्म ज्ञान की चर्चा, और किसी काल में मुनिवरों! देखो, वह अपने विज्ञान की चर्चाएं, क्योंकि वह विज्ञान अपने में सखा बना रहता हैं। तो विचार-विनिमय क्या, मुनिवरों! देखो, मैं आज इस सम्बन्ध में दूरी नही, परन्तु देखो, मन्त्रां पूर्णं ब्रह्मे वर्णास्सुता मेरे प्यारे! देखो, मन्त्रों का उद्गीत गाना, ये मेरी प्यारी माताओं का मुख्य कर्तव्य माना गया हैं। परन्तु उसी में वो रत्त रहना, उसी के अनुकूल सन्तान को जन्म दे करके, आहार को पवित्र बना करके, मेरे प्यारे! वह अपने में वर्णा ब्रहा विचार आता रहता है मैंने तुम्हें कई कालों में प्रगट करते हुए कहा, माता ये चाहती है मुझे एक वैद्यराज को जन्म देना है तो माता मानो वह चन्द्रमा की उपासना करती हैं, क्योकि चन्द्रमा में सब रस होता है, और वह रस मानो देखो, वनस्पतियों में प्रविष्ट हो जाता है, जब पूर्णिमा का चन्द्रमा होता है, वह सम्पन्न कलाओं से युक्त हो करके बेटा! वनस्पतियों में वह भरण करता है। और वह मुनिवरों! देखो, उन्होंने रस दे करके, वनस्पतियां अपने-अपने रसों को ले करके, अपना-अपना बखान करती रहती हैं। तो बेटा! देखो, उनको अपने में धारण करना, और माता मानो चन्द्रमा की कान्तियों में मुनिवरों! और वह देखो, अपने मुखारबिन्दु के द्वारा त्वचा के द्वारा प्रत्येक इन्द्रियों से बेटा! वह चन्द्रमा से समन्वय करना बेटा! चन्द्रमा से सोम को ग्रहण करना और वह सौम्य बन करके मुनिवरों! वह वैद्यराज बन जाते हैं। तो बेटा! मैं विशेष चर्चा नही दूंगा जैसे देखो, महात्मा अश्विनी कुमारों को देखो, महात्मा भुंजु के यहां दोनों का सुकेशनी यहाँ उनकी पत्नी थी उनके द्वारा उनका जन्म हुआ मानो देखो, चन्द्रमा को कहीं कृष्ण पक्ष में, कहीं शुक्ल पक्ष में बेटा! देखो, शुक्ल पक्ष में बेटा! बहुत-सी औषधियों को वह चन्द्रमा रस देता है, और बहुत औषधियों को शुक्ल पक्ष में रस देता है, और बहुत-सी औषधियों को बेटा! देखो, पूर्णिमा के दिवस रस देता है। तो देता हुआ मेरे पुत्रों! देखो, रसों में, मानो देखो, माता का अंग संग और कृत हो जाता है उसमें गर्भस्थल में जो विशेष आत्मा हैं, वह मानो देखो, उस आत्मा से उस आत्मा शरीर का शरीर से समन्वय हो करके, बेटा! देखो, उन औषधियों का ज्ञान, उसे परिणातं ब्रहे उसे ज्ञान हो जाता हैं, और उसी ज्ञान विज्ञान के द्वारा मुनिवरों! देखो, नाना प्रकार की उपाधियों को प्राप्त करता रहता हैं। आओ, बेटा! देखो, मैं इस सन्दर्भ में गम्भीरता में तुम्हें, ले जाना नही चाहता हूँ, क्योंकि ये विषय बड़े गम्भीर हैं, और ये विचारणीय है, परन्तु उनको विचारा जाएं, तो विचार आता रहता है, कि माताएं बड़ी भव्य होनी चाहिए। मेरे प्यारे! उन्हें गृहाश्रम में जाना हैं, जाने से पूर्व उन्हें वैदिक विद्या का ज्ञान होना चाहिए। और क्रियात्मकता में रमण करना चाहिए। मेरे प्यारे! औषधियों का खरल बना-बना करके अग्नि में

तपा करके पान करने की मानो देखो, उन्हें युक्ति आ जानी चाहिए।

तो विचार आता रहता है बेटा! आज का यह विचार क्या है आज बेटा! मैं तुम्हें ऐसी वार्त्ता प्रगट कर रहा हूँ, जो बड़ी विचित्र वार्त्ताएं हैं, बेटा! देखो, मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, महाराजा अश्वपति के यहाँ विद्यालयों में जब कन्याओं को शिक्षा दी जाती, तो उसी प्रकार के आचार्य और वह मुनिवरों! देखो, उसी प्रकार की विद्या प्रदान करना, जिस विद्या की उन्हें आवश्यकता है। बेटा! देखो, गृह आश्रम की बड़ी प्रबल एक विद्या हैं, जिसके ऊपर अध्ययन करने से, मेरे प्यारे! ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणी दोनों को पुनः अध्ययन करना हैं, और उसे अपने को अपने में ही परिणत करते हुए, मानो उसे जानना है, और जान करके बाह्य जगत में आना हैं। और बाह्य जगत से उसे आन्तरिक मुक्ति हो जानी हैं बेटा! जो आन्तरिक मुख हो करके जो तरंगें मानो देखो, चित्त मण्डल में प्रवेश हो करके, बेटा! आत्मा का जो ज्ञान विज्ञान हैं वह इतना अनुपम है बेटा! देखो, वह चित्त के मण्डल में विद्यमान रहता हैं, और चित्त किसे कहते हैं? मनं ब्रहे मानो देखो, मन बुद्धि, चित्त अहंकार चतुष्टय का नाम अन्तःकरण कहलाता हैं, और इसी में चित्त विद्यमान रहता हैं। और चित्रां भूतं ब्रह्मे क्योंकि चित्त उसे कहते हैं, जहाँ संस्कार विद्यमान होते हैं, और जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार जब विद्यमान होते हैं, तो बेटा! उस चित्त मण्डल कहते हैं, जैसे बाह्य जगत में परमात्मा का ये जो अन्तरिक्ष मण्डल हैं यह मानो एक चित्त का मण्डल कहलाया गया हैं। जिसमें नाना प्रकार की निहारिकाएं है जिसमें सौर मण्डल हैं और सौरमण्डल ही मुनिवरों! देखो, निहारिका में परिवर्तित हो जाते हैं। देखो, आकाश गंगा निहारिका में परिवर्तित हो जाती हैं, और वह मुनिवरों! देखो, वह जो निहारिका है वह अवन्तिका के रूप में मानो परिवर्तित हो जाती है, जिससे मेरे प्यारे! मेरी प्यारी माता को इतना ज्ञान हो वह नेति-नेति कह करके ब्रह्मवेत्ता को अपने गर्भ में जन्म देने वाली हों तो बेटा! मैं बहुत दूरी नही जाना चाहता हूँ। यह विचारों का तो वन है बेटा! केवल तुम्हें इतना उच्चारण करना चाहता हूँ, क्या प्रत्येक रूप में बेटा! देखो, चित्त के मण्डल को जानना हैं, चित्त के मण्डल में जैसे नाना प्रकार के लोक-लोकान्तर आकाश गंगाएं अवन्तिका सब यह सब परमात्मा के चित्त मण्डल में हैं। इसी प्रकार जब मानो देखो, योगाभ्यास करता है प्राणों का मिलान करता हैं प्राणों से प्राण का मिलन होता है तो मेरे प्यारे! देखो, वह परमात्मा का वह परमात्मा के हृदय से हृदय का अगम्य मिलान हो करके मेरे प्यारे! देखो, दोनों बाह्य और आन्तरिक जगत का दोनों का जहाँ समावेश हुआ, मेरे पुत्रों! देखो, ब्रह्माण्ड को दृष्टिपात करने वाले योगी ब्रह्माण्ड को सहज ही दृष्टिपात कर लेता हैं। मेरे प्यारे! देखो, इस शरीर को त्यागना शरीर में प्रवेश हो जाना यह सर्वत्र विद्या बेटा! वैदिक साहित्य में प्राप्त हो जाती हैं आज मैं इस सम्बन्ध में विचार नही देना चाहता हूँ। केवल विचार-विनिमय यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और देखो, चित्त मण्डल को जानते हुए और मानो देखो, अन्तरिक्ष को अपने में जानते हुए क्रियात्मकतव होना चाहिए। मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहता हैं एक समय बेटा! मुझे बेटा! बहुत पुरातन काल की वार्त्ता स्मरण हैं मुनिवरों! देखो, महाराजा अश्वपति के यहाँ एक समय पूज्यपाद गुरुदेव के द्वारा पंहुचे तो मुनिवरों! देखो, महाराजा अश्वपति की देवी ने यह कहा कि-प्रभु! देखो, हमारा जीवन राष्ट्र में होते हुए त्याग और तपस्या में हैं मैं यह चाहती हूँ, कि मेरा बाल्य एक ब्रह्मवेत्ता होना चाहिए और ब्रह्मवेत्ता बनाने की कोई युक्ति मुझे उसकी बताईए मेरे प्यारे! देखो, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने यह कहा-देवी! यदि तुम्हें ब्रह्मवेत्ता को जन्म देना हैं तो ब्रह्मवेत्ता तो वह होता है जो ब्रह्म कर बखान करना जानता हैं, उन्होंने यह कहा कि ब्रह्मवेत्ता तो वह होता हैं जो व्यष्टि और समष्टि को दोनों को जान करके अपने में क्रियात्मकता को धारण करता हैं। उन्होंने कहा ब्रह्मवेत्ता तो वह होता हैं, जो ब्रह्म को अपने में ब्रह्म को अपने में जो समावेश कर लेता हैं, उन्होंने कहा-प्रभु! मैं ऐसा ही चाहती हूँ, उन्होंने कहा-देवी! ब्रह्मवेत्ता वह होता है जिसको मोह नही होता वह मोह ममता से रहित होता हैं। उन्होंने कह-

प्रभु! वही तो ब्रह्मवेत्ता होता हैं, उन्होंने कहा तो हे देवी! तुम मानो देखो, यह वनस्पतियों का आहार करो, और वनस्पतियों का प्रत्येक माह का प्रत्येक मानो देखो, वनस्पति चर होना चाहिए और उस चर को नौ माह तक उसे ग्रहण करो मानो देखो, उस बाल्य को मोह नही होगा, ब्रह्म का बखान करो, ब्रह्म का चिन्तन करो और मानो देखो, समावेश करना जैसे रात्रि और दिवस अपने में समावेश हो जाते हैं। इसी प्रकार मेरी प्यारी माता को मानो देखो, बाह्य जगत और आन्तरिक जगत का समावेश करना हैं, और समावेश से ही मानो देखो, सम बनते हैं। मानो उसी से तुम्हारा हृदय और हृदय की जो अगम्य ज्योति है उस ज्योति का समन्वय मानो देखो, चन्द्रमा से मिलान करता हैं और चन्द्रमा की कान्ति मानो देखो, हृदय से मिलन करती हैं और हृदय से मिलन करती हुई मानो देखो, वही नस नाड़ियां के द्वारा तरंगों के रूप में (पुस्तक से) बाल्य के हृदय में नाभी के द्वारा वह तरंगित हो जाती हैं तरंगित हो करके उसी का हर रूप बना देता हैं नौ माह के पश्चात माता से एक ब्रह्मवेत्ता पुत्र का जन्म होता है, जो ब्रह्म का ही बखान करने वाला होता हो, वह पुत्र जितना भी ब्रह्मवर्चोसि होता है, उतना ही ब्रह्मज्ञान में रत्त रहने वाली मेरी प्यारी माता अपने में धन्य जो जाती हैं।

इसी प्रकार माता के गर्भस्थल से एक प्रतिष्ठित महापुरूष का जन्म होता है, और वह बड़ी सौभाग्यशाली है, वह माता और भी सौभाग्यशाली है, जो सहस्रों ऐसे प्रतिष्ठित व्यक्तियों से, मानो ऐसे-ऐसे महान गुणों वाला एक व्यक्ति का जन्म होता हैं जिसके हम वशिष्ठ कहते हैं, विज्ञानवेत्ता और आध्यात्मिकवादी ब्रह्मवादी ब्रह्म के समीप जाने वाला ब्रह्म को अपने में और अपने को ब्रह्म में प्रविष्ट करने वाला, ब्रह्मवर्चोसि ऐसा जो बाल्य है। ऐसा जो महापुरूष है वह महापुरूष जो ब्रह्म का बखान करता है। वह ब्रह्म की ही धारा में रत्त रहता हैं मेरे प्यारे! इस प्रकार उद्गीत गाते हुए ऋषि अपने में मौन हो जाता है विचार आता रहता है कि मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने ऐसी युक्तियां युक्त की थीं जिन्हें धारण करने के पश्चात हमारा अन्तरात्मा गद्-गद् हो जाता हैं।

योगभ्यास, योगं ब्रह्माः योगप्रमहा चित्त की वृत्तियों में तरंगें होती हैं और उन तरंगों में जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार विद्यमान होते हैं जब चित्त को तपा लिया जाता हैं तो वह सर्वत्र इन्द्रियों का विषय जान करके और जहाँ विषयों को अन्तिम चरण आ जाता हैं, वहाँ इन्द्रियाँ अपने में शान्त हो जाती है जहाँ इन्द्रियाँ शान्त हो जाती हैं वहाँ आत्मा के अनुभव का विषय रह करके आत्मा से परमात्मा का मिलान हो जाता करके मानव मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण करता हैं .....शेष अनुपलब्ध।

१३ लघु क्रियाओं को जानने वाला हों १९ ०५ १९९१

जीत रहो, देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव की महिमा का गुण गाना गाया जाता हैं, जो परमपिता परमात्मा अग्निमयी स्वरूप माने गएं हैं, मानो वे तेजोमय हैं, और ये ब्रह्माण्ड परमपिता परमात्मा का तेजोमयी जगत हैं मानव जिस तेज की उपासना करता रहा हैं, और परम्परागतों से ही, उस तेज को अपने में समन्वय करना चाहता हैं। तो इसीलिए परमपिता परमात्मा को तेजोमयी कहा जाता है, क्योंकि वह तेजों का नेतृत्व करने वाला है। आओ, मुनिवरों! हम तेजोमयी परमपिता परमात्मा की महिमा अथवा उसके गुणों का गुणवादन करते रहें क्योंकि वह तेजो का स्वामी हैं वह महातेजस्वी कहा जाता हैं हम उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान की महिमा का प्रायः वर्णन करते रहते हैं। कि वे परमपिता परमात्मा महान हैं, वह तेजोमयी है, और वह सर्वज्ञ हैं, वह हमारा पुरोहित कहलाता हैं। मानो वह हमारा पुरोहित है जिस पुरोहित से हम अपने को हम अपने में धारण करते रहते हैं, जिससे हमारी आत्मा का उत्थान होता हैं, हम आत्मवेत्ता बनते हैं, और ब्रह्मवर्चोसि बन जाते हैं, इसीलिए परमपिता परमात्मा को तेजोमयी कहा जाता हैं, वह ओजस्तव और पराविद्या के देने वाला हैं, हम उस परमपिता परमात्मा के लिए सदैव उपासना करते रहते हैं। तो मुनिवरों! आज का हमारा वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा का बखान कर रहा हैं मानो उस महान देव और वेदज्ञ प्रकाश में मुनिवरों! देखो, हमारे यहाँ परमपिता परमात्मा की महिमा का वर्णन आता रहा है। तो मुनिवरों! देखो, आज मैं तुम्हें विशेषता में तो ले जाऊंगा, केवल उपसंहार के लिए अपनी वार्त्ता उप वृत्तियों में रत्त करना चाहते हैं। जैसे मुनिवरों! देखो, हमारा कई समय से एक प्रकरण चल रहा हैं। और वह प्रकरण है कि आत्मा को परमात्मा से मिलान कराना और परमपिता परमात्मा के अनूठे जगत को विचारना और उसे अपने में धारण करना मुनिवरों! यह हमारा तेजोमयी ज्ञान हैं। कई समय हो गएं हैं, इस प्रकरण को लिए हुए कि हम चित्त की वार्त्ता प्रगट कर रहे हैं। मानो देखो, हमारे यहाँ चित्त नाम पृथ्वी को कहा जाता है, जिस पृथ्वी के गर्भ में मानो देखो, नाना अंकुर विद्यमान रहते हैं। एक और औषध है, उस औषध का एक अंकुर मानो देखो, पृथ्वी विद्यमान है, बीज रूप में और वह समय-समय पर आ करके मुनिवरों! देखो, उपजता रहता है, तो पृथ्वी मानो देखो, उसका चित्त मण्डल कहलाता हैं, जिसमें औषध, नाना स्वरूप को ले करके आती हैं, मानो देखो, एक औषध का अंकुर आज विद्यमान हो गया है। तो वह कई वर्षों में उपज सकता है, परन्तु एक वर्ष के पश्चात भी उपज जाता हैं, तो यह चित्त नाम की भूमि कहलाता हैं, जैसे मानव के शरीर में भी चित्त नाम की भूमि हैं, और वह चित्त मानो जिसमें संस्कार विद्यमान होते हैं। मानो वही संस्कार के रूप में बेटा! देखो, बाह्य जगत को धारण करते रहते हैं, और वही आन्तरिक जगत में विशाल मण्डल में प्रवेश होते रहे हैं, तो इसी प्रकार बेटा! देखो, चित्त के मण्डल को विचारना हैं, संस्कार बन जाते हैं एक मानो एक मानो स्मरण शक्ति एक वाक् की स्मरण शक्ति मानो द्वितीय स्मरण की जाएं, तो उसी का अंकुर बन जाता हैं। मेरे प्यारे! देखो, जैसे गृह किसी गृह में हम विद्यमान हैं, उस गृह के चित्र को बेटा! देखो, कई समय बेटा! अपने मन में और अपने मन मस्तिष्क में बेटा! उसको दृष्टिपात कर लिया जाता है। तो उसी का स्मरण शक्ति रूप बन करके बेटा! चित्त मण्डल में प्रवेश हो जाता हैं और उसी का संस्कार बन जाता है, वही संस्कारी पुरूष बन जाता है, तो मेरे प्यारे! देखो, वह संस्कार एक वर्ष में भी उपज सकते हैं, परन्तु वह संस्कार दो वर्ष में भी और मानो एक दिवस में भी मानो देखो, उसका आकार बनना उसको दृष्टिपात करना यह चित्त का मानो देखो, वह चित्त के मण्डल में इसे दृष्टिपात करता रहता हैं। मेरे पुत्रों! देखो, मैं बहुत समय से इसका

अध्ययन करता रहा हूँ, और गुरुओं के द्वारा इसके अध्ययन की प्रतिक्रिया को भी विचारता रहा हूँ, तो बेटा! देखो, यहाँ नाना प्रकार के संस्कारों की उपलब्धियां होती रहती है। जिन संस्कारों को ले करके हमारा मानवीय जीवन मानो पवित्रता की वेदी पर सदैव विद्यमान रहता हैं।

तो आओ, मेरे प्यारे! इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नही केवल विचार-विनिमय यह कि मानो पृथ्वी का नाम भी बाह्य जगत में बेटा! चित्त मण्डल कहा जाता है, इसमें बेटा! देखो, संस्कार विद्यमान होते हैं, और वह संस्कार मानो देखो, अपनी आभा में ही परिणत हो जाते हैं, जैसा बेटा! मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन कराया हैं आज भी मुझे स्मरण आता रहता है, मेरे प्यारे! जैसे देखो, स्वर्ण को आभूषण बना करके मेरी पुत्रियाँ अपने में धारण करती रही हैं। तो मानो देखो, उसी स्वर्ण के कण बन करके मानो देखो, सूक्ष्म तरंगें बन करके वह रेतस बन करके बेटा! वह वायुमण्डल में प्रवेश करती हैं, और प्रवेश करके वही अंकुर रूप में बेटा! पृथ्वी में विद्यमान हो जाती हैं। जो भी मानो धातु पिपाद है वह भी मानो पृथ्वी में हैं परन्तु उसी का स्थूल रूप बन करके बेटा! देखो, परमाणु अपने परमाणुवाद में मानो मिश्रित हो जाते हैं जहाँ से जिसका विच्छेद होता हैं वहीं मुनिवरों! देखो, उसका मिलन हो जाता है। वही मानो देखो, वह मिलन करके वह उसी में रत्त हो जाता हैं तो आओ, बेटा! देखो, इस सन्दर्भ में नही केवल विचार-विनिमय यह कि मानो जैसे हमारे यहाँ रत्नों की धातु है, उसका जन्म मानो पृथ्वी से होता है, और उसे आभूषण क्या अपने में मानो देखो, यन्त्रों में यन्त्रित करते रहे हैं। परन्तु देखो, उसका सूक्ष्म रूप बन करके रेतस बन करके वायुमण्डल में मानो प्रकृति बिखेर देती हैं, और वह उसी रूप में मानो देखो, अपने में ही अपनेपन में बेटा! देखो, वह दृष्टिपात आने लगते हैं। उसी में लय हो जाते हैं। इसी प्रकार जैसे बेटा! मानव के शरीर में अग्नि का व्यवधान होता रहता हैं। तो अग्नि मुनिवरों! देखो, अग्नि अपने में स्वरूप में प्रविष्ट हो जाती है। जब यह मानो देखो, शरीर का विच्छेद होता है और जब यह परमाणु बिखेर जाते हैं, तो बेटा! अग्नि का परमाणु अग्नि स्वरूप में प्रवेश हो जाता हैं, और जल का परमाणु जल में प्रवेश हो जाता हैं, और अग्नि का परमाणु मानो जल परमाणु और अन्तरिक्ष बेटा! अवकाश अन्तरिक्ष में और देखो, गति वायु में प्रवेश हो जाती है। तो बेटा! अपने-अपने स्वरूप में वह रत्त होता रहता है, तो प्रकृति का यह मानो चक्र चल रहा है, अनादि काल से बेटा! देखो, सूक्ष्म बनना स्थूल बनना स्थूल बन करके, पुनः सूक्ष्म बनना निर्माण होना, यह सब मानो देखो, उसी की हम प्रतिक्रिया कहलाती हैं। यह परमात्मा एक अनूठा एक जगत है, जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से बेटा! अन्वेषण कर रहा है, अनुसंधान कर रहा है, जैसे मुनिवरों! देखो, औषध का निर्माण होना, और औषध को स्थूल रूप बनना, और स्थूल से सूक्ष्म बनना रेतस बनना और उसका रूपान्तर हो करके बेटा! उसी रूप में परिणत हो जाना, यह सदैव मानो देखो, सृष्टि के प्रारम्भ से मानो यह प्रतिक्रिया प्रारम्भ रही हैं। और गतिवान होती रही है। तो हमारा वेद का मन्त्र यह कहता है सर्वणां कृतिका मेरे प्यारे! देखो, हम उस परमपिता परमात्मा के महान विज्ञान को जानने में सदैव मानो अपने में सफलता को प्राप्त करें बेटा! विज्ञानवेत्ता और आध्यात्मिकवेत्ता बनें जैसे बेटा! मेरे प्यारे! माता के गर्भस्थल में एक बिन्दु रेतस रूप में हैं, और रेतस रूप में बेटा! स्थूल रूप में बन जाता हैं। जब परमाणुओं का मिलान होता हैं। परन्तु देखो, वैज्ञानिक देखो, यौगिक पुरूषों ने यह दृष्टिपात किया, क्या एक-एक परमाणु में बेटा! देखो, ब्रह्माण्ड निहित हो रहा है। हमारे इस मानो शरीर में मानो देखो, कितने परमाणु हैं, और उस परमाणुओं में कितने ब्रह्माण्ड हैं, और कितनी मानो यह आकाश गंगाए और ब्रह्मा वर्णस कहलाया जाता हैं। तो बेटा! विचारने से प्रतीत होता हैं, यह जगत चित्त का मण्डल बड़ा सूक्ष्मतम रहस्यतम माना गया हैं। यह सब चित्त का मण्डल है, बेटा! चित्त में इनकी अनूभूति होती रहती हैं, और वही अनुभूति बेटा! देखो, वह सूक्ष्म में से स्थूल में और स्थूल को सूक्ष्मता में मानो यह परिणत होता रहता है। ऐसे ही बेटा! देखो, चित्त मण्डल में जब हम, किसी वाक् को मन

से दृष्टिपात करते हैं, तो मन से बेटा! बुद्धि उसे ग्रहण कर लगती हैं। और बुद्धि मेधावी बना करके वह मेरे प्यारे! देखो, चित्त के मण्डल में प्रवेश करा देती हैं, वही स्थूल रूप बन जाती है, वही सूक्ष्म रेतस बन करके बेटा! वह वहाँ से देखो, जहाँ से जन्म हुआ है, वही उसको देखो, जाना हैं, और उसी में प्रवेश हो करके पुनः जन्म लेना है, तो बेटा! देखो, वह प्रत्येक परमाणु की प्रतिक्रिया इसी प्रकार मानो देखो, उद्बुद्ध हो रही हैं, और ओजस बन रही हैं।

तो आओ, मुनिवरों! देखो, मैं तुम्हें विशेष चर्चा नही प्रगट करूंगा, केवल विचार-विनिमय बेटा! देखो, यह संसार एक दूसरे में रत्त हो रहा है सूर्य की किरण बेटा! सूर्य के साथ मानो स्थूल बन रही है, और स्थूल से सूक्ष्म बन रही है, और सूक्ष्म तुन्तुओं को ले करके पुनः बेटा! सूक्ष्म से रेतस बन करके और वह पुनः से देखो, वह स्थल बन करके अपनी आभा में परिणत हो जाती है। तो विचारने से प्रतीत होता है कि यह परमात्मा का जो अनुपम जगत है, इसके ऊपर मानव को अन्वेषण करना चाहिए। प्रत्येक मानव जो अपने अन्वेषण के साथ में गमन करता है। तो बेटा! वह भव्यतव में परिणत हो जाता हैं। तो आओ, मेरे प्यारे! मैं तुम्हें विशेषता में नही ले जा रहा हूँ केवल विचार-विनिमय यह कि हम परमपिता परमात्मा के अनूठे जगत को विचारने के लिए सदैव तत्पर रहें। तो बेटा! देखो, इसी प्रकार जब मुनिवरों! देखो, अनुशासन होता है, वह अनुशासन अनुशासन में परिणत हो जाता हैं, और अनुशासन मानो बहुत सूक्ष्मतम रहस्यों में चला जाता हैं। बेटा! यहाँ तक अनुशासन करता है, एक राष्ट्रीय सभा में विद्यमान हैं, तो बेटा! वहाँ राष्ट्रीय अनुशासन हो रहा हैं, एक अनुशासन वह है, जो इन्द्रियों पर अनुशासन हो रहा हैं, इन्द्रियों के ऊपर अनुशासन किया जा रहा हैं। उनमे भी मुनिवरों! देखो, जो प्रत्येक रूप में जो अनुशासन हैं। अन्तरिक्ष में किसी से समन्वय रहता है, तो किसी का पृथ्वी से हैं, तो किसी का मानो देखो, आपों से समन्वय रहता है। इसी प्रकार एक दूसरे के समन्वय मानो रत्त हो करके बेटा! वह स्थूल बनता हैं। उसके पश्चात विपरीत हो जाता हैं और वह सूक्ष्म रूप बन करके जहाँ से बेटा! उसका जन्म हुआ वहीं से बेटा! अनुशासन चला गया हैं मेरे प्यारे! देखो, अनुशासित होता हुआ मन, कर्म वचन के ऊपर प्रवेश करने लगता है, मन, कर्म, वचन पर अनुशासन हो जाता हैं, जब इन पर बेटा! अनुशासित होने के लिए बेटा! देखो, चित्त के मण्डल में प्रवेश करता है। इन्द्रियों का बेटा! देखो, प्रत्येक इन्द्रियों पर संयम करता हुआ वह पुनः चित्त के मण्डल में चला जाता है, और चित्त के मण्डल में बेटा! देखो, चित्त की जो प्रवृत्ति मानो धाराओं का जन्म हो रहा है। उसे उसी धारा में बेटा! देखो, योगेश्वर मन, कर्म वचन को अनुशासन में करता हुआ, कहीं बेटा! सूर्य की किरणों का दर्शन कर रहा है। कहीं चन्द्रमा की कान्ति का दर्शन कर रहा है। कहीं मानो लोक-लोकान्तरों को दृष्टिपात कर रहा है, मेरे प्यारे! उन किरणों का व्यवधान कर रहा है। जिन किरणों से बेटा! देखो, चन्द्रमा उन किरणों को ले करके उन्हें शीतल बना रहा है, उन्हें अमृतमयी बना रहा है बेटा! देखो, वही चन्द्रमा मानो देखो, अपने में कान्ति युक्त हो जाता हैं, तो विचारने से प्रतीत होता है, वह चित्त की जो प्रवृत्ति हैं, उनका जन्म होता है, और जन्म हो करके बेटा! देखो, उनको दृष्टिपात किया जाता है। उन्हीं चित्त की वृत्तियों का निरोध करता हुआ, मेरे प्यारे! देखो, इस ब्रह्माण्ड को अपने में दृष्टिपात करने लगता हैं।

मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहता है लघु मस्तिष्क में जब चित्त की वृत्तियों वाला गमन करता है, तो बेटा! देखो, लघु मस्तिष्क में एक और मस्तिष्क होता है, जिसको रेणवृत्तिका मस्तिष्क कहते हैं और रेणकेतु मानो देखो, वृत्तिका मस्तिष्क में जब देखो, लघु मस्तिष्क की धाराएं जाती हैं तो बेटा! वह लोक-लोकान्तरों में भ्रमण करने लगता है, वह प्रवृत्ति मानो देखो, लोकों में परिणत हो जाती हैं उसके पश्चात एक लघु मस्तिष्क एक रेणकेतु वृत्तिका मस्तिष्क कहलाता है। एक माम् भानु मस्तिष्क कहलाता हैं। बेटा! देखो, जिसमे वह चित्त के नाना प्रकार

की धाराओं को गमन करा करके बेटा! ब्रह्माण्ड को अपने में दृष्टिपात करके बेटा! ब्रह्माण्ड को खिलवाड़ बना करके और जहाँ चित्त मण्डल देखो, विशेष विशाल चित्त मण्डल है। जिसको अग्नि अपनी धाराओं पर विद्यमान हो करके द्यौ से ऊर्ध्वा में गमन करा करके बाह्य जगत में और बाह्य जगत वाला ही आन्तरिक जगत में प्रवेश करके उसको साक्षात्कार दृष्टिपात करने लगता हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, यह तो बड़ा विशाल मण्डल हैं, आज मैं इस मण्डल की वार्त्ता मैं आज तुम्हें इसीलिए उद्गीत गाने के लिए आया हूँ, पुत्रों! क्या हमारा जो मानवीयतव है, यह बड़ा विचित्र है, मानो देखो, परमात्मा का यह जो जगत है जो चित्त मण्डल में एक-एक धारा उत्पन्न हो रही हैं, मुझे बेटा! एक वाक् स्मरण आ रहा हैं एक समय बेटा! देखो, महर्षि विभाण्डक और मुनिवरों! देखो, महर्षि वैशम्पायन भयंकर वन में दोनों विद्यमान थे, और वह मुनिवरों! देखो, बारह वर्ष का दोनों ने एक अनुष्ठान किया और अनुष्ठान इसीलिए कि हम चित्त के मण्डल को जानना चाहते हैं। तो बेटा! चित्त के मण्डल को जानने के लिए वह मुनिवरों! देखो, एक दूसरे के प्राण को प्राण को प्राण में समाने लगे बेटा! देखो, जैसे उदान प्राण है, उदान प्राण में जब समान प्राण की पुट लगा दी जाती है, तो बेटा! वही प्राण मानो देखो, आत्मा के समीप जाता है, और आत्मा से मानो देखो, ज्ञान की धाराओं को ले करके मेरे प्यारे! आत्मा उनका दर्शन करने लगता हैं। मुनिवरों! देखो, चित्त मण्डल में प्रवेश होते हुए, वह चित्त में बेटा! एक धारा उत्पन्न हुई उस धारा मानो सूक्ष्म रूप बनाया और सूक्ष्म रूप बना करके बेटा! एक-एक धारा में मेरे प्यारे! देखो, जैसा यह ब्रह्माण्ड हैं, ऐसे-ऐसे बेटा! देखो, लाखों ब्रह्माण्ड उन्हें दृष्टिपात आने लगते हैं, मेरे प्यारे! देखो, वह योगश्चित्त मानो देखो, अपने में योगी अपने में धारयामि बनने लगता है तो आज बेटा! देखो, मैं जब आन्तरिक जगत में प्रवेश हो करके बाह्य जगत में प्रवेश करता हूँ तो बेटा! देखो, पृथ्वी से गमन करने वाला योगेश्वर बेटा! अपने प्राण को अपान को मिलाता हुआ वह जल में मुनिवरों! देखो, जलस्तव में अप्रेति बन जाता है मेरे प्यारे! देखो, उससे ऊर्ध्वा पृथ्वी में जब उड़ाने उड़ता हैं तो मुनिवरों! देखो, वह अन्तरिक्ष में उड़ाने उड़ने लगता हैं रेचक और कुम्भक मानो देखो, प्राणायाम करता हैं जब कुम्भक प्राणायाम करता है, मेरे प्यारे! उसे संकल्प प्राण से जब मिलान करता है खेचरी मुद्रा की पुट लगाता है तो मेरे प्यारे! देखो, उसका आसन वायुमण्डल में मानो गमन करने लगता है, मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण हैं ये प्रतिक्रिया देवर्षि नारद मुनि जानते थे। मेरे प्यारे! नारद मुनि और महर्षि व्रेति मुनि महाराज और मुनिवरों! महर्षि पिप्लाद यह इस प्रतिक्रिया को जानते थे। तो बेटा! समुद्र के तट पर विद्यमान हो करके और महाराजा गणेश जी जो मुनिवरों! देखो, ये महाराजा शिव के पुत्र कहलाते थे राजस्वनं ब्रहे मेरे प्यारे! यह समुद्र के तट पर विद्यमान हो करके उन्हीं प्रतिक्रियाओं में लगे रहते, प्रथम तो क्रिया, उन्होंने ये जानी कि मानो देखो, हम जल में, अपने स्थूल को मानो देखो, ऊपरी करण करा सकते। तो बेटा! हमने वह अपने में सिद्ध हो गएं और द्वितीय उन्होंने अन्तरिक्ष में कुम्भक और रेचक प्राणायाम से मानो अपने शरीर को इतना मानो देखो, वायु इसमें भरण कर लेते हैं, और वायु का भरण करके प्राण सखा को मानो देखो, एक दूसरी में दूसरी पुट में पुट लगाते रहते हैं, तो बेटा! देखो, आत्मवान मानो प्राणायाम करने से अन्तरिक्ष में गमन करने लगता है। अन्तरिक्ष में रत्त होने लगता है। मेरे प्यारे! देखो, जब अन्तरिक्ष में वह मुनिवरों! नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों में, देवर्षि नारद मुनि तो अपनी चरण पादुका के पादुका वह अपनी मानो चरण पादुका के ऊपर विश्राम करते हुए वह बेटा! देखो, आज पृथ्वी मण्डल से हैं तो बेटा! कल वह मानो देखो, चन्द्रमा में गमन कर रहे हैं चन्द्रमा उड़ाने उड़ करके बेटा! मंगल इत्यादि लोकों में रमण करने लगते हैं इसी प्रतिक्रिया को ले करके बेटा! देखो, महर्षि तत्त्व मुनि के यहाँ यन्त्रों का निर्माण हुआ, यही मुनिवरों! देखो, लंका में देखो, रावण के राष्ट्र में भी नारायन्तक ने उन यन्त्रों का निर्माण किया जिन यन्त्रों में आवागमन बना परन्तु देवर्षि नारद मुनि की ये विशेषता रही है उनके जीवन में क्या वह मुनिवरों! देखो, अपनी

चरणा पादुका के यन्त्रों का निर्माण भी करते थे परन्तु देखो, अपने शरीर को देखो, बहुत सूक्ष्म बना करके उन चरण पादुका में विद्यमान हो करके बेटा! देखो, इस लोक में पृथ्वी से उड़ान आज पृथ्वी मण्डल में हैं तो कल बुद्ध में हैं और बुद्ध से उड़ान उड़ते हैं, तो शुक्र में हैं, मानो शुक्र उड़ाने उड़ते हैं तो मंगल में गमन कर रहे हैं तो विचार आता है बेटा! वह नाना प्रकार मानो देखो, उन पादुका के ऊपर विद्यमान हो करके बेटा! प्राण खेचरी मुद्रा में मेरे प्यारे! रेचक और कुम्भक की पुट लगी हुई हैं, और वह रेचक और कुम्भक की पुट लगा करके और मानो संकल्प प्राणायाम के द्वारा संकल्प मात्र से वह उड़ाने उड़ते थे, बेटा! देखो, लोक-लोकान्तरों की उड़ान उड़ना, वहाँ की वार्त्ता लाना मेरे प्यारे! देखो, वह पुनः अपने आश्रम में प्रवेश हो जाते हैं। तो विचार आता रहता है बेटा! यह लघु क्रिया कहलाती हैं, यह लघु क्रिया है, जो मस्तिष्क से समन्वय और उदर से भी समन्वय रहता है। इनका तो बेटा! देखो, इनका वायुमण्डल से कहीं मुनिवरों! देखो, आपो से समन्वय रहता हैं कहीं अन्तरिक्ष और अग्नि की इनमें पुट लगा करती हैं कहीं मानो देखो, प्राण अपान को इसमें मिलान कर दिया जाता हैं, तो बेटा! इस प्रतिक्रिया में तुम्हें इस प्रकार नही ले जाना चाहता हूँ, केवल यह क्या मुनिवरों! देखो, योगी अपने में कितना मानो ओजस बन जाता है और कितना उसे सामर्थय होता है वह गमन करता है। एक-एक परमाणु में बेटा! जो ब्रह्माण्ड का दर्शन करने वाला है, वही तो मुनिवरों! देखो, अपने में दृष्टिपात करता रहता हैं।

तो आओ, मेरे प्यारे! मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नही प्रगट करने आया हूँ केवल यह कि लघु वर्णत कहलाता है, बेटा! देखो, इसी प्रतिक्रिया में क्रिया को आगे ले करके जब चित्त के मण्डल में अनुशासन करता है, चित्त में अनुशासन करने लगता है तो बेटा! संस्कार उपजने लगते हैं, वह जैसे मुनिवरों! देखो, पृथ्वी के गभ में बीज रूप में बेटा! देखो, अंकुर विद्यमान रहते हैं। इसी प्रकार संस्कारों के जो अंकुर होते हैं, उनके कारण देखो, मानव के आवागमन में प्रवेश करता रहता हैं, तो मुनिवरों! देखो, वह अंकुरों को वह संस्कारों के रूप में अपने को दृष्टिपात करते रहे हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, विचार आता है कि मैं जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार उपजने लगते हैं और उपजते हुए बेटा! देखो, मुझे स्मरण है वैश्म्पायन और मुनिवरों! देखो, महर्षि और महर्षि विभाण्डक जब दोनों इस प्रतिक्रिया में पंहुच गएं। तो बेटा! देखो, वह कई सौ वर्ष के संस्कारों को अपने में ही दृष्टिपात करते रहते थे, बेटा! मुझे बहुत-सा काल स्मरण है मेरे पूज्यपाद गुरुदेव जब तपस्या में लीन रहते, तो मानो वह संस्कारों को उद्बुद्ध करते रहते थे, एक समय बेटा! उन्होंने ऐसे संस्कार को अपने में जागरूक किया, कि मानो उनका जीवन मानो देखो, देवी में परिणत हो गया, देवी के स्वरूप में हैं, कहीं मानो देखो, वह पुरूष के रूप में हैं कहीं वह अन्तरिक्ष में गमन करने वाले पक्षियों के रूप में हैं, बेटा! नाना प्रकार के संस्कार जागरूक हो जाते हैं, तो बेटा! देखो, वह उन्हीं के ऊपर वह अन्वेषण अथवा पुनः उन्हीं को जानने के लिए तत्पर हो जाते हैं। जिनसे उनकी प्रतिक्रिया एक महानता में परिणत हो जाती हैं, अथवा परिवर्तित हो जाती है, जिससे वह अपने में अपने का दर्शन करने लगता है, और अपने में अपने का दर्शन करने वाला ही बेटा! देखो, महान बन जाता हैं।

तो आओ, मेरे प्यारे! मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट नही करने आया हूँ, केवल यह विचार मैं उपसंहार के रूप में प्रगट कर रहा हूँ, तो विचारवेत्ता यह कहते हैं बेटा! अपने में अपनेपन को विचारते रहते हैं तो महर्षि वैशम्पायन और विभाण्डक मुनि महाराज और मुनिवरों! देखो, महर्षि पिप्लाद अपने देखो, समुद्रों के तट पर विद्यमान हो करके बेटा! इस प्रकार की साधना करते रहे। साधना करने वालों में गणेश जी बड़ी साधना में जिसकी घ्राण शक्ति बड़ी प्रबल थी बेटा! देखो, समुद्रों में जिस प्रकार की गन्ध आती रहती थी, उसी को वह श्रवण करते और गन्ध के परमाणु को ले करके यन्त्रों का निर्माण करते रहते थे भौतिकवाद के वह भौतिक विज्ञान और आध्यात्मिक विज्ञान दोनों में पारायण कहलाए गएं। तो बेटा! देखो, यह तीनों तप्रहा चतुर्थ ऋषियों ने अपने में अपनेपन को विचारते

रहते थे, तो मेरे प्यारे! देखो, समुद्रों को लांघ जाना समुद्रों की प्रतिभा में गमन करना समुद्र के आन्तरिक जगत में गमन करना यह सर्वत्र मानो देखो, लघु प्रतिक्रिया कहलाती हैं। जिसके ऊपर बेटा! मानव परम्परागतों से अनुसन्धान करता रहा हैं, विचार-विनिमय करता रहा है और वह यह चाहता है कि मेरा चित्त संस्कारों से विहिन हो जाएं। तो मैं मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण कर लूं। वह उपदेश केवल उनका यह है यह कहता है कि मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण करना मेरा कर्तव्य हैं, तो आओ, मेरे प्यारे! मैं तुम्हें विशेषता में न ले जाता हुआ केवल विचार-विनिमय यह कि मानव अपनी आभा में कहाँ-कहाँ चला जाता है। किस प्रकार का वह अन्वेषण करने लगता है। किस प्रकार की धाराओं में रत्त हो जाता है, और उन धाराओं का वह कैसे प्रत्यक्ष दर्शन करता है, बेटा! यह देखो, शिकामकेतु उद्दालक के यहाँ भी यह प्रतिक्रियाएं प्राप्त होती रही हैं। तो आओ, मेरे प्यारे! देखो, विचार क्या यह अपने में समुद्र के तटों पर विद्यमान हो करके साधना में परिणत हो गएं जब मुनिवरों! देखो, ईंगला, पिंगला, सुषुम्णा यह तीनों नाड़ियाँ जब ब्रह्मरन्ध्र में प्रवेश कर जाती हैं क्रियाओं से तो बेटा! देखो, ब्रह्मरन्ध्र में उनका ऊर्ध्वा मुख हो जाता है, और ऊर्ध्वा मुख हो करके मानो देखो, उनका जो समन्वय है वह कहीं सूर्य से तो कहीं आकाश गंगा से हैं, कहीं निहारिकाओं से हैं, तो बेटा! देखो, अवन्तिका अवन्तं ब्रह्मा अवन्तिका तक बेटा! उसकी अवृत्तियाँ प्रबल हो जाती हैं। तो विचार आता रहता है हमें बेटा! चित्त के मण्डल को विचारना है यह तो परमात्मा का अनुपम बाह्य चित्त हैं, अथवा इसके ऊपर भी हमें दृष्टिपात करनी हैं, बाह्य जगत और आन्तरिक जगत का दोनों का एक तो समन्वय करना है, दोनों प्रकार के जगत को बेटा! विचार करके हमें गमन करना है। संसार में तो आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा न देता हुआ विचार केवल यह बेटा! अनुशासन कितना प्रबल हैं, अनुशासन में देखो, कितना जगत विद्यमान रहता है, यह अनुशासन है जो बेटा! चित्त की वृत्तियों को वह निरोध करता है, और निरोध करके जहाँ का वह चित्त मण्डल जहाँ की वह तरंगें वही तरंगों को पंहुचा देना है। अथवा उसे वहीं गमन करा देना है। तो बेटा! देखो, चित्त की वृत्तियों को निरोध करके मानो उसका विभाजन करता है। उसमें लोक-लोकान्तरों का दर्शन करता है, और दर्शन करके बेटा! उसको विभक्त क्रिया ला देता हैं, वही विभक्त क्रिया है, जो बेटा! देखो, चित्त के मण्डल से चित्त से समन्वय रहता हैं, वृत्तियाँ उसे कहते हैं, जो बेटा! तरंगें कहलाती हैं, तरंगों के रूप में रहती हैं वही स्थूल को धारण करके वही मनोनीतता में प्रवेश हो करके बेटा! उसी में रत्त हो जाती है। आओ, मेरे प्यारे! मैं तुम्हें विशेष चर्चा नही देने आया हूँ, केवल विचार-विनिमय यह कि मुनिवरों! देखो, चित्त की वृत्तियों का समन्वय जब मेरी प्यारी माता अपने में अनुसन्धान करने लगती हैं, तो बेटा! देखो, माता के गर्भस्थल में शिशु विद्यमान हैं, और शिशु को माता जो भी बनाना चाहती हैं, साधक बनाना चाहती है माता साधना करती है और माता साधना करके बेटा! प्राणायाम करती हैं और प्राणायाम से बेटा! अन्तरिक्ष का यह जो अमूल्य जगत है इसको प्राण को वहाँ फेंक देती हैं, और मानो तिलांजली दे करके प्राण का संचय करती हैं और संचय करके उसको उदान प्राण से समन्वय करती हुई बेटा! देखो, यह बाल्य माता के गर्भस्थल से नाभि से जिसका समन्वय रहता हैं। वही नाभि केन्द्र से जो नस नाड़ियों का एक सूर्य केतु नाम की नाड़ी हैं, एक अणीत नाम की नाड़ी हैं, एक सोम ब्रहीति नाम की नाड़ी हैं, बेटा! तीनों नाड़ियों का समन्वय हो करके बेटा! माता के गर्भस्थल में बेटा! जो शिशु हैं, अथवा उसके मस्तिष्क से उस नाड़ियों का समन्वय होता है, और समन्वय हो करके मुनिवरों! देखो, बालक अमृतां भू वर्णनं ब्रह्मे वह वहीं बेटा! देखो, अपने संस्कारों को ग्रहण कर रहा हैं। माता उसे संस्कार दे रही है, बेटा! देखो, मुझे आधुनिक काल का तो इतना प्रतीत नही परन्तु मैं यह सतोयुग के काल में भी देवियों का दर्शन करता रहा हूँ। और भी कालों में त्रेता, द्वापर के काल में भी दर्शन करता रहता हूँ, बेटा! माता जब तपस्वी हो जाती है, माता में जब तप आ जाता हैं, तो बेटा! राष्ट्र और समाज और गृह मुनिवरों! देखो, सर्वत्र पवित्र बन

जाते हैं। तो आओ, मेरे पुत्रों! मैं तुम्हें इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नही देना चाहता हूँ विचार-विनिमय यह कि केवल हम अपने में अपनेपन का एक उग्र रूपों में दर्शन करते रहते हैं। जिन दर्शनों के लिए हम सदैव परम्परागतों से बेटा! अन्वेषण होता रहा हैं विचार-विनिमय होता रहा है इन दर्शनों की प्रतिभा में जाने के पश्चात हमारी मनोनीतता में पवित्र धारा परिणतं ब्रहे और वह अपने में अपनेपन का ही भान होता रहता है।

तो आओ, मेरे पुत्रों! मैं इस सन्दर्भ में विशेष चर्चा तो देने नही आया हूँ, केवल विचार-विनिमय ये कि हम परमपिता परमात्मा का दर्शन करते हुए और अपने योगश्चित वृत्तियों को निरोध करते रहे और उन्हें एकाग्र करके बेटा! जन्म-जन्मान्तरों के संस्कारों को उद्बुद्ध करते रहें, और उस उद्बुध्द जब ही हो सकेंगें, जब हमारा मुनिवरों! देखो, वृत्तियों में रत्त रहेगा। मुझे स्मरण है। बेटा! देखो, सीता ने यही कहा था सीतं ब्रहे मेरे प्यारे! देखो, सीता का जब जन्म हुआ, तो मुनिवरों! देखो, उसने भी राष्ट्र के अन्न को ग्रहण नही किया वह ये विचारती थी कि मेरे गर्भ से पुत्र हो या पुत्री हो, परन्तु वह महान हो। इसी प्रकार माता कौशल्या का जीवन जब राम जैसे सखा माता के गर्भस्थल में विद्यमान हैं। तो माता गायत्री छन्दों का पठन-पाठन और प्राणायाम करती हुई बेटा! देखो, वह उस अन्न को ग्रहण करती जिस अन्न से स्वयं पुरूषार्थ करके कला कौशल करके और जो द्रव्य आता था, उसके बदले उसे ग्रहण करती थी। मेरे पुत्रों! देखो, उससे निर्माण हो रहा है, उसी अन्न से रस होता हैं। उससे मज्जा बनता हैं। और मज्जा बन करके बेटा! देखो, वही रेतस बन करके माता के गर्भस्थल में बेटा! नस नाड़ियों में प्रवाहित हो करके और शिशु के नस नाड़ियां में मानो देखो, उसमें रमण कर रहा है, तो बेटा! वही संस्कार बन रहे हैं। तो विचार आता है बेटा! आज मैं तुम्हें विशेषता में नही ले जा रहा हूँ, केवल विचार-विनिमय यह विद्या को हमें जानना है ये यौगिक विद्याएं, यौगिक प्रतिक्रिया कहलाती हैं, जिनके ऊपर बेटा! हम सदैव अन्वेषण करने वाले हों, और विचार-विनिमय करने वाले हों, बेटा! आज मैं तुम्हें ये उद्गीत गाने आया हूँ, कि परमपिता परमात्मा का जो अनूठा जगत है, ये बड़ा विचित्र जगत हैं, इसके ऊपर देखो, मानव को अपने में अपनेपन को अपनेपन में धारण करना चाहिए। जिससे बेटा! देखो, जीवन एक महान बने, पवित्र बने, और उसी पवित्रता को ले करके मुनिवरों! ये मानव समाज और मानवीयतं देवतं को प्राप्त करता हुआ, सागर से पार हो जाएं। आओ, बेटा! आज मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नही आया हूँ, मैं केवल संक्षिप्त परिचय देने आया हूँ। यह बेटा! देखो, इससे आगे की चर्चा तो मैं तुम्हें कल ही प्रगट करूंगा, आज का विचार तो केवल ये क्या मुनिवरों! देखो, मानव देखो, लघु क्रियाओं को जानने वाला हों, और अपने में अपनेपन को विचार-विनिमय करने वाला हो, यह है बेटा! आज का वाक् कल मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा। अब वेदों का पठन-पाठनह होगा इसके पश्चात यह वार्त्ता समाप्त हो जाएगी। ओ३म् देवाः आभ्यां रेवं भविता मा गताः ओ३म् देवं भवि वरुणाश्चमा गतं आभ्यां देवाः ओ३म् रहं गतं मन्था वायु रेवा अच्छा भगवन्!।

१४ अनुशासन की चर्चा २० ०५ १९९१

जीते रहो, देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से उस पवित्र वेदवाणी का प्रसारण होता रहता हैं, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता हैं, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गएं हैं, और उसका ज्ञान और विज्ञान भी अनन्तमयी माना गया हैं। क्योंकि प्रत्येक मानव, परम्परागतों से ही, उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान के ऊपर अन्वेषण होता रहा हैं, और ऋषि-मुनि अपनी-अपनी स्थलियां पर विद्यमान हो करके, अपने में मानो देखो, चिन्तन करते रहे हैं, और उस परमपिता परमात्मा को पुरोहित के नामों से वर्णन किया जाता हैं। वे परमपिता परमात्मा पुरोहित है, और वह पराविद्या के देने वाला हैं, तो हम उस अपने पुराहित के लिए उपासना बद्ध हैं, और उसकी जो उपासना में हम रत्त होते हैं, तो उसका ज्ञान और विज्ञान हमारे समीप आना प्रारम्भ हो जाता है। और हम उस ज्ञान और विज्ञान में अपने को ले जाते हैं, इसीलिए हमारा वेदमन्त्र, अपने में उद्गीत गाता रहता है अपने में ओजस बना हुआ हैं, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा का बखान करता रहता है, अथवा उसकी महिमा का गुणगान गाता रहता हैं, तो इसीलिए हम परमपिता परमात्मा की महती और उसकी महानता को हम सदैव जानने वाले बनें, क्योकि प्रत्येक मानव अपने में अपनेपन को ही धारण करता रहा हैं, बेटा! मैं कई कालों से तुम्हें एक वार्त्ता प्रगट करा रहा हूँ क्योंकि मानव जब अन्वेषण करता है, तो कहीं का कहीं चला जाता हैं और जब वह योगाभ्यास में परिणत होता है तो मानो वह ब्रह्मरन्ध्र से ले करके और वह मूल तक उस परमपिता परमात्मा को उसकी आभा में दृष्टिपात करता रहता हैं, क्योंकि जब तक हम अपने को नही जान पाते हैं, हम उस परमपिता परमात्मा को भी नही जान पायेंगें। क्योंकि हमें अपनेपन को जानना बहुत अनिवार्य है जो अपने को जान लेते हैं तो अपने में अन्वेषण करने लगते है अपने में अन्वेषण करके मानो देखो, ब्रह्म की चर्चाएं अथवा यह लोक परलोक सबमें वह गमन करने वाला बन जाता हैं।

तो आओ, मुनिवरों! आज का हमारा वेदमन्त्र हमें कौन-सी आभा प्रगट करा रहा हैं, अथवा प्रेरणा दे रहा है। क्योंकि प्रत्येक मानव परम्परागतों से प्रेरणा का स्रोत रहा है और प्रेरणा में रत्त हो करके, अपने में प्रेरित होता हुआ, और अपने में ही मानो देखो, सर्वत्रता को दृष्टिपात करने लगता हैं। बेटा! मैंने तुम्हें कई कालों में प्रगट करते हुए कहा था कि हमारे मस्तिष्क के द्वार पर मानो तीन प्रकार की नाड़ियाँ होती हैं, वह तीन नाड़िया देखो, जिसका समन्वय एक नाड़ी है, वृत्तिका नाड़ी उसका समन्वय बेटा! वायु से होता हैं, एक तेजस नाड़ी कहलाती है जिसका सम्बन्ध अग्नि से रहता है, और एक मानो देखो, तृतीय नाड़ी का नाम रेतसस्वात नाम की नाड़ी कहलाती हैं। मानो जिसका समन्वय पृथ्वी तत्त्व से गुरूतव से रहता हैं। तो मेरे प्यारे! ये तीन प्रकार के परमाणु कहलाते हैं, मानो तीनों प्रकार के परमाणुओं में सबसे प्रथम मानो तेजोमयी कहलाते हैं, उसके पश्चात मानो गुरूतव और तरलतव ये तीन प्रकार के मानो देखो, परमाणु इस वायुमण्डल में गमन करते रहते हैं। और वायु से मानो उस नाड़ी का जो समन्वय होता हैं, तो वह नाड़ी मानो देखो, अपने में ब्रह्मरन्ध्र से और त्रिवेणी तक उसका स्थान होता हैं हमारे यहाँ देखो, जहाँ ईंगला पिंगला सुषम्ना तीन प्रकार की नाड़ियां का जहाँ समन्वय होता हैं, बेटा! उसी का नाड़ी का ऊर्ध्वा मुख बन करके, ब्रह्मरन्ध्र में बेटा! एक नाड़ी बन जाती हैं। और उस नाड़ी में से ब्रह्मरन्ध्र में जहाँ बेटा! चक्रिका गमन की, तो जितने भी लोक-लोकान्तर है, अथवा उनका जो जीवन है लोक-लोकान्तरों में उस जीवन को वह भली भांति ब्रह्मरन्ध्र में बेटा! वह उसका अनुभव करने लगता हैं। तो ये योगियों की एक प्रतिभा मानो एक प्रतिभा मानो जानकारी में लाने के लिए बहुत पुरातन काल में, ऋषि-मुनियों ने बेटा! अपने में अनुसन्धान किया,

और अपने में अपनेपन को विचारता रहा हैं। तो मुनिवरों! देखो, वह व्रत्यं ब्रह्मा वर्णस्सुतं प्रद्बे लोकाम् तो वेद का ऋषि बेटा! अपने में बेटा! बहुत ऊर्ध्वा में उड़ाने उड़ता हैं। तो मुनिवरों! देखो, ब्रह्मरन्ध्र में नाना प्रकार की पंखड़ियां होती है, और उन पंखड़ियों का जब चक्र चलता है, तो बेटा! जितना ये परमात्मा का ब्रह्माण्ड है, इसे प्रकृति का ऊर्ध्वा मण्डल कहते हैं वह उस मण्डल को बेटा! भली भांति अपने में अनुभव करता हैं। अथवा उसे दृष्टिपात करता है। तो मेरे प्यारे! ये हमारे यहाँ एक कृत कहलाती हैं, हमारे यहाँ जब परमपिता परमात्मा ने बेटा! सृष्टि के पिता ने सृजन किया, तो मुनिवरों! देखो, अष्ट चक्रा नौ द्वारों वाली, यह पुरी का निर्माण किया। इसे हमारे यहाँ अयोध्या के नाम से वर्णन किया जाता हैं। अष्ट चक्रा नौ द्वारा मानो ऐसी जो पुरी है उसका नाम अयोध्या हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, हमारे इस मानव शरीर को अयोध्या कहा है। जो किसी से विजय न हो सके, ये ऐसी अयोध्या है, तो इसमें बेटा! देखो, अष्ट चक्र है, और नौ द्वार हैं, आठ चक्र और नौ द्वारों को जाने बिना हम बेटा! देखो, अपनी महानता को नही जान सकते, और अपने क्रियाकलापों को भी हम विशुद्ध रूप में नही ला सकते।

तो विचार आता रहता है मेरे प्यारे! मुझे बहुत समय स्मरण आ रहा है जब हम अपने पूज्यपाद गुरुओं के चरणों में विद्यमान हो करके इस प्रकार के मानो देखो, अयोध्या पुरी को जानने में लग जाते, तो गुरुदेव चरणों में ओत-प्रोत करा करके उसका अनुभव कराते रहते। प्राण के द्वारा उसका अनुभव किया जाता हैं। अपान के द्वारा मानो देखो, उसी में पुट लगाई जाती है। और व्यान में मुनिवरों! गति व्राण सुत हो जाती हैं। और मुनिवरों! देखो, समान में वह व्याप्त रहती हैं और उदान में मुनिवरों! देखो, वह चित्त के मण्डल के ऊपर वह अस्वार हो जाती है। तो बेटा! ये बड़ा विशाल, मेरे प्यारे! प्रभु ने इस जगत को रचा हैं इस मानव शरीर को रचा है, जिसको अयोध्या कहते हैं। ऐसे ही ये ब्रह्माण्ड भी एक अयोध्या के ही तुल्य हैं। तो मुनिवरों! देखो, आज का विचार हमारा क्या कह रहा है, कि हम उस मानो देखो, अनुशासन में जाना चाहते हैं, जिस अनुशासन में जाने से यह सब वस्तुएं हमें प्राप्त हो जाएं अथवा नस नाड़ियां का हमे ज्ञान हो जाएगा, और मुनिवरों! देखो, ऐसे देव अयोध्या में देव पुरी हो जाएगी, जो देवता जिसमें वास करते हैं, तो मुनिवरों! देखो, उसी के आचार्यों ने एक बड़ा ब्रह एक मार्ग दिया हैं। क्या यज्ञनं ब्रद्बे कृतं कि तुम याज्ञिक बनो। यह ऋषि-मुनियों की बड़ी विचित्र एक देन हैं। क्या हमारे यहाँ याग के कई प्रकार माने गएं हैं। यहाँ याग के अभिप्रायः है आध्यात्मिक याग में प्रवेश होना, और आध्यात्मिकवाद और याग उसे कहते हैं जहाँ आत्मा का ज्ञान किया जाता हो। परमात्मा को मानो देखो, उसे ब्रह्मा के रूप में परिणत किया जाता है। पंच महाभूत मानो देवताओं के द्वारा होता बन जाते हैं, और आत्मा यज्ञमान बन करके मुनिवरों! देखो, वह याग करता हैं परमात्मा ब्रह्मा बन करके उसे सुगन्धित करता रहता है तो मेरे प्यारे! देखो, यह आध्यात्मिक याग हमारे यहाँ बड़ा विचित्रतव माना गया हैं।

आओ, मुनिवरों! देखो, मैं उसी अनुशासन पर लाना चाहता हूँ जिस अनुशासन में रहने के पश्चात मानव अणुवृत्ति बन जाता हैं, अणुवृत्ति उसे कहते हैं जो जानकारी अथवा उसे साक्षात्कार दर्शन होने लगता हैं, और मुनिवरों! देखो, अणुवृत्तियाँ ब्रह्मे वर्णा तो नाना प्रकार के स्वरूप में जब रमण करने लगता है, तो मानव महानता का स्रोत बन जाता हैं। तो विचार आता है बेटा! देखो, मैंने ये कहा कि तू अनुशासन वादी बना जो अनुशासन में रहता है, वही महान हैं क्योकि ये जो परमात्मा का अनूठा जगत है, यह कैसा अनुशासन हैं। यह कैसा अनुशासित है मानो प्रातःकाल सूर्य उदय होता है अपने समय पर उदय होता है ये अनुशासन हैं, मानो उसकी जो किरणें गमन करती है वह भी एक अनुशासन हैं, और वह क्या-क्या क्रियाकलाप करते हैं, बेटा! वह भी अनुशासन है, तो मानो देखो, अनुशासन में ये सूर्य अपने में गमन कर रहा है, और वही ऊर्जा दे करके प्रकाश दे रहा है, विद्युत दे रहा हैं, और वह मानव समाज को क्या प्राणी मात्र को प्रकाशित कर रहा है। तो ये मेरे पुत्रों! देखो, ये अनुशासन है।

चन्द्रमा, अपने अनुशासन में उदय होता हैं, और वह सूर्य से शक्ति लेता है, और सूर्य से शक्ति ले करके उसे शीतल बनाता हैं, मानो देखो, समुद्रों से समन्वय रहता है उसे वह शीतल बनाता हैं। वही किरणें मानो देखो, वही कान्ति वनस्पति में, वनस्पतियों को अनुशासित बनाती रहती हैं, उनमें अमृत देती रहती हैं, वही चन्द्रमा है बेटा! जिसका समन्वय देखो, चन्द्रमां ब्रहा सूर्य से ऊर्ज्वा ले करके, वह उसे शीतल बनाता है, रात्रि को गर्भ में धारण करता हैं मेरे प्यारे! देखो, वही रात्रि है जो चन्द्रमा के गर्भ में रहती है। तो विचार आता रहता है, ये सब अनुशासन कहलाता हैं? तो हम बेटा! अनुशासित बनें, क्योंकि परमात्मा ने ये सर्वत्र जगत एक अनुशासित बनाया हैं। तो मुनिवरों! देखो, तारामण्डल हैं, अपनी-अपनी आभा में गमन कर रहे हैं, और चक्र की भांति मानो देखो, एक दूसरे की परिक्रमा कर रहे हैं और वही परिक्रमा मेरे पुत्रों! देखो, एक दूसरें को दर्शा रही हैं मानो देखो, मैंने तुम्हें पुरातन पूर्व कालों में प्रगट कराया, क्या ये जगत एक दूसरे की परिक्रमा कर रहा है, और ये प्राणी मात्र भी एक दूसरे की परिक्रमा कर रहा हैं। अणु और परमाणु बेटा! अपने में गतिवान है, जब मैं ये विचारता हूँ कि माता के गर्भस्थल में एक बिन्दु मानो कितना अनुशासित हैं और वह मानो एक परमाणु परमाणु से अनुशासित हो रहा है। परमाणु परमाणु में पिरोया हुआ हैं बेटा! देखो, उसमें ब्रह्माण्ड भी है, उसमें मानो लोक-लोकान्तर भी हैं परन्तु उसकी ऊर्ज्वा विद्यमान रहती हैं तो वही मानव षोडश ब्रह्वे वही चन्द्रमा बेटा! सोम बन जाता है, और सोम को पान करने वाली, मेरी प्यारी माता नाना प्रकार के वनस्पतियों के रसों को चन्द्रमा की कान्ति को अपने में सिंचन करने लगती हैं। बेटा! वह सिंचन मानो प्राण के द्वारा, शीतली प्राणायाम के द्वारा किया जाता हैं। और खेचरी मुद्रा से मानव मुद्रित हो जाती हैं, तो विचार आता है कि मेरे प्यारे! हमारा जो जीवन है हमारे जीवन में जो एक मानवीय धारा हैं, उन धाराओं को हमें जानने के लिए सदैव तत्पर रहना हैं। तो आओ, मेरे पुत्रों! वेद का ऋषि क्या कहता है आचार्य कहता है सम्भूति लोकं ब्रह्मा ये जो संसार है, ये सम्भूति लोकों से मानो देखो, इसका समन्वय है। समन्वय रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो, यह कैसा अनुपम वृत्ति हैं, तो इसीलिए देखो, ये अनुशसित हो रहा हैं, मानो सूर्य चन्द्रमा सब अनुशासित हैं, अग्नि अपने में अनुशासित हो रही हैं, परन्तु देखो, कहीं अग्नि काष्ठ में रहने वाली है कहीं अग्नि मानो देखो, वह प्रदीप्त होने वाली हैं समुद्रो में रहती है, उसे बड़वानल नाम की अग्नि कहते हैं, कहीं वही अग्नि मेरे प्यारे! सूर्य में ऊर्ज्वा बन करके रहती हैं वही अग्नि है, जो बेटा! देखो, वह लोक-लोकान्तरों में देखो, भ्रमण करा देती है। देखो, गति वायु से हैं, अग्नि से तेज प्राप्त होता हैं, और उसी तेजस और अग्नितं ब्रह्मा वायु ले करके बेटा! लोक-लोकान्तरों का हम शमन करने लगते हैं। तो मेरे प्यारे! मैं इस सम्बन्ध में कोई विशेष चर्चा नही देने आया हूँ। मैं इससे पूर्व तुम्हें यह प्रगट करा रहा था, क्या देखो, समुद्र के तट पर मानो देखो, ऋषि मे ऋषितव को दर्शा रहे हैं, और वह मुनिवरों! देखो, समुद्रों से ऊर्ज्वा को लेते हैं, और नाना प्रकार के मानो देखो, अपने में साधक बन करके और साधना को सिद्ध करके बेटा! देखो, सूर्य की किरणों के साथ गमन करता है। एक योगी ही ऐसा हैं, जो प्राण और अपान को मिला करके बेटा! चन्द्रमा की कान्ति के साथ में वह गमन करता है। मेरे पुत्रों! देखो, वह सूर्य की आभा में भी रत्त हो जाता हैं, मैंने तुम्हें कई कालों में यह प्रगट करते हुए कहा है क्या यहाँ नाना ऋषिवर इस प्रकार की लघु क्रिया को जानते हैं। वह द्वापर के काल में अथवा या त्रेता के काल मे भी ऐसे ही महान हुए है। त्रेता के काल में बेटा! देखो, अमृतां भू वर्णनं वावसुतं ब्रह्मे वाच वर्णासुतं ब्रह्मा बेटा! देखो, महाराजा अर्जुन को तुमने दृष्टिपात किया होगा, अर्जुन ने यह विद्या महाराजा शिव से प्राप्त की थी, हिमालय में जा करके और वह मुनिवरों! देखो, वह अस्त्रों-शस्त्रों को प्राप्त करने के लिए अध्ययन करने के लिए बेटा! वह मंगल मण्डल में पंहुचे क्योंकि मंगल मण्डल का जो विज्ञान है, इस पृथ्वी मण्डल के विज्ञान से मानो सौ वर्षों तक आगे रमण करता रहता हैं, तो बेटा! मैं इस सम्बन्ध में नही जाना चाहता हूँ। विचार-विनिमय केवल यह कि मैं यह उद्गीत गाने आया

हूँ, केवल देखो, यह सब अनुशासित रहने वाले हैं, क्या मंगल मण्डल है, क्या बृहस्पति हैं, कोई भी लोक-लोकान्तरों की परन्तु अपने प्रभु के अनुशासन में रमण करते हैं, इसी प्रकार मानव को भी अपने में अनुशासित रहना चाहिए और जब अनुशासन रहता है। तो प्रत्येक इन्द्रियों पर अनुशासन करता है और इन्द्रियों पर जो अनुशासन करना जानता है, वह जनक कहलाता है, इसीलिए राजा को जनक बनना चाहिए जनक उसे कहते हैं, जो ममता मोह में मोह से दूरी होता है, अथवा जो ज्ञान में अग्रणी होता हैं, और वह राष्ट्र का पालन भी कर रहा हैं। परन्तु देखो, वह उदासीन भी रहता है, क्योंकि जनक कहते हैं बेटा! मैं कई कालों में यह जनक एक उपाधि से अलंकृत की गई हैं। इसी प्रकार हमारे यहाँ जितने भी ऐसे नामोकरण है वह सब अलंकारित माने गएं हैं। वह उनके गुणों से अलंकृत किए गएं हैं, और देखो, उससे वह उपास्य बद्ध रहे हैं, तो विचार आता रहता है मैं इस सन्दर्भ में तुम्हे विशेषता में नही ले जा रहा हूँ केवल विचार-विनिमय यह कि हम उस महान वेदज्ञ ज्ञान के ऊपर विचार-विनिमय करें, और अुनशासन और योग की प्रतिभा में रमण कर जाएं। क्योंकि योग में ही बेटा! देखो, जब वह अपने प्राणो से वह अपना एक पिण्ड बनाता हैं, प्राणों से विचारों को ला करके उसका पिण्ड बनाता हैं, और जब पिण्ड को वह पुनः विभाजन करता है, वह योग के द्वारा तो उसमें से बेटा! नाना ब्रह्माण्डों का जन्म हो जाता हैं। बेटा! ब्रह्मरन्ध्र की मैंने तुम्हें चर्चाएं प्रगट की है, इसी प्रकार हमारे यहाँ पुरातन काल के देखो, वैदिक ऋषि-मुनियों ने अपना बड़ा अनुसन्धान किया हैं, बेटा! देखो, मैंने भी इसके ऊपर प्रायः अपना अन्वेषण किया है, और भी नाना प्रकार के विचार आते रहे हैं। परन्तु देखो, मैं तुम्हें उच्चारण कर रहा था क्या यह जो संसार है, यह अपनी आभा में रत्त रहता हैं, परन्तु देखो, ऊर्ध्वा में परमाणुवाद हैं, अपने में परमाणुवाद है। अपने में सीमित रहते हैं। इसी प्रकार मानो बेटा! कहते हैं, कि मोह नही करना चाहिए मैं यह कहता रहता हूँ कि मोह करना चाहिए। परन्तु मोह में अति नही आनी चाहिए। यदि अति आ गई तो वह मोह ही तुम्हारे विनाश का कारण बन जाएगा। मानो तुम्हें कामं ब्रहे कामं ब्रीहि तुम्हे जागरूक होना चाहिए। कामं वृत्ति के रूप में परन्तु देखो, उत्पति के मूल में रहना चाहिए और यदि तुम देखो, उससे अति आगे चले गएं। तो मानो वही तुम्हारे विनाश का मूल बन जाएगा। तो मेरे प्यारे! देखो, इसीलिए मानव अपने में मानो अनुशसित रहता हैं। यह देखो, वह अपने में अनुशासित करने वाला हों, यदि इन्द्रिय को अनुशासन में दृष्टिपात करते-करते बेटा! दूरी चला जाता है, अन्त में यह होता है कि इन्द्रियों का मानो देखो, क्रिया उसकी शान्त हो जाती हैं। वह जब शान्त हो जाती है, तो वही शान्त हो जाती हैं। द्वितीय मानो देखो, घ्राण इन्द्रियों को विचारते-विचारते बहुत दूरी चला जाता हैं। जब उसका विषय समाप्त हो जाता है। वहीं मौन हो जाता हैं। बेटा! रसना के रसों का स्वादन करता रहता है, यहाँ तक करता है, कि रसना के अग्रणीय भाग को बेटा! देखो, वह जल के परमाणुओं को अपने में सिंचन करने लगता हैं। अन्त में यह उद्गीत गाने के लिए तत्पर हो जाता है कि जल में कौन-सा धातु पिपाद है, मानो यहाँ तक जाता है जब विशेष धातु को जान लेता हैं तो जो भी रस मानो वायु में गमन कर रहा है उसको वह ग्रहण करता हैं। उन रसों में भी रसों में भी भिन्न-भिन्न प्रकार की प्रतिक्रियाएं बन जाती हैं, आगे बेटा! देखो, अनुसन्धान करता हैं, रसों के द्वारा बेटा! देखो, वायुमण्डल में क्या वह सूर्य से स्पर्श करके आ रही किरणों के साथ में तो उसका स्वादन यह रसना अनुभव उसका उद्गीत गाने लगती हैं। चन्द्रमा की कान्ति में देखो, हो करके वायु आती हैं, और वह रसना को स्पर्श करती है तो बेटा! वहाँ का वह अनुभव कर देती हैं, तो विचार आता है बेटा! देखो, पृथ्वी में स्पर्श करके आती है, जैसे मैंने तुम्हें कई कालों में तुम्हे वर्णन कराया बेटा! देखो, भगवान राम जब देखो, वह वन में भ्रमण कर रहे थे। अपने गुरु जी के सहित तो उनकी घ्राण इन्द्रियाँ बड़ी विशेष थी और घ्राण इन्द्रिय से बेटा! जब वह अमृतां भू वर्णनं जब देखो, उन्होंने निषाद से कहा हे निषाद! यह जो भूमि है, ऐसी मुझे गन्ध आ रही हैं जैसे यह भूमि अन्न के उपजने के

योग्य हो इसमें तुम अन्न उत्पन्न करो, मानो देखो, ऐसी भूमि का नाम अहिल्या कहा जाता हैं, तुम इस भूमि से देखो, उपज करो, तुम्हारा राष्ट्र सम्पन्न तो निषाद ने ऐसा ही किया तो इस भूमि उपज योग्य बन गई भूमि कल्याण में परिवर्तित हो गई। तो मानो देखो, गन्ध सुगन्ध एक समय बेटा! राम गमन कर रहे थे, जब वह मानो देखो, महर्षि विश्वामित्र के विद्यालय में अध्ययन कर रहे थे और धनुर्विद्या का अध्ययन कर रहे थे, तो विश्वामित्र ने राम से कहा राम जाओ इस पृथ्वी के धातु पिपाद को जान करके मुझे निर्णय दो तो राम एक मृचिका ब्रह्मचारी थे मेरे प्यारे! दोनो गमन करते हुए मेरे प्यारे! देखो, समुद्र के तट पर पंहुचे और समुद्र के तट पर जब उन्होंने वहाँ का वायुमण्डल दृष्टिपात किया तो वायुमण्डल में मानो नाना प्रकार के धातु पिपाद की मानो उन्होंने मानो गन्ध आने लगी। उन्होनें वही बेटा! देखो, यन्त्रों का निर्माण किया और पृथ्वी के गर्भ से मानो श्रवण और भी नाना प्रकार की धातुओं को वह अपने में लाना प्रारम्भ करते उन्होंने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा भगवन! हमने कुछ जाना भी है और वह गन्ध हमें इस प्रकार की आती है, तो इस प्रकार घ्राण इन्द्रियों का विषय यह बड़ा विचित्र है, आगे बेटा! उन्होंने गमन किया एक समय बेटा! देखो, वह गमनं ब्रंहे तो उन्हें देखो, कहीं वैज्ञानिकों का एक समूह हिमालय की कन्दराओं में था और उन्होंने मानो देखो, राजा रावण के पुत्र मेघनाथ मानो यन्त्रों का निर्माण कर रहे थे, वैज्ञानिकों के सहित राम जब भ्रमण कर रहे थे तो उन्हें पर्वतों से गन्ध आई और वह जब रोहिणी व्रेत केतु मानो एक धातु होती है उसकी जब गन्ध आई उन्होंने कह-प्रभु! यहाँ तो कहीं यन्त्रों का निर्माण हो रहा हैं, मानो देखो, वह अप्रं ब्रहे विश्वामित्र और व कुछ ब्रह्मचारी बेटा! भ्रमण करते उनके यन्त्रालय को उन्होंने दृष्टिपात किया तो मेरे प्यारे! यह घ्राण इन्द्रियों का विषय है। मानो उसे त्याग करके गमन किया मुनिवरों! देखो, कहीं एक योगी देखो, अमृतां मानं ब्रीहि देखो, मेरे प्यारे! भयंकर वनों में जब भ्रमण कर रहे थे, तो मेरे पुत्रों! देखो, कागभुषुण्ड जी और महर्षि लोमश मुनि महराज मानो देखो, वह अपने में विचार-विनिमय कर रहे थे और विचार-विनिमय करके वह विचार दे रहे थे। वायुमण्डल में तो मानो देखो, वायुमण्डल में जब श्रोत्रों से तो वायु की तरंगों से उन्होंने यह ग्रहण कर लिया, जान लिया कि यहाँ दो ऋषि विद्यमान है, परन्तु आत्मा की चर्चा कर रहे हैं। वह मानो अनुभव वायुमण्डल से प्राप्त करना, यह बड़ा सहज था। तो मेरे पुत्रों! देखो, ये योग की परिभाषा हैं यह योग का विषय हैं। मुनिवरों! देखो, वायु से ही परमाणुओं से जान लेना यौगिक प्रतिक्रिया हैं मेरे पुत्रों! देखो, वह कागभुषुण्ड जब लोमश के द्वार पर पंहुचे, आचार्य समीप है, उन्होंने वार्त्ता प्रगट की, उन्होंने कहा-प्रभु! हम अपने में चर्चा कर रहे हैं, और वह चर्चा अपने में नही मानो अपने हृदय की आभा को प्रगट कर रहे हैं, मेरे प्यारे! देखो, राम का इतना विज्ञान और इन्द्रियों पर उनका इतना अनुशासन था क्या अनुशासनं ब्रहे कृतं क्योंकि मानव का वहाँ अनुशासन नही रहता, जब बहुत तुच्छ देखो, विचारों में इन्द्रियाँ चली जाती हैं विचारों में व्यापकवाद रहना चाहिए विचारों में वासना कृति नही रहनी चाहिए। वासना से ऊर्ध्वा को गमन करके देखो, अपने जीवन को दृष्टिपात करोगे, उसे अनुशासन में लाओगे तो तुम्हें यह सब वस्तु तुम्हें सहज हो जाएगी। परन्तु देखो, हम इसी आभा में लगे रहते हैं एक मानव का विच्छेद हो जाता है। तो उसी की प्रतिक्रिया में लगे रहते हैं अरे, मानव! तू संसार में तुमने जन्म लिया अकेला माता के गर्भ से आया अकेला ही तुझे संसार में रहना हैं, परन्तु तू वह परमात्मा का जो ज्ञान और विज्ञान प्रभु ने जो बिखेर दिया है, सृष्टि के प्रारम्भ में तू उसके ऊपर क्यों नही विचार कर रहा है, तेरा क्या अमृतं तू उस अमृत को क्यों नही अपने में लाना चाहता है, तू संसार के मोह ममता के विवेकों में मानो अपने जीवन को शान्त कर रहा हैं। मेरे प्यारे! देखो, जब इस प्रकार का ज्ञान और इन्द्रियों का विषय जब इतनी दूरी चला जाता है, तो वही तो उसका अनुशासन हैं, अनुशासन की विवेचना करता हुआ मैं दूरी नहीं मानो देखो, भगवान राम का जीवन मुझे भली भांति स्मरण है। मानो देखो, वह श्रोत्रों के द्वारा रसना के द्वारा त्वचा के द्वारा मानो देखो, इस

ब्रह्माण्ड में जो-जो प्रतिक्रिया हो रही है, उसका वह अनुभव करते रहते हैं, बेटा! एक राम ही नही नाना ऋषि थे इस प्रकार के महाराज गणेश जी मानो देखो, वह शिव पुत्र इस प्रकार का वह गमन करते रहते थे, ऋषि वैशम्पायन मेरे प्यारे! देखो, वायु को दृष्टिपात करके अनुभव करके स्पर्श शक्ति के द्वारा वह यह जान लेते थे कि वायुमण्डल में मानो धातु विशेष हो गया हैं, अमुक जल विशेष हो गया है, अग्नि विशेष हो गई हैं, तो मानो देखो, उनको अग्नि को विभाजन करना और उसमें से जल को विभाजन करना मेरे प्यारे! उसमें योगाभ्यास में उसे अपने में धारण करते रहते थे।

तो विचार आता रहता है मैं इस सम्बन्ध में शेष चर्चा नही दूंगा, क्योंकि यह अनुसन्धान की प्रवृत्ति मानव के अन्तर्हृदय में रहनी चाहिए क्योंकि मेरी प्यारी माताएं जब इस प्रकार का अन्वेषण करती रही मुझे वह काल स्मरण है, मानो देखो, वह उसी विचारों में नही आता था, तो वह ऋषि-मुनियों के आश्रमों में जा करके और वह उस विद्या का मानो अध्ययन करती थी, मुझे स्मरण आता रहा हैं, मेरे पुत्रों! ब्रह्मणे ब्रहा जब मानो देखो, महर्षि कागभुषड जी की माता स्नेह लता एक समय बेटा! एक समय बेटा! देखो, वह यह विचार कर रही थी, क्या मैं अपने गर्भ से उत्पन्न होने वाले बाल्य को ब्रह्मवेत्ता बनाना चाहती हूँ। तो मानो देखो, ब्रह्म की चर्चाएं करते-करते कुछ ब्रह्म की बुद्धि उन्हें स्मरण नही आती थी तो मेरे प्यारे! वह वहाँ से अपने आश्रम को त्याग करके अपने पति से प्रश्न करती, परन्तु वह भी जब निरूतर हो जाते तो ऋषि-मुनियों की सभाओं में जाना और ऋषि-मुनियों की देवियों से वार्त्ता प्रगट करना, मेरे प्यारे! देखो, उसको अपने में लाना तो वह बाल्य माता के बालक मानो वह विवेकी बन जाते हैं, वह ज्ञानवान बन जाते हैं। तो इसी प्रकार हमें विचार-विनिमय करना हैं कि हम अपने में कितने मानो सफलता को प्राप्त होते हैं, तो मैं अनुशासन की चर्चा कर रहा था पुत्रों! इसी का नाम तो अनुशासन है उसमें विपरीत नही होना चाहिए मानव को देखो, गम्भीरता में जाना चाहिए। मेरे प्यारी माता को गम्भीर बनना चाहिए मनन करके बेटा! देखो, उसके अन्तिम चरण में जाना चाहिए, मेरे पुत्रों! देखो, मैं अनुशासन की चर्चा कर रहा था त्वचा का अनुशासन बड़ा विचित्र हैं। मेरे प्यारे! देखो, मुझे बहुत-सा काल हैं, मुझे उन कालों की चर्चाओं में उस विद्या में तुम्हें ले जाना नही चाहता हूँ माता के गर्भ का सम्म भू वर्णनं सुते जब रात्रि का अन्तिम चरण होता है, रात्रि का जब मध्य चरण होता हैं, और मध्य चरण में मानो देखो, स्वाति नक्षत्र मूल नक्षत्र का मिलान होता हैं, मेरे प्यारे! देखो, उस समय जब माता अपने गर्भ में एक शिशु को स्थापित करती है तो मुनिवरों! देखो, वह माता संसार में धन्य हो जाती हैं। मैं बेटा! इस सम्बन्ध में इस विद्या के ऊपर जिस विद्या को मुनिवरों! देखो, महर्षि दुर्वासा मुनि जानते थे, दुर्वासा मुनि मानो उसका अध्ययन करते रहते थे तो मेरी प्यारी माता देवताओं को जन्म देने वाली बनें तो विचारने से प्रतीत होता हैं तो मानो देखो, प्रत्येक मेरी इन्द्रियों का अपना विषय हैं, और इन्द्रियों पर अनुशासन करते रहो करते रहो दूरी चले जाओ तो बेटा! देखो, तुम्हे इन्द्रिय का विषय समाप्त हो जाएगा। त्वचा का विषय मानो वह वायु में प्रवेश हो जाएगा। वायु बन जाएगा अन्त में अग्नि मानो देखो, नेत्रों का विषय दृष्टिपात करते-करते गृह अग्नि स्वरूप बन जाएगा। तब वह रसना को रसों को विचारता रहता हैं, षट रसों में चला जाएगा अन्त में बेटा! षट रस समाप्त हो करके वह इन्द्रं भू वर्णनं सुता वह मेरे प्यारे! देखो, वह इन्द्रिय अग्नि में परिवर्तित हो जाएगी। वह नेत्र की अग्नि में चला जाएगा नेत्र ही अग्नि बन जाएंगें। मेरे प्यारे! देखो, इसी प्रकार श्रोत्र इन्द्रियाँ जब अनुशासन में गमन करते-करते दूरी चले जाओगे। तो अन्त में बेटा! देखो, यही श्रोत्र बेटा! देखो, दिशाएं बन जाएगी अन्तरिक्ष बन जाएगा मेरे प्यारे! देखो, अन्तरिक्ष की उड़ाने उड़ने वाला मानव बन जाएगा तो बेटा! मैं बहुत दूरी चला जाऊं मुझे विषय बड़ा मानो विचारक यह कहता है। विचार केवल यह बेटा! देखो, इन्द्रियों का विषय है, इन पांच ज्ञानेन्द्रियों का जो विषय है इसके अन्तिम चरण में चले जाओगे तो अन्त में बेटा!

मौन हो जाओगे क्योंकि वह अन्तिम जो चरण है बेटा! यह ज्ञान में स्वतः बन गएं हैं। तो स्वतः मानो देखो, स्वस्ति में प्रवेश हो जाओ मानो जब समष्टि व्यष्टि में प्रवेश हो जाओगे। तो मुनिवरों! देखो, जहाँ-जहाँ अग्नि अपना क्रियाकलाप कर रही हैं पंच रूपों में जो क्रियाकलाप हो रहा हैं। वह पंच देवता बन गएं हैं। इन्द्रियाँ देवताओं के स्वरूप में परिणत हो गई हैं तो बेटा! यह संसार उसके उस योगी के लिए बेटा! खिलवाड़ हो जाता हैं। वह जब चाहता है वह अन्तरिक्ष में गमन करता हैं। जब चाहता है लोक-लोकान्तरों में रमण करता हैं, जब संकल्प करता हैं, मानो वह पृथ्वी के गर्भ में चला जाता हैं, गुरूतव में रमण करने लगता हैं, तो बेटा! देखो, विचार आता रहता है मैं दूरी नही जाना चाहता हूँ, घ्राण इन्द्रिय को जानते-जानते बेटा! मैं तुम्हें राम की चर्चाएं कही मुझे स्मरण आता रहता हैं। बेटा! देखो, मुझे एक समय बेटा! कागभुषुण्ड जी ने महर्षि लोमश मुनि से यह कहा कि कि-प्रभु! मैं साधना में अनुष्ठान करना चाहता हूँ, मानो देखो, इस पृथ्वी को मैं सूत्रिकरण में दृष्टिपात करना चाहता हूँ, तो कागभुषुण्ड जी मानो देखो,याग करने लगे तो पृथ्वी का शोधन करने के लिए मेरे पुत्रों! देखो, एक समय कागभुषुण्ड जी समाधिष्ट में रमण करने लगे जब समाधि में मानो देखो, उन्होंने आसन को सिद्ध किया वह उन्होंने वह सिद्धासन में विराजमान हो गएं और सिद्ध आसन में जब विराजमान हो गएं तो बेटा! देखो, पृथ्वी से ऐसे परमाणुओं का जन्म होने लगा कि देखो, उस ऋषि के मस्तिष्क से मानो देखो, वह परमाणु मिजान करने लगे उन्होंने महर्षि लोमश से प्रश्न किया क्या महाराज यह तो पृथ्वी के परमाणु मेरी साधना को अशुद्ध किए जा रहे हैं, और मुझे वह तरंगें उत्पन्न कर रहे हैं उन्होंने कहा कि नही असम्भ ब्रहे महर्षि लोमश मुनि ने कहा कि तुम याग करो, और विचारों को मानो उसमें व्यापक बनाओ मुनिवरों! देखो, उन्होंने विचारों को व्यापक बनाया और विचारों को मानो देखो, उन्होंने अग्नि का प्रदीप्त किया याग किया और याग करने से बेटा! देखो, पृथ्वी के गर्भ में वह परमाणु मानो देखो, अग्नि मिश्रित देखो, याग के वेदमन्त्रों की जो ध्वनि है, वेदमन्त्रों की जो प्रतिभा उसी देवता का वेदमन्त्र उद्गीत गाया तो मानो देखो, पृथ्वी का वायुमण्डल पवित्र हो गया, उन्होंने जब साधना की तो वायु का सेवन किया और खेचरी मुद्रा से देखो, जल का सेवन किया और मुनिवरों! देखो, इसी प्रकार अन्तरिक्ष से उन्होंने दिशाओं से उन्होंने अपना मिलान करके उनका योग सिद्ध आत्मा बन गया तो विचार आत रहता है, बेटा! यह योग साधना हैं, साधना में जो जाना चाहता है, वही साधक बनता है, वही अपने को मानो संसार को खिलवाड़ स्वीकार करता हैं तो मेरे प्यारे! देखो, मुझे बहुत-सी वार्त्ताएं स्मरण है। मैंने तुम्हें कई कालों में प्रगट कराईं एक समय मानो देखो, प्रातःकालीन कागभुषुण्ड जी याग कर रहे थे एक मानो श्वेत्ता ऋषि महाराज मेरे प्यारे! देखो, वह अपने ब्रह्मचारियों को प्रातःकालीन किसी कारण वश देखो, उन्हें अपने विद्यालय में क्रोध की मात्रा आई तमोगुण की मात्रा आ गई रजोगुण की प्रतिभा उनमें व्यापने लगी तो उन्होनें दण्डित किया ब्रह्मचारी को वही भावना ज्यों की त्यों अन्तःकरण में बनी रही जब बनी रही तो बेटा! देखो, वह भ्रमण करते हुए कागभुषुण्ड जी प्रातःकालीन याग कर रहे थे, उस याग में ऋषि ने भी भाग लिया, और ऋषि मानो देखो, साकल्य की आहुति देने लगे, स्वाहा कहने लगे मानो देखो, ऋषि तो अन्तर्मुखी हो करके याग कर रहे थें, उस याग में जो तरंगें उत्पन्न हो रही थी। वह देवतव की थी। परन्तु वह दैत्य तरंगें हो गई, वह जब तरंगें दैत्य बन गई तो उन्होंने कहा क्या यह कौन है मेरी यज्ञशाला में मेरे याग को उन्होंने भ्रष्ट कर दिया मेरे प्यारे! देखो, वह उन्होंने वह वृत्तिका ने श्वेतं ब्रह्मा ऋषि ने वह वाक् स्वीकार कर लिया प्रभु! मैं दण्डित कर रहा था ब्रह्मचारियों को और वह भावना मेरे अन्तःकरण में भ्रमण कर रही हैं वही भावना मुनिवरों! देखो, अन्तरिक्ष में इस याग के स्वाहा उच्चारण शब्द के कारण द्यौ में प्रवेश कर रही हैं, तो मेरे प्यारे! देखो, कागभुषुण्ड जी ने कह-प्रभु! मैं साधक कैसे बनूंगा? उन्होंने कह-प्रभु! मैं आज्ञा चाहता हूँ, मैं इस आसन को त्यागता हूँ मेरे प्यारे! देखो, ऋषियों का अन्तर्हृदय तो उदार होता हैं। मानो उन्होंने उस आसन को त्याग

दिया और भावनाओं से ही मुनिवरों! देखो, यह संसार यह निर्मितता होती हैं, और मुनिवरों! देखो, उसके पश्चात पुनः उन्होंने याग किया वृत्ति बने और वह भावनाओं को ले जा करके साकल्य वनों से एकत्रित करके उन्होंने याग में पुनः जब भाग लिया तो बेटा! उसका शुद्धिकरण हो गया जब वह साधना में विद्यमान हुए, तो मानो देखो, मन, कर्म, वचन यह तीनों एकाग्र बन करके बेटा! प्रभु की सृष्टि को पुनः से दृष्टिपात करने लगे। तो मेरे प्यारे! देखो, विचार आता रहता हैं मैं अनुशासन की चर्चा कर रहा था तो बेटा! याग भी अनुशासित होना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, मुझे बहुत पुरातन काल हुआ जब बेटा! वृष्टि याग भी अनुशासित होता हैं, और देखो, वाजपेयी याग भी अनुशासित होता हैं पुत्रेष्टि याग भी अनुशासित होता हैं यदि उसमें अनुशासन नही है। तो याग याग नही रहेगा बेटा! विचार आता रहता हैं मैं विशेष चर्चा नही मेरे पुत्रों! मैंने बहुत समय की आभाओं को दृष्टिपात करके मानो क्रियामकतव को क्रियामक बनाना हमारा कर्तव्य है। यह मानो देखो, शब्द उच्चारण किया जाता है, शब्द को क्रिया में लाना वह अनुशासन कहलाता है, तो विचार आता है मुनिवरों! देखो, मैं परमात्मा के जगत की चर्चा कर रहा था परमात्मा का इतना यह जगत हैं, इतना अनुशासित है बेटा! क्या इसके ऊपर मानव जब विचार करने लगता है, तो मौन हो जाता है, चिन्तन करते-करते मौन हो जाता हैं, तो इसीलिए मानव को अनुशासित रहना चाहिए यदि परमात्मा की सृष्टि को दृष्टिपात करना है, यदि संसार में अपने जीवन को महान बनाना है, तो अनुशासित रहना हैं, बेटा! देखो, पृथ्वी गन्धं ब्रह्वा बेटा! देखो, उन्होंने अपने में यह विचार किया उन्होंने बेटा! अनुशासनं ब्रह्मे यह पृथ्वी में जो गन्ध आती है, उसका समन्वय घ्राण से रहता है, घ्राण गुरूतव का गुण है, गुण गुणी में रहता हैं, तो बेटा! देखो, वह पृथ्वी की गम्भीर मुद्रा में प्रवेश कर जाता हैं, मुझे तो यहाँ तक अनुभव है, बेटा! कि वह पृथ्वी के दस-दस योजन के गर्भ में प्रवेश करके वहाँ की धातु को जान लेते थे मेरे प्यारे! देखो, ऋषि-मुनि विज्ञानवेत्ता वह अपने में आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता बेटा! प्रभु की सृष्टि को ही निहारते रहे तो आओ, बेटा! मैं तुम्हें कोई व्याख्यान देने नही आया हूँ। केवल तुम्हें जानकारी देने के लिए आया हूँ, क्या मैं विचार दे रहा था मुनिवरों! अनुशासन का हे मानव! तू अपने में अनुशासित बन महर्षि पातंजलि कहते हैं, अनुशासनं ब्रह्मा वर्ण सुते मानो देखो, हमें अनुशासन में रहना हैं यदि योग में जाना है हमें अपने जीव को महान बनाना हैं, परमात्मा की सृष्टि को निहारना हैं, तो अनुशासन की आवश्यकता है, यदि हमारा मन कहीं हैं, क्रियाकलाप कही हैं, तो उस अनुशासन नही कहा जाता हैं। मेरे पुत्रों! मुझे वह काल स्मरण है जब हम पूज्यपाद गुरुदेव के द्वारा अध्ययन करते थे तो एक समय अध्ययन करा रहे थे अध्ययन कराते-कराते हमारा मन कहीं चला गया और वह मन मानो एक झरना चल रहा था, उसमें चला गया और उसमें जा करके तमोगुण की मात्रा बलवती हो गई तो पूज्यपाद गुरुदेव ने कहा ब्रह्मचारी कहाँ मन गया मेरे प्यारे! देखो, पूज्यपाद गुरुदेव से कहा-प्रभु! मन झरने में चला गया है झरना कहाँ गया उन्होंने कहा मनं ब्रहे वृतं अमृता तमो व्रता स्वाहा तमोगुण में चला गया भगवन! न प्रतीत क्यों चला गया, तो मानो उससे जो हमने निर्णय किया तो पूज्यपाद गुरुदेव ने यह कहा कि पहले दिवस में जाओ कहीं से निमन्त्रण आया, तुम अन्नाद को पा करके आओ, हम नही जाएंगे, तो मानो देखो, हम सब ब्रह्मचारी चले गएं, तो वह जो अन्न का दोष हमारे अन्तःकरण में परिणत हो गया, और अन्तःकरण के दोष से ही मानो देखो, झरना है, अन्न के दोष से तमोगुण हैं, अन्न के दोष से ही मानो देखो, साधना का साधना नही रही। तो मेरे प्यारे! देखो, बहुत अनुभव की वार्त्ताएं हैं इससे ऊपर हमें विचार-विनिमय करना हैं हमें अपने में शोधन करना है चिन्तन में लाना हैं तो विचार आता है कि हमें अनुशासित बनना हैं। (पुस्तक से) हमें अन्नाद के ऊपर भी अनुशासित बनना है मेरे पूज्यपाद गुरुदेव औषधियों को वनों से लाते उन्हें अग्नि में तपा करके उनको खरल बना करके जिससे बुद्धि पवित्र बनी रहती हैं प्रातःकालीन वह खेचरी मुद्रा में संकल्पों में वही प्राणायाम करके अपने उदर की पूर्ति करते थे। आज मैं विशेष चर्चा तो प्रगट करने नहीं

आया हूँ, मैं व्याख्याता नही हूँ, केवल तुम्हें मैं चर्चा अनुभव और ऋषि-मुनियों का जो क्रियाकलाप है जो कि विचित्र रहता हैं, उसको प्रकट कर रहा हूँ मेरे प्यारे! मैं अनुशासन की चर्चा में जा रहा था तो परमातमा की चर्चायें यह अनुशासन का ऐसा विशाल वन हैं, जब मैं इसको विचारता रहता हूँ, तो पुनः एक धारा और जन्म ले लेती है, तो देखो, सहज यही है कि हमें अभ्यार्थी बन करके प्रभु के राष्ट्र को निहारना चाहिए। हम अपने मन कर्म, वचन से प्रभु के राष्ट्र को विचारेंगें तो हमारा जीवन धन्य बन जाएगा।

आज मैंने (शब्द ध्वनि से) बिखरे हुए पुष्पों की एकत्रित किया है, एक ही विषय की धारा है, आज का विचार कल मुझे समय मिलेगा तो पुत्र कल प्रगट करेंगें। आज का विचार क्या देखो, हम याग की चर्चा करें। याग पृथ्वी का शोधन करता है, मन मस्तिष्क का शोधन करता हैं, गृह में उज्ज्वलता को प्राप्त करा देता है, बेटा! अब आज का यह वाक् समाप्त होने जा रहा हैं। कल मुझे समय मिलेगा मैं शेष चर्चाएं कल तुम्हें प्रगट करूंगा। आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन होगा। ओ३म् देवाः आभ्यां रथं माहं आ पाहाम् ओ३म् यज्ञनं त्वा यम त्वाहाम् ओ३म् दिव्यां भवितन्न वाचस्स्वर्णाः।